श्री रत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला पुष्प नं० ३२-३४-३८-३६-४?

श्री रत्नप्रभसूरीश्वर सद्गुरुभ्यो नम

अथ श्री—

शीघ्रबोध भाग

(६-७-८-९-१०)

लेखक—

श्रीमद् उपकेश (कमला) गच्छीय,

मुनि श्री ज्ञानसुन्दरजी महाराज

प्रकाशक—

श्री वीर मण्डल.

मु. नागोर (मारवाड)

प्रबन्ध कर्ता,

जोरावरमल वैद

मेनेजर,

श्री रत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्पमाला—फलोदी

(द्वितियावृत्ति प्रत १०००)

वीर स २४५१ विक्रम स १९८१

धन्यवाद के साथ स्वीकार

इन शीघ्रबोध भाग ६–७–८–९–१० वा की छपाईमें जीन ज्ञानप्रेमियों ने द्रव्य सहायता दे अपनि चल लक्ष्मी का सद् उपयोग कीया है उस सहर्ष स्वीकार कर धन्यवाद दीया जाता है अन्य सज्जनों को भी चाहिये की इस 'ज्ञानयुग' के अन्दर सर्व दानोंमें श्रेष्ट ज्ञान दान कर अपनि चल लक्ष्मी को अचल बनावे किमधिकम् द्रव्यसहायकों की शुभ नामावली।

२५१) शाहा गवतमलजी मुलतानमलजी चोथरा मु नागोर
२५१) शाहा बादरमलजी सागरमलजी समदडीया मु नागोर
२०१) शाहा लाभचन्दजी जवेंरीमलजी खजानची मु नागोर
५१) शाहा शिवलालजी जेटमलजी बाठीया मु नागोर
१४५) श्री सुपनोंकी आवादानीसे
३५१) श्री भगवतीसूत्रादि पूजाकी आवन्दक

१२५०)

भावनगर—धी आनंद प्रीन्टींग प्रेसमें शा गुलाबचद लल्लुभाइने छापा

प्रस्तावना.

प्यारे पाठक वृन्द !

श्री रत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला ऑफीस फलोदी मारवाड से स्वल्प समयमें आज ७७ पुष्प प्रकाशित हो चुका है जिस्में शीघ्रबोध भाग पहलेसे पचवीस वा तक प्रसिद्ध हुवे है जिस शीघ्रबोधके भागो में जैन सिद्धान्तो का तत्त्वज्ञान इतना तो सुगमता से लिखा गया है की सामान्य बुद्धिवाले मनुष्यों को भी सुखपूर्वक समजमें आ सके। इन शीघ्रबोधके भागो की अच्छे अच्छे विद्वानों ने भी अपने मुक्तकंठसे बहुत प्रशंसा कर अपना सुन्दर अभिप्राय को प्रकट कीया है की यह शीघ्रबोध जैन श्वेताम्बर दिगम्बर स्थानकवासी और तेरहा पन्थीयों से अतिरक्त अन्य लोगों को भी बहुत उपयोगी है कारण इन भागों मे तत्त्वज्ञान आत्मज्ञान अध्यात्मज्ञान के सिवाय कीसी मतमत्तान्तर-गच्छ गच्छान्तरादि कीसी प्रकार चर्चाओं या समुदायीक झघडों को विलकुल स्थान नही दीया है

इन शीघ्रबोध के भागो की महत्त्वता के बारे मे अधिक लिख हम हमार पाठकोंका अधिक समय लेना ठीक नही समझते है कारण पाठक स्वयं विचार कर सक्ते है की इन भागों की प्रथमावृत्ति "जो सुगमता से सरल भाषाद्वारा आबाल से वृद्ध जीवों को परमोपकारी अपूर्वज्ञान" प्रकाशित होते ही हाथोहाथ खलास हो जाने पर द्वितीयावृत्ति छपाइ गइ वह भी देखते देखते खलास हो गइ। कीतनेक भाई

प्रमाण्यस हुव दूसरी कीताबों की माफीक जब मगावें ग तब ही मील जावें ग इस विश्वास पर निराश हो बैठ थे उन महाशयो क भागणी क पत्रों स हमारे तागे क फल तग हो गये थ, पत्रपटी भर गइ थी उन ज्ञानाभिलाषीयों क लिय शीघ्रबोध भाग १—२—३—४—५ द्वितीय तृतीयावृति आप लोगो की सवामें भज दी गइ है इस समय यह भाग ६—७—८—९—१० वा पहले की निस्पत् बहुत कुच्छ सुधार क साथ तैयार करवा क आप साहिबा क कर कमलो म उपस्थित कर हमारे जीवन को कृतार्थ समजत हैं। यह ही इन कीताबो का महत्व है। विशष आप इन सब भागों को आद्योपान्त पढ लिजीये तब आपको रोशन होगा की यह एक अपूर्व ज्ञानरत्न है।

पाठकों! इन शीघ्रबोधक भागों में कथा कहानीयों नहीं है इन म है जैन सिद्धान्तो का खास तत्त्व जैनो क मूल अगोपाग सूत्रो का हिन्दी भाषाद्वारा सक्षिप्त सार=तरजमा स्पस बतलाया गया है जैसे रत्नाभिलाषी मनुष्य समुद्र मे प्रवश करत समय नौका का सादर स्वीकार करता है इसी माफीक जैन सिद्धान्त रुपी समुद्रमें तत्त्वज्ञान रुपी रत्नाभिलाषीयों को शीघ्रबोध रुपी नौका का सादर स्वीकार करना चाहिये। कारण विगर नौका समुद्र स रत्न प्राप्त करना मुश्किल है इसी माफीक विगर शीघ्रबोध जैन सिद्धान्त रुपी समुद्र से तत्त्वज्ञान रुपी रत्न प्राप्त होना असभव है।

सज्जनो! जीन सूत्रो का नाम मात्र श्रवण करना दुलभ था वह सूत्र आज साफ हिन्दी भाषा म आपक कर कमलों म उपस्थित

हो चुका है। अब भी आप इनके लाभ को न प्राप्त करे तो कमनसिबी के सिवाय क्या कहा जाव! श्री भगवतीसूत्र, पन्नवणाजीसूत्र, नन्दीसूत्र, अनुयोगद्वार सत्र, उपसकाशाग अन्तगढदशाग, अनुत्तरोववाइसूत्र पाच निरियावलीका सूत्र, वृन्हत्कल्पसूत्र, दशाश्रुतस्कन्धसूत्र, व्यवहारसूत्र और निशिथसूत्र इनो का सार इन शीघ्रबोध क प्रत्येक भागोमें बतलाया गया है।

श्री पन्नवणाजी सूत्र क ३६ पद हैं वह अन्य अन्य भागों मे प्रकाशित हुवे हैं। जिसकी क्रमश अनुक्रमणिका शीघ्रबोध भाग १२ क आदिमे दी गइ है की पढनवालोको सुविधा रहे इसी माफीक श्री भगवतीजी सूत्र की भी अनुक्रमणिका यहापर पृष्ट ६ से दी गइ है ताके जरुरत पर हरेक सवाल को पाठक देख सके।

सग्रहकर्ता मुनि श्री का खास उद्देश ज्ञान कण्ठस्थ करने का है इसी वास्ते आपश्री न विशेष विस्तार न करके सुगमतापूर्वक लिखा है आशा है की आप ज्ञान प्रेमी इस कीताब से आवश्य लाभ उठावेंगे इत्यलम ॥ शम ॥

आपका

मेघराज मुनोत

मु. फलोदी (मारवाड)

ज्ञान परिचय ।

पूज्यपाद प्रातःस्मरणीय शास्त्रादि अनेक गुणालंकृत श्रीमान् मुनि श्री ज्ञानसुन्दरजी महाराज साहिब ।

आपश्री का जन्म मारवाड़ ओसवंश वैद मुत्ता ज्ञातीमें सं. १९३७ विजय दशमिको हुवा था बचपन मे ही आपका ज्ञानपर बहुत प्रेम था स्वल्पावस्थामें ही आप संसार व्यवहार वाणिज्य व्यापारमें अच्छे कुशल थे सं. १९५४ मागशर वद १० को आपका विवाह हुवा था दरम्यान भी आपका बहुत हुवा था विशाल कुटुम्ब मातापिता भाइ काका कि आदि का त्याग कर २६ वर्ष कि युवाक वयमें सं. १९६३ चैत वद ६ को आपने स्थानकवासीयों में दीक्षा ली थी दशागम और ३०० थोकडे प्रकरण कंठस्थ कर ३० सूत्रोंकी वाचना करी थी तपश्चर्या एकान्तर छठ छठ मास क्षमण आदि करनेमें भी आप सूरवीर थे आपका व्याख्यान भी बडाही मधुर रोचक और असरकारी था शास्त्र अवलोकन करने से ज्ञात हुवा कि यह मूर्ति उत्थापकों का पन्थ स्वकपोल कल्पीत समुत्सम पेदा हुवा है। तत्पश्चात् सर्प कंचुक कि माफीक दुन्डकों का त्याग कर आप श्रीमान् रत्नविजयजी महाराज साहिब के पास ओसीयों तीर्थ पर दी क्षा ले गुरु आदेशसे उपकेश गच्छ स्वीकार कर प्राचीन गच्छका उद्धार कीया । स्वल्प समय में ही आपने दान्य पुरुषार्थ द्वारा जैन समाजपर बड़ा भारी उपकार कीया आप श्रीको ज्ञानका तो आग दर्जका प्रेम है जहा पधारते है वहा ही ज्ञानका उद्योत करते है

ओसीयों तीर्थ पर पाठशाला बोर्डींग कि क्रान्ति लायब्रेरी श्री रत्न प्रभाकर ज्ञान प्रभाकर भन्डार आदि में आपश्रीने मदद करी है फलोधी में श्री रत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला संस्था-इसकी दुसरी शाखा ओसीयोंमें स्थापन करी जिन संस्थावों द्वारा जैन आगमों का तत्व ज्ञानमय आज ७७ पुष्प नीकल चुके हे जिन्की कीताबे १५२००० करीबन् हिंदुस्तान के सब विभागमें जनता कि सेवा बजा रही है इनके सिवाय जैनपाठशाला जैन लायब्रेरी आदि भी स्थापन करवाइ गइ थी हम शासन देवतावोंसे यह प्रार्थना करते है कि एसे पुरुषार्थी महात्मा चीरकाल शासन कि सेवा करते हमारे मरुस्थल देशमें विहार कर हम लोगोंपर सदैव उपकार करे । शम्

ढूंढकसंवाद भी आपने १००० ० पुस्तकें छपवाइ थी कूल १७६ ००	आपके चरणोपासक **इन्द्रचंद पारख—जोइन्ट सेक्रेटरी**

श्री जैन युवक मित्रमण्डल, आफीस—लोहावट (मारवाड)

मुनि श्री ज्ञानसुन्दरजी महाराज
जन्म स १९३७ विजयादशमी
स्थानकवासी दिक्षा स
जैन दिक्षा स १९७२
आनन्द प्रीन्टींग प्रेस-भावनगर
ग्राम नागोर स

रत्न परिचय.

परम योगिराज प्रातःस्मरणीय अनेक सद्गुणालकृत श्री श्री १००८ श्री श्री रत्नविजयजी महाराज साहिब ।

आपश्रीका पवित्र जन्म कच्छदेश ओसवाल ज्ञाति मे हुवा था आप बालपणासे ही निग्रन्थीक परमोपासक थे इस वास्ते बाल्यावस्थामें ही आपने पिताश्रीके साथ ससार त्याग किया था, अठारा वर्ष स्यालकोटसीमत में दीक्षा पाल सत्य मार्ग सशो-धन कर-शास्त्रविशारद जैनाचार्य श्रीमद्विजयधर्मसूरीश्वरजी महाराजके पास जैन दीक्षा धारण कर सस्कृत प्राकृतका अभ्यास कर जैनागमोंका अवलोकन कर आपश्रीने एक अच्छे गीतार्थकि पक्तिका प्राप्त करी थी आपश्रीने कच्छ, काठीयावाड, गुजरात, मालवा, मेवाड और मारवाडादि देशोंमें विहार कर अपनि अमृतमय देशनासे जन-ताको पान करवाते हुए अनेक जीवोंका उद्धार कीया था इतना ही नही किन्तु आबु गिरनारादि निवृत्ति स्थानों में योगाभ्यास कर जैनोंमे अनेक गइ हुइ चमत्कारी विद्यावों हासल कर कइ आत्मावों पर उपकार कीया था ।

आपका नि स्पृह सरल शान्त स्वभाव होनेसे जगत के गच्छगच्छान्तर-मत मतान्तरके झगडे तो आपसे हजार हाथ दूर ही रहते थे जैसे आप ज्ञानमें उच्चकोटीके विद्वान थे वेसे ही कविता करनेमें भी उच्चकोटीके आप कवि भी थे आपने अनेक स्त-वनों, सज्झायों चैत्यवन्दनों, स्तुतियों कल्प रत्नाकर टीका और विनति शतकादि रचके जैन समाजपर परमोपकार कीया था

आपको निवृत्तिस्थान अधिक प्रसन्न था । श्रीमदुपकेश गच्छाधिपति श्री रत्न-प्रभसूरीश्वरजी महाराजने उपकेशपट्टन (ओशीयों) में ३८४००० राजपुतोंको प्रतिबोध दे जैन बना कर प्रथम ही ओसवश स्थापन कीया था उस ओशीयों तीर्थपर आपश्रीने चतुर्मास कर अलभ्य लाभ प्राप्त कीया जैसे मुनि श्री ज्ञानसुन्दरजीको ढुन्ढकमतसे बचाके सवेगी दीक्षा दे उपकेश गच्छका उद्धार करवाया था फीर दोनों मुनिवरोंने इस प्राचीन तीर्थके जीर्णोद्धारमें मदद कर वहांपर जैन पाठशाला, बोर्डीग, श्री रत्नप्रभा-कर ज्ञान भंडार जैन लायब्रेरी स्थापन करी थी और भी आपको ज्ञानका बडा ही प्रेम

था आपश्रीके उपदेश द्वारा फलोधी में श्री रत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्पमाला नामकि संस्था स्थापित हुइ थी आपश्रीने अपने पवित्र जीवनमें शासन सेवा बहुत ही करी थी केइ जगह जीर्णोद्धार पाटशालावोंके लिये उपदेश दीया था जिनोंकि उज्वल कीर्ति आज दुनियों में उच्च पदको भोगव रही है आपश्रीका जन्म सं १९३२ में हुआ सं १९४२ में स्थानकवासीयो में दीक्षा सं १९६० में जैन दीक्षा और सं १९७७ में आपका स्वर्गवास गुजरातके वापी ग्राममें हुवा है जहांपर आज भी जनताने स्मरणार्थ स्मारक मोजुद है एस निस्पृही महात्मावोंकी समाजमें बहुत आवश्यक्ता है

यह एक परम योगिराज महात्माका किंचित आपका परिचय कराते हम हमारी आत्माको अहोभाग्य समजते है समय पा के आपश्रीका जीवन लिख आपलोगोंकि सेवा में भेजनेकि मेरी भावना है शासनदेव उसे शीघ्र पूर्ण करे

I have the honour to be sir
Your most obedient slave
M Rakhchand Parekh S Collieries
Member Jain nava yuval mitra mandal
LOHAWAT

जन्म सं. १९३२

ढुंढक दीक्षा स १९४२

जैनदीक्षा १९६०

स्वर्गवास १९७७

मुनि महाराजश्री रत्नविजयजी महाराज

આનંદ પ્રેસ-ભાવનગર

यह बात किसीसे छीपी नहीं है कि आगम शिरोमणी परम प्रभाविक श्रीमत् भगवतीसूत्र जैन सिद्धान्तो में एक महत्वका सूत्र है चारों अनुयोग द्वारोंका महान् खजाना है इसके पठन पाठन के अधिकारी भी बहुश्रुति गीतार्थ मुनि ही है, तथपि अल्पश्रुत वालोंको सुगमतापूर्वक बोध होने के लिये कितनेक द्रव्यानुयोग विषयोंका सुगम रीती से थोकडा रुप में लिखकर अन्य २ शीघ्र बोध भागो में प्रकाशित किये है जिनकी सूचि यहां दी जाती है की कोइ भी विषयको देखना हो तो सुगमतापूर्वक देख सके

नंबर	श्री भगवतीसूत्र	थोकडो में विषय	शीघ्रबोध के किस भाग में है
१	श० १ उ० १	चलमाणे चलिय	भाग २५
२	श० १ उ० १	नरकादि ४८ द्वार	,, २८
३	श० १ उ० १	ज्ञानादिप्रश्न	,, २८
४	श० १ उ० २	देवोत्पातके १४ बोल	,, १
५	श० १ उ० ३	कांक्षामोहनीय	,, १६
६	श० १ उ० ३	,,	,, १६
७	श० १ उ० ४	अस्ति अधिकार	,, २८
८	श० १ उ० ४	वीर्याधिकार	,, २८
९	श० १ उ० ५	कषाय	,, ९
१०	श० १ उ० ६	सूर्योदय	,, २८
११	श० १ उ० ७	नरकादि	,, २५
१२	श० १ उ० ७	गमन	,, २५
१३	श० १ उ० ८	आयुष्यबन्ध	,, १६
१४	श० १ उ० ९	अगरूलघु	,, १६
१५	श० २ उ०१०	पचास्तिकाय	,, १६
१६	श० ३ उ० ३	चौभंगी ४९	,, १६
१७	श० ५ उ० ८	परमाणु	,, ८
१८	श० ५ उ० ८	क्रियमान	,, ९

अभी तक श्री भगवतीजी सूत्र का विषय लिखना बाकी रह गया है वह जैसे जैसे प्रकाशित होगा वैसे वैसे इस अनुक्रमणिका को साथमें मीला दीया जावेगा ताके सब साधारण को सुविधा रहै

अन्तमें हम नम्रतापूर्वक यह निवेदन करना चाहते है कि छद्मस्थों में त्रूटीये रहनेका स्वाभावीक नियम है तदानुसार अगर प्रेस कोपी करते या प्रुफ सुधारते समय दृष्टिदोष या मतिदोष रह गया हो तो आप सज्जन उसे सुधार के पढे और ऑफीस में सूचना करेंगे तो हम सहर्ष उपकार के साथ स्वीकार कर अन्यावृत्ति में उसे सुधार देंगे इति अस्तु कल्याणमस्तु । शान्ति ३

आपका,

मेघराज मुनोत

फलोदी (मारवाड)

विषयानुक्रमणिका

शीघ्रबोध भाग १० वा

श्री सिद्धसूरीश्वर सद्गुरुभ्यो नमः

अथ श्री

शीघ्रबोध भाग ६ ठा.

थोकडा नम्बर ६४ वां

श्री नन्दीजी सूत्रसे पांच ज्ञानाधिकार ।

ज्ञान—ज्ञान दो प्रकारके होते हैं (१) सम्यक्ज्ञान (२) मिथ्याज्ञान जिस्मे जीवादि पदार्थों को यथार्थ सम्यक् प्रकारसे जानना उसे सम्यक् ज्ञान कहते हैं और जीवादि पदार्थों को विपरीत जानना उसे मिथ्याज्ञान कहते हैं ॥ ज्ञानवर्णियकर्म और मोहनियकर्म के क्षोपशम होनेसे सम्यक्ज्ञान कि प्राप्ती होती है तथा ज्ञानवर्णिय कर्म का क्षोपशम और मोहनिय कर्म का उदय होने से मिथ्याज्ञान कि प्राप्ती होती है जैसे किसी दो कवियोंने कविता करी जिस्मे एक कविने ईश्वरभक्ति का काव्य रचा दुसराने शृंगार रस में 'महिला मनोहर माला' रची इस्मे पहले कविके ज्ञानावर्णिय और मोहनीय दोनों कर्मोंका क्षोपशम है और दुसरे कवि के ज्ञानावर्णिय कर्म का तो क्षोपशम है परन्तु साथमे मोहनिय कर्म का उदय भी है वास्ते पहले कवि का सम्यग् ज्ञान है और दुसरे का मिथ्याज्ञान है । इन दोनों प्रकार के ज्ञानके अन्दर

मैं यहापर सम्यक् ज्ञान का ही विवेचन करुंगा इसके अन्तर्गत आत्मीक ज्ञान के साथ ओर व्यवहारीक ज्ञान का समावेस भी हो सक्ता है।

ज्ञान पञ्च प्रकार के है यथा मतिज्ञान, श्रुतिज्ञान अवधि ज्ञान मन पर्यवज्ञान, केवलज्ञान इन पाचो ज्ञान को सक्षिप्त से कहा जाय तो दो प्रकारके है (१) प्रत्यक्षज्ञान (२) परोक्षज्ञान जिस्मे प्रत्यक्ष ज्ञान क दो भेद है इन्द्रिय प्रत्यक्षज्ञान, नोइन्द्रिय प्रत्यक्षज्ञान जिस्मे भी इन्द्रिय प्रत्यक्ष ज्ञान का पाच भेद है (प्रत्येक इन्द्रियों द्वारा पदार्थ का ज्ञान होना) यथा-

(१) श्रोतेन्द्रिय प्रत्यक्षज्ञान-शब्द श्रवणसे ज्ञान होना कि यह अमुक शब्द है

(२) चक्षुइन्द्रिय प्रत्यक्षज्ञान-रूप देखनेसे ज्ञान होना कि यह अमुक रूप है

(३) घ्राणेन्द्रिय प्रत्यक्षज्ञान-गन्ध लेने से ज्ञान होना कि यह अमुक गन्ध है

(४) रसेन्द्रिय प्रत्यक्षज्ञान-रस स्वादन करने से ज्ञान होना कि यह अमुक रस है

(५) स्पर्शेन्द्रिय प्रत्यक्षज्ञान-स्पर्श करनासे ज्ञान होना कि यह अमुक स्पर्श है

दुसरा जो नो इन्द्रिय प्रत्यक्ष ज्ञान है वह भूत भविष्य काल कि बात हस्तामल कि माफीक ज्ञान मके उनके तीन भेद है (१) अवधिज्ञान, (२) मन पर्यवज्ञान (३) केवलज्ञान जिस्मे अवधिज्ञान के दो भेद है (१) भवप्रत्य (अपेक्षा) (२) क्षोपशमप्रत्य, भवप्रत्यतो नरक और देवताओं को होते है जैसे नरकमें या देवतों में जीव उत्पन्न होता है वह सम्यग्दष्टि हो तो निश्चय अवधिज्ञानी होता है और मिथ्यादष्टि हो तो विभंगज्ञानी होता है और दुसरा जाक्षोपशमप्रत्ययी मनुष्य और तीर्यंच पाचेन्द्रियको अच्छे अध्यव

सायों के निमत्त कारण ज्ञानावर्णिय कर्म के क्षोपशमसे अवधिज्ञान होता हैं तथा गुणप्रतिपन्न अनगार को अनेक प्रकार कि तपश्चर्यादि करने से अवधिज्ञान उत्पन्न होता है जिस्के भेद असंख्याते है परन्तु यहापर संक्षिप्तसे छे भेद कहते है.

(१) अनुगामिक-जहापर जाते हो वहांपर ही ज्ञान साथमें चले।

(२) अनानुगामिक-जीस जगाहा ज्ञान हुवा हो उसी जगहा रहै।

(३) वृद्धमान-उत्पन्न होने के बाद सदैव वढता ही रहै।

(४) हीयमान-उत्पन्न होने के बाद कम होता जावे।

(५) प्रतिपाति-उत्पन्न होंने के बाद पीच्छा चला जावे।

(६) अप्रतिपाति उत्पन्न होने के बाद कभी नही जावे।

विस्तारार्थ-अनुगामिक अवधिज्ञान जैसे कीसी मुनि को अवधिज्ञान उत्पन्न हुवा हो उस्के दो भेद हैं अंतगयं और मझगयं उस्मे भी अतगयं के तीन भेद है आगके प्रदेशों से पीच्छेके प्रदेशों से पासवाडे के प्रदेशों से जैसे दृष्टान्त-कोइ पुरुष अपने हाथमें दीवा मणि चीराख लालटेनादि आगे के भागमें रख चलता हो तो उस्का प्रकाश आगे के भागमें पडेगा इसीं माफीक पीच्छाडी रखनेसे पीच्छाडी प्रकाश पडेगा और पसवाडे रखनेसे प्रकाश पसवाडे मे पडेगा इसी माफीक जोस जीस प्रदेशों के कर्मदल दूर हुवा है उस उस प्रदेशों से प्रकाश हो सर्व रूपी पदार्थों को अवधिज्ञान द्वारा ज्ञान सकेगा, और जो 'मझगयं' अवधिज्ञान है वह जैसे कोइ आदमि दीपक चीराख मणी-आदि मस्तकपर रखे तो उस्का प्रकाश चौतर्फ होगा इसी माफीक मध्य ज्ञानोत्पन्न होनेसे वह चौतरफ के पदार्थों को जान सकेगा यह अनुगामिक ज्ञान का स्वभाव है कि वह जहा जावे वहा साथमें चले।

अनानुगामिक अवधिज्ञान जेसे कोइ मनुष्य एक सीघडीमें

अग्नि लगाइ हो वह जहापर मागडी रखी हो वहा पर उसका ताप प्रकाश होगा इसी माफीक अवधिज्ञानोत्पन्न हुवा है वहा बैठा हुवा अवधिज्ञान द्वारा संख्याते योजन असंख्याते योजन के क्षेत्र में संबन्धवाले असंबन्धवाले पदार्थो को ज्ञान सकेगा परन्तु उस स्थानसे अन्य स्थानपर जाने के बाद कीसी पदार्थ को नही जानेगा अनानुगामिक अवधिज्ञान का स्वभाव है कि वह दुसरी जगाह सायमें न चाले उत्पन्न क्षेत्रमे ही रहै।

वृद्धमान अवधिज्ञान-प्रशस्ताध्यवसाय विशुद्धलेश्या अच्छे परिणामवाले मुनि को अवधिज्ञान होने के बाद चो तरफसे वृद्धि होती रहै जैसे जघन्य सूक्ष्म निलण फूलके जीवों के तीसरे समय के शरीर जीतना, उत्कृष्ट सपूर्ण लोकतया लोक जैसे असख्यात खंडवे अलोकमें भी जाने इसपर काल और क्षेत्र कि तुल्नाकर बतलाते है कि कीतने क्षेत्र देखनेपर वह ज्ञान कीतने काल रह सके। कालसे आवलिकाके असंख्यात भाग तकका ज्ञान हो तो क्षेत्र से आंगुलके असख्यात में भागका क्षेत्र देखे एवं दोनोंके सख्यातमें भाग आवलिकामें कुच्छ न्युन हो तो एक आगुल पुर्णावलिका हो तो प्रत्येकांगुल महुर्त हो तो एक हाथ एक दिन हो तो एक गाउ प्रत्येक दिन हो तो एक योजन एक पक्ष हो तो पचवीस याजन एक मास होतो भरतक्षेत्र, प्रत्येक मास होतो जबुद्विप, एक वर्ष होतो मनुष्यलोक, प्रत्येक वर्ष होतो रूचकद्विप, सख्यातो काल होतो सख्याताद्विप, असख्यातो काल होतो, सख्याते असख्याते द्विप तात्पर्य एक कालकि वृद्धि होनेसे क्षेत्र द्रव्य भावकि आवश्य वृद्धि होती है क्षेत्रकि वृद्धि होनेसे कालकि वृद्धि स्यात् हो या नभी हो और द्रव्य भावकि आवश्य वृद्धि हो, द्रव्यकि वृद्धि होनेमे कालक्षेत्रकि भजना और भावकि अवश्य वृद्धि हो भावकि वृद्धि होनेमे द्रव्य क्षेत्र कालकि अवश्य वृद्धि होती है द्रव्य क्षेत्र काल भावमें सूक्षम बादरकि तरतमता काल बादर है जिनसे सूक्षम

क्षेत्र है कारण सूची अग्रभागमें जो आकाश प्रदेश है उसे प्रत्येक समय एकेक प्रदेश निकाले तो असंख्यात सर्पिणी उत्सर्पिणी पुरी होजाये, क्षेत्रसे द्रव्य सूक्ष्म है कारण एक प्रदेशके क्षेत्रमें अनंते द्रव्य हैं द्रव्यसे भाव सूक्ष्म है कारण एक द्रव्यमें अनंत पर्याय है

हयमान अवधिज्ञान-उत्पन्न होनेके बाद अविशुद्ध अध्यव साय अप्रशस्त लेश्या खराब परिणाम होनेसे प्रतिदिन ज्ञान न्युनता होता जावे

प्रतिपाति अवधिज्ञान होनेके बाद कीसी कारणोंसे वह पीच्छा भी चला जाता है वह ज्ञान कितने विस्तारवाला होता है वह बतलाते है यथा आंगुलके असंख्यातमें भागका क्षेत्र को जाने संख्यातमें भागके क्षेत्रको जाने एवं बालाग्र, प्रत्येक बालाग्र लीख, प्रत्येकलिख, जू प्र०जू जॅव प्र०जव, अंगुल प्र०आंगुल, पाद प्र० पाद, वेहाथ प्र०वेहाथ, कुक्षि प्र०कुक्षि, धनुष्य प्र०धनुष्य, गाउ-प्र० गाउ, योजन प्र०योजन सोयोजन प्र०सोयोजन, सहस्रयोजन प्र० सहस्रयोजन, लक्षयोजन प्र०लक्षयोजन, क्रोडयोजन प्र०क्रोडयोजन क्रोडाक्रोडयोजन प्र०क्रोडाक्रोडयोजन संख्यातेयोजन, असं ख्याते योजन उत्कृष्ट सम्पूर्ण लोकके पदार्थको जानके पीच्छ पडे अर्थात् वह ज्ञान पीच्छा चला जावे उसे प्रतिपाति अवधिज्ञान कहा जाता है।

अप्रतिपाति अवधिज्ञान उत्पन्न होनेके बाद कभी न जावे परन्तु अन्तर महूर्त के अन्दर केवलज्ञान प्राप्त कर लेता है इन छे भेदों के सिवाय प्रज्ञापना पद ३३ में और भी भेद लिखा हुवा है वह अलग थोकडा रूपमें प्रकाशित है।

अवधिज्ञानके संक्षिप्तसे च्यार भेद है द्रव्य क्षेत्र काल भाव

(१) द्रव्यसे अवधिज्ञान जघन्य अनंते रूपी द्रव्योंको जाने. उत्कृष्ट भी अनंते द्रव्य जाने कारण अनंते के अनंते भेद है

(२) क्षेत्रसे अवधिज्ञान जघन्य आगुलके असंख्यातमें भागका क्षेत्र और उ० सब लोक और लोक जैसे असख्यात खंडके अलोकमें भी ज्ञान सके वहा पर रूपी द्रव्य नही है।

(३) कालसे जघन्य आवलिकाके असख्यात भाग और उत्कृष्ट असख्याते सर्पिणि उत्सर्पिणि बातें को जाने

(४) भावसे ज० अनते भाव उ० अनते भाव जाने वह सर्व भावोंके अनते भाग है इति

(२) मन पर्यव ज्ञान-अढाइ द्विपके सज्ञी पाचेन्द्रिय के मनोगत भावको जानमके इस ज्ञानके अधिकारी-मनुष्य-गर्भज-कर्मभूमि-सख्यातेवर्षोंकेआयुष्यवाले-पर्याप्ता-सम्यग्दृष्टि-संयति-अप्रमत-ऋद्धिवान् मुनिराज है जिस मन पयव ज्ञानके दो भेद है (१) ऋजुमति (२) विपुलमति जिस्के भिन्नसे च्यार भेद है द्रव्य क्षेत्र काल भाव।

(१) द्रव्यसे-ऋजुमति मन पयव ज्ञान-अनते अनत प्रदेशी द्रव्य मनपणे प्रणमे हुये को जाने देखे और विपुलमति विशुद्धसे विस्तारसे जाने देखे।

(२) क्षेत्रसे ऋजुमति मन पर्यव ज्ञान उद्ध लोकमें ज्योतिषीयोंके उपरका तला तीर्यग्लोकमें अढाइद्विप दो समुद्रमें पदरा कर्मभूमी तीस अकर्म भूमी छपन अन्तरद्विपोके संज्ञी पाचेन्द्रिय के मनोगत भावोंको जाणे देखे विपुलमति इससे अढाइ अगुल क्षेत्र अधिक वह भी विशुद्ध और विस्तारसे जाने देखे।

(३) कालसे ऋजुमति मन पर्यव ज्ञान-ज० पल्योपम के असख्यातमें भागका कालको उ० भी पल्या० अस मे भागके कालकों जाने देखे विपुलमति विशुद्ध और विस्तार करके जाने देखे।

(४) भावसे ऋजुमति मन पर्यव ज्ञान-ज० अनते भाव उ०

अनते भाव सर्व भावोंके अनतमें भागके भावोको जाने देखे विपुलमति-विस्तार और विशुद्ध जाने देखे। इति।

(३) केवलज्ञान सर्व आत्मा के प्रदेशोंसे ज्ञानावर्णिय दर्शनावर्णिय मोहनिय अन्तराय यह च्यार घातिकर्म क्षय कर सर्व प्रदेशोंको निर्मल बनाके लोकालोकके भावों को समय समय हस्तामलकि माफीक जाने देखे जिस केवल ज्ञानका दो भेद है एक भव प्रत्ययी-मनुष्य भवमे तेरहवे चौदवे गुणस्थानवाले जीवों को होते है दुसरा सिद्ध प्रत्ययी सकल कर्म मुक्त हो सिद्ध हो गये है उनोके केवल ज्ञान है जिस्मे भव प्रत्यके दो भेद है सयोग केवली तेरहवे गुणस्थान दुसरा अयोग केवली चौदवे गुणस्थान दुसरा सिद्धोंके केवलज्ञानके दो भेद है एक अनतर सिद्ध जिस सिद्धोंके सिद्धपदवों एक समय हुवा है दुसरा परम्पर सिद्ध जिस सिद्धो को द्वि समयसे यावत् अनत समय हुवा हो अनन्तर परम्पर दोनो सिद्धोंके अर्थ सहित भेद शीघ्रबोध भाग दुसरेके अन्दर छप चूके है वहा देखो। पृष्ट ८० से।

संक्षिप्तसे केवलज्ञानके च्यार भेद है द्रव्य क्षेत्रकाल भाव।

(१) द्रव्यसे केवलज्ञानी सर्व द्रव्यको जाने देखे।

(२) क्षेत्रसे केवलज्ञानी सर्व क्षेत्रको जाने देखे।

(३) कालसे केवलज्ञानी सर्व कालको जाने देखे।

(४) भावसे केवलज्ञानी सर्व भावको जाने देखे।

इति केवलज्ञान इति नोइन्द्रिय प्र० ज्ञान इति प्रत्यक्षज्ञान।

सेवं भंते सेवं भंते-तमेव सचम्

—✻—

थोकडा नंबर ६५ वा

(परोक्षज्ञान)

(२) परोक्ष ज्ञानके दो भेद है मतिज्ञान श्रुतिज्ञान, जिस्मे मतिज्ञान मनविचारणा बुद्धिप्रज्ञा मनन करनेसे होता है और श्रुतिज्ञान श्रवण पठन पाठन करनेसे होता है जहा मतिज्ञान है वहा निश्चय श्रुतिज्ञान भी है जहा श्रुतिज्ञान है वहा निश्चय मतिज्ञान भी है कारण मति विगर श्रुति हो नही सक्ता है और श्रुति विगर मति भी नही होती है सम्यग्दष्टि की मति निर्मल होनेसे मतिज्ञान कहा जाता है और मिथ्यादष्टि की विषम मति होनेसे तथा मोहनिय कर्मका प्रबलोदय होनेसे मति अज्ञान कहा जाता है इसी माफीक श्रुतिज्ञान भी सम्यग्दष्टियों के तत्व रमणता तत्व विचार में यथाथ श्रवण पठन पाठन होनेसे श्रुति ज्ञान कहा जाता है और मिथ्यादष्टियों के मिथ्यात्व पूर्वक मिथ्या श्रद्धना होनेसे श्रुति अज्ञान कहा जाता है सम्यग्दष्टि के सम प्रवृति समविचार समतत्व होनेसे उसको मति श्रुतिज्ञानवन्त और मिथ्या दष्टि कि मिथ्या प्रवृति मिथ्या विचार मिथ्या तत्व होनेसे मति अज्ञान श्रुति अज्ञान कहा जाता है

मतिज्ञान के दो भेद है एक श्रवण करने कि अपेक्षा याने श्रवण करके मतिसे विचार करनेसे दुसरा अश्रवण याने बुद्धि बलसे विचार करनेसे मतिज्ञान होता है जिस्मे अश्रवण के च्यार भेद है

(१) उत्पातिका बुद्धि-विगर सुनी विगर देखी वातों या प्रश्नोंको उत्तर देना
(२) विनयसे बुद्धि—गुरवादिके विनय भक्ति करनेसे प्राप्त हुइ बुद्धि

(३) कर्मसे बुद्धि—जैसे जैसे कार्य करे वैसी बुद्धि प्राप्त हो
(४) पारिणामिका—जैसी अवस्था होती जाती है या अवस्था बढती है वैसी बुद्धि हो जाती है

इन च्यारो बुद्धियोंपर अच्छी बोधकारक कथायों नन्दी सूत्रकि टीकामें है यह खासकर श्रवण करनेसे बुद्धि प्राप्त होती है श्रवण करनेकि अपेक्षा मतिज्ञानके च्यार भेद है

(१) उगृहा—शीघ्रताके साथ पदार्थोंका गृहन करना
(२) ईहा—गृहन कीये हुये पदार्थ का विचार करना
(३) आपय—विचारे हुये पदार्थ में निश्चय करना
(४) धारणा—निश्चय किये हुय पदार्थों को धारण कर रखना।

उगृह मतिज्ञान के दो भेद है अर्थ ग्रहन, व्यञ्जन ग्रहन जिस्मे व्यञ्जन ग्रहनके च्यार भेद है व्यञ्जन कहते है पुद्ग लोंको) श्रोत्रेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय रसेन्द्रिय स्पर्शेन्द्रिय इन च्यारों इन्द्रियों को स्व स्व विषयके पुद्‌गल मिलनेसे मतिसे ज्ञान होता है कि यह पुद्‌गल इष्ट है या अनिष्ट है तथा चक्षु इन्द्रियको पुद्‌गल ग्रहनका अभाव है चक्षु इन्द्रिय अपनेसे दुर रहे हुये पुद्‌गलों को देखके इष्ट अनिष्ट पदार्थका ज्ञान कर सक्ती है इस वास्ते इसे व्यञ्जन ग्रहनमें नही मानी है दुसरा जो अर्थग्रहन है उस्के छे भेद है

(१) श्रोत्रेन्द्रिय अर्थ ग्रहन—शब्द श्रवणकर उस्के अर्थका ज्ञान करना
(२) चक्षु इन्द्रिय अर्थ ग्रहन रूप देख उसके अर्थका ज्ञान करना
(३) घ्राणेन्द्रिय अर्थग्रहन—गन्ध सुंधनेसे उस्के अर्थको ग्रहन करना

(४) रसेन्द्रिय अर्थग्रहन—स्वादन करनेसे उस्के अर्थ को ग्रहन करना

(५) स्पर्शेन्द्रिय अर्थ ग्रहन—स्पर्श करनेसे उस्के अर्थको ग्रहन करना

(६) मन अर्थ ग्रहन—मन पणे पुद्गल प्रणमनेसे उस्के अर्थको ग्रहन करना

इन छहा अथ ग्रहनका मतलब तो एक ही है परन्तु नाम उच्चारण भिन्न भिन्न है जिस्के पाच भेद हैं—अर्थको ग्रहन करना अर्थको स्थिर करना अथको सावधानपणे संभालना अथके अन्दर विचार करना और अर्थका निश्चय करना। इसी माफीक ईहा नामये मतिज्ञानका भी श्रोतादि छे भेद है परन्तु पाच नाम इस माफीक है विचारमें प्रवेश करे विचार करे अर्थ गवेषना करे अर्थ चिंतवण करे भिन्न भिन्न अर्थमें विमासण करे। इसी माफीक आपाय मतिज्ञान के भी श्रोतादि छे भेद है परन्तु पांच नाम इस माफीक हैं अथका निश्चय करे चिंतवनका निश्चय करे विशेष निश्चय करे बुद्धि पूर्वक निश्चय करे विज्ञान पूर्वक निश्चय करे इसी माफीक धारणा मतिज्ञान के भी श्रोतादि छे भेद है परन्तु पाच नाम इस प्रकार हैं निश्चत किये हुवे अर्थ को धारण करना चीरकाल स्मृतिमे रखना हृदय कमलमें धारण करना विशेष विस्तारपूर्वक धारण करना, जेसे कोठारमें रखा हुवा अनाज कि माफीक जाबते के साथ धारण कर रखना यह सब मतिज्ञान के विशेष भेद है उग्रह मतिज्ञान कि स्थिति एक समयकी है ईहा ओर अपाय कि स्थिति अन्तरमुहुर्त कि है और धारण कि स्थिति सख्यातकाल (मनुष्यापेक्षा) असख्याते काल (देवापेक्षा) की है एव अश्रवणापेक्षा ४ ओर श्रवणापेक्षा २४ मीलाके मतिज्ञान के २८ भेद होते है

तथा कर्मग्रन्थमें इन अठावीस प्रकारके मतिज्ञानकों बारह

ह प्रकारसे बतलाये है यथा-बहु अल्प, बहुविध, एकविध, त, चीर, अनिश्रीत निश्रित, सन्दिग्ध, असन्दिग्ध, ध्रुव अध्रुव,-रण जैसे शख नगारा झालर आदि बाजत्रके शब्दों में से पशमकी विचित्रताके कारणसे कोइ जीव बहुतसे बाजिंत्रोंके दोंको अलग अलग सुनते है १ कोइ जीव स्वल्प हा सुनते है २ जीव उन बाजींत्रोंके स्वर तालादि बहुत प्रकारसे जानते है ३ कोइ जीव मद्दतासे सब शब्दोंको एक बाजिंत्रही जानते है ४ इ जीव शीघ्र-जलदीसे सुनता है ५ कोइ जीव देरीसे सुनता द कोइ जीव ध्वजाके चिन्हसे देवमन्दिरको जानता है ७ इ जीव बिगर पत्ताका अर्थात् बिगर चिन्हसे ही वस्तुको जान ना है ८ कोइ जीव सशय सहित जानता है ९ कोइ जीव सशय हित जानता है १० कोइ जीवको जसा पहला ज्ञान हुवा है सा ही पीछे तक रहता है उसे ध्रुवज्ञान कहते है ११ कोइ जीवको हले और पीच्छे में न्यूनाधिकपणेका विशेषपणा रहता है एव को १२ गुणा करनेसे ३३६ तथा अश्रुत निश्रितके ४ भेद लाा देनेसे ३४० भेद मतिज्ञानके होते है इनके सिवाय जाति-मरणादि ज्ञान जो पूर्व भव सबन्धी ज्ञान होना यह भी मति ानका ही भेद है एसे विचित्र प्रकारका मतिज्ञान है जावोंको सा जैसा क्षयोपशम होता है वैसी वैसी मति होती है।

मतिज्ञानपर शास्त्रकारोंने दो दृष्टान्त भी फरमाया है यथा क पुन्यशाली पुरुष अपनी सुखशय्याके अन्दर सुता हुवाथा से कीसी दुसरा पुरुषने पुकार करी उसके शब्दके पुद्गल सुते ये पुरुष के कानोंमें पडे वह पुद्गल न एक समयके स्थितिके थे ावत् न सख्याते समयेकि स्थितिके थे किन्तु असख्याते सम कि स्थितिके पुद्गल थे अर्थात् बोलनेमे असख्यात समय लगते है दनन्तर वह पुद्गल कानोंमें पडने को भी असख्यात समय चाहिये। सुता हुवा पुरुष पुद्गलोंको ग्रहन किया उसे 'उगृहमतिज्ञान' कहते

है फीर विचार किया कि मुझे कोन पुकारता है उसे 'ईहामति ज्ञान' कहते है बाद में निश्चय कियाकि अमुक मनुष्य मुझे पुकारता है उसे 'आपायमतिज्ञान' कहते है उस पुकारकोस्वरुप या चीरकाळ स्मरणमें रखना उसे 'धारणामति ज्ञान' कहते है जैसे यह अव्यक्त पणे शब्द श्रवण कर च्यारों भेदासे निश्चय किया इसी माफीक अव्यक्तपणे रूप देखनेसे गन्ध सुंघनेसे स्वाद लेनेसे स्पर्श करनेसे और स्वप्न देखनेसे भी समझना। दुसरा दृष्टान्त कीतने पुद्गल कानोंमें जानेसे मनुष्य पुद्गलोंका ज्ञान सकते है ? जैसे कोइ मनुष्य कुंभारके यहांसे एक नया पासलीया (मट्टीका बरतन) लावे उसमे एक एक जलबिन्दु प्रक्षेप करे तब वह पासलीया पुरण तोरसे परिपूर्ण भरजाय तब उस पासलीयोंसे जलबिन्दु बाहार गीरना शरू हो, इसी माफीक बोलनेवालेके भाषाद्वारा निकले हुवे पुद्गल श्रवण करनेवालेके कानोंमें भरते भराते श्रोत्रेन्द्रिय विषय पूर्ण पुद्गल आजावे तब उसे मालुम होती है कि मुझे कोइ पुकारता है इसी माफीक पांचों इन्द्रिय-स्व-स्व विषय के पुण पुद्गल ग्रहन करनेसे अपनी अपनी विषयका ज्ञान होता है इसी माफीक स्वप्नेके भी समज लेना

मतिज्ञानके संक्षिप्त च्यार भेद है द्रव्य क्षेत्र काल भाव।

(१) द्रव्यसे मतिज्ञान-संक्षिप्त सब द्रव्य जाने किन्तु देखे नहीं

(२) क्षेत्रसे मतिज्ञान -संक्षिप्तसे सर्व क्षेत्र जाने पण देखे नहीं

(३) कालसे मतिज्ञान--संक्षिप्तसे सर्व काल जाने परन्तु देखे नहीं

(४) भावसे मतिज्ञान-संक्षिप्तसे सर्व भाव जाने परन्तु देखे नहिं।

कारण मतिज्ञान है सो देशज्ञान है मनन करनेसे सामान्य प्रकारसे सर्व द्रव्यादिको जान सके परन्तु अपासणीया उपयोग होनेसे देख नही सके इति ।

सेवभंते सेवभंते तमेवसचम्

—✻—

थोकडा नम्बर ६६

(परोक्ष श्रुतिज्ञान)

श्रुतिज्ञान—सामान्यापेक्षा पठन पाठन श्रवण करनेसे होते है या अक्षरादि है यह भी श्रुतिज्ञान है श्रुतिज्ञानके १४ भेद है

(१) अक्षर श्रुतिज्ञान जिस्का तीन भेद है (१) आकारादि अक्षर कि संज्ञा स्थानोपयोगमयुक्त उच्चारण करना (२) हस्य दीर्घ उदात्त अनुदात्तादि शुद्ध उच्चारण (३) लब्धिअक्षर इन्द्रियजनित जैसे अनेक जातिके शब्द श्रवण कर उससे भिन्न भिन्न शब्दोंपर ज्ञान करना एव अनेक रूप गन्ध रस स्पर्श तथा नोइन्द्रिय-मन से पदार्थ का जानना इसे अक्षरश्रुति ज्ञान कहते है।

(२) अनाक्षर श्रुतिज्ञान कीसी प्रकार के चन्ह-चेष्टा करनेसे ज्ञान होता है जैसे मुह मचकोडना नेत्रों से स्नेह या कोप दर्शाना, सिर हीलाना, अगुली से तरजना करना हाँसी खासी छींक उबासी डकार अनेक प्रकार के वाजित्रादि यह सब अनाक्षर श्रुतिज्ञान है।

(३) संज्ञी श्रुतिज्ञान, संज्ञी पाचेन्द्रिय मनवाले जीवों को होते है जिस्के तीन भेद है (१) दीर्घकाल=स्वमत्त परमत्त के

श्रुति ज्ञान पर दीघकालका विचार करना तथा श्रुतिज्ञान द्वारा निश्चय करे (२) हेतुवाद=हितोपदेशादि श्रवण कर श्रुतिज्ञान प्राप्त करना (३) दृष्टिवाद=द्वादशांगी अन्तर्गत दृष्टिवाद अङ्ग को पठन पाठन कर श्रुतिज्ञान हासल करे इसको सज्ञी श्रुतिज्ञान कहते है।

(४) असज्ञी श्रुतिज्ञान-मन और संज्ञीपणे क अभाव एसे पचेन्द्रिसे असज्ञी पांचेन्द्रिय के जीवों को होता है वह अव्यक्तपणे संज्ञा मात्र से ही प्रवृति करते है जिस्के तीन भेद है स्वल्प काल कि संज्ञा अहेतुवाद अदृष्टिवाद याने सज्ञीसे विप्रीत समझना।

(५) सम्यक् श्रुतिज्ञान-श्री सर्वज्ञ वीतराग-जिन-केवली-अरिहन्त-भगवान प्रणित स्याद्वाद तत्व विचार-षट्द्रव्य नय निक्षेप प्रमाण द्रव्य गुण पर्याय परस्पर अविरूद्ध श्री तीर्थंकर भगवान् त्रिलोक्य पूजनीय भव्य जीवों के हितके लिये अर्थरूप फरमाइ हुइ वाणि जिस्को सुगमता के लिये गणधरोंने सूत्र रूपसे गुंथी और पूर्व महा रूषियोंने उसपर विवरणरूप रची हुइ पांचांगी उसे सम्यक्सूत्र कहते है या चौदा पूर्वधरो के रचित तथा अभिन्न दश पूर्वधरों के रचित ग्रन्थों को भी सम्यक् श्रुतिज्ञान कहते है। उस्के नाम आगे लिखेंगे।

(६) मिथ्याश्रुतिज्ञान-असर्वज्ञ सरागी छदमस्त अपनि बुद्धि से स्वउदे परस्पर विरूद्ध जिस्मे प्राणवधादि का उपदेश स्वार्थ पोषक हटकदाग्रह रूप जीवों के अहितकारी जो रचे हुवे अनेक प्रकार के कुराणपूराण ग्रन्थ है उनमें जीवादि का विप्रीत स्वरुप तथा यज्ञ होम पिंडदान रूतुदान प्राणवधादि लोक अहित कारक उपदेश हो उसे मिथ्याश्रुतिज्ञान कहते है।

(क) सम्यग्दृष्टियों के सम्यक्सूत्र तथा मिथ्यासूत्र दोनों सम्यग् श्रुतिज्ञानपणे प्रणमते है कारण वह सम्यग्दृष्टि होनेसे जैसी वस्तु हो उसे वैसी ही श्रद्धता है और मिथ्यादृष्टियोंके सम्यगसूत्र

तथा मिथ्यासूत्र दोनों मिथ्याश्रुति ज्ञानपणे प्रणमते है कारण उसकी मति मिथ्यात्वसे भ्रमित है वास्ते सम्यगसूत्र भी मिथ्यात्व पणे प्रणमते है जैसे जमालि आदि निन्हवोंके वीतरागों कि वाणी मिथ्यारूप हो गइ थी और भगवान् गौतम स्वामिके च्यार वेद अठारे पुराण भी सम्यक्रूपणे प्रणमिये थे कारण वह उनके भावों को यथार्थपणे समज गये थे इत्यादि

(७) सादि (८) सान्त (९) अनादि (१०) अनान्त= श्रुतिज्ञान विरहकालापेक्षा भरतादि क्षेत्रमें सादि सान्त है और अविरह कालापेक्षा महाविदेह क्षेत्रमें अनादि अनान्त है जिस्के संक्षिप्त से च्यार भेद है यथा द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव। जिस्मे द्रव्यापेक्षा एक पुरुषापेक्षा श्रुतिज्ञान सादि सान्त है और बहुत पुरुषापेक्षा अनादि अनान्त है क्षेत्रापेक्षा पांच भरत पांच परेरवतापेक्षा सादि सान्त है महा विदेहापेक्षा अनादि अनान्त है। कालापेक्षा उत्सर्पिणि अवसर्पिणि अपेक्षा सादि सान्त है और नोसर्पिणि नोउत्सर्पिणि अपेक्षा अनादि अनान्त है। भावापेक्षा जिन प्रणित भाव द्वादशागी सामान्यविशेष उपदेश निर्देश परूपणा है वह तो सादि सान्त है और क्षोपशम भावसे जो श्रुति ज्ञान प्राप्त होता है वह अनादि अनान्त है तथा भव्यसिद्धी जीवों कि अपेक्षा सादि सान्त है और अभव्य जीवों कि अपेक्षा अनादि अनान्त है।

(११) श्रुतिज्ञान के अभिभाग पलिच्छेद (पर्याय) अनत है जैसे कि एक अक्षर कि पर्याय कीतनी है कि सर्व आकाशप्रदेश तथा धर्मास्तिकायादि कि अगुरु लघुपर्याय जीतनी है। सूक्ष्म निगोद के जीवों से यावत् स्थुल जीवों के आत्मप्रदेश में अक्षर के अनन्तमें भाग श्रुतिज्ञान सदैव निर्मल रहता है अगर उसपर कर्मदल लग जावे तो जीवका अजीव हो जावे परन्तु एसा न तो भूतकाल में हुवा न भविष्य कालमें होगा इस वास्ते ही सिद्धान्तकारोंने

कहा है कि जीवों के आठ रूचक प्रदेश सदैव निर्मल रहते है वहा कमदल नहीं लगते है यह ही चैतन्यका चैतन्यपणा है जैसे आकाश में चन्द्र सूर्य कि प्रभा प्रकाश करती है पश्चात् उस को महामेघ-वादले उस प्रभा के प्रकाश को झाकासा बना देते है तथपि उस प्रकाश को मूलसे नष्ट नही कर सकते है बादल दूर होने से वह प्रभा अपना सपुरण प्रकाश कर सक्ती है इसी माफीक जीवके चेतन्यरूप प्रभा का प्रकाश को कर्मरूप बदल झाकासा बना देते है तथपि चैतन्यता नष्ट नही होती है कर्म दल दुर होने से वह ही प्रभा अपना सपुरण प्रकाश को प्रकाशित कर सक्ती है।

(११) गमिक श्रुतिज्ञान-दृष्टिवादादि अगमें एकसे अलावे अर्थात् सदश सदश बाते आति हो उसे गमिक श्रुतिज्ञान कहते है।

(१२) अगमिक श्रुतिज्ञान-अग उपागादि में भिन्न भिन्न विषयोंपर अलग अलग प्रबन्ध हो उसे अगमिक श्रुतिज्ञान कहते है जैसे ज्ञातासूत्रमें पचवीस क्रोड कथाओं थी जिस्मे साढा पचवीस क्रोड तो गमिक कथाओं जो कि उस्मे ग्राम नाम कार्य संबन्ध एकासाही था ओर साढातीन क्रोड कथायो अगमिक थी इसी माफीक और आगमोमे भी तथा दृष्टिवादागमें भी समजना

(१३) अग श्रुतिज्ञान-जिस्मे द्वादशागसूत्र ज्ञान है

(१४) अनाग श्रुतिज्ञान-जिस्के दो भेद है (१) आवश्यक सूत्र (२) आवश्यकसूत्र वितिरिक्तसूत्र जिस्मे आवश्यकसूत्र के छे अध्ययन रूप छे विभाग है यथा सामायिक, चउवीसत्य, वन्दना, पडिक्रमण काउसग्ग पच्चखाण और आवश्यक वितिरिक्त सूत्रोंके दो भेद है एककालिकसूत्र जो लिखते समय पहले या चरम पेहर में समाप्त किये गये थे दुसरे उत्कालिक जो दुसरी तीसरी पेहरमें समाप्त कीये गये थे

कालिक सूत्रोंके नाम इसमुजब है

(१) श्री उतराध्ययनजी सूत्र
(२) श्री दशाश्रुतस्कन्धजी सूत्र
(३) श्री बृहत्कल्पजी सूत्र
(४) श्री व्यवहारजी सूत्र
(५) श्री निशिथजी सूत्र
(६) श्री महानिशिथजी सूत्र
(७) श्री ऋषिभाषित सूत्र
(८) श्री जम्बुद्विप प्रज्ञप्ति सूत्र
(९) श्री द्विपसागर प्रज्ञप्ति सूत्र
(१०) श्री चन्द्रप्रज्ञप्ति सूत्र
(११) श्री क्षुल्कवैमान प्रवृति "
(१२) श्री महा वैमान प्रवृति
(१३) श्री अङ्गचूलिका सूत्र
(१४) श्री वङ्गचूलिका सूत्र
(१५) श्री विवाहाचूलिका सूत्र
(१६) श्री आरूणोत्पातिक सूत्र
(१७) श्री गारूडोत्पातिक सूत्र
(१८) श्री धरणोत्पातिक सूत्र
(१९) श्री वैश्रमणोत्पातिक सूत्र
(२०) श्री वैलंधरोत्पातिक सूत्र
(२१) श्री देवीन्द्रोत्पातिक सूत्र
(२२) श्री उस्थान सूत्र
(२३) श्री समुस्थान सूत्र
(२४) श्री नागपरिआवलिका
(२५) श्री निरयावलिका सूत्र
(२६) श्री कप्पयाजी सूत्र
(२७) श्री कप्पवडिंसिया सूत्र
(२८) श्री पुप्फीयाजी सूत्र
(२९) श्री पुप्फचूजी सूत्र
(३०) श्री वणियाजी सूत्र
(३१) श्री विन्हीदशा सूत्र
(३२) श्री आसीविष भावना "
(३३) श्री दृष्टिविष भावना "
(३४) श्री चरणसुमिण भावना "
(३५) श्री महासुमिण भावना "
(३६) श्री तेजस निसर्गसूत्र
प्रसंगोपात श्री
(३७) श्री वेदनीशतक (व्या०)
(३८) श्री बन्धदशा (व्या०)
(३९) श्री दोगिद्धिदशा (,,)
(४०) श्री दीहदशा (,,)
(४१) श्री संखेवित्तदशा ,,)
(४२) श्री आवश्यक सूत्र

उत्कालीक सूत्रोंके नाम

(४३ श्री दशवैकालिक सूत्र
(४४) श्री कल्पाकल्प सूत्र
(४५) श्री चूल्कल्प सूत्र
(४६) श्री महाकल्प सूत्र
(४७) श्री उत्पातिक सूत्र
(४८) श्री राजप्रश्नेनि सूत्र
(४९) श्री जीवाभिगम सूत्र

(५०) श्री प्रज्ञापना सूत्र
(५१) श्री महाप्रज्ञापना सूत्र
(५२) श्री प्रमादाप्रमाद सूत्र
(५३) श्री नन्दीसूत्र
(५४) श्री अनुयोगद्वार सूत्र
(५५) श्री देवीन्द्रस्तुति सूत्र
(५६) श्री तदुलव्याली सूत्र
(५७) श्री चन्द्रविजय सूत्र
(५८) श्री सूर्यप्रज्ञप्ति सूत्र
(५९) श्री पौरषी मडल सूत्र
(६०) श्री मडलप्रवेश सूत्र
(६१) श्री विद्याचारण सूत्र
(६२) श्री गिगिच्छओ सूत्र
(६३) श्री गणिविजय सूत्र
(६४) श्री ध्यानविभूति सूत्र
(६५) श्री मरणविभूति सूत्र
(६६) श्री आत्मविशुद्धि सूत्र
(६७) श्री वीतराग सूत्र
(६८) श्री सलेखणा सूत्र
(६९) श्री व्यवहार कल्पसूत्र
(७०) श्री चरणविधि सूत्र
(७१) श्रीआउरप्रत्याख्यान सूत्र
(७२) श्री महाप्रत्याख्यान सूत्र

साथमें बारहाअगो के नाम

(७३) श्री आचाराग सूत्र
(७४) श्री सूत्र कृताग सूत्र
(७५) श्री स्थानायाग सूत्र
(७६) श्री समवायाग सूत्र
(७७) श्री भगवतीजी सूत्र
(७८) श्री ज्ञाताधर्मकथाग सूत्र
(७९) श्रीउपासक दशाग सूत्र
(८०) श्री अन्तगड दशाग सूत्र
(८१) श्री अनुत्तरोपपातिक सूत्र
(८२) श्री प्रश्नव्याकरण सूत्र
(८३) श्री विपाक सूत्र
(८४) श्री दृष्टिवाद सूत्र

एव ८४ आगमोंके नाम

इन ८४ आगमोंके अन्दर जो बारहा अंग है उनके अन्दर कीसकीस वातोंका विवरण कीया गया है वह संक्षिप्तसे यहा वतला देते है। यथा —

१ आचाराग सूत्रमें—साधुका आचार है जो श्रमण निग्र न्थोंका सुप्रशस्त आचार गोचर भिक्षा लेनेकी विधि, विनय वेनयिक, कायोत्सर्गादि स्थान, विहार भूम्यादिकमें गमन चंक्र मण (श्रम दूर करनेके लिये उपाश्रयमें जाना), या आहारादिक पदार्थोंका माप, स्वाध्यायमें नियोग, भाषादि समिति, गुप्ति,

शय्या, उपधि भक्त, पान, उद्गमादि (उद्गम उत्पात और एपणा), दोषोकी विशुद्धि, शुद्धाशुद्ध ग्रहण आलोचना, व्रत, नियम, तप और भगवान वीरप्रभुका उज्वल जीवन है। प्रथम श्री आचारांग सूत्रमें दो श्रुतस्कंध इत्यादि शेष ग्रन्थमें

२ सूत्रकृतांग (सूअगडांग) सूत्रमें—स्वसिद्धांत परसिद्धांत, स्वऔरपरसिद्धांत, जीव, अजीव जीवाजीव, लोक अलोक, लोकालोक जीव अजीव, पुण्य पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, बंध और मोक्ष तकके पदार्थों, इतर दर्शनसे मोहित, संदिग्ध नव दीक्षितकी बुद्धिकी शुद्धिके लिये एकसोएंशी क्रियावादिका मत, चौरासी अक्रियावादिका मत, सडसठ अज्ञानवादिका मत, बतीस विनयवादिका मत एकुल मीलकर ३६३ अन्य मतियों के मतकों परिक्षेप करके स्वसमय स्थापन व्याख्यान है दुसरा अंगका दो श्रुतस्कन्ध इत्यादि शेष ग्रन्थमें

३ स्थानांग सूत्रमें—स्वसमयकों, परसमयकों, और उभय समयकों स्थापन, जीवकों अजीवकों, जीवाजीवकों, लोककों, अलोककों, लोकालोककों स्थापन पर्वत, शिखर, कुंट, झाण, कुंड, गुफा, आगर, द्रहे, नदी आदि एकएक बोलसे लगाके दशदश बोलका संग्रह कीया हुवा है जीस्का श्रुतस्कंध १ इत्यादि शेष ग्रन्थमें

४ समवायांग सूत्रमें—स्वसिद्धांत, परसिद्धांत उभय सिद्धांत, जीव अजीव, जीवाजीव लोक अलोक, लोकालोक और एकादिक कितनाक पदार्थोंका एकोतरिक परिवृद्धिपूर्वक प्रतिपादन अर्थात् प्रथम एक संख्यक पदार्थोंका निरुपण पीछे द्विसंख्यक यावत् एकसमर ३-४ यावत् क्रोडाक्रोड पर्यंत अथवा द्वादशांग गणिपिट कका पर्यवोकों प्रतिपादन और तिर्थंकरोंके पूर्वभव मातापिता या दीक्षा, ज्ञान, शिष्य आदि व चक्रवर्त्ती, बलदेव, वासुदेव, प्रति वासुदेवादिकका व्याख्यान है जीस्का श्रुतस्कंध १ इत्यादि शेष ग्रन्थमें

५ व्याख्यान प्रज्ञप्ति —(भगवती) भगवतीसूत्रमें स्वसमय परसमय, स्वपरसमय, जीव, अजीव, जीवाजीव लोक, अलोक, लोकालोक अलग अलग प्रकारका देव राजा राजर्षि और अनेक प्रकारक सदिग्ध पुरुषोंने पुछे हुय प्रश्नोंका श्रीजिनभगवान विस्तार पूर्वक कहा हुवा उत्तर, सो उत्तर, द्रव्य, गुण, क्षेत्रकाल, पर्याय प्रदेश और परिणामका अनुगम निक्षेपण, नय, प्रमाण और विविध सुनिपुण उपक्रमपूर्वक यथास्ति भावना प्रतिपाद कहे जिन्हसे लोक और अलोक प्रकाशित है यह विशाल ससार समुद्र तारनेको समर्थ है, इद्रपूजित है भव्य लोकोंक हृदयका अभिनद्य है, अधकाररूप मेलका नाशक है सुष्ठुदृष्ट है दीपभूत है इहा मति और बुद्धिका वर्धक है जीस प्रश्नोंकी संख्या ३६००० की है जीसमें श्रुतस्कंध इत्यादि शेष यत्रमें

६ ज्ञाता धर्मकथासूत्र में—उदाहरण भूत पुरुषोंका नगर उद्यानो, चैत्यो, वनखडो, राजाओ माता पिता समवसरणो, धर्माचार्यो धर्म कथाओ, यहलौकिक और परलौकिक ऋद्धि विशेषो भोग परित्यागो प्रव्रज्याओ श्रुत परिग्रहो, तपो, उपधानो पर्याआ सलेखणा भक्त प्रत्याख्यानो पादपोपगमनो, देवलोक गमना, सुकुलमा प्रत्ययतारो बोधिलाभो और अतक्रियाओ, इस अगमें दो श्रुत स्कध और आगणीस अध्ययनो है। धर्म कथाका दश वग है जीसमें एक एक धर्मकथामें पाचसो पाचसो आख्यायिकाओ है। एकक आख्यायिकामें पाचसो पाचसो उपाख्यायिकाओ है। एक एक उपाख्यायिकाओंमें पाचसो पाचसो आख्यायिका पाख्यायिकाओ है यह सर्वे मिलके कथा वर्गमें गमिक (सादृश) और अगमिक सामिल है जीसमें गमिय कथाओ छोडके शेष साढा तीन क्रोड कथाआ इस अगमें है शेष यत्रमें देखा।

७ उपाशक—दशांग सूत्रमें उपासको (श्रावको) का नगरा उद्यानो, चैत्यो वनखडो, राजाओ, माता पिताओ, समवसरणो

धर्माचार्या, धर्मकथाओ यहलोकनी और परलोककी ऋद्धी विशेष और श्रावकोंका शीलव्रतो, विरमणो, गुणव्रतो प्रत्याख्यानो, पोषधोपवासो श्रुत परिग्रहो तपो उपधानो, प्रतिमाओ, उपसर्गा, संलेखना भक्त प्रत्याख्यानो पादपोपगमनो देवलोक गमनो, सुकुलमें जन्मो, बोधिलाभ और अतक्रिया, इस अगका श्रुतस्कंध १ है इत्यादि शेष ग्रन्थमें।

अतकृद्दशाग सूत्रमें—अतकृत (अन्तकेवल) प्राप्त पुरुषोंका नगरो उद्यानो, चैत्यो, वनखडो, राजाओ, माता पिता, समव सरणो, धर्माचार्या, धर्मकथाओ, यह लोक और परलोककी ऋद्धि, भोग परित्यागो, प्रव्रज्याओ, श्रुतपरिग्रहो, तपो उपधानो बहुविध प्रतिमाओ, क्षमा, आर्जव, मार्दव सत्य सहित शौच, सत्तर प्रकारको सयम उत्तम ब्रह्मचय, अकिंचनता, तप क्रियाओ, समितिओ, गुप्तिओ, अप्रमादयोग उत्तम स्वाध्याय और ध्यानका स्वरूप, उत्तम सयमको प्राप्त और जित परिषह पुरुषोंको चार प्रकारका कर्मक्षय हुवा बाद उत्पन्न हुवो अत समय केवल ज्ञानको लाभ, मुनिओंका पर्याय काल, पादपोपगमन पवित्र मुनिवर जितना भक्त (भक्तनों) कु त्याग करके अतकृत हुवा इत्यादि इस अंगका श्रुतस्कध एक है इत्यादि शेष ग्रन्थमें

९ अनुत्तरोपपातिक सूत्रमें—अनुत्तरोपपातिकी (मुनिओ)का नगरो, उद्यानो चैत्यो, वनखडो राजाओ, माता पिताओ, समव सरणो, धर्माचार्यो, धर्म कथाओ, यह लौकका और परलोकका ऋद्धि विशेषो, भोग परित्यागो श्रुतपरिग्रहो, तपो उपधानो पर्याय प्रतिमा सलेखना, भक्तपान प्रत्याख्यानो, पादपोपगमनो सुकुलायतारो, बोधि लाभो, और अतक्रियाओ नवमा अगमें १ श्रुतस्कंध है इत्यादि शेष ग्रन्थमें

१० प्रश्न व्याकरण सूत्रमें—एकसो आठ प्रश्नो, एकसो आठ अप्रश्नो, एकसो आठ प्रश्नाप्रश्नो, अगुष्ठ प्रश्नो, बाहु प्रश्नो आदर्श

(काच) प्रश्नो और भी विद्याका अतिशयो तथा नागकुमार और सुवर्ण कुमारकी साथे हुआ दिव्य संवादो इस अंगमें श्रुत स्कंध १ हे इत्यादि शेष ग्रंथमें वर्तमान इस अंगमें पाश्राश्रव पांच संवरका सविस्तार वर्णन है।

११ विपाक–सूत्रमें विपाक संक्षेपसे दो प्रकार दु:ख विपाक (पापका फल) और सुख विपाक (पुण्यका फल) जीसमें दु ख विपाकमें दु खविपाकवालाओका नगरो, उद्यानो, चैत्यो वनखंडो, राजाओ माता पिता समवसरण धर्माचार्यो, धर्म कथाओ, नरक गमनो संसार प्रबंध दु ख परंपरा, और सुख विपाकमें सुख विपाकवालाओका नगरो, उद्यानो चैत्यो वनखंडो राजाओ, माता, पिताओ, समवसरण, धर्माचार्य, धर्मकथा, अलौकिकी और परलौकिकी ऋद्धि विशेषो भोग परित्यागो प्रव्रज्याओ, श्रुत परिग्रहो तपो, उपधानो पर्यायो प्रतिमाओ संलेखनाओ, भक्त प्रत्याख्यानो, पादपोपगमनो, देवलोक गमनो, सुकुलावतारा, बोधिलाभ और अंतक्रियाओ, इस अंगमें इत्यादि शेष ग्रन्थमें।

१२ दृष्टिवाद सूत्रमें –सब पदार्थोकी प्ररूपणा है जीसका अंग पांच है। १ परिकर्म (गणित विशेष तथा छन्द पद, काव्या दिकी रचनाकी संकलना २ सूत्र (दृष्टिवाद संबंधी ८८ सूत्रका विचार) ३ पूर्व (१४ पूर्व) ४ अनुयोग (जिसमें तिर्थंकरोंका च्यवनादि पंचकल्याणक व परिवार तथा ऋषभदेव और अजीत नाथके आंतरामें पाटोनपाट मोक्ष गये थे जीसका अधिकार (५) चूलिका (पूर्वांके उपर चूलिका) दृष्टिवादमें श्रुतस्कंध एक है पूर्व चौदा वत्थू (अध्येन) संख्याता इत्यादि।

इन द्वादशांगीमें प्रत्येक अंगकी, प्रत्येक वाचना है संख्याता व्याख्यानद्वार, संख्याता वेढा जातका छंद, संख्याता श्लोक, संख्याती निर्युक्ति, संख्याति संग्रहणी गाथा, संख्याति परिवृत्ति, संख्यातापद, संख्याता अक्षर, अनंता गमा, अनंतापर्यवा परि तात्रस और अनंता स्थावर इत्यादि सामान्य विशेष प्रकारे श्री

तिर्थंकर भगवानने परुपणा करी है और द्वादशागीमें अनता भाव अनंता अभाव, अनंताहेतु, अनता अहेतु, अनताकारण, अनता अकारण, अनंता जीव, अनताअजीव, अनताभवसिद्धिया, अनता अभव सिद्धिया अनता सिद्धा, अनता असिद्धा इत्यादि भाव है

नोट—कालीक उत्कालीक सूत्रोंकि सिवाय भगवान् ऋषभप्रभुक ८४००० मुनिओंन ८४००० पइन्नावावत् वीर प्रभुक १४०० मुनिओंने १४००० पईन्ना रचे थे अथात जीस तीर्थंकरोंक जीतने मुनि होते है वह उत्पातिकादि स्वय बुद्धिसे एक एक पइन्ना बनाता था।

इनके सिवाय कर्मग्रन्थमें श्रुतिज्ञानके १४ भेदोंके सिवाय २० भेद बतलाये है यथा—

(१) पर्यायश्रुत—उत्पत्तिके प्रथम समयमें लब्धि अपर्याप्ता सूक्ष्म निगोदये जीवोंको जो कुश्रुतका अश होता है उससे दुसरे समयमें ज्ञानका जीतना अश बढता है वह पर्याय-श्रुत है।

(२) पर्याय समासश्रुत—उक्त पर्यायश्रुतके समुदायको अर्थात् दो तीनादि संख्याओंका पर्याय समासश्रुत कहते है।

(३) अक्षरश्रुत—अकारादि लब्धि अक्षरोंमेंसे कीसी एक अक्षरको अक्षरश्रुत कहते है।

(४) अक्षरसमासश्रुत—लब्धयक्षरोंके समुदायको अर्थात् दो तीनादि अक्षरोंका अक्षरसमासश्रुत कहते है।

(५) पदश्रुत—जिस अक्षर समुदायसे पुरा अर्थ मालुम हो वह पद और उसके ज्ञानको पदश्रुत कहते है।

(६) पदसमासश्रुत—पदोंके समुदायके ज्ञानको पदसमासश्रुत कहते है।

(७) सघातश्रुत—गति आदि चौदा मागणाओंमेंसे किसी एक मार्गणाके एक देशके ज्ञानको सघातश्रुत कहते है।

(८) सघातसमासश्रुत - किसी एक मार्गणाके अनेक देशोंका ज्ञानको सघातसमासश्रुत कहते है जैसे गति मागणाके च्यार अवयय है नरकगति, तीर्यंचगति मनुष्यगति देवगति जिसमें एक अवयवका ज्ञान होना उसे संघातसमासश्रुत कहते है।

(९) प्रतिपातिश्रुत—गति इन्द्रिय आदि कीसी द्वारसे ससारथ जीवोंका ज्ञान होना उसे प्रतिपातिश्रुत कहते है।

(१०) प्रतिपातिसमासश्रुति—गति इन्द्रिय आदि बहुतसे द्वारोसे ससारी जीवोंका ज्ञान होना।

(११) अनुयोगश्रुत—' सतपय परुपणा द्रव्य पमार्ण च " इस पदमें कहा हुवा अनुयोगद्वारोमेंसे कीसी एक के द्वारा जीवादि पदार्थोको जानना अनुयोगश्रुत है

(१२) अनुयोगसमासश्रुत-एकसे अधिक दो तीन अनुयागद्वारा जीवादि पदार्थोको जानना उसे अनुयोगसमासश्रुत कहते है।

(१३) प्राभृत-प्राभतश्रुत—दृष्टिवादके अन्दर प्राभत-प्राभृत नामका अधिकार है उनोंसे कीसी एकका ज्ञान होना।

(१४) प्राभृत प्राभृत समासश्रुत - दो तीन च्यारादि प्राभृत प्राभतोंसे ज्ञान होना उसे प्रा० प्रा० समास कहते है।

प्राभृतश्रुत—जैसे एक अध्ययनके अनेक उद्देसा होते है इसी माफीक प्राभृत प्राभृतके विभागरूप प्राभृत है जिस एकसे ज्ञान होना उसे प्राभृत ज्ञान कहते है

(१६) प्राभतसमासश्रुत—उक्त दो तीन च्यारादिसे ज्ञान होना उसे प्राभृतसमासश्रुत कहते है।

(१७) वस्तुश्रुत—कइ प्राभृतके अवयवरूप वस्तु होते है जिनसे एक वस्तुसे ज्ञान होना उसे वस्तुश्रुत

(१८) वस्तुसमासश्रुत—उक्त दो तीन च्यारादि वस्तुवोंसे ज्ञान होना उसे वस्तुसमास कहते है।

(१९) पूर्वश्रुत—अनेक वस्तुवोंसे एक पूर्व होते है उन एक पूर्वका ज्ञान होना उसे पूर्वज्ञान कहते है।

(२०) पूर्वसमासश्रुत —दो तीन पूर्व-वस्तुवोंसे ज्ञान होना उसे पूर्वसमास ज्ञान कहा जाता है।

इसके सिवाय श्रुतज्ञानवाला उपयोग संयुक्त सर्वार्थसिद्ध वमान तककी बातको प्रत्यक्षसे जान सकता है।

एकादशांगका यंत्र.

सख्या	अगनाम	मूलपद सख्या	वर्तमान पद सख्या	कर्त्ता	अध्ययन	उदेशा	टीका सख्या	टीका कर्त्ता	टीका सनत.
१	आचाराग	*१८०००	२५२५	पाचमा गणधर सुधर्मा स्वामिजी	२५	८५	१२०००	शीलाङ्का-चार्य	९३३
२	सूयगडायाग	३६०००	२१००		२३	३३	१२८५०		६३३
३	स्थानायाग	७२०००	३६००		ठा० १०	२१	१४२५०	श्री अभयदेवसूरिजी	११२०
४	समवायाग	१४४०००	१६६७		१	१	३५७४		११२०
५	भगवतीजी	२८८०००	१५७५२		श ४१ / १३८	१०००० / १६२५	१८६१६		११२०
६	ज्ञाताधर्म कथा	५७६०००	५४००		१९ / २०६	०	३८००		११२०
७	उपाशकदशाग	११५२०००	८५२		१०	०	८००		११२०
८	अन्तागडदश०	२३०४०००	८९९		व ८	९०	४००		११२०
९	अनुत्तरोववाइ	४६०८०००	१९२		व ३	३३	१००		११२०
१०	प्रश्नव्याकरण	९२१६०००	१२५६		४५ / १०	०	४६००		११२०
११	विपाक	१८४३२०००	१२१६		२०	०	९००		११२०

* एक पदक अक्षर १६३४८३०७८८६ इतन होते है जिस्कों ३२ अक्षरके श्लोक गीणा जावेतों एक पदके ५१०८८४६२१॥ श्लोक होते है एस १८००० पद श्री आचारागजासूत्रके थ इसी माफीक सर्व आगमोका समज लेना।

१४ पूर्वका यंत्र.

पूर्वोका नाम	पद संख्या	कर्ता	वस्तु	चूल वस्तु	मादीहस्ति	विषय
उत्पाद	क्रोड	सुधर्मास्वामी पांचमा गणधर	१	४	१*	सर्व द्रव्यगुण पर्यायका उत्पन्न ओर नाश
अग्रायणीय	९६ लाख		१४	१२	२	सर्व द्रव्यगुण पर्यायका आगपणा
वीर्य	७० ,,		८	८	४	जीवोंके वीर्यका व्याख्यान
आस्तिनास्ति	१ क्रोड		१८	१०	८	आस्तिनास्तिका स्वरूप व स्याद्वाद
ज्ञानप्रवाद	२ ,,		१२	०	१६	पांच ज्ञानका व्याख्यान
सत्य प्र०	२६		२	०	३२	सत्यसंयमका व्याख्यान
आत्मा प्र०	१ क्रो ८० क्रो		१६	०	६४	नय प्रमाण दर्शन सहित आत्माका स्वरूप
कर्म प्र	८४ लाख		३०	०	१२८	कर्मप्रकृति स्थिति, अनुभाग मूल उत्तर प्रकृति
प्रत्याख्यानप्र	१ क्रो १० ह		२०	०	२५६	प्रत्याख्यानका प्रतिपादन
विद्या प्र०	२६ क्रोड		१५	०	५१२	विद्याके अतिशयका व्याख्यान
कल्याणक प्र०	१ क्रोड		१२	०	१०२४	भगवानका कल्याणकका व्याख्यान
प्राणावाय	६ क्रो		१३	०	२०४८	भेद सहित प्राणका विषयका व्याख्यान
क्रिया विशाल	९ क्रो ५० ला		३०	०	४०९६	क्रियाका व्याख्यान
लोकबिंदु सार	१२ लाख		२५	०	८१९२	बिंदुक अंदर लोकका स्वरूप सर्व अक्षर सन्निपात

* एक हस्ति अंबाडी सहित दो इतना ढिग शाहीका करे उतनी शाहीसे प्रथम पूर्व लिखा जाता है इसी माफिक क्रमशः २-४-८-१६-३२-६४-१२८-२५६-५१२-१०२४-२०४८-४०९६-८१९२ हस्तियोंकि शाहिसे १४ पूर्व लिखे जाते है कूल १६३८३ हस्ती

इन द्वादशांगीकों भूतकालमें अनंतेजीवों विराधना करके चतुर्गति ससारके अंदर परिभ्रमण कीया वर्तमान कालमें संख्याते जीव परिभ्रमण करते है और भविष्य कालमें अनंतेजीव परिभ्रमण करेगें

इन द्वादशांगीकी भूतकालमें अनंतेजीवों आराधना करके ससाररूपी समुद्रकों पार पहोंचे (मोक्ष गये) और वर्तमान कालमें संख्याते जीव मोक्ष जाते है (महाविदेह अपेक्षा) और भविष्यमें द्वादशांगीकों आराधन करके अनंते जीव मोक्ष जावेगें

यह द्वादशांगी भूतकालमें थी, वर्तमान कालमें है और भविष्य कालमें रहेगी जैसे पचास्तिकायकी माफिक निश्चल नित्य, शाश्वती अक्षय अव्याबाध, अवस्थित रहेगी

श्रुतज्ञानका संक्षेपसे चारभेद है द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव

(१) द्रव्यसे उपयोग युक्त श्रुतज्ञान सर्व द्रव्यकों जाने देखे.

(२) क्षेत्रसे उपयोग सहित श्रुतज्ञान सर्व क्षेत्रकों जाने देखे

(३) कालसे उपयोग सहित श्रुतज्ञान सर्व कालकों जाने देखे

(४) भावसे उपयोग सहित श्रुतज्ञान सर्व भावकों जाने देखे

चौदा प्रकारके श्रुतिज्ञानके अन्तर्मे सूत्रका व्याख्या करनेकी पद्धति बतलाइ है व्याख्यानदाताओंको प्रथम मूल सूत्र कहना चाहिये तदान्तर मूल सूत्रका शब्दार्थ तदान्तर निर्युक्ति तदान्तर विषय विस्तारसे प्रतिपादनार्थ टीका, चूर्णी भाष्य तथा हेतु दृष्टान्त युक्ति द्वारा स्पष्टिकरण करना यह व्याख्यानकी पद्धति है।

इति श्रुतज्ञान इति परोक्षज्ञान

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम

—※—

थोकडा नम्बर ६७

गूत्रश्री पन्नवणाजी पद ३३ अवधिज्ञानाधिकार

भव १ विषय २ संस्थान ३ अभ्यान्तरबाह्य ४ देशसर्व ५ हीयमान वृद्धमान अवस्थीत ६ अनुगमि अनानुगमि ७ प्रतिपाति अप्रतिपाति ८ ।

(१) भव-नारकि देवतावोंको अवधिज्ञान भवप्रत्य होते है और मनुष्य तथा तीर्यंच पाचेन्द्रियको क्षायपशमसे होते है ।

(२) विषय-अवधिज्ञान अपनी विषयसे कितने क्षेत्रको देख सकते है जान सकत है ।

(१) रत्न प्रभा नारकि	जघन्य	३।	गाउ	उत्कृष्ट	४	गाउ
(२) शर्करा प्रभा नारकि		३	,,	,	३॥	;
(३) वालुका प्रभा नारकि	,	२॥	,,	,,	३	,
(४) पङ्क प्रभा नारकि	,,		,	,	२॥	,
(५) धुम प्रभा नारकि	,,	१॥	,	,,	२	,,
(६) तम प्रभा नारकि	,	१	,,	,	१॥	,,
(७) तमस्तमा प्रभा नारकि	,,	०॥	,,	,	१	,

असुरकुमार के देव ज० २५ योजन उ० उर्ध्व लोकमे सौधर्म कल्प अधोलोकमे तीसरी नरक तीर्यगलोगमें असंख्याते द्विप समुद्र अवधिज्ञानस जाने देखे । नागादि नौजातिके देव० ज० २५ योजन उ० उर्ध्वलोकमें ज्योतीषीयोंके उपरका तला अधोलोकमे पहली नरक तीर्यगलोकमें संख्याते द्विपसमुद्र वाणव्यन्तर देव और ज्योतिषी देव ज० उ० संख्यात द्विप समुद्र जाने सौधर्मशान कल्पके देव जघन्य आंगुलके असंख्यातमे भाग उ० उर्ध्व स्वध्वजा पताका अधोमें पहली नारक तीर्यगलोकमें असंख्याते द्विपसमुद्र

एव सनत्कुमार महीन्द्रदेव परन्तु अधोलोकमें दूसरी नरक जाने एव ब्रह्म और लातकदेव परन्तु अधोलोकमें तीसरी नरक जाने एव महाशुक्र सहस्रदेव परन्तु अधोलोकमें चोथी नरक जाने एव आणत प्राणत अरण्य अच्युतदेव परन्तु अधोलोक पाचमी नरक जाने एव नौग्रीवेगक देव परन्तु अधोलोकमें छट्टी नरक जाने एव च्यारानुत्तर वैमान परन्तु अधोलोकमें सातमी नरक जाने और सर्वार्थसिद्ध वैमानके देव, लोकमिश्र याने सर्व त्रसनालिको जाने यह बात ख्यालमें रखना कि सब देव उर्ध्व तो अपने अपने वैमानके ध्वजा पताका और तीर्यगलोकमे असंख्याते द्विप समुद्र देखता है। तीर्यच पाचेन्द्रिय ज० आगुलके असंख्यातमे भाग उ० असंख्याते द्विप समुद्र जाने। मनुष्य ज० आगु० अस० भाग उ० सर्व लोक जाने देखे और लोक जैसे असंख्यात खड अलोकर्में भी ज्ञान सक्ते है। परन्तु वहा रूपी पदार्थ न होनेसे मात्र विषय ही मानी जाती है

(३) संस्थान-अवधिज्ञानद्वार जिस क्षेत्रको जानते है वह कौन आकारसे देखते वह कहते है नारकि तीपायाके संस्थान भुवनपति पालाके संस्थान, व्यन्तर देव ढोलके संस्थान ज्योतिषी झालरके संस्थान बारह देवलोकके देव उर्ध्व मर्दंग के संस्थान, नौग्रीवेग पुष्पोंकि चगगेर आकार, पाचानुत्तर वैमानके देव, कुमारिकाके कंचुवे संस्थान मनुष्य और तीर्यच अनेक संस्थानसे जानते है।

(४) नारकी देवताओमें अवधिज्ञान है उसे अभ्यान्तर ज्ञान कहते है कारण वह परभवसे आते है तब ज्ञान साथमें ले के आते है। तीर्यचको बाह्य ज्ञान अर्थात् वह उत्पन्न होनेके बाद क्षोपशम भावसे ज्ञान होता है। मनुष्यमें दोनो प्रकारसे ज्ञान होता है अभ्यान्तर ज्ञान और बाह्यज्ञान।

(५) नारकि देवता और तीर्यच पाचेन्द्रियके ज्ञान है वह देशसे होता है (मर्यादा सयुक्त) और मनुष्य के देश और सर्व दोनो प्रकारसे होता है

(६) नारकि देवताओंय ज्ञान है सो अवस्थीत है कारण यह भवप्रत्य ज्ञान है और मनुष्य तीर्यचके ज्ञान तीनो प्रकारका है हियमाम वृद्धमान और अवस्थीत।

(७) नारकि देवताओंक अवधिज्ञा न अनुगामि है यान जहा जाते है वहा साथमें चलता है और मनुष्य तीर्यचमें अनुगामि अनानुगामि दोनो प्रकारसे होता है।

(८) नारकि देवताओंके अवधिज्ञान अप्रतिपाति है कारण यह भवप्रत्य होता है और तीर्यच पाचेन्द्रियमें प्रतिपाति है मनुष्यके दोनो प्रकारका होता है प्रतिपाति अप्रतिपाति कारण मनुष्यमें केवलज्ञान भी होता है परम अवधिज्ञान भी होता है इति

सेव भंते सेव भंते तमेव सच्चम्

थोकडा नम्बर ६८

सूत्रश्री भगवतीजी शतक ८ उ० २ पांच ज्ञानकि लब्धि।

द्वारोंके नाम जीव, गति, इन्द्रिय, काय सूक्ष्म, पर्याप्ति भवार्थी, भवसिद्धि, सन्नी, लब्धि ज्ञान, योग, उपयोग, लेश्या, कषाय, वेद, आहार नाण, काल, अन्तर अल्पाबहुत्व, ज्ञानपाच मतिज्ञान, श्रुतिज्ञान, अवधिज्ञान, मन पर्यवज्ञान केवलज्ञान, तथा अज्ञान तीन मतिअज्ञान, श्रुतिअज्ञान, विभंगज्ञान, चन्द्र–खदा म हो वहा भजना, स्यात् हो स्यात न भी हो स्यात् कम भी हो जहा नि–नियम निश्चय कर होता ही है।

संख्या.	मार्गणा.	पांच ज्ञानसे.	तीनाज्ञानसे
१	समुचय जीवमे	५ भजना	३ भजना
२	पहली नरक १० भुवनपति व्यन्तरमें	३ नियमा	३ भजना
३	छे नरक ज्योतिषी १२ देवलोक नौग्रीवैक	३ नियमा	३ नियमा
४	पांचानुत्तर वैमानमें	३ नियमा	० ० ०
५	पांच स्थावर असज्ञी मनुष्यमें	० ० ०	२ नियमा
६	तीन वैकलेन्द्रिय असज्ञी तीर्यंचमे	२ नियमा	२ नियमा
७	सज्ञी तीर्यंच पाचेन्द्रियमे	३ भजना	३ भजना
८	संज्ञी मनुष्यमे	५ भजना	३ भजना
९	श्री सिद्ध भगवानमें	१ नियमा	० ० ०
१०	नरकगतिऔर देवगतियोंमें	३ नियमा	३ भजना
११	तीर्यंचगतियोंमे	२ नियमा	२ नियमा
१२	मनुष्य गतियोंमें	३ भजना	२ नियमा
१३	सिद्धगतियोंमें	१ नियमा	० ० ०
१४	सेन्द्रिय पाचेन्द्रियमें	४ भजना	३ भजना
१५	तीन वैकलेन्द्रियमे	२ नियमा	२ नियमा
१६	एकेन्द्रियमें	० ० ०	२ नियमा
१७	अनेन्द्रियमे	१ नियमा	० ० ०

५५	तस्स लद्धियामें	४ भजना	३ भजना
५६	मतिश्रुति अज्ञानके लद्धियोमें	० ० ०	३ भजना
५७	तस्स अलद्धियोमें	५ भजना	३ भजना
५८	विभंग ज्ञानक लद्धियामें	० ० ०	३ नियम
५९	तस्स अलद्धियामें	५ भजना	२ नियमा
६	दर्शनके लद्धियामें	५ भजना	३ भजना
६१	सम्यग्दर्शनके लद्धियामें	५ भजना	० ० ०
६२	तस्स अलद्धियामें	० ० ०	३ भजना
६३	मिथ्या-मिश्रदर्शन लद्धियामें	० ० ०	३ भजना
६४	तस्सलद्धियामे	५ भजना	३ भजना
६५	चारित्र लद्धियामें	५ भजना	० ० ०
६६	तस्स अलद्धियामें	४ भजना	३ भजना
६७	सा छ० प० सू० चारित्र लद्धियोमें	४ भजना	० ० ०
६८	तस्स अलद्धियामें	४ भजना	३ भजना
६९	यथाख्यात चा० लद्धियामें	५ भजना	० ० ०
७०	तस्सालद्धियामें	४ भजना	३ भजना
७१	चारित्रा चारित्रके ल० में	३ भजना	० ० ०
७२	तस्स अलद्धियामें	५ भजना	३ भजना

७२	दानालाभ लाभ० भोग उपभोग वीर्य लब्धि के लब्धियामें ० ० ०	० ० ०	५ भजना	३ भजना
७४	तस्सालब्धियामें		१ नियमा	० ० ०
७५	बाललब्धिके लब्धियामें		३ भजना	३ भजना
७६	तस्स अलब्धियामें		५ भजना	० ० ०
७७	पंडित लब्धिके लब्धियामें		५ भजना	० ० ०
७८	तस्स अलब्धियामें		४ भजना	भजना
७९	बाल पंडित ल० ल० में		३ भजना	० ० ०
८०	तस्स अलब्धियामें		५ भजना	३ भजना
८१	सेन्द्रिय स्पर्शेन्द्रियके लब्धियामें		४ भजना	३ भजना
८२	तस्सालब्धियामें		२ नियमा	० ० ०
८३	श्रोत्रेन्द्रिय० चक्षु० घ्राणेन्द्रिय ल० में		४ भजना	३ भजना
८४	तस्सालब्धियामें		३ नियमा	२ नियमा
८५	रसेन्द्रियके लब्धियामें		४ भजना	३ भजना
८६	तस्सालब्धियामें		२ नियमा	२ नियमा
८७	मत्यादि च्यार ज्ञानमें		४ भजना	० ० ०
८८	केवलज्ञानमें		१ नियमा	० ० ०
८९	चक्षु अचक्षुदर्शमें		४ भजना	३ भजना
९०	अवधि दर्शनमें		३ भजना	३ नियमा

अनंतगुणे । दोनो सामिल ॥ सर्वस्तोक मन पर्यय ज्ञानके पर्यव विभंगज्ञानके पर्यव अनंतगुणे अवधिज्ञानके पर्यव अनंतगुणे श्रुतिअज्ञानके पर्यव अनंतगुने श्रुतिज्ञानके पर्यव अनंतगुणे मति अज्ञानके पर्यव अनतगुणे मतिज्ञानके पर्यव अनतगुणे केवल ज्ञानके पर्यव अनतगुणे ॥ इतिशम्।

सेव भंते सेव भंते तमेव सच्चम्

इति श्री शीघ्रबोध भाग ६ ठा समाप्तम्

अथश्री

शीघ्रबोध भाग ७ वां.

थोकडा नम्बर ६६

इस थोकडे में जीवों के प्रश्न लिखे जाते है जीसकों पढनेसे तर्कशक्ति बहुत बढ जाति है अनेक आगमोंका सुक्ष्मज्ञान कि भी प्राप्ती होती है स्याद्वाद रहस्यका भी ज्ञान हो जाता है और संसार समुद्रमें अनेक प्रकारकि आपतियोंसे सहज ही से मुक्त हो जाता है बुद्धिबल इतना तो जोरदार हो जाता है कि इस थोकडेकों उपयोग पूर्वक कण्ठस्थ करलेनेके बाद कैसा ही प्रश्न क्यों न हो वह फौरन ही समझमे आजायगा ओर स्याद्वादसे उस्का उत्तर भी वह ठीक तौरसे दे सकेगा वास्ते आप इस थोकडेको कण्ठस्थ कर अनुभव रसका आनन्द लिजिये । यथा

जीवोंके भेद	कोनसे कोनसे स्थानपर मिलते हैं उनोंके नाम कि मार्गणा निचे मुजब है	नरकके भेद १४	तीर्यंचके भेद ४८	मनुष्यके भेद ३०३	देवतोंके भेद १९८
१	अधोलोकन क्वलीमें	०	०	१	०
२	निश्चय एकावतारीमें	०	०	०	२
३	तेजोलेशी एकेन्द्रियमे	०	३	०	०

४	पृथ्वीकायमें	०	४	०	०
५	मिश्रदृष्टि र्तियंचमे	०	५	०	०
६	उर्ध्वलोकि दवीमे	०	०	०	६
७	नरकर पर्याप्तामें	७	०	०	०
८	दोयोगवाले तीर्यंचमें	०	८	०	०
६	उर्ध्वलोक नोगभज तेजोलेशीमें	०	३	०	६
१०	एकान्त सम्यग्द्रष्टिमें	०	०	०	१०
११	वचनयोगी चक्षुइन्द्रियतीर्यंचमें	०	११	०	०
१२	अधोलोकके गर्भजम	०	१०	२	०
१३	वचनयोग तीर्यंचमें	०	१३	०	०
१४	अधोलोक वचनयोगी औदारीक श०	०	१३	१	०
१५	नजीम	०	०	१५	०
१६	उर्ध्वलोक पाचेन्द्रियतजोलेशीमें	०	१०	०	६
१७	सम्यग्द्रष्टि घ्राणेन्द्रियतीर्यंचमें	०	१७	०	०
१८	सम्यग्द्रष्टि तीर्यंचमें	०	१८	०	०
१६	उर्ध्वलोकके तेजोलेशीमें	०	१३	०	६
२०	मिश्रदृष्टिाभजमें	०	५	१५	०
२१	औदारीकसे वैक्रियकरनवालोमें	०	६	१५	०
२२	एकेन्द्रियजीवोमें	०	२२	०	०
२३	अधोलोकके मिश्रदृष्टिमें	७	५	१	१०

२४	घ्राणेन्द्रिय तीर्यचमें	०	२४	०	०
२५	अधोस्वचन योगीदेवोंमें	०	०	०	२५
२६	त्रसतीर्यचमें	०	२६	०	०
२७	शुक्लेशी मिश्रदृष्टिमें	०	५	१५	७
२८	तीर्यच एक सहननवालोंमें	०	२८	०	०
२९	अधोलोक त्रस औदारीकमें	०	२६	३	०
३०	एकान्तमिथ्यात्वी तीर्यचमें	०	३०	०	०
३१	अधोलोक पुरुपवेद भापकमें	०	५	१	२५
३२	पद्मलेशीमिश्र दृष्टिमें	०	५	१५	१२
३३	पद्मलेशी वचन योगीमें	०	५	१५	१३
३४	उर्ध्वलोकके एकान्तमिथ्यात्वीमें	०	२८	०	६
३५	अवधिदर्शन औदारीक श० में	०	५	३०	०
३६	उर्ध्वलोक एकान्त नपुसकमें	०	३६	०	०
३७	अधोलोक पाचेन्द्रिय नपुसकमें	१४	२०	३	०
३८	अधोलोकके मनयोगीमें	७	५	१	२५
३९	अधोलोक एकान्त असज्ञीमें	०	३८	१	०
४०	औदारीक शुक्लेशीमें	०	१०	३०	०
४१	शुक्लेशी सम्यग्दृष्टि अभापक	०	५	१५	२१
४२	शुक्लेशी वचनयोगीमें	०	५	१५	२२
४३	उर्ध्वलोकके मनयोगीमें	०	५	०	३८

४४	शुक्ललेशी देवताओंमें	०	०	०	४४
४५	कर्मभूमि मनुष्योंमें	०	०	४५	०
४६	अधोलोक वचन योगीमें	७	१३	१	२५
४७	उर्ध्वलोक शुक्ललेशी अवधिज्ञान	०	५	०	४२
४८	अधोलोक त्रसअभापक	७	१३	३	२५
४९	उर्ध्वलोक शुक्ललेशी अवधिदर्शन	०	५	०	४४
५०	ज्योतिपीयोंकि अगतिमें	०	५	४५	०
५१	अधोलोकके औदारीकमें में	०	४८	३	०
५२	उर्ध्वलोक शुक्ल० सम्यग्दृष्टिमें	०	१०	०	४२
५३	अधोलोक एकान्त नपुसक वेदमें	१४	३८	१	०
५४	उर्ध्वलोक शुक्ललेशीमें	०	१०	०	४४
५५	अधोलोक बादर नपुसकमें	१४	३८	३	०
५६	तीर्यग्लोक मिश्रदृष्टिमें	०	५	१५	३६
५७	अधोलोक पर्याप्तामें	७	२४	१	२५
५८	अधोलोक अपर्याप्तामें	७	२५	२	२५
५९	कृष्णलेशी मिश्रदृष्टिमें	३	५	१५	३६
६०	अकर्मभूमिसज्ञीमें	०	०	६०	०
६१	उर्ध्वलोक अनाहारीमें	०	२३	०	३८
६२	अधोलोक एकान्त मिथ्यात्वीमें	१	३०	१	३०
६३	अधो० उर्ध्वलोकके देवामरमें	०	०	०	६३

६४	पद्मलेशी सम्यग्द्रष्टिमें	०	१०	३०	७४
६५	अधोलोग तेजोलेश्यामें	०	१३	२	५०
६६	पद्मलेशीमें	०	१०	३०	२६
६७	मिश्रदृष्टि दृवतोमें	०	०	०	६७
६८	तेजोलेशीमिश्रदृष्टिमें	०	५	१५	४८
६९	उर्ध्वलोक वादरसास्वतोमें	०	३१	०	३८
७०	अधोलोकके अभावपमें	७	३५	३	७५
७१	अधोलोक अवधिदर्शनमें	१४	५	२	५०
७२	तीर्यग्लोकक दृवताओंमें	०	०	०	७२
७३	अधोलोकक बादरमार्गोवालोमें	७	३८	३	७५
७४	मिश्रदृष्टिनोगर्भजमें	७	०	०	६७
७५	उर्ध्वलोकये अवधिज्ञानमें	०	५	०	७०
७६	उर्ध्वलोकये दृवताओंमें	०	०	०	७६
७७	अधो० चक्षुइन्द्रियनोगर्भजमें	१४	१२	१	५०
७८	उर्ध्व० नोगर्भज सम्यग्द्रष्टिमें	०	८	०	७०
७९	उर्ध्वलोकक सास्वतोमें	०	४१	०	३८
८०	धातकिखण्डका त्रसमें	०	२६	५४	०
८१	सम्यग्द्रष्टि दृवतोंके पर्याप्तामें	०	०	०	८१
८२	शुक्ललेशी सम्यग्द्रष्टिमें	०	१०	३०	४२
८३	अधोलोक मरणेवालोमें	७	४८	३	२९

८४	शुक्लेशी जीवोंमें	०	१०	३०	४४
८५	अधो० कृष्णालेशीत्रसमें	६	२६	३	५०
८६	उर्ध्वलोकके पुरुषवेदमें	०	१०	०	७६
८७	उर्ध्वलोक घ्राणेन्द्रियसम्यग्द्रष्टिमें	०	१७	०	७०
८८	उर्ध्व० सम्यग्द्रष्टिमें	०	१८	०	७०
८९	अधो० चक्षुइन्द्रियमें	१४	२७	३	५०
९०	मनुष्य सम्यग्द्रष्टिमें	०	०	९०	०
९१	अधोलोकके घ्राणेन्द्रियमें	१४	२४	३	५०
९२	उर्ध्व० त्रसमिथ्यात्वीमें	०	२६	०	६६
९३	अधोलोकके त्रसमें	१४	२६	३	५०
९४	देवतामिथ्यात्वीपर्याप्तामें	०	०	०	९४
९५	नोगर्भजाभावक सम्यग्द्रष्टिमें	६	८	०	८१
९६	उर्ध्वलोकके पाचेन्द्रियमें	०	२०	०	७६
९७	अधो० कृष्णालेशीबादरमें	६	३८	३	५०
९८	धातकीखंडके प्रत्यक शरीरमें	०	४४	५४	०
९९	वचनयोगीदेवताओंमें	०	०	०	९९
१००	उर्ध्व० प्र० शरीरीबादरमिथ्यात्वी	०	३४	०	६६

थोकडा नंबर ७०

१०१	वचनयोगीमनुष्यमें	०	०	१०१	०
१०२	उर्ध्वलोकके त्रसमें	०	२६	०	७६
१०३	अधोलोकके नोगर्भजमें	१४	३८	१	५०
१०४	एकान्त मिथ्या० मास्वतोंमें	०	३०	५६	१८
१०५	अधो० के बादमें	१४	३८	३	५०
१०६	मनयोगी गर्भजमें	०	५	१०१	०
१०७	अधोलोकके कृष्णलेशीमें	६	४८	३	५०
१०८	औदारीक श० सम्यग्दृष्टिमें	०	१८	९०	०
१०९	कृष्ण० वैक्रिय० नोगर्भजमें	६	१	०	१०२
११०	उर्ध्वलोक बादर प्र० शरीरमें	०	३४	०	७६
१११	अधो० के प्रत्येक शरीरमें	१४	४४	३	५०
११२	उर्ध्वलोकके मिथ्यात्वीमें	०	४६	०	६६
११३	वचनयोगीघ्राणेन्द्रियऔदारीकमें	०	१२	१०१	०
११४	औदारी० वचनयोगीमें	०	१२	१०१	०
११५	अधोलोकमें	१४	४८	३	५०
११६	मनुष्यापर्याप्ता मरनेवालोंमें	०	०	११६	०
११७	क्रियावादीसमोसरण अमरमें	६	०	३०	८१
११८	उर्ध्वलोक प्रत्येक शरीरमें	०	४२	०	७६

११६	घ्राणेन्द्रिय मिश्रयोगसास्वतमें	७	१२	१९	८९
१२०	एकान्त असज्ञी अपर्याप्तामें	०	१९	१०१	०
१२१	विभगज्ञान मरनेवालोंमें	७	९	१९	६४
१२२	कृष्णालेशीवैक्रय० त्रिवेन्में	०	९	१९	१०२
१२३	तीनशरीरीऔदारीक सास्वतोंमें	०	३७	८६	०
१२४	लवणसमुद्रव घ्राणेन्द्रियसास्वतोंमें	०	१२	११२	०
१२५	लवणसमु० के तेजोलेशीमें	०	१३	११२	०
१२६	मरणेवाले गर्भेज जीवोंमें	०	१०	११६	०
१२७	वैक्रयशरीर मरनेवालोंमें	७	६	१९	६६
१२८	देवीमें	०	०	०	१२८
१२९	एकान्त असज्ञी बादरमें	०	२८	१०१	०
१३०	लवणसमु० त्रसमिश्रयोगीमें	०	१८	११२	०
१३१	मनुष्य नपुसकवेदमें	०	०	१३१	०
१३२	सास्वता मिश्रयोगीमे	७	२९	१९	८९
१३३	मनयोगी सम्यग्द्रष्टि त्रस भववालोंमें	७	९	४९	७६
१३४	बादर औदारीक सास्वतोंमें	०	३३	१०१	०
१३५	प्र० शरीरी एकान्त असज्ञीमें	०	३४	१०१	०
१३६	तीनलेशी औदारीशरीरमें	०	३५	१०१	०
१३७	क्रियावादी असास्वतोंमें	६	५	४५	८१
१३८	मनयोगी सम्यग्द्रष्टिमें	७	९	४५	८१

१३६	औदारीकनोर्गभजमें	०	३८	१०१	०
१४०	कृष्णलेशी अभग्मे	३	०	८६	९१
१४१	अवधिन्दर्शन मरनेवालोंमें	७	९	२०	६६
१४२	पाचेन्द्रिय सम्यक् ० मरनेवालोंमें	६	१०	४९	८१
१४३	एकान्तनपुसक बादरमें	१४	२८	१०१	०
१४४	नोगर्भेज सास्वतामें	७	३८	०	६६
१४५	अपर्याप्ता सम्यग्द्रष्टिमे	६	१३	४९	८१
१४६	अमनोगर्भेज एकान्तमिथ्या० में	१	८	१०१	३६
१४७	लवणसमुद्रके अभापकमें	०	३९	११२	०
१४८	त्रिवद वैक्रियशरीरमें	०	९	१९	१२८
१४९	सन्नी एकान्तमिथ्यात्वीमें	१	०	११२	३६
१५०	तीर्यग्लोकके वचनयोगीमें	०	१३	१०१	३६
१५१	तीर्यग्लोग पाचन्द्रियनपुसकमें	०	२०	१३१	०
१५२	तीर्यग्लोगपाचन्द्रियसास्वतोंमें	०	१९	१०१	३६
१५३	एकान्त नपुसक वेदमें	१४	३८	१०१	०
१५४	तजोलेशीवचनयोगी सम्यक्० में	०	९	१०१	४८
१५५	तीर्यग् प्र० शरीरीबादरपर्याप्तामें	०	१८	१०१	३६
१५६	तीयग्बादर पर्याप्तामें	०	१६	१०१	३६
१५७	मनुष्य एकान्तमिथ्यात्वी अपर्याप्तामे	०	०	१९७	०
१५८	नोगर्भेज एकान्तमिथ्याबादर में	१	२०	१०१	३६

१५९	तीयक्० प्र० शरीरीपर्याप्तामें	०	२२	१०१	३६
१६०	ती० कृष्णलेशीसम्यग्द्रष्टिमें	०	१८	६०	९२
१६१	ती० प पर्याप्तामें	०	२४	१०१	३६
१६२	द्वनासम्यग्द्रष्टियोंमें	०	०	०	१६२
१६३	त्रिवेद अवधिदर्शनमें	०	९	३०	१२८
१६४	प्र० शरीरीनोगर्भज एकान्तमिथ्या०	१	२६	१०१	३६
१६५	पाचेन्द्रिय नपुसक्वेदमें	१४	२०	१३१	०
१६६	अभापक मरणवालोंमें	०	३५	१३१	०
१६७	कृष्णलेशी घ्राणेन्द्रिय वचनयोगी	३	१२	१०१	५१
१६८	कृष्णलेशी वचनयोगीमें	३	१३	१०१	५१
१६९	ती० नोगर्भजकृष्णलेशी त्रसमें	०	१६	१०१	५२
१७०	तजोलेशीवचनयोगीमें	०	५	१०१	६४
१७१	नो० कृ० त्रसमरनवालोंमें	३	१६	१०१	५१
१७२	कृष्णलेशीत्रिवेद सम्यक्०	०	१०	६०	७२
१७३	तजोलेशीअभापकमें	०	८	१०१	६४
१७४	नोगर्भजकृष्णले० अपर्याप्तामें	३	१६	१०१	५१
१७५	औदारीक शरीर च्यारलेशीमें	०	३	१७२	०
१७६	लन० त्रस एकान्तमिथ्यात्वीमें	०	८	१६८	०
१७७	तीय० पाचेन्द्रियसम्यग्द्रष्टिमें	०	१५	६०	७२
१७८	तीय० चक्षुइन्द्रिय सम्यग्द्रष्टिमें	०	१६	६०	७२

१७९	तीर्य० मनु० नपुसकवन्में	०	४८	१३१	०
१८०	तीर्य० सम्यक्‌दृष्टिमें	०	१८	६०	७२
१८१	नोगर्भज चक्षु० सम्यग्दृष्टिमें	१३	६	०	१६२
१८२	नो० घ्राणेन्द्रिय सम्यग्दृष्टिमें	१३	७	०	१६२
१८३	नो० सम्यग्दृष्टिमें	१३	८	०	१६२
१८४	मिश्रयोगी देवता वैक्रियम	०	०	०	१८४
१८५	कृष्णलेशी सम्यग्दृष्टिमें	३	१८	६०	७२
१८६	निलजशी सम्यग्दृष्टिम	६	१८	६०	७२
१८७	अभाषकमनुष्य एकसस्थानीम	०	०	१८७	०
१८८	विभगज्ञानी ग्वनाश्रोमें	०	०	०	१८८
१८९	तीय० नोगर्भज त्रसम	०	१६	१०१	७२
१९०	लवणासमुद्रक चक्षुइन्द्रियमे	०	२२	१६८	०
१९१	तीयच० कृष्णलेशीनोगर्भजम	०	१८	१०१	७२
१९२	लवणा० घ्राणेन्द्रियमें	०	२४	१६८	०
१९३	समुच्चयनपुसकमें	१४	४८	१३१	०
१९४	लवणा० त्रसजीवोंम	१०	२६	१५८	०
१९५	सम्यग्दृष्टि वैक्रियशरीरमे	१३	०	१९	१६२
१९६	तेजोलेशी सम्यग्दृष्टिमें	०	१०	६०	६६
१९७	एकवेदीचक्षुइन्द्रियमें	१४	१२	१०१	७०
१९८	एकान्तमिथ्यात्वी अभाषकमे	१	२२	१५७	१८

१९९	नोगभजवैक्रयमिश्रयोगीमें	१४	१	०	१८४
२००	वचनयोगीतीनशरीरीम	७	८	८६	९९

थोकडा नम्बर ७१

२०१	एकन्द्री त्रसजीवोम	१४	१६	१०१	७०
२०२	नोगर्भेज विभगज्ञानीम	१४	०	०	१८८
२०३	नो० वैक्रय मिथ्यात्वीम	१४	१	०	१८८
२०४	एकान्त मिथ्या० तीनशरीरीम	०	२९	१९७	१८
२०५	एकान्त मिथ्या० मरनवालोम	०	३०	१९७	१८
२०६	लवण समुन्द्र बादरमें	०	२८	१६८	०
२०७	मनयोगी मिथ्यात्वीमें	७	९	१८	९४
२०८	घणा भववाले अवधिज्ञानम	१३	९	३०	१६०
२०९	समु० सख्यातकालक त्रसमरनवाल	१	२६	१३१	९१
२१०	एकान्तसज्ञी मिश्रयोगीम	१३	५	४९	१४७
२११	तियङ्लोगक नोगभेजम	०	३८	१०१	७२
२१२	मनयोगी जीवोम	७	५	१०१	९९
२१३	एकान्त मिथ्यात्वी मनुष्यम	०	०	२०३	०
२१४	मिथ्यात्वी वैक्रय मिश्रम	१४	६	१५	१७९
२१५	औदारीक तजोलेशीम	०	१३	२०२	०
२१६	लवणसमुद्रम	०	४८	१६८	०

२१७	वचायोगी पाचन्द्रियमं	६	१०	१०१	६६
२१८	त्रस वैक्रय मिश्रमें	१४	९	१९	१८४
२१९	वैक्रय मिश्रमें	१४	८	१९	१८४
२२०	वचनयोगीमें	७	१२	१०१	६६
२२१	अचक्ष चान्द्र पर्याप्तम	७	१९	१०१	६४
२२२	पाचन्द्रिय सास्वतोमें	७	१९	१०१	६६
२२३	वैक्रय मिथ्यात्वीम	१४	६	१९	१८८
२२४	चक्षुइन्द्रिय सास्वतोम	७	१७	१०१	९९
२२५	प्र० शरीरी चान्द्रपर्याप्ताम	७	१८	१०१	९९
२२६	औदारीक अपर्याप्ताम	०	२४	२०२	०
२२७	नोगर्भज चान्द्र अभापकमें	७	२०	१०१	९९
२२८	त्रस सास्वतोमें	७	२१	१०१	९९
२२९	प्र० शरीरी पर्याप्तामें	७	२२	१०१	९९
२३०	त्रसौदारीक अभापकमें	०	१३	२१७	०
२३१	पर्याप्ताजीवोम	७	२४	१०१	९९
२३२	पाचेन्द्रि औदारीमिश्रम	०	१९	२१७	०
२३३	वैक्रय शरीरमें	१४	६	१९	१९८
२३४	औदारीक मिश्रयोगी पाचेन्द्रियम	०	१७	२१७	०
२३५	औदारीक मिश्रयोगी त्रसमें	०	१८	२१७	०
२३६	मनुष्यकि आगतिक नोगर्भजमें	६	३०	१०१	९९

२३७	औदारीक पाचेन्द्रिय मरनेवालोंमें	०	२०	२१७	०
२३८	प्र० शरीरी बादर सास्वतोंमें	७	३१	१०१	९९
२३९	सम्यग्दृष्टि मिश्रयोगीमें	१३	१८	६०	१४८
२४०	सास्वत बादरमें	७	३३	१०१	९९
२४१	प्र शरीरी नोगर्भज मरनवालोंमें	७	३?	१०१	९९
२४२	बादरौदारिक मिश्रयोगीमें	०	२५	२१७	०
२४३	औदारीक एकान्त मिथ्यात्वीमें	०	३०	२१२	०
२४४	तीनशरीरी नोगर्भज मरनवालोंमें	७	३७	१०१	९९
२४५	समु० असज्ञी त्रसमें	१	२१	१७२	५१
२४६	प्र० शरीरी सास्वतोंमें	७	३९	१०१	९९
२४७	अवधिदर्शनमें	१४	५	३०	१९८
२४८	तीर्यच० पाचेन्द्रिय अपर्याप्तामें	०	१०	२०२	३६
२४९	तीर्यच० चक्षुइन्द्रियपर्याप्तामें	०	११	२०२	३६
२५०	भव्यसिद्धि सास्वतोंमें	७	४३	१०१	९९
२५१	तीर्यच० त्रस अपर्याप्तामें	०	१३	२०२	३६
२५२	औदारीक० अभावकमें	०	३५	२१५	०
२५३	मिश्रयोगी मरनेवालोंमें	७	३०	१३१	८५
२५४	स्त्रिवेद मिश्रयोगीमें	०	१०	११६	१२८
२५५	पाचन्द्रिय एकान्तमिथ्यात्वीमें	१	६	२१३	३६
२५६	चक्षुइन्द्रिय एकान्तमिथ्यात्वीमें	१	६	२१३	३६

२५७	घ्राणेन्द्रिय एकान्तमिथ्यात्वीमें	१	५	२१३	३६
२५८	त्रस एकान्तमिथ्यात्वीमें	१	८	२१३	३६
२५९	धर्म देवकि आगतिक घ्राणेन्द्रियमें	५	२४	१३१	९९
२६०	पाचन्द्रिय तीनशरीरी सम्यक्० में	१३	१०	७५	१६२
२६१	कृष्णलेशी असाम्वतोमें	३	५	२०२	५१
२६२	पुरुषवेदी सम्यग्दृष्टिमें	०	१०	६०	१६२
२६३	प्र० शरीरी समुच्चय असज्ञीमें	१	३९	१७२	५१
२६४	तीर्यक्० कृष्णलेशी त्रिवेदमें	०	१०	२०२	५२
२६५	औदारीक शरीर मरनेवालोंमें	०	४८	२१७	०
२६६	पाचेन्द्रिय कृष्ण० अनाहारीमें	३	१०	२०२	५१
२६७	चक्षुइन्द्रिय कृष्ण० अनाहारीमें	३	११	२०२	५१
२६८	एकदृष्टि त्रसकायमें	१	८	२१३	४६
२६९	तीर्यक्० कृष्ण त्रस मरनवालोमें	०	२६	२१७	२६
२७०	थावर एकान्तमिथ्यात्वीमे	१	२०	२१३	३६
२७१	मनुष्यकि आगतिय मिथ्यात्वीमें	६	४०	१३१	९४
२७२	मनुष्यकि आगतिक प्र० शरीरीमें	६	३६	१३१	९९
२७३	निलतेशी एकान्तमिथ्यात्वीमें	०	३०	२१३	३०
२७४	कृष्णलेशी एकान्तमिथ्यात्वीम	१	२०	२१३	२०
२७५	क्रियावादी समोसरणमें	१३	१०	९०	१६२
२७६	मनुष्यकि आगतिमें	६	४०	१३१	९९

२७७	च्यार लशीयावालोंमें	०	३	१५२	१०१
२७८	तीर्यंच० यान्त्र अभावकमें	०	२४	२१७	३६
२७९	चचुइन्द्रिय सम्यक्० परोभववालाम	१३	१६	९०	१६०
२८०	पांचेन्द्रिय सम्यक्दृष्टिमें	१३	१५	९०	१६२
२८१	चचुइन्द्रिय सम्यग्दृष्टिमें	१३	१६	९०	१६२
२८२	घ्राणेन्द्रिय सम्यग्दृष्टिमें	१३	१७	९०	१६२
२८३	त्रसकाय सम्यग्दृष्टिमें	१३	१८	९०	१६२
२८४	तीर्यंक्लोगक पुरुषवेदम	०	१०	२०२	७२
२८५	चचुरिन्द्रिय एक सस्थान औरारीकम	०	१२	२६३	०
२८६	घ्राणेन्द्रिय एक सस्थान औरारीकमें	०	१३	२६३	०
२८७	तीयच० तजोलेशीमें	०	१३	२०२	७२
२८८	तीन शरीरी मनुष्यमें	०	०	२८८	०
२८९	त्रस एक सस्थान औरारीकम	०	१६	२६३	०
२९०	एक दृष्टिवाले जीवोंमें	१	३०	२१२	४६
२९१	तीयच० कृष्णलेशी मरनवालोंमें	१	४८	२१७	२६
२९२	ते० अन्त० च० ले मागरो० एक सस्थान मरने०	२	३८	१८७	६५
२९३	चचुरिन्द्रिय कृष्णलेशी मरनवालोंमें	३	२२	२१७	५१
२९४	योगभजन्ति आगति कृष्ण० त्रसमें	०	२६	२१७	५१
२९५	घ्राणेन्द्रिय कृष्ण० मरनवालोंमें	३	२४	२१७	५१

२९६	पर्याप्त सन्नीमे	१३	५	१३१	१४७
२९७	त्रस कृष्णलेशी सम्नेयात्तोमें	३	२६	२१७	५१
२९८	पाचेन्द्रिय पर्याप्ता एक सस्थानीमे	७	५	१८७	९९
२९९	चक्षुइन्द्रिय पर्याप्ता एक सस्थानीमें	७	६	१८७	९९
३००	त्रिवेद एक सस्थानीमे	०	०	१७२	१२८

थोकडा नम्बर ७२

३०१	एक सस्थानी औदारीक आहारमे	०	२८	२७३	०
३०२	घ्राणेन्द्रियेक सस्थानी अचर्म सम्ने०	७	१५	१८७	९४
३०३	मनुष्यमे	०	०	२०३	०
३०४	नोगर्भज पाचन्द्रिय मिश्रयोगी	१८	५	१०१	१८४
३०५	सम्य० आगति कृष्णा० वाटवम	३	२४	२१७	५१
३०६	तीर्थंकर घ्राणेन्द्रिय मिश्रयोगीमें	०	१७	२१७	७२
३०७	तीर्थंकर त्रस मिश्रयोगीमें	०	१८	२१७	७२
३०८	असमास्वना मिथ्यात्वीमें	७	५	२०२	९८
३०९	सम्य० आगति एक सस्थानी त्रसमे	७	१६	१८७	९९
३१०	औदारीक तीनशरीरी एकसस्थानीमे	०	३७	२७३	०
३११	औदारीक एक सस्थानीमे	०	२८	२७३	०
३१२	नोगर्भजकि आगति कृष्णा० तीन शरीरी	०	४३	२१७	५२

३१३	असास्वनोमें	७	१	२०२	६६
३१४	कृष्णलेशी स्त्रीवदमें	०	१०	२०२	१०२
३१५	प्र० तीन शरीरी कृष्ण० मरनेवालोंमें	३	४४	२१७	९१
३१६	असानाहारी अचरमेंमें	७	१३	२०२	९४
३१७	नोगर्भज घ्राणेन्द्रिय मिथ्या० में	१४	१४	१०१	१८८
३१८	श्रोतन्द्रिय अपर्याप्तामें	७	१०	२०२	९०
३१९	कृष्णलेशी मरनेवालोंमें	०	४८	२१७	९१
३२०	तीन शरीरी स्त्रीवदमें	०	५	१८७	१२८
३२१	त्रस अपर्याप्तामें	७	१३	२०२	९०
३२२	त्रसनाहारी अचरममें	७	१६	२०२	९४
३२३	नोगर्भज पाचन्द्रियमें	१५	१०	१०१	१८८
३२४	तीन शरीरी त्रस मिथ्या० मर	७	२१	२०२	९४
३२५	औदारीक चक्षुइन्द्रियमें	०	२२	३०३	०
३२६	मिथ्या० एक सस्थानी मरनेवालोंमें	७	३८	१८७	९४
३२७	नोगभज घ्राणन्द्रियमें	१५	१४	१०१	१८८
३२८	बादर अभाषक अचरममें	७	२५	२०२	६५
३२९	औदारीक त्रसमें	०	२१	३०३	०
३३०	औदारीक एकान्त भवप्राणी दह	०	४२	२८८	०
३३१	नोगर्भज बादर मिथ्या० में	१४	२८	१०१	१८८
३३२	त्रस एकान्त सन्याकालकिस्थिति	७	२४	२०२	६८

३३३	चक्षुइन्द्रिय प० स० स्थि०में	७	२०	२०७	९९
३३४	तीर्यक० अधोलोकके त्रिमे	०	१०	२०२	१२२
३३५	घ्राणन्द्रिय प० स० स्थि०में	७	२२	२०७	९९
३२६	कारमाणा त्रसमें	७	१३	२१७	६६
३३७	नोगर्भज प्र० शरीरी अचर्ममे	१४	३४	१०१	१८८
३३८	अभापक अचर्ममें	७	३९	२०२	९४
३३९	उर्ध्व० तीर्यक्० के मरनवालोंमें	०	४८	२१७	७४
३४०	नोगर्भज तान्र तीनशरीरीमें	१४	२७	१०१	१६८
३४१	औदारीर बादरमे	०	३८	२०३	०
३४२	घ्राणेन्द्रिय मिथ्या० मरनवालोंमें	७	२४	२१७	९४
३४३	तजोलेश्यावाले जीवोमें	०	१३	२०२	१२८
३४४	त्रस मिथ्या० मरनवालोंमें	७	२६	२१७	६४
३४५	तीनशरीरी मिथ्या० मरन० मे	७	४२	२०२	६४
३४६	प्र० शरीरी ज० अन्तरमुहूर्त उ० १६ सागरोपमकि स्थितिके मरनेवालोमे	९	४४	२१७	८०
३४७	अनाहारीक जीवोमे	७	२४	२१७	६६
३४८	बादर अभापकमें	७	२९	२१७	६६
३४९	त्रस मरनेवालोंमे	७	२६	२१७	६६
३५०	नोगभज तीनशरीरीमे	१४	३७	१०१	१६८
३५१	औदारीक शरीरमे	०	४८	३०२	०

३५२	ज० अन्त० ३०१७ मा० मग्न०में	६	२८	२१७	८१
३५३	नीगभजकि गनिन त्रस तीनशरीरीमे	२	२१	२२८	१०२
३५४	मिथ्य० सकान्तमत्या० स्थिनिमे	७	४६	२०७	९४
३५५	नीयक् लो० पाचन्द्रिय एकस्मस्थानिमें	०	१०	२७२	७२
३५६	बान्त मिथ्या० मग्नेवात्नामें	७	३८	२१७	९४
३५७	मम्या० श्रागनिन बाद्दम	७	३४	२१७	०९
३५८	अभारक जीवोमें	७	३९	२१७	९०
३५९	नीय० ग्रागन्द्रिय एकस्मस्थानीमें	०	१२	२७३	७२
३६०	उच्च० तीय० पुम्यान्में	०	१०	२०२	१४८
३६१	नीय० त्रस एकस्मस्थानीम	०	१६	२७२	७२
३६२	प्र० शरारी मिथ्या० मग्नेवालामें	७	४४	२१७	६४
३६३	मम्य० श्रागनिम	७	२०	२१७	६६
३६४	नागभजरि गनिन थान्त नीनश० म	२	३२	२२८	१०२
३६५	ज० अन्त० २९ सा० मिथ० मग्न०में	७	४८	२१७	६३
३६६	मिथ्या० मग्नेवालामें	७	४८	२१७	६४
३६७	प्र० शरीरी मग्नेवात्नाम	७	४४	२१७	६६
३६८	पुम्प एकस्मस्था० पर्याभपजालाम	०	०	१७२	१९२
३६९	अयो० नीय० चक्षु० मिश्रयोगी	१४	१६	२१७	१२२
३७०	कृष्णाले० सम्य० स्थिनिवालामें	३	४८	२१७	१०२
३७१	समुच्य मग्नवात्नामें	७	४८	२१७	६६

३७२	तीय० कृष्णा० तीन शरीरी बादर०	०	३२	२८८	९२
३७३	तीर्य० बादर एक सस्थानीमें	०	२८	२७३	७२
३७४	श्रो० ती० बादरकृष्णा० एकान्त-भवधारणी देह	३	३२	२८८	९१
३७५	तीर्य० पाचेन्द्रिय कृष्णालेशी	०	२०	३०३	५२
३७६	एक सस्थानी मिश्रयोगी पाचेन्द्रिय अनगीयामें	०	५	१८७	१८४
३७७	तीर्य० चक्षु० कृष्णालेशीमें	०	२२	३०२	५०
३७८	भुजपुरुषि गनिर पाच० तीन शरीरी	४	१०	२०२	१६७
३७९	तीर्य० घ्राणेन्द्रिय कृष्णालेशीमें	०	२४	३०३	५२
३८०	पुरुष तीन शरीरी अचर्ममे	०	५	१८७	१८८
३८१	तीर्य० त्रस कृष्णालेशीमे	०	७६	३०३	५२
३८२	तीर्य० तीन शरीर कृष्णालेशीमें	०	४२	२८८	५२
३८३	तीर्य० एक सस्थानीमें	०	३८	२७३	७२
३८४	सज्ञी एक सस्थानीमें	१४	०	१७२	१९८
३८५	नोगर्भजकि गनिका बादरमें	२	३८	२४३	१०२
३८६	उध्व० तीर्य० एकान्त भवधारणी देह पाचन्द्रियअचर्म	०	२०	२८८	७८
३८७	उध्व० तीर्यके त्रस मिथ्या० एकान्त भवधारणी देहमें	०	२१	२८८	७८

३८८	अगा० तीय० एकान्त भवधारणी देह बादरमें	७	३२	२८८	६१
३८९	मनी अभव्य तीन शरी० अनीयचर्में	१४	०	१८७	१८८
३९०	पुरुषवेद तीन शरीरीमें	०	५	१८७	१९८
३९१	पाचन्द्रिय कृष्ण० एक सस्थानीमें	६	१०	२७३	१०२
३९२	तीय० बादर तीन शरीरीमें	०	३७	२८८	७२
३९३	तीर्य० बादर कृष्णलेशीमें	०	३८	३०३	५२
३९४	सज्ञी अभव्य तीन शरीरीमें	१४	५	१८७	१८८
३९५	तीय० पाचेन्द्रियमें	०	२०	३०३	७२
३९६	उर्ध्व० तीर्य० एकान्त भवधारणी देह पाचन्द्रिय	०	२०	२८८	८८
३९७	तीय० चक्षुइन्द्रियमें	०	२२	३०३	७२
३९८	अधो० तीय० ए० भवधारणी देह	७	४२	२८८	६१
३९९	तीय० घ्राणेन्द्रियमे	०	२४	३०३	७२
४००	अभव्य पुरुषवेदमें	०	१०	२०७	१८८

थोकडा नम्बर ७३

४०१	तीय० त्रस जीवोंमें	०	२६	३०३	७२
४०२	तीय० तीन शरीरीमें	०	४२	२८८	७२
४०३	तीय० कृष्णलेशीमे	०	४८	३०३	५२
४०४	मनु० सज्ञी अभव० भवधारणी अनीयचर्में	१४	०	२०२	१८८

४०५	चउरिन्द्री गतिका चक्षु० मिश्रयोगी	१०	१६	२१७	१६२
४०६	उरपुरुकि गतिका घ्राणेन्द्रिय मिश्रयोगीमें	१०	१७	२१७	१६२
४०७	बा० प्र० कृष्णा० एक सस्थानीम	६	२६	२७३	१०२
४०८	तीर्थं० एकान्त छद्मस्थम	०	४८	२८८	७२
४०९	बादरकृष्णा० एक सस्थानिमे	६	२८	२७३	१०२
४१०	पुरुषवेदमे	०	१०	२०२	१९८
४११	तीर्थ० प्र० शरीरी बादरमे	०	३६	३०३	७२
४१२	तिरिकि गतिक सज्ञी मिथ्या० म	१२	१०	२०२	१८८
४१३	प्रशस्त लेश्याम	०	१३	२०२	१९८
४१४	सज्ञी मिथ्यात्वीम	१८	१०	२०२	१८८
४१५	प्र० शरीरी कृष्णा० एक सस्था०	६	३४	२७३	१०२
४१६	अप्रशस्तलेशी तीन शरीरी बादर एक सस्थानीमे	१४	२७	२७३	१०२
४१७	स्त्रीकि गति कृष्णा० एकसस्थानी	४	२८	२७३	१०२
४१८	प्र० बादर एकसस्थान एकान्त भव धारणीदह	७	२९	२७३	११३
४१९	कृष्णालेश्या एक सस्थानीमें	६	३८	२७३	१०२
४२०	मिश्रयोगीबादर एकान्त असयमम	१५	२०	२०२	१८५
४२१	तिरिकि गति अप्रशस्तलेशी प्र० शरीर एक सस्थानिमें	१२	३५	२७३	१०२

३८८	अगा० तीय० एकान्त भवधारणी देह बारमें	७	३२	२८८	६१
३८९	सज्ञी अभव्य तीन शरी० अनीर्यचमें	१४	०	१८७	१८८
३९०	पुरुषवेद तीन शरीरीमें	०	५	१८७	१९८
३९१	पाचन्द्रिय कृष्णा० एक सस्थानीमें	६	१०	२७३	१०२
३९२	तीर्य० बादर तीन शरीरीमें	०	३२	२८८	७२
३९३	तीर्य० बादर कृष्णालेशीमें	०	३८	३०३	५२
३९४	सज्ञी अभव्य तीन शरीरीमें	१४	५	१८७	१८८
३९५	तीय० पाचन्द्रियमें	०	२०	३०३	७२
३९६	उर्ध्व० तीर्य० एकान्त भवधारणी देह पाचन्द्रिय	०	२०	२८८	८८
३९७	तीर्य० चक्षुइन्द्रियमें	०	२२	३०२	७२
३९८	अधो० तीय० ए० भवधारणी देह	७	४२	२८८	६१
३९९	तीय० घ्राणेन्द्रियमें	०	२८	३०३	७२
४००	अभव्य पुरुषवेदमें	०	१०	२०२	१८८

थोकडा नम्बर ७३

४०१	तीय० त्रस जीवोंमें	०	२	२०३	७२
४०२	तीय० तीन शरीरीमें	०	४२	२८८	७२
४०३	तीय० कृष्णालेशीमें	०	२८	३०३	५२
४०४	समु० सज्ञी त्रस० भवपाल अनीर्यचमें	१८	०	२०२	१८८

४०५	उपुरकी गतिका चक्षु० मिश्रयोगी	१०	१६	२८७	१६२
४०६	उपुरकि गतिका प्राणइन्द्रिय मिश्रयोगीमें	१०	१७	२१७	१६२
४०७	बा० प्र० कृष्णा० एक सस्थानीम	६	२६	२७३	१०२
४०८	तीर्य० एकान्त छद्मस्थमें	०	४८	२८८	७२
४०६	बादरकृष्णा० एक सस्थानिमें	६	२८	२७३	१०२
४१०	पुरुषवदमे	०	१०	२०२	१९८
४११	तीर्य० प्र० शरीरी बादरम	०	३६	३०३	७२
४१२	त्रिकि गतिक सत्री मिथ्या० म	१२	१०	२०२	१८८
४१३	प्रशस्त लेश्याम	०	१३	२०२	१६८
४१४	सज्ञी मिथ्यात्वीम	१४	१०	२०२	१८८
४१५	प्र० शरीरी कृष्णा० एक सस्था०	६	३४	२७३	१०२
४१६	अप्रशस्तलेशी तीन शरीरी बादर एक सस्थानीमें	१४	२७	२७३	१०२
४१७	त्रीकि गति कृष्णा० एकसस्थानी	५	२८	२७३	१०२
४१८	प्र० बादर एकसस्थान एकान्त भव धारणीमे	७	२९	०७०	११०
४१९	कृष्णलेश्या एक सस्थानीमें	६	२८	२७३	१०२
४२०	मिश्रयोगीबादर एकान्त अमयममे	१५	२०	२०२	१८४
४२१	त्रिविं गति अप्रशस्तलेशी प्र० शरीर एक सस्थानिमे	१२	३५	२७३	१०२

४२२	त्रिकि गतिष सङ्गीमें	१२	१०	२०२	१९८
४२३	प्र० शरीरी, मिश्रयोगी एकान्त श्रमयमेम	१४	२३	२०२	१८४
४२४	समुच्चयसङ्गीम	१४	१०	२०२	१९८
४२५	मिश्रयोगि एकान्त अपचरकार्यीम	१४	२१	२०-	१८४
४२६	कृष्णालेशी बादर प्र तीन शरीरीमे	६	३०	२८८	१०२
४२७	अप्रशस्तलेशी एक सस्थानीम	१४	२८	२७३	१०२
४२८	कृष्णा बादर तीन शरीरीमें	६	३२	२८८	१०२
४२९	कृष्णा बा० एकान्त श्रमयमम	६	३३	२८८	१०२
४३०	त्रि० गतिक त्रस मिश्र० घणा भववालोम	१२	१८	२१७	१८३
४३१	त्रि० गतिके त्रस मि० म	१२	१८	२१७	१८४
४३२	त्रसमिश्रयोगि सम्या० भववालोम	१४	१८	२१७	१८३
४३३	त्रसमिश्रयोगिम	१४	१८	२१७	१८४
४३४	कृ० प्र० तीन शरीरीमे	६	३८	२८८	१०२
४३५	मिश्रयोगी बादर मिथ्या० म	१४	२१	२१७	१७९
४३६	बादर तीन शरीरी अप्रशस्तलेशी	१४	३२	२८८	१०२
४३७	बाद० एकान्त अपच० अप्रशस्तलेशी	१४	३३	२८८	१०२
४३८	कृष्ण० तीन शरीरी	६	४२	२८८	१०२
४३९	कृ० एकान्त अपचककार्यीमे	६	४३	२८८	१०२

४५५	गृध्या० प्र० शरीरम	६	४४	३०३	१०२
४५६	अधो० नीय० तीनशरीरीयान्य	१४	३७	२८८	१२२
४५७	अप्रशस्तलेशी बादरमे	१४	३८	३०३	१०२
४५८	ऊर्ध्व० नीय० एकान्त छद्म० चक्षु० में	०	७२	२८८	१४८
४५९	ऊर्ध्व० नीय० व एकसम्थानाम	०	७८	२७३	१४८
४६०	ऊर्ध्व० नीय० एकान्त छद्म० घ्राणेइन्द्रियमें	०	७४	२८८	१४८
४६१	अधो० नीय व चक्षुइन्द्रियम	१४	२२	३०३	१२२
४६२	अधो० तीय० बादर एकान्त छद्म० में	१४	३८	२८८	१०७
४६३	अधो० तीय० घ्राणेन्द्रियम	१४	२४	३०३	१२२
४६४	स्त्रि० गनिर अधो० तीय० तीन शरीरीम	१२	४२	२८८	१२२
४६५	अ० नीय० व त्रसम	१४	७६	३०३	१२२
४६६	अधो० तीय० व तीन शरीरम	१४	४२	२८८	१२२
४६७	अप्रशस्तलेश्यामें	१४	४८	३०३	१०२
४६८	ऊर्ध्व० तीय० तीन शरीरीबादरम	०	३७	२८८	१४८
४६९	ऊर्ध्व० नीय० एकान्त असयम बादरमें	०	३३	२८८	१४८
४७०	अधो० नीय० एकान्त छद्म० स्त्रि० गतिम	१२	४४	२८८	१२२

४७१	उर्ध्व० तिर्य० के पाचंद्रियमें	०	२०	३०३	१४८
४७२	अधो० तिर्य० एकान्त छद्मस्थमें	१४	४८	२८८	१?२
४७३	उर्ध्व० तिर्य० क चक्षुरन्द्रियमें	०	२२	३०३	१४८
४७४	उर्ध्व०तिर्य०क एकान्तछद्म०यादगमे	०	२८	२८८	१४८
४७५	उर्ध्व० तीर्य० घ्राणेन्द्रियमे	०	२४	३०३	१४८
४७६	उर्ध्व० तीर्य० तीन शरीरी घणा भववालोमें	०	४२	२८८	१४६
४७७	उर्ध्व० तीर्य० त्रसमे	०	२६	३०३	१४८
४७८	उर्ध्व० तीर्य० तीन शरीरीमें	०	४२	२८८	१४८
४७९	उर्ध्व० तीर्य० एकान्त असयममे	०	४३	२८८	१४८
४८०	,, ,, एकान्त छद्म० प्र० शरीरीमें	०	४४	२८८	१४८
४८१	त्रि० गतिक अधो० तीर्य० प्र० शरीरीमें	१२	४४	३०३	१२२
४८२	उर्ध्व० तीर्य० एकान्त छद्म० घणा भववालोमें	०	४८	२८८	१४६
४८३	अधो० तीर्य० प्र० शरीरीमें	१४	४४	३०३	१२२
४८४	उर्ध्व० तीर्य० एकान्त छद्म० में	०	४८	२८८	१४८
४८५	त्रि गतिके अधो० तीर्य० में	१२	४८	३०३	१२२
४८६	भुजपुरकि गतिके तीन शरीरी यादगमें	४	३२	२८८	१६२

४८७	अधो० तीर्य० लोकमें	१४	४८	३०३	१२२
४८८	खचरकि गतिक तीन शरीरी बादरम	६	३२	२८८	१६२
४८९	ऊर्ध्व तीय० ष बादरमें	०	३८	३०३	१४८
४९०	चोपदकि गतिक तीन श० बादरम	८	३२	२८८	१६२
४९१	खचरकि गतिक पाचन्द्रियमें	६	२०	३०३	१८२
४९२	उरपुरकि गतिक तीन श० बादरमें	१०	३२	२८८	१६२
४९३	ऊर्ध्व० तीर्य० प्र० शरीरी घणा भववालोंमें	०	४४	३०३	१४६
४९४	खचरकि गतिक प्र० तीन शरीरमें	६	३८	२८८	१६२
४९५	ऊर्ध्व तीय० वे प्र० शरीरीम	०	४५	३०३	१४८
४९६	भुजपुरकि गतिक तीन शरीरमें	४	५२	२८८	१६२
४९७	खचरकि गतिक त्रसम	६	२४	३०३	१६२
४९८	खचरकि गतिक तीन शरीरमें	६	४२	२८८	१६२
४९९	ऊर्ध्व० तीय० में	०	४८	३०३	१४८
५००	चोपदकि गतिक तीन शरीरमें	८	४२	२८८	१६२

थोकडा नम्बर ७२

५०१	त्रस एक सस्थानीमें	१४	१६	२७३	१६८
५०२	उरपुरकि गतिक तीन शरीरम	१०	४२	२८८	१६२
५०३	तिर्यचकि गतिक घ्राणेन्द्रियमें	१४	२४	३०३	१६२

५०४	खचरकि गतिष एकान्त छद०	६	४८	२८८	१६२
५०५	तीर्यचकि गतिष असम	१४	२६	३०३	१६२
५०६	सज्ञी तीर्यचकि गतिष तीनशरीरमें	१४	४२	२८८	१६२
५०७	अन्तरद्विपक पर्यापाष अलद्धियोंमे	१४	४८	२४७	१६८
५०८	उरपुरकि गतिषे, एकान्त सकषायमें	१०	४८	२८८	१६२
५०९	चोपदकि गतिके प्र० शरीरी वादरमे	८	३६	३०१	१६२
५१०	तीर्यचणि गतिष एकान्त सयोगिमे	१२	४८	२८८	१६२
५११	एक मस्थान प्र० शरीगी वादरमे	१४	२६	२७१	१९८
५१२	तीर्यचकि गतिषे एकान्त सयोगिमें	१४	४८	२८८	१६२
५१३	एक सम्थानी मिथ्यात्वीमें	१४	३८	२७३	१८८
५१४	मध्य जीवोंक स्पर्शनवाले एकान्त छद्म० चक्षु०	१४	२२	२८८	१६०
५१५	तीर्यचणि गतिष वादरमें	१२	३८	३०३	१६२
५१६	म० जीवोंके भेद स्प० एकान्त छद० घ्राणेन्द्रि०	१४	२४	२८८	१९०
५१७	त्रि० गति एक मस्थानि प्र० शरीगीमे	१२	३८	२७३	१९८
५१८	पाचेन्द्रियमें एकान्त छद० घणोभव०	१४	२०	२८८	१९६
५१९	चक्षुइन्द्रिय एकान्त असयममे	१४	१७	२८८	१९८
५२०	पाचेन्द्रिय एकान्त सकषायमें	१४	२०	२८८	१९८

९२१	एकसस्थानी घणा भववालोमें	१४	३८	२७३	१९६
९२२	एकान्त सकषाय चक्षु०	१४	३२	२८८	१९८
९२३	एकसस्थानीम	१४	३८	२७३	१९८
९२४	एकान्त सकषाय घ्राणे० मे	१४	२४	२८८	१९८
९२५	पाचेन्द्रिय मिथ्यात्वीमें	१४	२०	३०३	१८८
९२६	एकान्त सकषाय त्रसमें	१४	२६	२८८	१९८
९२७	तीर्यचकि गतिमें	१४	४८	३०३	१६२
९२८	एकान्त छद० ना० मिथ्या०	१४	३८	२८८	१८८
९२९	त्रि गतिक त्रस मिथ्या०	१२	२६	३०३	१८८
९३०	तीनशरीरी प्र० घणा भववालोमे	१४	३८	२८८	१९६
९३१	त्रि० गति पाचे० सन्या भव०	१२	२०	३०३	१९६
९३२	तीनशरीरी बादरमे	१४	३२	२८८	१९८
९३३	एकान्त असयम बादरमे	१४	३२	२८८	१९८
९३४	एकान्त छद० अभव्य प्र० शरीरी	१४	४४	२८८	१८८
९३५	पाचेन्द्रिय जीवोमें	१४	२०	३०३	१९८
९३६	त्रि० गतिर ना० एकान्त सकषाय०	१२	३८	२८८	१९८
९३७	त्रि० गतिरे घ्राणेन्द्रियमें	१२	२४	३०३	१९८
९३८	एकान्त छद० बादरमें	१४	३८	२८८	१९८
९३९	घ्राणेन्द्रियमें	१४	२४	३०३	१९८
९४०	त्रि० गतिर तीनशरीरीमें	१२	४२	२८८	१९८

५४१	त्रस जीवोंमें	१४	३६	३०३	१९८
५४२	तीन शरीरी एकान्त छद्मा०	१४	४२	२८८	१९८
५४३	एकान्त असयममें	१४	४३	२८८	१९८
५४४	प्र० श० एकान्त छद्मा०	१४	४४	२८८	१९८
५४५	सम्य० तीर्यचके अलद्धियामें	१४	३०	३०३	१९८
५४६	एकान्त छद्मा० घणो भववालोंमें	१४	४८	२८८	१९६
५४७	त्रि० गतिक प्र० श० मिथ्या०	१२	४४	३०३	१८८
५४८	एकान्त छद्मस्थमें	१४	४८	२८८	१९८
५४९	मिथ्या०प्र० शरीरीमें	१४	४४	३०३	१८८
५५०	सम्य० नारकिके अलद्धिया	१	४८	३०३	१९८
५५१	त्रि० गतिके मिथ्या० में	१२	४८	३०३	१८८
५५२	एकेन्द्रिय पर्याप्तके अलद्धिया	१४	३७	३०३	१९८
५५३	मिथ्यात्वीमें	१४	४८	३०३	१८८
५५४	नौ जीवैगक पर्याप्तक अलद्धिया	१४	४८	३०३	१८९
५५५	जीवोंक मध्यमंद स्पर्शनेवालोंमें	१४	४८	३०३	१९०
५५६	नरक पर्याप्तक अलद्धियोंमें	५	४८	३०३	१९८
५५७	त्रि० गतिक प्र० शरीरीमें	१२	४४	३०३	१९८
५५८	तीर्यंच पाचेन्द्रिय वैक्रयके अल०	१४	४३	३०३	१९८
५५९	प्रत्येक शरीरीमें	१४	४४	३०३	१९८
५६०	तजोलेशी एकेन्द्रियक अल०	१४	४५	३०३	१९८

५६१	घयो भवनाले जीवोमें	१४	४८	३०३	१६६
५६२	एयन्द्रिय वैक्रेयश० अजाद्विया	१४	४७	३०३	१६८
५६३	सब संसारी जीवोमें	१४	४८	३०३	१६८

सेव भंते सेव भंते तमेव सचम्

थोकडा नम्बर ७६.

कौनसे कोनसे योलोंमें कीतने कीतने जीवोंके भेद मीलते है यह अन्तिम कोटमें समुचय जीवों के भेद के अंक रखे गये है बाद क्रमश च्यारों कोटमें नरक, तीर्यच, मनुष्य, देवताओं के अलग अलग जीवों के भेद रखे गये है इस थोकडे को कण्ठस्थ करनेवालोंको शास्त्रों का बोध और तर्कबुद्धि सहज में प्राप्त हो सकेगा

जीवोंके भेद कि संख्या	कोनसी मार्गणामें कीतने जीवोंके भेद मीलते है उस मार्गणाका नाम	नरकोंके १४ भेद	तीर्यचोंके ४८ भेद	मनुष्योंके ३०३ भेद	देवताओंके १९८ भेद	समुच्चय
१	समुचय जीवोंमें जीवोंके भेद	१४	४८	३०३	१९८	५६३
२	नरकगतिमें	१४	०	०	०	१४
३	तीर्यचगतिमें	०	४८	०	०	४८
४	मनुष्यगतिमें	०	०	३०३	०	३०३
५	देवगतिमें	०	०	०	१९८	१९८
६	तीर्यचणीमें	०	१०	०	०	१०
७	मनुष्यणीमें	०	०	२०२	०	२०२
८	देवीमें	०	०	०	१२८	१२८
९	सइन्द्रियजीवोंमें	१४	४८	३०३	१९८	५६३
१०	एकेन्द्रियजीवोंमें	०	२२	०	०	२२
११	बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चोरिन्द्रियमें	०	२।२।२	०	०	२
१२	पांचेन्द्रिय जीवोंमें	१४	२०	३०३	१९८	५३५

१३	अनेंद्रिय (केवली)	०	०	१५	०	१५
१४	श्रोत्रेंद्रिय जीवोंमें	१४	२०	३०३	१९८	५३५
१५	चक्षुइन्द्रियमें	१४	२२	३०३	१९८	५३७
१६	घ्राणेन्द्रियमें	१४	२४	३०३	१९८	५३९
१७	रसेन्द्रियमें	१४	२६	३०३	१९८	५४१
१८	स्पर्शेन्द्रियमें	१४	४८	३०३	१९८	५६३
१९	श्रोत्रेन्द्रियका अलब्धियामें	०	२८	१५	०	४३
२०	चक्षुइन्द्रियका अलब्धियामें	०	२६	१५	०	४१
२१	घ्राणेन्द्रियका अलब्धियामें	०	२४	१५	०	३९
२२	रसेन्द्रियका अलब्धियामें	०	२२	१५	०	३७
२३	स्पर्शेन्द्रियका अलब्धियामें	०	०	१५	०	१५
२४	सकायजीवोंमें	१४	४८	३०३	१९८	५६३
२५	पृथ्वी, अप, तेउ, वायुकायमें	०	४।४	०	०	४
२६	वनस्पतिकायमें	०	६	०	०	६
२७	त्रसकायमें	१४	२६	३०३	१९८	५४१
२८	सयोगि--काययोगिमें	१४	४८	३०३	१९८	५६३
२९	मनयोगिमें	७	५	१०१	९९	२१२
३०	वचनयोगिमें	७	१३	१०१	९९	२२०
३१	औदारीककाययोग	०	४८	३०३	०	३५१
३२	औदारीकमिश्रकाययोग	०	३०	२१७	०	२४७
३३	वैक्रयकाययोग	१४	६	१५	१९८	२३३
३४	वैक्रयमिश्रकाययोग	१४	६	१५	१८४	२१९
३५	आहारीककाययोग	०	०	१५	०	१५
३६	आहारीकमिश्रकाययोग	०	०	१५	०	१५

३७	कारमणकाययोग	७	२४	२१७	९९	३४७
३८	अयोगिमे	०	०	१५	०	१५
३९	सवेदीजीवोमें	१४	४८	३०३	१९८	५६३
४०	स्त्रिवेदवालोमें	०	१०	२०२	१२८	३४०
४१	पुरुषवेदवालोमें	०	१०	२०२	१९८	४१०
४२	नपुंसकवेदवालोमें	१४	४८	१३१	०	१९३
४३	अवेदीजीवोमें	०	०	१५	०	१५
४४	एकवेदवालेजीवोमें	१४	३८	१०१	७०	२२३
४५	दोवेदवालेजीवोमें	०	०	१७२	१२८	३००
४६	तीनवेदवालेजीवोमें	०	१०	३०	०	४०
४७	सकषायि, क्रोध, मान माया लोभमें	१४	४८	३०३	१९८	५६३
४८	अकषायिमें	०	०	१५	०	१५
४९	सलेशीजीवोमें	१४	४८	३०३	१९८	५६३
५०	कृष्णनिलकापोतलेशीमें	६	४८	३०३	१०२	४५९
५१	तेजसलेशीमें	०	१३	२०२	१२८	३४३
५२	पद्मलेशीमें	०	१०	३०	२६	६६
५३	शुक्ललेशीमें	०	१०	३०	४४	८४
५४	एकलेश्यावालेजीवोमें	१०	०	०	९६	१०६
५५	दोलेश्यावालेजीवोमें	४	०	०	०	४
५६	तीनलेश्यावालोमें	०	३५	१०१	०	१३६
५७	च्यारलेश्यावालोमें	०	३	१७२	१०२	२७७
५८	पाचलेश्यावालोमें	०	०	०	०	०
५९	छेलेश्यावालोमें	०	१०	३०	०	४०

६	पंकलीकृष्णलेश्यामें	६	०	०	०	६
६१	पकलीनिललेश्यामें	६	०	०	०	६
६२	पकलीकापोतलेश्यामें	६	०	०	०	६
६३	पकली तेजसलेश्यामें	०		०	२६	२६
६४	पेकली पद्मलेश्यामें	०	०	०	२६	२६
६५	पकली शुक्ललेश्यामें	०	०	०	४४	४४
६६	अलेशी जीवोंमें	०	०	१५	०	१५
६७	सम्यक्त्वदृष्टिमें	१३	१८	९०	१६२	२८३
६८	मिथ्यादृष्टिमें	१४	४८	३०३	१८८	५५३
६९	मिश्रदृष्टिम	७	५	१५	६७	९४
७०	एकदृष्टिवाले जीवोंमे	१	३०	२१३	४६	२९०
७१	दोयदृष्टियाले जीवोंमें	०	८	६०	१८	८६
७२	तीनदृष्टिवाले जीवोंमें	१३	१०	३०	१३४	१८७
७३	सास्वा दन सम्यक्त्वमें	१३	१८	३०	१३४	१९५
७४	क्षोपशम सम्यक्त्वमें	१३	१	९०	१६८	२७५
७५	क्षायक सम्यक्त्वम	२	८	९०	१६२	२६२
७६	उपशम सम्यक्त्वमे	१	१०	३०	१३४	१७५
७७	वैदीक सम्यक्त्वमे	७	५	१५	६७	९४
७८	चक्षुदर्शनमें	१४	२२	३०३	१९८	५३७
७९	अचक्षुदर्शनम	१४	४८	३०३	१९८	५६३
८०	अवधिदर्शनमें	१४	५	३०	१९८	२४७
८१	केवलदर्शनमें	०	०	१५		१५
८२	समुच्चयज्ञानी मतिश्रुतिज्ञानीमें	१३	१८	९०	१६२	२८३
८३	अवधिज्ञानीमे	१३	५	३	१६२	२१०

८४	मनपर्यवज्ञान केवल ज्ञानमें	०	०	१५	०	१०
८५	समु० अज्ञान मति० श्रुतिअज्ञान	१४	४८	३०३	१८८	५५३
८६	विभंग ज्ञानमें	१४	५	१५	१८८	२२२
८७	संयति० मा० सू० यथा०	०	०	१५	०	१५
८८	छेदोपस्था० परि०	०	०	१०	०	१०
८९	असंयतिमें	१४	४८	३०३	१९८	५६३
९०	सयतासंयतिमें	०	५	१५	०	२०
९१	साकारमनाकारोपयोगमें	१४	४८	३०३	१९८	५६३
९२	आहारीकमें	१४	४८	३ ३	१९८	५६३
९३	अनाहारीकमें	७	२४	२१७	९९	३४७
९४	भाषकमें	७	१३	१०१	९९	२२०
९५	अभाषकमें	७	३५	२१७	९९	३५८
९६	परतमें अपरतमें	१४	४८	३ ३	१९८	५५३
९७	नोपरत ना अपरतमें	०	०	०	०	०
९८	पर्याप्ता जीवोंमें	७	२४	१०१	९९	२३१
९९	अपर्याप्तामें	७	२४	२०२	९९	३३२
१००	नोपर्याप्ता नोअपर्याप्ता	०	०	०	०	०
१०१	सूक्ष्म जीवोंमें	०	१०	०	०	१०
१०२	बादर जीवोंमें	१४	३८	३०३	१९८	५५३
१०३	नोसूक्ष्म नोबादर	०	०	०	०	०
१०४	सज्ञी जीवोंमें	१४	१०	२०२	१९८	४२४
१०५	असंज्ञी जीवोंमें	०	३८	१०१	०	१३९
१०६	नोसंज्ञी नोअसंज्ञी	०	०	१५	०	१५
१०७	भव्य जीवोंमें	१४	४८	३०३	१९८	५६३

१०८	अभव्यजीवोंमे	१४	४८	३०३	१८८	५५३
१०९	नोभव्य नो अभव्यमें	०	०	०	०	०
११०	चरमजीवोंमें	१४	४८	३०३	१९८	५६३
१११	अचरमजीवोंमें	१४	४८	३०३	१८८	५५३
११२	गर्भज जीवोंमें		१०	२ २	०	२१२
११३	नोगर्भज जीवोंमे	१४	३८	१०१	१९८	३५१
११४	भरतक्षेत्रके जीवोंमे	०	४८	३	०	५१
११५	महा विदेहक्षेत्रमे	०	४८	९	०	५७
११६	जंबुद्विपक्षेत्रमें	०	४८	२७	०	७५
११७	लवणसमुद्रमें	०	४८	१६८	०	२१६
११८	धातकी खंडमे	०	४८	५४	०	१०२
११९	पुष्करार्द्धद्विपमे		४८	५४	०	१०२
१२०	अढाइद्विपमें	०	४८	३०३		३५१
१२१	असंख्यातद्विप समुद्रमें	०	४८	३०३		३५१
१२२	कीसी स्थानकि पोलारमे	०	१२	०		१२
१२३	लोकके चर्मान्तमे	०	१२		०	१२
१२४	सिद्धक्षेत्रमें	०	१२	०	०	१२
१२५	श्रीसिद्ध भगवानमें	०		०	०	०

॥ सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ॥

इति श्री शीघ्रबोध भाग ७ वा समाप्तम्

॥ श्रीरत्नप्रभसूरीश्वरसद्गुरुभ्यो नमः ॥

शीघ्रबोध भाग ७ वां।

—•※◎※•—

थोकडा नं० ७७

श्री भगवती सूत्र श० २५—उ० १

(योगों की अल्पा बहुत्व).

संसारी जीवों के चौदे भेद है-जैसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय के दो भेद पर्याप्ता, अपर्याप्ता, बादर एकेन्द्रिय के दो भेद पर्याप्ता अपर्याप्ता एवं बेइन्द्रि, तेरिन्द्रि, चोरिन्द्रि, सन्नीपचेन्द्रि और असन्नीपचेन्द्रि के दो दो भेद पर्याप्ता अपर्याप्ता करके १४ भेद हुवे।

जीव के आत्म प्रदेशों से अध्यवसाय उत्पन्न होते हैं और वह शुभाशुभ करके दो प्रकारके है। इन अध्यवसायों की प्रेरणा से जीव पुद्गलोंको ग्रहण करके प्रणमाते है उसे परिणाम कहते है यह सूक्ष्म है और परिणामों की प्रेरणा से लेश्या होती है और लेश्या की प्रेरणा से मन वचन काया के योग व्यापार होते हैं जिसे योग कहते है। योग दो प्रकार के होते है। (१) जघन्य योग (२) उत्कृष्ट योग। उपर जो १४ भेद जीवोंके कहे है उनमें जघन्य और उत्कृष्ट योग की तरतमता है उसी को अल्पाबहुत्व करके नीचे बतलाते है —

(१) सबसे स्तोक सूक्ष्मएकेन्द्रिके अपर्याप्ताका जघन्ययोग
(२) बादर एकेन्द्रिके अपर्याप्ता का जघन्य योग अस० गुणा
(३) बेरिन्द्रि के ,, ,,

(४) तेरिन्द्रि के ,, ,, , ,
(५) चौरिन्द्रि के , ,, ,
(६) असन्नी पचेन्द्रि के ,, , , ,
(७) सन्नी पचेन्द्रि के , ,, , ,
(८) सुक्ष्म एकेन्द्रि के पर्याताका , , ,,
(९) बादर एकेन्द्रि के , , ,
(१०) सुक्ष्म एकेन्द्रि के अपर्याप्ता का उत्कृष्ट० , ,,
(११) बादर एकेन्द्रि के ,, ,, ,,
(१२) सुक्ष्म एकेन्द्रि के पर्याप्ता का , , ,,
(१३) बादर एकेन्द्रि के , , ,
(१४) बेरिन्द्रि के पर्याप्ता का जघन्य० ,, ,
(१५) तेरिन्द्रि के ,, , ,, ,,
(१६) चौरिन्द्रि के ,, , ,, ,
(१७) असन्नी पचेन्द्रि के , , , ,,
(१८) सन्नी पचेन्द्रि के ,, , , ,,
(१९) बेरिन्द्रि के अपर्याप्ता का उत्कृष्ट० ,, ,, ,,
(२०) तेरिन्द्रि के ,, ,, , ,
(२१) चौरिन्द्रि के , , ,, ,,
(२२) असन्नी पचेन्द्रि के ,, , ,, ,,
(२३) सन्नी पचेन्द्रि के ,, ,, ,, ,
(२४) बेरिन्द्रि के पर्याप्ता का , ,, ,
(२५) तेरिन्द्रि के ,, ,
(२६) चौरिन्द्रि के ,, ,, ,, ,
(२७) असन्नी पचेन्द्रि के , , , ,
(२८) सन्नी पचेन्द्रि के ,, , , ,

सेवभंते सेवभंते तमेव सच्चम् ।

—<>(©)<>—

थोकडा नं० ७८

—※◎◎※—

[श्री भगवती सूत्र श० २५—ऊ० १].

जीवोंके योगों की तरतमता देखने के लिये यह थोकडा खूब दीर्घदृष्टिसे विचार करने योग्य है।

प्रथम समय के उत्पन्न हुये दो नारकी के नैरीया क्या सम योग वाले है या विषम योगवाले है ? स्यात् सम योग वाले है स्यात् विषम योग वाले है। क्योंकि प्रथम समय के उत्पन्न हुये नारकी के नेरीयों के योग आहारीक से अणाहारीक और अणाहारीक से आहारीक के परस्पर स्यात् न्यून है, स्यात् अधिक है और स्यात् बराबर भी है। यद्यपि न्युन हो तो असख्यातभाग, संख्यातभाग, सख्यातगुण, असख्यातगुण न्यून हो सकते है और अगर अधिक हो तो इसी तरह असख्यातभाग, सख्यातभाग, संख्यातगुण असख्यातगुण, अधिक होते हैं और यदि बराबर हो तो दोनों के योग तुल्य होते है। यथा —

(१) एक समय का आहारीक है परन्तु मींडक गती करके आया है और दूसरा जीव भी एक समय का आहारीक है परन्तु ईलका गतो करके आया है। इन दोनों के योग असंख्यातभाग, न्यूनाधिक ।

(२) एक जीव एक समय का आहारीक है और मींडक गती से आया है तथा दुसरा जीव दो समय का आहारीक है परन्तु एक एका गती करके आया है। इन दोनों के योग सख्यात भाग न्यूनाधिक है।

(३) एक जीव एक समय का आहारीक है और मींडक गती,

करके आया है दूसरा एक समयका अहारीक अणाहारी है परन्तु एक वका गती करके आया है। इनके योग संख्यातगुण न्यूनाधिक है।

(४) एक जीव एक समय का आहारीक बींडक गती करके आया है और दूसरा दो समय का अणाहारीक दो समय की वंका गती करके आया है। इन दोनों के योगों में असंख्यातगुण न्यूनाधिकपने है।

जैसे नारकी कहा उसी माफक शेष भुवनपति १० स्थावर ५, विकलेन्द्रि ३, तीर्यंच पंचेन्द्रि १ मनुष्य १, व्यन्तर १ ज्योतिषी १, वैमानिक १, एवं चौवीस दंडक भ. समझ लेना। विशेष विस्तार गुरु महाराजकी उपासना कर प्राप्ती करना चाहिये इति।

सेवभंते सेवभंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नं० ७६

(श्री भगवती सूत्र श० २५—उ० १)

(योगो की अल्पाबहुत्व)

योग १५ हैं यथा (४ मनका) सत्य मनयोग, असत्य मन योग, मिश्र मनयोग और व्यवहार मनयोग। (४ वचन का) सत्य वचनयोग, असत्य वचनयोग, मिश्र वचनयोग और व्यवहार वचनयोग। (७ काय का) औदारीक काययोग, औदारीक मिश्र काययोग, वैक्रिय काययोग, वेक्रिय मिश्रकाययोग आहारिक काययोग आहारीक मिश्र काय योग और कार्मण काय योग। एवं १५।

योग के स्थान असंख्याते हैं परन्तु यहा समान्यता से १५ ही को ग्रहण कर प्रत्येक के दो दो भेद जघन्य और उत्कृष्ट करके ३० बोलों की अल्पाबहुत्व कही है यथा —

(१) सबसे स्तोक कार्मण का जघन्य योग
(२) औदारीक के मिश्र का जघन्य योग असं० गुणा
(३) वैक्रिय के „ „ „ „
(४) औदारीक का जघन्य योग „ „
(५) वैक्रिय का „ „ „
(६) कार्मण का उत्कृष्ट योग „ „
(७) आहारीक के मिश्र का जघन्य योग „ „
(८) आहारीक के मिश्र का उत्कृष्ट योग , „
(९) औदारीक के मिश्र का और वैक्रीय के मिश्र का उत्कृष्ट योग परस्पर तुल्य और ८ में बोल से असंख्यात गुणा
(१०) व्यवहार मनका जघन्य योग असं० गुणा,
(११) आहारीक का „ , „ „
(१२) तीन मन के और चार वचन के जघन्य योग परस्पर तुल्य और ११ वा बोल से असंख्यात गुणा
(१३) आहारीक का उत्कृष्ट योग असंख्यात गुणा
(१४) औदारीककाय योग, वैक्रीय काययोग, चार मनका और चार वचन का एवं १० का उत्कृष्ट योग परस्पर तुल्य और १३ में बोल से असं० गुणा ॥ इति ॥

सेवभंते सेवभंते तमेव सच्चम् ॥

—✻◎◎✻—

थोकडा नं० ८०

(श्री भगवती सूत्र श० २५-उ० २)

(द्रव्य)

द्रव्य दो प्रकार के है। जीव द्रव्य और अजीव द्रव्य। जं द्रव्य क्या संख्याता है ? असंख्याता है या अनन्ता है ? संख्यात असंख्याता नही किन्तु अनन्ता है क्योंकि जीव अनन्ता है इ वास्ते जीव द्रव्य भी अनन्ता है।

अजीव द्रव्य क्या संख्याते असंख्याते या अनन्ते हैं संख्याते, असंख्याते नहीं किन्तु अनन्ते हैं क्योंकि अजीव द्र पाच हैं। धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय असंख्यात प्रदेशी है आकाश और पुद्गल के अनन्ते प्रदेश हैं और काल वर्तमान प समय है, भूत, भविष्यापेक्षा अनन्ते समय है इस वास्ते अजी द्रव्य अनन्ता है।

जीव द्रव्य अजीव द्रव्यके काम आते है या अजीव द्र जीव द्रव्यके काम आते हैं? जीव द्रव्य अजीव द्रव्य के काम नहीं आ है किन्तु अजीव द्रव्य जीव द्रव्यके काम आते हैं क्योंकि जीव अजी द्रव्य का ग्रहण करके १४ बोलो उत्पन्न करते है यथा-औदारीव शरीर, वैक्रिय शरीर आहारीक शरीर, तेजस शरीर, कामर शरीर, श्रोत्रेन्द्रीय, चक्षुरिन्द्रीय घ्राणेन्द्रीय, रसेन्द्रीय, स्पर्शे न्द्रीय मन योग, वचन योग, काय योग श्वासोश्वास, एव चौदा

अजीव द्रव्य के नारकी का नेरीया काम में आते है य अजीव द्रव्य नारकी के नेरीये के काम आते हैं ? अजीव द्रव्य है नारकी काम में नहीं आते हैं परन्तु नारकी के अजीव द्रव्य का

में आते है। यावत् ग्रहण करके १२ बोल निपजावे औदारीक शरीर, आहारीक शरीर वर्जे के इसी माफक १३ दंडक देवताओं का भी समझ लेना और पृथ्वीकाय अजीव द्रव्य को ग्रहण करके ६ बोल निपजावे। ३ शरीर, १ स्पर्शेन्द्री, १ काय योग, १ श्वासोश्वास। इसी तरह अपकाय तेउकाय और वनस्पतिकाय भी समझ लेना तथा वायुकाय में ७ बोल कहना याने वैक्रिय शरीर अधिक कहना और बेइन्द्री में ८ बोल शरीर ३ इन्द्री २ योग २ और श्वासोश्वास। तेरिन्द्री में ९ बोल। इन्द्री एक बधी घाणेन्द्री एवं ९। चौरिन्द्रीमें १०। इन्द्री एक बधी चक्षु। तिर्यंच पंचेन्द्री में १३ बोल शरीर ४ इन्द्री ५ योग ३ और श्वासोश्वास एवं १३ और मनुष्य में सम्पूर्ण १४ बोल उत्पन्न करे। इति।

सेवंभते सेवंभते तमेव सच्चम्।
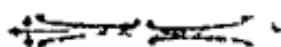
थोकडा नं० ८१

(श्री भगवती सूत्र श० २५–उ०–२)

(स्थितास्थित).

हे भगवान्! जीव औदारिक शरीरपणे जो पुद्गल ग्रहण करते हैं वे क्या "ठिया" स्थित–याने अकम्प पुद्गल ग्रहण करें या "अठिया" कम्पायमान पुद्गल ग्रहण करे? गौतम! अकंप पुद्गल भी ले और कपायमान पुद्गल भी ले यदि स्थित पुद्गल ले तो क्या द्रव्य से ले, क्षेत्र से ले, काल से ले या भावसे ले! अगर द्रव्य से ले तो अनन्त प्रदेशी क्षेत्र से असंख्यात प्रदेश अवगाह्या काल से एक समय दो तीन यावत् असंख्यात समय की स्थिती

वा, भाव से ५ वर्ण, २ गंध ५ रस, ८ स्पर्शवाले पु० को लेव, अगर वण का लेये तो एक गुण काला दो तीन यावत् अनन्त गुण काला का लेवे एव १३ बोल वर्णादि २० बोल में लगाने से भाव के २६० भागा, और स्पर्श किया हुवा १, अवगाह्या २, अणन्तर अवगाहा ३ अणुवा ४, बादर ५ उर्ध्वदिशीका ६, अधोदिशीका ७ तीर्यगदिशीका ८, आदिका ९, मध्यका १०, अन्तका ११, अणुपूर्वी १२, सविषय १३, निर्व्याघात ६ दिशा व्याघाताश्रीय स्यात् तीन दिशी स्यात् दिशी पाच दिशी १४, एवं द्रव्यका १, क्षेत्रका १ कालका १२, भावका २६० और स्पर्शादि १४, कुल २८८ बोल का पुद्गल औदारिक शरीर पणे ग्रहण करे एव वैक्रिय आहारिक परन्तु नियमा छे दिशीका लेवे, कारण दोनों शरीर त्रसनाली में है, और तेजस शरीर की व्याख्या औदारीक शरीर माफिक करना तथा कार्मण शरीर च्यार स्पर्शवाले होनेसे ५२ बोल कम करने से द्रव्यादि २३६ बोलका पुद्गल ग्रहण करे,

जीव श्रोत्रेन्द्रीय पणे २८८ बोलों वैक्रिय शरीर की माफिक नियमा छे दिशि का पुद्गल ग्रहण करे एवं चक्षु घ्राण रसेन्द्री भी समझना, स्पर्शेन्द्री औदारिक शरीर की माफिक समझना।

मन वचन पणे कार्मण शरीर कि माफिक चौफरसी पुद्गल ग्रहण करे। परन्तु त्रसनाली में होने से नियमा छे दिशी का पुद्गल ग्रहण करे और काययोग तथा श्वासोश्वास औदारीक शरीर के माफिक २८८ बोलका पुद्गल ग्रहण करे, व्याघाताश्रीय ३-४-५ दिशी का और निर्व्याघात आश्रीय नियमा ६ दिशीका पु० ग्रहण करे, इति। समुच्चय जीव उपर चौदा (५ शरीर, ५ इन्द्रीय ३ योग, १ श्वासोश्वास) बोल कहा इसी को अब प्रत्येक दंडक पर लगाते हैं।

नारकी, देवताओ में १२ बोल पावे (आहारीक औदारीक

वर्जके) समुच्चयवत् बोलों का पुद्गल ग्रहण करे परन्तु नियमा छे दिशी का समझना।

पृथ्वी, अप, तेउ और वनस्पति में ६ बोल (शरीर, ३ इन्द्रिय, १ काय १ श्वासोश्वास १) पावे और समुच्चयवत् बोलों का पुद्गल ग्रहण करे, परन्तु दिशी में स्यात् ३-४-५ दिशी निर्व्याघात नियमा ६ दिशी का पुद्गल ले एव वायुकाय परन्तु वैक्रिय शरीर अधिक है, और वैक्रिय शरीर पुद्गल नियमा छे दिशी का लेवे।

बेरिन्द्री में ८ तेरिन्द्री में ९ चौरिन्द्री में १० सर्व समुच्चयवत् समझना परन्तु नियमा छे दिशी का पुद्गल ग्रहण करे।

तिर्यंच पचेन्द्रिय १३ बोल (आहारक वर्जके) और मनुष्य में १४ बोल पावे। सर्वाधिकार समुच्चयवत् २८८ बोल का पुद्गल ग्रहण करे परन्तु नियमा छे दिशी का क्योंकि १९ दण्डकों के जीवों केवल त्रसनाली में ही होते हैं इसलिये नियमा छे दिशी का पुद्गल ग्रहण करे शेष ५ दण्डक स्थावरों को सर्व लोक में है वास्ते स्यात् ३-४-५ दिशीका पु० ले। यह लोकके अन्त आश्रीय है। इस थोकडे को ध्यान पूर्वक विचारो।

सेवभते सेवभते तमेव सच्चम्।

थोकडा न० ८२

[श्री भगवती सूत्र श० २५-उ० ३]

(सस्थान)

संस्थान-आकृती को कहते हैं जिसके दो भेद है जीव

संस्थान समचौरसादि छे भेद और अजीव संस्थान परिमंडलादि छे भेद है। यहा पर अजीव संस्थान के भेद लिखते हैं-(१) परिमंडल संस्थान जो चूडी के आकार होता है (२) वट्ट संस्थान गोल लड्डू के आकार (३) त्रस-सिंघोडे के आकार (४) चौरस चोकीके आकार (५) आयतन लम्बा आकार (६) अन्वस्थित इनपांचों से विपरीत हो। परिमंडल संस्थान के द्रव्य क्या संख्याते असंख्याते या अनन्ते हैं? संख्याते असंख्याते नहीं किन्तु अनन्ते हैं एव यावत् अन्वस्थितादि छेओं संस्थान के द्रव्य अनन्ते हैं।

परिमंडल संस्थान के प्रदेश क्या संख्याते असंख्याते, या अनन्ते हैं? संख्याते असंख्याते नहीं किन्तु अनन्ते हैं। यावत् अन्वस्थितादि छेओं संस्थान के कहना। अब इन छओं संस्थानों की द्रव्यापेक्षा अल्पाबहुत्व कहते हैं —

(१) सब से थोडा परिमंडल संस्थान के द्रव्य
(२) वट्ट संस्थान के द्रव्य संख्यात गुणा
(३) चौरस संस्थान के द्रव्य संख्यात गुणा
(४) त्रस संस्थान के द्रव्य संख्यात गुणा
(५) आयतन संस्थान के द्रव्य संख्यात गुणा
(६) अन्वस्थित संस्थान के द्रव्य असंख्यात गुणा

प्रदेशापेक्षा संस्थानों की अल्पाबहुत्व भी इसी माफिक समझ लेना। अब द्रव्य प्रदेशापेक्षा दोनोंकी शामिल अल्पाबहुत्व कहते हैं—(१) सब से थोडा परिमंडल संस्थान का द्रव्य (२) वट द्रव्य सं० गुणा० (३) चौरस द्रव्य सं० गुणा० (४) त्रस द्रव्य सं० गुणा० (५) आयतन द्रव्य स० गुणा० (६) अन्वस्थित द्रव्य असं० गुणा० (७) परिमंडल प्रदेश असं० गुणा० (८) वट प्रदेश स० गुणा० (९) चौरस प्रदेश स० गुणा० (१०) त्रस

प्रदेश म० गुणा० (११) आयतन प्रदेश स० गु० (१२) अन्व स्थित प्रदेश अस० गुणा० इति।

सेवभते सेवभते तमेव सचम्।

थोकडा न० ८३

[श्री भगवती सूत्र श० २५-उ० ३]

(सम्थान.)

मस्थान पाच प्रकार के होते हैं-यथा परिमडल० वट्ट० त्रम० चौरस० आयतन परिमडल संस्थान क्या सख्याते, असख्याते या अनते है ? सख्याते, असख्याते नहीं किन्तु अनन्ते है एव यावत् आयतन सस्थान भी कहना।

रत्नप्रभा नारकी में परिमडल संस्थान अनन्ते है, एव यावत् आयतन सस्थान भी अनन्ते है, इसी तरह ७ नारकी, १२ देवलोक, ९ ग्रैवेक, ५ अनुत्तर वैमान और सिद्धशिला, पृथ्वी एव ३५ बोलों में पाचों सस्थान अनन्ते अनन्ते है, पैंतीस को पांच गुणा करने से १७५ भागा हुवा।

एक यवमध्य परिमडल सस्थानमें दूसरे परिमडल सस्थान कितने है ? अनन्त है एव यावत् आयतन सस्थान भी अनन्त कहना, इसी तरह एक यवमध्य परिमडल की माफिक शेष वट्टादि चारों सस्थानों की व्याख्या करनी एक सस्थान में दूसरे पाचो सस्थान अनन्ते है इसलिये पांचको पाचका गुण करनेसे २५ बोल हुये, पूर्ववत् नरकादि ३५ बोलोंमें ५-२५ बोल पाये एव कुल ८७५ भागा हुवा और १७५पहिलीका सब मिलके १०५ भागा हुवा।

सेवभते सेवभते सचम्।

थोकडा नं० ८४

(श्री भगवती सूत्र श० २५—उ० ३)

(संस्थान).

पुद्गल परमाणु के एकत्रित होने से अजीव का संस्थान (आकार) बनता है उसी का सविस्तार वर्णन करेंगे कि कितने २ परमाणु इकट्ठे होने से कौन २ से संस्थानकी उत्पत्ति होती है।

परिमंडल संस्थान के दो भेद होते हैं, परतर और घन। जो परतर परिमंडल संस्थान है वह जघन्य से जघन्य २० प्रदेश का होता है और अवगाहना भी २० आकाश प्रदेश की होती है। उत्कृष्ट अनन्त प्रदेशी और असंख्यात आकाश प्रदेश अवगाही होता है और घन परिमंडल संस्थान जघन्य ४० प्रदेशी और ४० आकाश प्रदेश अवगाही होता है, और उत्कृष्ट अनन्त प्रदेशी असंख्याते आकाश प्रदेश अवगाहते हैं, शेष यंत्र से समझना —

संस्थान	परतर		घन	
	उज प्रदेशी	जुम प्रदेशी	उज प्रदेशी	जुम प्रदेशी
वट्ट जघन्य	५	१२	७	३२
त्रंस ,,	३	६	४	३५
चौरस ,,	९	४	२७	८
आयत ,, *	१५	६	४५	१२

नोट—*आयतन का तीसरा भेद श्रेणी है उन के उज प्रदेशी ३ प्रदेशी है जुम प्रदेशी २ प्रदेशी हैं।

जघन्य जितने प्रदेश का संस्थान होता है उतनाही आकाश प्रदेश अवगाहता है और उत्कृष्ट प्रदेश सब संस्थान अनन्त प्रदेशी है और असख्याता आकाश प्रदेश अवगाहते हैं। इति।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नं० ८५

श्री भगवती सूत्र श० १८—उ० ४

(जुम्मा)

लोक में जो जीव अजीव पदार्थ हैं वह द्रव्य और प्रदेश पेक्षा कितने २ हैं उनकी गिणती करने के लिये यह संख्या बांधी है।

गोतम स्वामी भगवान् से पूछते हैं कि हे भगवान! जुम्मा कितने प्रकार के हैं? गौतम! चार प्रकार के है यथा=कुडजुम्मा, तेउगा जुम्मा, दावरजुम्मा, और कलउगा जुम्मा। जैसे किसी एक रासी में से चार चार निकालने पर शेष ४ बचे उसे कुडजुम्मा कहते हैं। इसी तरह चार २ निकालते हुवे शेष ३ बचे उसे तेउगा जुम्मा कहते हैं। अगर चार २ निकालने पर शेष २ बचे तो दावरजुम्मा, कहते हैं और एक बचे तो कलउगा जुम्मा, कहते हैं। नारकी के नेरिया क्या कुडजुम्मा है, यावत् कलउगा जुम्मा है? जघन्य पदे कुडजुम्मा, उत्कृष्ट पदे तेउगा, मध्यम पदे चारों भांगा पाय। इसी तरह १० भुवनपती १-तीर्यंच पंचेन्द्री,

१ मनुष्य १ व्यंतर, १ ज्योतिषी और वैमानिक एवं १६ दंडक समझ लेना। पृथ्वीकाय जघन्य पदे कुडजुम्मा उत्कृष्ट पदे दावर जुम्मा और मध्यम पदे चारों भांगा पावे। इसी तरह अप, तेउ, वायु, बेरिन्द्री, तेरिन्द्री और चौरिन्द्री भी समझ लेना। वनस्पति जघन्य उत्कृष्ट पदे अपदा मध्यम पदे चारों भांगा पावे एवं सिद्ध भगवान भी समझना

पनरह दंडक की स्त्री (मनुष्य १, तीर्यच १, देवता १३) जघन्य उत्कृष्ट पदे कुड जुम्मा, और मध्यम पदे चारों भांगा।

॥ इति ॥

सेवभंते सेवभंते तमेव सच्चम्

थोकडा नं० ८६

(श्री भगवती सूत्र श० २५—उ० ३)

(संस्थान जुम्मा)

हे भगवान्! एक परिमंडल संस्थान द्रव्यापेक्षा क्या कुड जुम्मा है यावत् कलउगा जुम्मा है? गौतम! कलउगा जुम्मा है, शेष कुडजुम्मादि तीन बोल नहीं पावे। एवं वट्ट, त्रस, चौरस और आयतन भी समझना क्योंकि एक द्रव्यका प्रश्न है इस लिये कलउगा जुम्मा ही होवे।

घणा परिमंडल संस्थान के प्रश्नोत्तर में पहिले इसके दो भेद बताये हैं समुचय (सर्व) और अलग अलग। समुचय आश्रीय परिमंडल संस्थान कीसी समय कुडजुम्मा है यावत् स्यात् कलउगा है और अलग अलग की अपेक्षा से कीसी भी

समय पूछो एक कल्उग जुम्मा मिलेगा शेष ३ बोल नहीं ए-
वट्ट, त्रस, चौरस और आयतन भी समझ लेना।

हे भगवन्! एक परिमण्डल संस्थान के प्रदेश क्या कुड जुम्मा है यावत् कलउगा है? गौतम! स्यात् कुडजुम्मा है यावत् स्यात् कलउगा जुम्मा है। घणा परिमंडल की पुच्छा समुचय की अपेक्षा स्यात् कुडजुम्मा है यावत् स्यात् कलयुग जुम्मा है और अलग अलग की अपेक्षा कुडजुम्मा भी घणा यावत् कलयुगा भी घणा एवं, वट्ट, त्रस, चौरस और आयतन भी कहना।

हे भगवन्! क्षेत्रापेक्षा एक परिमडल संस्थान क्या कुड जुम्मा प्रदेश क्षेत्र अवगाह्य है यावत कलयुग जुम्मा प्रदेश क्षेत्र अवगाह्य है? गौतम! कुडजुम्मा प्रदेश अवगाह्य है, शेष ३ बोल नहीं एव एक वट्ट संस्थान स्यात् कुडजुम्मा, तेउगा और कल्युगा प्रदेश अवगाह्य है। दावर जुम्मा नहीं और एक त्रस संस्थान स्यात् कुडजुम्मा तउगा, और दावरजुम्मा प्रदेश अव गाह्य है, शेष कल्युगा नहीं, और चौरस संस्थान स्यात् कुड-जुम्मा, तेउगा कल्युगा प्रदेश अवगाह्य है। दावर जुम्मा नहीं और आयतन संस्थान स्यात कुडजुम्मा, तउगा, दावरजुम्मा अवगाह्य है कठयुगा नहीं।

घणा परिमंडल संस्थानकी पृच्छा—समुचय आश्रीय कुडजुम्मा प्रदेश अवगाह्य है एव शेष घणा चार संस्थानों की अपेक्षा भी कुडजुम्मा प्रदेश अवगाह्य है कारण पाचों संस्थान पूर्ण लोक व्याप्त है सो लोक कुडजुम्मा प्रदेशी है और अलग २ घणा परिमडल संस्थानों की अपेक्षा घणा कुडजुम्मा, प्रदेश अवगाह्य है। घणा वट्ट संस्थान अलग २ की अपेक्षा घणा कुड जुम्मा, घणा तउगा, घणा कल्युगा प्रदेश अवगाह्य है। घणा त्रस

सस्थान अलग २ की अपेक्षा घणा कुडजुम्मा, घणा तेउगा, घणा द्वावरजुम्मा प्रदेश अवगाह्य है। घणा चौरस सस्थान अलग २ की अपेक्षा (वट्टवत्) घणा कुडजुम्मा, तेउगा, कलयुग प्रदेश अवगाहा है, और अलग २ घणा आयतन सस्थान घणा कुड जुम्मा प्रदेश यावत् घणा कल्युगा प्रदेश अवगाहा है।

हे भगवान्! एक परिमडल सस्थान कालापेक्षा क्या कुड जुम्मा समयकी स्थितिवाला है ? यावत् कलयुगा समयकी स्थितिवाला है ? गौतम स्यात् कुडजुम्मा समयकी स्थितिवाला है एव यावत् स्यात् कल्युगा समयकी स्थितिवाला है। इसी तरह वट्ट त्रस चौरस और आयतन सस्थान भी चारों बोलोंके समयकी स्थितिवाला कहना। घणा परिमडल सस्थानकी पृच्छा, समुच्चय आश्रीय स्यात् कुडजुम्मा, एव यावत् स्यात् कल्युगा समयकी स्थितिके कहने और अलग २ की अपेक्षा भी इसी तरह घणा कुडजुम्मा यावत् घणा कलयुगा समयकी स्थितिका कहना। एव शेष वट्ट, त्रस, चौरस और आयतनकी भी व्याख्या परिम डलवत् करनी।

हे भगवान् एक परिमडल सस्थान भावाश्रीय काला गुणके पर्यवापेक्षा क्या कुडजम्मा है ? यावत् कलयुगा है ? गौतम! स्यात् कुडजुम्मा यावत् कलयुगा है। एव यावत् आयतन सस्थान भी समझना। घणा परिमडल सस्थानकी पृच्छा, समुच्चयाश्रीय स्यात् कुडजुम्मा यावत् स्यात् कल्युगा है, और अलग २ अपेक्षा घणा कुडजुम्मा है यावत् घणा कलयुगा है कहना। एव यावत् आयतन सस्थान भी कहना। यह एक काले वर्णकी अपेक्षा कहा है। इसी तरह ५ वर्ण, २ गध, ५ रस, ८ स्पर्शको पांचों सस्थानों कह देना ॥ इति ॥

॥ सेव भंते सेव भंते तमेव सच्चम् ॥

थोकडा नं० ८७

[श्री भगवती सूत्र श० २५-उ० ३]

(श्रेणी)

आकाश प्रदेशकी पंक्तिको श्रेणी कहते हैं। गौतमस्वामी भगवान्से प्रश्न करते हैं कि हे भगवान्! समुच्चय आकाश प्रदेशकी द्रव्यापेक्षा श्रेणी क्या संख्याती, असंख्याती, या अनन्ती है? गौतम! संख्याती, असंख्याती नहीं किन्तु अनन्ती है। इसी तरह पूर्वादि छे दिशीकी भी कह देना। एवं समुच्चयवत् अलोकाकाशकी भी श्रेणी समझना (अनन्ती है)।

द्रव्यापेक्षा लोकाकाशके श्रेणीकी पृच्छा? गौतम! संख्याती नहीं, अनन्ती नहीं किन्तु असंख्याती है। इसी तरह छे दिशी भी समझना।

प्रदेशापेक्षा समुच्चय आकाश प्रदेशके श्रेणीकी पृच्छा? गौतम! संख्याती असंख्याती नहीं किन्तु अनन्ती है, एवं पूर्वादि छे दिशीकी भी कहना।

प्रदेशापेक्षा लोकाकाशके श्रेणीकी पृच्छा? गौतम! स्यात् संख्याती, स्यात् असंख्याती है परंतु अनन्ती नहीं, एवं पूर्वादि चार दिशी कहना, परंतु उंची नीची केवल असंख्याती है।

प्रदेशापेक्षा अलोकाकाशके श्रेणीकी पृच्छा! गौतम, स्यात् संख्याती, असंख्याती अनन्ती है। परंतु पूर्वादि चार दिशीमें नियमा अनन्ती है, उंची नीचीमें तीनों बोल पावे।*

---

* लोकालोकमें स्यात् संख्याती श्रेणी कहनेका कारण यह है कि लोकके अन्तमें लोक और अलोकका गूंथा है वहांपर संख्याता आकाश प्रदेश लोकालोकवर्ती अपेक्षाय है इसी वास्ते संख्याती श्रेणी कही।

समुच्चय श्रेणी क्या सादि सान्त है (१) सादि अनन्त है, (२) अनादि सान्त है, (३) या अनादि अनन्त है? (४) गौतम! अनादि अनन्त है शेष तीन भागा नहीं इसी तरह पूर्वादि छे दिशी भी समझ लेना।

लोकाकाशके श्रेणीकी पृच्छा? गौतम! सादि सान्त है शेष तीन भागा नहीं एव छे दिशी भी समझ लेना।

अलोकाकाशके श्रेणीकी पृच्छा, गौतम! स्यात् सादि सान्त यावत् अनादि अनन्त चारों भागा पावे यथा—

(१) सादि सान्त-लोकको व्याघातमें।

(२) सादि अनन्त-लोकके अन्तमें अलोककी आदि है परतु फिर अन्त नहीं।

(३) अनादि सान्त-अलोक अनादि है परतु लोकके पासमें अन्त है।

(४) अनादि अनन्त-जहा लोकका व्याघात न पडे वहा।

पूर्व पश्चिम और उत्तर दक्षिण दिशी सादी सान्त वज देना तथा उंची नीची दिशी पूर्ववत् चारों भागा पावे।

हे भगवान्! द्रव्यापेक्षा श्रेणी क्या कुडजुम्मा है? यावत् कल्युगा है? गौतम! कुडजुम्मा है, शेष तीन भागा नहीं, एव यावत् छे दिशीमें कहना, इसी तरह द्रव्यापेक्षा लोकाकाशकी श्रेणी भी समझ लेना, यावत् छे दिशीकी व्याख्या कर देना एव अलोकाकाशकी भी व्याख्या करना।

प्रदेशापेक्षा आकाश श्रेणीकी पृच्छा, गौतम! कुडजुम्मा है शेष तीन भागा नहीं एव छे दिशी।

प्रदेशापेक्षा लोकाकाशके श्रेणीकी पृच्छा गौतम! स्यात् कुडजुम्मा है स्यात् दावरजुम्मा है शेष दो भागा नहीं, एव

पूर्वादि चार दिशी, और उर्ध्व अधो दिशी अपेक्षा कुडजुम्मा हैं शेष तीन भागा नहीं।

प्रदेशापेक्षा अलोकाकाशके श्रेणीकी पृच्छा, गौतम! स्यात् कुडजुम्मा यावत् स्यात् कलयुगा हैं, एव छे दिशी परन्तु उची नीची दिशीमें कलयुगा वर्जके शेष ३ भागा कहना।

श्रेणी सात प्रकारकी हैं (१) ऋजु (सीधी), (२) एक बंका, (३) दो बका, (४) एक खूणावाली, (५) दो खूणावाली, (६) चक्रवाल, (७) अर्ध चक्रवाल (स्थापना)।

— Λ M L L ⌒ ○

हे भगवान! जीव अनुश्रेणी (सम) गति करे या विश्रेणी (विषम)? गौतम! अनुश्रेणी गती करे परतु विश्रेणो गति नहीं करे इसी तरह नारकादि २४ दडकोंके जीव समझ लेना, एवं परमाणु पुद्गल भी अनुश्रेणी करे, विश्रेणी नहीं करे, द्विप्रदेशी यावत् अनन्त प्रदेशी भी अनुश्रेणी करे विश्रेणी न करे। इति।

॥ सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ॥

—※(◎)※—

थोकडा नं० ८८

[श्री भगवती सुत्र श० २५–उ० ४]

(द्रव्य)

द्रव्य छे प्रकारके है—धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, जीवास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय और काल।

थोकडा नं० ८६

श्री भगवती सूत्र श० २५–उ० ४

(जीवों का प्रमाण.)

इस थोकडे में सब जीवों को जुम्मा रासी कर के द्रव्य क्षेत्र, काल, और भावाश्रीय बतावेंगे।

(१) जीव द्रव्य प्रमाण।

हे भगवान्! एक जीव द्रव्यापेक्षा क्या कुडजुम्मा या कल युगा है? (गौतम) कल्युगा है, क्योंकि एक जावाश्रीय प्रश्न इस लिए एव २४ दडक और सिद्ध के भी एक जीवाश्रीय कल युगा ही कहना।

घणा जीवों की अपेक्षा क्या कुडजुम्मा है? यावत् कल्युग है? (गौतम) घणा जीवों की गणती का दो भेद है एक समुच दूसरा अलग २, जिस में समुचय की अपेक्षा तो कुडजुम्मा है शेष ३ भागा नहीं और अलग २ की अपेक्षा कल्युगा है शेष ३ भागा नहीं।

घणा नारकी की पृच्छा? (गौतम) समुचयापेक्षा स्यात् कुडजुम्मा यावत् स्यात् कल्युगा है, और अलग २ की अपेक्ष कल्युगा है शेष ३ बोल नहीं एव २४ दडक और सिद्ध भी समजलेना।

(२) जीव प्रदेश प्रमाण

हे भगवान्! प्रदेशापेक्षा एक जीव क्या कुडजुम्मा है यावत् कल्युगा है! (गौतम) प्रदेश दो प्रकार के है, एक जीव प्रदेश

और दूसरा शरीर प्रदेश, जिसमें जीव प्रदेश तो कुडजुम्मा है शेष ३ भागा नहीं, और शरीर प्रदेश स्यात् कुडजुम्मा है यावत् कल्युगा है एव २४ दडक भी समजना। एक सिद्ध के प्रदेश की पृच्छा ? (गौतम) शरीर प्रदेश नहीं है, और जीव प्रदेश अपेक्षा कुडजुम्मा है, शेष नहीं

घणा जीवों के प्रदेशाश्रीय पृच्छा ? (गौतम) जीवों अपेक्षा समुचय कहो या अल्ग २ कहो कुडजुम्मा प्रदेश है, शेष ३ भाग नहीं और शरीरापेक्षा समु० स्यात् कुडजुम्मा यावत् कलयुगा। और अल्ग २ अपेक्षा कुडजुम्मा भी यावत् कलयुगा भी घणा। एव नरकादि २४ दडकों में भी समजलेना।

घणा सिद्धों की पृच्छा ? (गौतम) शरीर प्रदेश नहीं हैं, और जीवोंने प्रदेशापेक्षा समुचय और अल्ग २ में सब ठिकाणे कुडजुम्मा प्रदेश कहना शेष ३ भागा नहीं।

(३) क्षेत्रापेक्षा प्रमाण

हे भगवान्! समुचय एक जीव क्या कुडजुम्मा प्रदेश अवगाह्य है यावत् कल्युग प्रदेश अवगाह्य है ? (गौतम) स्यात् कुडजुम्मा प्रदेश अवगाह्य है यावत् स्यात कल्युगा प्रदेश अवगाह्य है, एवं २४ दडकों और सिद्ध की भी व्याख्या करनी।

घणा जीव की पृच्छा ? (गौतम) समुचय तो कुडजुम्मा प्रदेश अवगाह्य है, क्योंकि जीव सर्व लोक में है और लोकाकाश कुडजुम्मा प्रदेशी है, अलग २ की अपेक्षा घणा कुडजुम्मा प्रदेश अवगाह्य है, यावत घणा कल्युगा प्रदेश अवगाह्य है।

घणा नारकी की पृच्छा ? (गौतम) समुचय स्यात् कुडजुम्मा यावत् स्यात् कल्युगा प्रदेश अवगाह्य है और अल्ग २ की अपेक्षा घणा कुडजुम्मा यावत् घणा कलयुगा प्रदेश अवगाह्य

है एव एकेन्द्री वर्ज के यावत् वैमानिक और सिद्धोंकी व्याख्या करनी और पचेन्द्रीय समुचय जीववत् कहना।

(४) कालापेक्षा प्रमाण

हे भगवान् ! समुचय एक जीव क्या कुडजुम्मा समय स्थिति वाला है यावत् कलयुगा समय की स्थिति वाला है ? (गौतम) कुडजुम्मा स्थितीवाला है, क्योंकि काल का समय कुडजुम्मा है और जीव सब काल में शाश्वता है।

एक नारकी के नेरिये की पृच्छा ! (गौतम) स्यात् कुड जुम्मा यावत् कलयुगा समय की स्थिति का है एव २४ दंडक और सिद्ध समुचय जीव की माफिक समझना।

घणा जीव की पृच्छा ! (गौतम) समुचय और अलग २ कुडजुम्मा समय की स्थिति वाले है शेष बोल नहीं।

घणा नारकी की पृच्छा ! (गौतम) समुचय स्यात् कुड जुम्मा यावत् कलयुगा समय की स्थिति वाले है और अलग २ अपेक्षा कुडजुम्मा घणा यावत् घणा कलयुगा समय की स्थिति वाले है एव २४ दंडकों और सिद्ध समुचयवत्।

(५) भावापेक्षाप्रमाण

हे भगवान् ! समुचय एक जीव काला गुण पर्यायापेक्षा क्या कुडजुम्मा यावत् कलयुगा है ? (गौतम) जीव, प्रदेशापेक्षा वर्णादि नहीं है, और शरीर प्रदेशापेक्षा स्यात् कुडजुम्मा यावत स्यात् कलयुगा पर्याय वाला है, एव २४ दंडकों और सिद्धों के शरीर नहीं।

समुचय घणा जीव की पृच्छा ! (गौतम) जीवों के प्रदे शोंपेक्षा वर्णादि नहीं है और शरीरापेक्षा स्यात् कुडजुम्मा यावत कलयुगा पर्याय वाले है, एव २४ दंडकों भी समझ लेना और

काले वर्ण की व्याख्या के माफिक शेष वर्ण ५ गंध, २ रस, ५ स्पर्श आठ एव २० बोलों की व्याख्या समझ लेना ।

(६) ज्ञानपर्यवापेक्षा प्रमाण

हे भगवान् ! समुचय एक जीव मतिज्ञान की पर्यायापेक्षा क्या कुडजुम्मा है यावत् कल्युगा है ? (गौतम) स्यात् कुड जुम्मा यावत् स्यात् कलयुगा है, एव एकेन्द्रीय वर्जके शेष १९ दंडकों समझ लेना । एकेन्द्रीय में मतिज्ञान नहीं है और इसी तरह घणा जीवोंपेक्षा समुचय और अलग २ की व्याख्या भी करदेनी, एव श्रुतज्ञान भी समझना और अवधीज्ञान की व्याख्या भी इसी तरह करदेना परन्तु १९ दंडक की जगह १६ दंडक कहना क्योंकि पाच स्थावर के सिवाय तीन विकलेन्द्री में भी अवधीज्ञान नहीं होता है और मन पयव ज्ञान की भी व्याख्या मतिज्ञानवत् करनी परन्तु मनुष्य दंडक सिवाय अन्य दंडक में मन पर्यव ज्ञान नहीं है इस लिये एक ही दंडक कहना । केवल ज्ञान की पृच्छा ? (गौतम) कुड जुम्मा पर्याय है शेष तीन बोल नहीं एव घणा जीव समुचय और अलग २ की भी व्याख्या करदेनी ।

मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान में २४ दंडक और विभंग ज्ञान में १६ दंडक चक्षुदर्शन में १७ दंडक, अचक्षुदर्शन में २४ दंडक और अवधी दर्शन में १६ दंडक इन सबकी व्याख्या मतिज्ञानवत् समझनी, और केवलदर्शन केवलज्ञानकी माफिक यह थोकडा खूब दीर्घदृष्टि से विचारने लायक है, धर्म ध्यान इसी को कहते हैं, द्रव्यानुयोग में उपयोग की तिव्रता होने से कर्मो की बडी भारी निर्जरा होती है, इस लिये मोक्षाभिलाषियों को हमेशा इस बात की गवेषणा करनी चाहिये । इति ।

सेवभंते सेवभंते तमेव सचम् ।

थोकडा नं० ६०

श्री भगवती सूत्र श० २५-उ० ४

(जीव कंपाकंप)

हे भगवान्! समुच्चय जीव क्या कपायमान है या अकंप है (गौतम) जीव दो प्रकार के है। एक सिद्धोंके और दूसरे संसारी जिसमें सिद्धों के जीव दो प्रकार के हैं, एक अणतर (जो एक समय का) सिद्ध और दूसरा परंपर (बहुत समय का) सिद्ध, जो परम्पर सिद्ध है वे अकंप है और अणंतर सिद्ध है वे कंपायमान है अगर कंपायमान है तो क्या देश (एक हिस्सा) कंपायमान है या सर्व कंपायमान है? देश कंपायमान नहीं है किन्तु सब कंपायमान है क्योंकि मोक्ष जाता हुआ जीव रस्ते में सब प्रदेशों से चलता है।

संसारी जीव दो प्रकार के है एक शलेस प्रतिपन्न (चौदवें गुणस्थानवर्ती) और दूसरा अशैलेस (पहिले से तेरवे गुण स्थान तक के) जिस में शैलेस प्रतिपन्न है वह अकंप है, और अशैलेस है वह कंपायमान है? अगर कंपायमान है तो क्या देश कंपायमान है या सब कंपायमान है, देश कंपायमान भी है और सर्व कंपायमान भी है। जैसे हाथ हिलाना यह देश कंपाय मान या आत्म सब प्रदेशों से गती आगती करता है सो सर्व है।

नारकी के नेरीयों की पृच्छा? (गौतम) देशकम्प भी है और सब कम्पी भी है कारण नारकी दो प्रकार के है, एक परभव गमन गतीवाले, और दूसरे वर्तमान भवस्थित देशकंप है, इसी माफिक भुवनपति १० स्थावर, ५ विकलेन्द्री, तीन १ मनुष्य, १ व्यंतर १ जोतिषी और वैमानिक भी समझ लेना। इति।

सेवभंते सेवभंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नं० ६१

श्री भगवती सूत्र श० २५–उ० ४

(पुद्गलों की अल्पाबहुत्व.)

पुद्गल-परमाणु सख्यातप्रदेशी, असख्यातप्रदेशी और अनन्तप्रदेशी स्कध इनकी द्रव्य प्रदेश और द्रव्यप्रदेश की अल्पा बहुत्व कहते हैं—

(१) सबसे स्तोक अनन्त प्रदेशी स्कध के द्रव्य हैं।
(२) परमाणु पुद्गल के द्रव्य अनन्त गुणे।
(३) सख्यातप्रदेशी के द्रव्य सख्यात गुणे।
(४) असख्यातप्रदेशी के द्रव्य असख्यात गुणे।

प्रदेशापेक्षा भी अल्पाबहुत्व इसी माफिक (द्रव्यवत्) समझलेना।

(द्रव्य और प्रदेश की अल्पाबहुत्व)

(१) सब से स्तोक अनन्तप्रदेशी स्कध के द्रव्य।
(२) तस्य प्रदेश अनत गुणे।
(३) परमाणु पुद्गल के द्रव्य प्रदेश अनत गुणे।
(४) सख्यात प्रदेशी स्कध के द्रव्य सख्यात गुणे।
(५) तस्य प्रदेश सख्यात गुणे।
(६) असख्यात प्रदेश स्कध के द्रव्य असंख्यात गुणे।
(७) तस्य प्रदेश असख्यात गुणे।

क्षेत्रापेक्षा अल्पाबहुत्व.

(१) सब से स्तोक एक आकाश प्रदेश अवगाहा द्रव्य।

(२) संख्यात प्रदेश अवगाह द्रव्य संख्यात गुणे ।
(३) असंख्यात प्रदेश अवगाह द्रव्य असंख्यात गुणे।
इसी माफिक प्रदेश की भी अल्पाबहुत्व समझ लेना।
(१) सब से स्तोक एक प्रदेश अवगाह द्रव्य और प्रदेश।
(२) संख्यात प्रदेश अवगाह द्रव्य संख्यात गुणे।
(३) तस्य प्रदेश संख्यात गुणे।
(४) असंख्यात प्रदेश अवगाह द्रव्य असंख्यात गुणे।
(५) तस्य प्रदेश असंख्यात गुणे।

कालापेक्षा अल्पाबहुत्व.

(१) सब से स्तोक एक समय की स्थिति के द्रव्य।
(२) संख्यात समय स्थिति के द्रव्य संख्यात गुणे।
(३) असंख्यात समय स्थिति के द्रव्य असंख्यात गुणे।
इसी माफिक प्रदेशों की भी अल्पाबहुत्व समझ लेना।
(१) सब से स्तोक एक समय की स्थिति के द्रव्य और प्रदेश।
(२) संख्यात समय की स्थिति के द्रव्य संख्यात गुणे।
(३) तस्य प्रदेश संख्यात गुणे।
(४) असंख्यात समय की स्थिति के द्रव्य असंख्यात गुणे।
(५) तस्य प्रदेश असंख्यात गुणे।

भावापेक्षा प्रमाण कि अल्पाबहुत्व.

(१) सब से स्तोक अनन्त गुण काले पुद्गलों के द्रव्य।
(२) एक गुण काला पुद्गल द्रव्य अनन्त गुणे।
(३) संख्यात गुण काला पुद्गल द्रव्य संख्यात गुणे।
(४) असंख्यात गुण काला पुद्गल द्रव्य असंख्यात गुणे।
इसी माफीक प्रदेशों की भी अल्पाबहुत्व समझ लेनी।
(१) सब से स्तोक अनंत गुण काले के द्रव्य।

(२) तस्य प्रदेश अनन्त गुणे ।
(३) एक गुण काला द्रव्य और प्रदेश अनन्त गुणे ।
(४) सख्यात प्रदेश काले० पु० द्रव्य स० गुणे ।
(५) तस्य प्रदेश सख्यात गुणे ।
(६) अस० प्रदेश काले० पु० द्रव्य असख्यात गुणे ।
(७) तस्य प्रदेश अस० गुणे ।

इसी माफिक ५ वर्ण, २ गंध, ५ रस, ४ स्पर्श (शीत, उष्ण, स्निग्ध, रूक्ष,) एव १६ बोलो की व्याख्या काले वर्णवत् तीन तीन अल्पाबहुत्व करनी ।

कर्कश स्पर्श की अल्पाबहुत्व

(१) सब से स्तोक एक गुण कर्कश का द्रव्य ।
(२) स० गु० कर्कश द्रव्य स० गु०
(३) अस गु० कर्कश द्रव्य अस गु ।
(४) अनत गुणा कर्कश द्रव्य अनंत गुणे ।

कर्कश स्पर्श प्रदेशापेक्षा अल्पा०

(१) सब से स्तोक एक गुण कर्कश के प्रदेश ।
(२) स० गुणा कर्कश के प्रदेश अस० गुणे ।
(३) अस० गुणा कर्कश के प्रदेश अस० गुणे ।
(४) अनत गुणा कर्कश के प्रदेश अनत गुणे ।

कर्कश० द्रव्य प्रदेशापेक्षा अल्पा० ।

(१) सब से स्तोक एक गुण कर्कश के द्रव्य प्रदेश ।
(२) स० गुणा कर्कश पुद्गल द्रव्य स० गुणे ।
(३) तस्य प्रदेश अस० गुणे ।
(४) अस० गुणा कर्कश पुद्गल द्रव्य अस० गुणे ।
(५) तस्य प्रदेश असं० गुणे ।

(६) अनंत गुणा कर्कश पुद्गल द्रव्य अनंत गुणे ।
(७) तस्य प्रदेश अनंत गुणे ।

इसी माफिक मृदुल, गुरु, लघु भी समझ लेना। कुल १९ अल्पाबहुत्व हुई। ३ द्रव्य की, ३ क्षेत्र की, ३ काल की, और १० भाव की।

सेवंभते सेवंभते तमेव सचम् ।

—※(◎)※—

थोकडा न० ६२

श्री भगवती सूत्र श० २५-उ० ४

(१) द्रव्य प्रदेशापेक्षा पृच्छा ।

हे भगवान्! एक परमाणु पुद्गल द्रव्यापेक्षा क्या कुडजुम्मा है यावत् कल्युगा है ? गौतम ! कल्युगा है, शेष तीन भागा नहीं एव यावत् अनंत प्रदेशी स्कन्ध द्रव्यापेक्षा कल्युगा है।

घणा परमाणु पुद्गल की द्रव्यापेक्षा पृच्छा ? गौतम ! समुच यापेक्षा स्यात् कुडजुम्मा स्यात् चारों भागा पावे, अलग २ की अपेक्षा केवल कल्युगा शेष ३ भागा नहीं एव यावत् अनंत प्रदेशी स्कन्ध भी समझना।

एक परमाणु पुद्गल प्रदेशापेक्षा पृच्छा ! गौतम कलयुगा है शेष भागा नहीं एक दोपदेशी स्कधको पृच्छा ! गौतम दावर जुम्मा है एक तीन प्रदेशी स्कध तेउगा है, एक चार प्रदेशी स्कध कुडजुम्मा है एक पाँच प्रदेशी स्कध कल्युगा है एक छे प्रदेशी स्कंध दावरजुम्मा है, एक सात प्रदेशी स्कध तेउगा है, एक आठ प्रदेशी स्कध कुडजुम्मा है, नव प्रदेशी स्कध कलयुगा

है, दश प्रदेशी स्कंध दावरजुम्मा है, शेष तीन भागा नहीं, एक सख्यात प्रदेशी स्कध स्यात् कुडजुम्मा यावत् कलयुगा एव यावत् एक अनन्त प्रदेशी स्कध में भी चारों भागा समझ लेना।

घणा परमाणु पुद्गल की पुच्छा ! (गौतम) समुचयापेक्षा स्यात् कुडजुम्मा यावत् कलयुगा है, और अलग २ अपेक्षा कल युगा है शेष तीन भागा नहीं।

घणा दो प्रदेशी स्कध की पच्छा ? गौतम ! समुचयापेक्षा स्यात् कुडजुम्मा तथा स्यात् दावरजुम्मा है शेष दो भागा नहीं और अलग २ की अपेक्षा दावरजुम्मा है, शेष तीन भागा नहीं, घणा तीने प्रदेशी स्कंध समुचयापेक्ष स्यात् कुडजुम्मादि चारों भागा पावे और अलग २ की अपेक्षा तेउगा है, घणा चार प्रदेशी स्कध समुचयापेक्षा कुडजुम्मा है, और अलग २ की अपेक्षा भी कुडजुम्मा है, शेष ३ भागा नहीं, घणा पाच प्रदेशी स्कध और घणा नौ प्रदेशी स्कंध की व्याख्या परमाणु पुद्गलवत्, घणा छ प्रदेशी और घणा दश प्रदेशी की व्याख्या दो प्रदेशीवत्, घणा सात प्रदेशी की व्याख्या तीन प्रदेसीवत् और घणा आठ प्रदेशी की व्याख्या चार प्रदेशीवत् कह देना।

घणा सख्यात प्रदेशी स्कध की पृच्छा ? गौतम ! समुचयापेक्षा स्यात् चारों भागा पावे। और अलग २ की अपेक्षा भी चारों भागा पावे ! कुडजुम्मा भी घणा यावत् कलयुगा भी घणा एव असख्यात प्रदेशी और अनंत प्रदेशी भी समझ लेना।

(२) क्षेत्रापेक्षा पृच्छा

हे भगवान् ! एक परमाणु पुद्गल क्या कुडजुम्मा यावत् कलयुगा प्रदेश अवगाह्य है ? कलयुगा प्रदेश अवगाह्या है शेष ३ भागा नहीं।

एक दो प्रदेशी स्कंध की पृच्छा ? गौतम ! स्यात् दावर

जुम्मा स्यात् कलयुगा प्रदेश अवगाह्या है शेष दो भागा नहीं। एक तीनीप्रदेशी स्कंध स्यात् तेउगा दावरजुम्मा और कल्युगा प्रदेश अवगाह्या है, कुडजुम्मा नहीं। एक चार प्रदेशी स्कंध स्यात् कुडजुम्मा यावत् कलयुगा प्रदेश अवगाह्या है। एव यावत् पाच, छ, सात आठ, नौ, दश प्रदेशी सख्यात असख्यात और अनंत प्रदेशी भी स्यात कुडजुम्मा यावत् कल्युगा आवगाह्या है।

घणा परमाणु पद्गल की पृच्छा? गौतम! समुचय कुडजुम्मा प्रदेश आवगाह्या है। कारण परमाणु सर्व लोक में है। अलग २ की अपेक्षा कलयुगा प्रदश अवगाह्या है। घणा दो प्रदेशी स्वन्ध की पृच्छा? गौतम! समुचय कुडजुम्मा प्रदेश अवगाह्या है और अलग २ की अपेक्षा घणा दावरजुम्मा घणा कल्युगा प्रदश अवगाह्या है। शेष दो भांगा नहीं। घणा तीन प्रदशी स्वन्ध समुचय की अपेक्षा कुडजुम्मा प्रदेश अवगाह्या है। अलग २ की अपेक्षा घणा तेउगा दावरजुम्मा और कल्युगा प्रदेश अवगाह्या है। शेष कुडजुम्मा नहीं। घणा चार प्रदेशी स्वन्ध समुचय की अपेक्षा कुडजुम्मा प्रदश आवगाह्या है। अलग २ की अपेक्षा घणा कुडजुम्मा यावत् घणा कल्युगा प्रदेश अव गाह्या है एव पाच प्रदेशी यावत् अनत प्रदेशी की व्याख्या चार प्रदेशीवत् करनी।

(३) कालापेक्षा पृच्छा

हे भगवान! एक परमाणु पुद्गल क्या कुडजुम्मा यावत् कलयुगा समय की स्थिति वाला है? गौतम स्यात् कुडजुम्मा यावत् कल्युगा समय की स्थिति वाला है एव दो तीन यावत् अनन्त प्रदेशी स्कन्ध भी समझ लेना।

घणा परमाणु पुद्गल की पृच्छा? गौतम! समुचय स्यात् कुडजुम्मा यावत् कल्युगा समय स्थिति का है एवं अलग २ की

अपेक्षा भी घणा कुडजुम्मा यावत् कल्युगा समय कि स्थिति का है इसी माफक दो तीन यावत् अनन्त प्रदेशी स्कन्ध भी समझ लेना।

(३) भावापेक्षा पृच्छा

हे भगवान्! एक परमाणु पु० कालावर्ण की पर्यायाश्रीय क्या कुडजुम्मा प्रदेशी है यावत कलयुगा प्रदेशी है ? (गौतम) स्यात् कुडजुम्मा यावत् कल्युगा प्रदेशी है एव दो तीन यावत् अनन्त प्रदेशी भी समझ लेना, घणा परमाणु की पृच्छा ? (गौतम) समुचय स्यात् कुडजुम्मा यावत् कल्युगा प्रदेशी है, अलग २ की अपेक्षा घणा कुडजुम्मा यावत् कल्युगा प्रदेशी है एव दो तीन यावत अनन्त प्रदेशी की भी व्याख्या करनी, जैसे काले वर्ण का कहा इसी तरह शेष ४ वर्ण, २ गध, ५ रस, ४ स्पर्श (शीत, ऊष्ण, स्निग्ध, रूक्ष,) एव १६ बोल समझ लेना।

एक अनन्त प्रदेशी स्कध कर्कश स्पर्शाश्रीय क्या कुडजुम्मा प्रदेशी यावत् कलयुगा प्रदेशी है ? (गौतम) स्यात् कुडजुम्मा यावत् स्यात् कलयुगा प्रदेशी है एव घणा अनन्त प्रदेशी स्कध भी समुचयापेक्षा स्यात् चारों भागा और अलग २ अपेक्षा भी चारों भागा (कुडजुम्मा भी घणा यावत् कलयुगा भी घणा कहना) एव मृदुल गुरु लघु की भी व्याख्या करनी, ये चार स्पर्श वाले पुद्गल सख्यात, असख्यात प्रदेशी नहीं होते किन्तु अनन्त प्रदेशी ही होते है क्योंकि ये चार स्पर्श बादर स्कध में होते है जहा ये चार स्पर्श हैं वहा पूर्व कहे चार स्पर्श नियमा हैं यह थोकडा दीर्घ दृष्टि से विचारने योग्य है।

सेवभंते सेवभंते तमेव सच्चम् ।

—(◎)—

थोकडा नं० ६३

श्री भगवती सूत्र श० २५ उ० ४

(परमाणु)

हे भगवान् ! परमाणु पुद्गल क्या कम्पायमान है व अकम्प है ? गौतम ! स्यात् कम्पायमान है स्यात् अकम्प है एवं दो तीन यावत् दश प्रदेशी तथा सख्यात् असंख्यात् और अनन्त प्रदेशी भी समझ लेना।

घणा परमाणु पुद्गल की पृच्छा ? गौतम ! कम्पायमान भी घणा और अकम्प भी घणा इसी तरह घणा दो तीन प्रदेशी यावत् घणा अनन्त प्रदेशी स्कन्ध भी समझ लेना।

एक परमाणु पुद्गल कम्पायमान रहे तो कितने काल तक और अकम्प रहे तो कितने काल तक रहे ? गौतम ! कम्पायमान रहे तो जघन्य एक समय उत्कृष्ट आवलीका के असख्यात में भाग और अकम्प रहे तो जघन्य एक समय उत्कृष्ट असख्याता काल एवं दो, तीन यावत् अनन्त प्रदेशी समझ लेना।

घणा परमाणु पुद्गल कम्पायमान तथा अकम्प की पृच्छा ? गौतम ! सदा काल सास्वता एव दो, तीन यावत् अनन्त प्रदेशी स्कन्ध समझ लेना।

एक परमाणु पुद्गल कम्पायमान तथा अकम्प का अन्तर पडे तो कितने काल का ? गौतम ! कम्पायमान का स्वस्थाना पेक्षा ज० एक समय उ० असख्याता काल और परस्थानापेक्षा ज० एक समय उ० असख्यात काल और अकम्प का स्वस्थाना पेक्षा ज० एक समय उ० आवलिका के अस० भाग और पर

स्थानापेक्षा ज० एक समय उ० असंख्याता काल क्योंकि दो आदि प्रदेश में जाकर रहे तो अस० काल तक रहे।

दो प्रदेशी स्कन्ध की पृच्छा ? गौतम! कम्पमान का स्व स्थान अ तर ज० एक समय उ० अस० काल परस्थानापेक्षा ज० एक समय उ० अनन्त काल क्योंकि जो परमाणु अलग हुवा है वही परमाणु अनन्त काल के पीछे अवश्य आकर मिलता है। उत्कृष्ट अनन्त काल तक अलग रहे और अकम्प की स्वस्थानापेक्षा ज० एक समय उ० आवलीका के अस० भाग परस्थानापेक्षा ज० एक समय उ० अनन्त काल एवं तीन, चार यावत् अनन्त प्रदेशी स्कन्ध समझ लेना।

घणा दो प्रदेशी तीन प्रदेशी यावत् अनन्त प्रदेशी स्कन्ध का अ तर नहीं क्योंकि बहुवचन होने से कम्पायमान और अकम्प सास्वते होते हैं।

(कम्पायमान् तथा अकम्प का अल्पा०)

(१) सब से स्तोक कम्पायमान परमाणु
(२) अकम्पमान परमाणु असख्यात गुणा

एवं दो प्रदेशी यावत असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध कम्पायमान अकम्प असख्यात गुणे

(१) सबसे स्तोक अकम्पायमान अनन्त प्रदेशी स्कन्ध।
(२) कम्पायमान अनन्त प्रदेशी स्कन्ध अनन्त गुणे।

(परमाणु पु० से अन० प्रदेशी स्कन्ध की कम्पाकम्प आश्रीयद्रव्य, प्रदेश और द्रव्यप्रदेश की अल्पा०।)

(१) सबसे स्तोक अनन्त प्रदेशी स्कन्ध का अकम्प द्रव्य।
(२) अनन्त प्रदेशी कम्पायमान द्रव्य अनन्त गुणे।
(३) परमाणु पु० कम्पायमान द्रव्य अनत गुणे।

(४) संख्यात प्र० कम्पायमान द्रव्य अस० गुणे ।
(५) असख्यात प्र० ,, ,, ,, ,,
(६) परमाणु पु० अकम्प० , ,, ,,
(७) सख्यात प्र० ,, ,, स० ,,
(८) असख्यात प्र ,, ,, अस० ,,

इसी माफक प्रदेशकी अल्पा० समझना, परन्तु परमाणु को अप्रदेशी कहना और ७ में बोल में संख्यात प्र० स्कन्ध के प्रदेश असख्यात गुणा कहना अब द्रव्य और प्रदेश की अल्पा० ।

(१) सबसे स्तोक अनन्त प्रदेशी स्कन्ध अकम्प का द्रव्य ।
(२) तस्य प्रदेश अनन्त गुणे ।
(३) अनन्त प्रदेशी स्कन्ध कम्पायमान का द्रव्य अनन्त गुणे ।
(४) तस्य प्रदेश अन० गुणे ।
(५) परमाणु पु० कम्पायमान द्रव्य प्रदेश अन गुणे ।
(६) संख्यात प्र० कम्पायमान द्रव्य अस० गुणे ।
(७) तस्य प्र सख्यात गुणे ।
(८) असख्यात प्र० कम्प० द्रव्य अस० गुणे ।
(९) तस्य प्रदेश असं० गुणे ।
(१०) परमाणु पु० अकम्प० द्रव्य, प्रदेश अस० गुणे ।
(११) स० प्र० अकम्प० द्रव्य अस० गुणे ।
(१२) तस्य प्रदेश सं० गुणे ।
(१३) अस० प्र० अकम्प० द्रव्य अस गुणे ।
(१४) तस्य प्रदेश अस० गुणे ।

सेवभंते सेवभंते तमेव सच्चम्

---
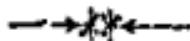
१ असंख्यात गुणा कहा सो विचारणीय है ।

थोकडा नं० ६४

श्री भगवती सूत्र श० २५-उ० ४

(परमाणु पुद्गल).

हे भगवान्! एक परमाणु पु० क्या सर्वकम्प है, देश कम्प है या अकम्प है? गौतम! देश कम्प नहीं है स्यात् सर्व कम्प है स्यात् अकम्प है। देशकम्प नहींहै।

दो प्रदेशी स्कन्ध की पृच्छा गौतम! स्यात् देश कम्प (एक विभाग) है। स्यात् सर्व कम्प है और स्यात् अकम्प भी है एव तीन चार यावत् अनन्त प्रदेशी की भी व्याख्या इसी तरह करनी।

घणा परमाणु की पृच्छा गौतम! देश कम्प नहीं है सर्व कम्प घणा और अकम्प भी घणा है और घणा दो प्रदेशी स्कन्ध, देश कम्प भी घणा, सर्व कम्प भी घणा, और अकम्प भी घणा, इसी तरह घणा तीन, चार यावत् अनन्त प्रदेशी स्कन्ध भी समझ लेना।

हे भगवान्! एक परमाणु पु० सर्व कम्प और अकम्प पने रहे तो कितने काल तक रहे? गौतम! कम्पायमान रहे तो ज० एक समय उ० आवलीका के असख्यात में भाग जितना काल और अकम्प रहे तो ज० एक समय उ० अस० काल० तथा दो प्रदेशी स्कन्ध देश कम्पायमान और सर्व कम्पायमान पने रहे तो ज० एक समय उ० आवली के अस० भाग जितना काल और अकम्प पने रहे तो ज० एक समय उ० अस० काल एव तीन, चार

यावत् अनन्त प्रदेशी स्कन्ध भी समझ लेना और घणा परमाणु, दो प्रदेशी, तीन प्रदेशी यावत् घणा अनन्त प्रदेशी स्कन्ध सर्व कम्प, देश कम्प और अकम्प सर्वाद्धा याने सास्वता है।

एक परमाणु पु० के सर्वकम्प और अकम्पका अन्तर कितना है ? गौतम ! कम्पायमान स्वस्थानाश्रीय ज० एक समय उ० असं० काल एव परस्थानाश्रीय भी समझना और अकम्प का स्वस्थानाश्रय ज० एक समय उ० आवली का के असं० भाग और अन्यस्थानाश्रय ज० एक समय उ० असं० काल भावना पूर्ववत् क्योंकि द्विप्रदेशादि स्कन्ध की स्थिति असंख्याता काल की है ।

द्वि प्रदेशी स्कन्ध देश कम्प, सर्व कम्प और अकम्प का अन्तर ज० तो सबका एक समय है और उत्कृष्ट देश कम्प और सर्व कम्प का स्वस्थानापेक्षा ज० एक समय उ० असं० काल और परस्थान आश्री अनन्त काल क्योंकि ये दो प्रदेश अलग २ होकर दूसरे स्कन्धों में जा मिले तो उ० अनन्ता काल तक अलग रहकर फिर वेही दो प्रदेश दो प्रदेशी स्कन्धपने मिले तो उ० अनन्त काल में मिले और अकम्प का अन्तर स्वस्थानापेक्षा उ० आवली का के असं० भाग और पर स्थानापेक्षा अनन्त काल भावना पूर्ववत् एव तीन, चार यावत् अनन्त प्रदशी स्कन्ध की भी व्याख्या कर देनी ।

घणा परमाणु पु० दो प्रदेशी स्कन्ध तीन प्र० चार प्र० यावत् अनन्त प्रदेशी स्कन्ध के देश कम्प, सर्वकम्प और अकम्प का अन्तर नहीं है कारण सर्व काल में तीनों प्रकारके पुद्गल सास्वते है।

(प्रत्येक अल्पाबहुत्व)

(१) सबसे स्तोक सर्व कम्पायमान परमाणु पु० ।

(२) अकम्प परमाणु पु० असं० गुणा ।

(१) सबसे स्तोक दो प्रदेशी स्कन्ध सर्व कम्प ।
(२) दो प्रदेशी स्कन्ध देश कम्प असं० गु० ।
(३) „ „ अकम्प असं० गु० एव दो,

तीन यावत् असख्यात प्रदेशी स्कन्ध की भी अल्पा० दो प्रदेशीवत् अलग २ लगा लेना ।

(१) सबसे स्तोक अनन्त प्र० स्कन्ध सर्व कम्प ।
(२) अकम्प अनन्त प्र० स्कन्ध अनन्त गुणा ।
(३) देशकम्प „ „ अनन्त गुणा ।

द्रव्यापेक्षा अल्पाबहुत्व

(१) सबसे स्तोक अनन्त प्रदेशी स्कन्ध का सर्वकम्प द्रव्य ।
(२) अनं० प्र० अकम्प का द्रव्य अनन्त गुणा ।
(३) „ „ देशकम्प० „ अनं० गु० ।
(४) असं० प्र० सर्वकम्प० „ अनं० गु० ।
(५) सं० प्र० „ „ असं० गु० ।
(६) परमाणु पु० „ „ असं० गु० ।
(७) सं० प्र० देशकम्प० „ असं० गु० ।
(८) असं० प्र० „ „ असं० गु० ।
(९) परमाणु पु० अकम्प० „ असं० गु० ।
(१०) सं० प्र० „ „ सं० गु० ।
(११) असं० प्र० „ „ असं० गु० ।

इसी तरह प्रदेश की भी अल्पा० समझ लेना, परन्तु परमाणु को अप्रदेशी और १० में बोल में सख्यात प्रदेशी अकम्प प्र० असं० गुणे कहना ।

(द्रव्य और प्रदेश की अल्पाबहुत्व)

(१) सबसे स्तोक अनन्त प्र० सर्व कम्पका द्रव्य ।
(२) तस्य प्रदेश अनन्त गुणे ।
(३) अनं० प्र० अकम्प द्रव्य अन० गुणे ।
(४) तस्य प्र० अनं० गुणे ।
(५) अनं० प्र० देशकम्प द्रव्य अनं० गुणे ।
(६) तस्य प्र० अनंत गुणे ।
(७) असं० प्र० सर्वकम्प० द्रव्य अनं० गु० ।
(८) तस्य प्र० असंख्यात गुणे ।
(९) सं० प्र० सर्वकम्प० द्रव्य असं० गु० ।
(१०) तस्य प्र० संख्यात गुणे ।
(११) परमाणु पु० सर्वकम्प० द्रव्य प्र० असं० गु० ।
(१२) सं० प्र० देशकम्प० द्रव्य असं० गु० ।
(१३) तस्य प्र० संख्यात गुणे ।
(१४) असं० प्र० देशकम्प द्रव्य असं० गु० ।
(१५) तस्य प्रदेश असं० गु० ।
(१६) परमाणु पु० अकम्प० द्रव्य प्रदेश असं० गु ।
(१७) सं० प्र० अकम्प द्रव्य सं० गु० ।
(१८) तस्य प्रदेश स० गु ।
(१९) अस० प्र० अकम्प द्रव्य असं० गु० ।
(२०) तस्य प्रदेश अस गु० ।

यह थोकडा खूब दीर्घ दृष्टी से विचारने योग्य है ।

सेवभते सेवभते तमेव सच्चम् ।
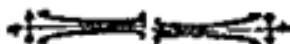
थोकडा नं० ६५

श्री भगवती सूत्र श० ८ उ०-१

(पुद्गल)

सर्व लोक में पुद्गल तीन प्रकार के है प्रयोगशा, मिश्रशा और विश्रेशा।

दोहा—जीव गृह्या ते प्रयोगशा मिश्रा जीवा रहित।
विशेषा हाथ आवे नहीं ज्ञानी भाख्या ते तहत्॥

प्रयोगशा-जीव ने जो पुद्गल शरीरादिपने गृहण किया वह।
मिश्रशा-जीव शरीरादि पने गृहण करके छोडे हुवे पुद्गल।
विशेषा-शीतोष्णादि पने जो स्वभाव से प्रणम्या पुद्गल।

अब इन पुद्गलों का शास्त्रकारोने अल्प २ भेद करके बतलाया है, प्रयोगशा पु० का नव दडक कहते है जिसमें पहिले दडक में जीव के ८१ भेद है, यथा सात नारकी, रत्नप्रभा, शार्कराप्रभा, वालुकाप्रभा पंकप्रभा, धूमप्रभा तमप्रभा, तमस्तम प्रभा १० भुवनपति-असुरकुमार, नागकु० सुवर्णकु० विद्युतकु० अग्निकु० द्वीपकु० दिशाकु० उदधिकु० वायुकु० स्तनितकुमार ८ व्यतर-पिशाच, भूत, जक्ष, राक्षस, किन्नर, किंपुरुष, महोरग, गन्धर्व ५ ज्योतिषी-चन्द्र, सूर्य ग्रह, नक्षत्र, तारा १२ देवलोक सौधर्म, ईशान, सनत्कुमार, महेन्द्र, ब्रह्म, लातक, महाशुक्र, सहस्रार, आणत, प्राणत, आरण, अच्युत ग्रैवेक-भद्र, सुभद्र, सुजया, सुमाणसा, सुदर्शना, प्रियदर्शना, अमोघ, सुपडिबन्धा, यशोधरा ५ अनुत्तर वैमान-विजय, विजयत, जयंत, अपराजित, सर्वार्थसिद्ध ५ सूक्ष्म-पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय वाउकाय, वनस्पतिकाय

पर्व ५ बादरकाय-पृथ्वीकायादि ३ विकलेन्द्री बेरिंद्री, तेरिंद्री, चौरिन्द्री ५ असन्नीतिर्यच जलचर, स्थलचर, खेचर, उरपरी भुजपरी, एवं ५ सन्नी तिर्यच जलचरादि० दो मनुष्य-गर्भज और समुत्सम यह पहिले, दंडके ८१ भेद हुवे।

(२) दूसरा दंडकमे जीवांके *पर्याप्ता—अपर्याप्ता* के १६१ बोल है जैसे जीवोंके ८१ भेद कहा है जिसके अपर्याप्ता के ८१ और पर्याप्ता के ८० क्योंकि समुत्सम मनुष्य पर्याप्ता नहीं होते एवं ८१-८० मिल्के १६१ भेद दूसरे दंडकका १६१ बोल हुवा

(३) तीसरे दडकमें पर्याप्ता अपर्याप्ता के शरीर ४९१ है यथा दूसरे दंडक में जो १६१ बोल कहे हैं जिसमें तीन तीन शरीर सब में पावे कारण नारकी देवता में वैक्रिय, तेजस, कार्मण शरीर है और मनुष्य तिर्यच में औदारिक तेजस, कार्मण है इसलिये १६१ को तीन *गुणा* करने से ४८३ भेद हुवे *तथा* वायुकाय और ५ सन्नी तिर्यच में शरीर पावे चार जिसमें तीन २ पहिले गणचुके शेष ६ बोलों क ६ शरीर और मनुष्य में ५ शरीर है जिसमें ३ पहिले *गण* चुक शेष २ मनुष्य के और ६ वायु तिर्यच के एवं ८ मिलाने से ४९१ भेद तीजे दडक का हुवा।

(४) चौथे दंडक में जीवों की इन्द्रियां के ७१३ भेद है *यथा* दूसरे दंडक में १,१ भेद कह आये हैं जिसमें एकेन्द्रियके २० बोलों में २० इन्द्री विकलेन्द्री के ६ बोलों कि १८ इन्द्री शेष १३५ बोलों में पाच २ इन्द्री गणनेसे ६७५ इन्द्रिया एव २०-१८-६७५ सब मिलके ७१३ भेद हुवे।

(५) पाचवे दडक में शरीर की इन्द्रियों के २१७५ भेद है। यथा-तीसरे दंडक के ४९१ भेद कह आये हैं जिसमें एकेन्द्रीय क ६१ शरीर में इन्द्रीय ६१ है और विकलेन्द्री के १८ शरीर में इन्द्रीय ५४ हैं शेष ४१२ शरीर पचेन्द्रीयके हैं, जिसमें २०६०

इन्द्रीयां हैं एवं ६१-५४-२८६० मिलके सर्व २१७५ मेद पांचवें दंडक के हुवा।

(६) छठे दडक में पर्याप्तापर्याप्ता में वर्णादिके ४०२५ मेद यथा दूसरे दडक में १६१ बोल कह आये हैं उनको ५ वर्ण २ गंध ५ रस ८ स्पर्श और ५ संस्थान के साथ गुणा करनेसे ४०२५ मेद पाते हैं, क्योंकि १६१ बोलों में वर्णादि २५ पचवीस बोल गीननेसे ४०२५ बोल हुये।

(७) सातवें दडक के ११६३१ मेद यथा तीसरे दंडक में जो बोल ४९१ शरीर कह आये हैं, जिसमें वर्णादि २५ बोल पाते हैं वास्ते वर्णादि २५ बोल से गुणा करनेसे १२२७५ बोल हुवे, परन्तु ४९१ मेद में १६१ मेद कार्मण शरीर के हैं और कार्मण शरीर चौफरसी होता है इसलिये १६१ मेदके चार चार स्पर्श कम करनेसे ६४४ मेद कमती हुये बाकी ११६३१ मेद सातवें दडक के।

(८) आठवें दडक के १७८२५ मेद यथा चौथे दडक में ७१३ जीवों की इन्द्रिया कही हैं जिसमें वर्णादि २५ पचविश बोल पाये वास्ते ७१३ बोलों को वर्णादि २५ बोलसे गुणा करनेसे १७८२५ मेद आठवें दडक के हुये।

(९) नौवें दंडक के ५१५२३ मेद यथा पांचवें दडक के २१७५ मेद कहे हैं उनको वर्णादि २५ बोलसे गुणा करने से ५४३७५ मेद हुये परन्तु एक २ इन्द्री में एक २ कार्मण शरीर है और कार्मण चौस्पर्शी है, इसलिये २८५२ बोल कम करनेसे शेष ५१५२३ मेद नौवें दडक के हुये एवं नवों दडक के ८१-१६१-४९१-७१३-२१७५-४०२५-११६३१-१७८२५-५१५२३ सब मिला केमे ८८६२५ मेद हुवे, सो इतने प्रकारके प्रयोगसा पुद्गल प्रणमते हैं पुद्गलों की बडीही विचित्रता है, ऐसा जगत में कोइ जीव

नहीं है कि जिसने इन पुद्गलों को ग्रहण न किया हो एकवार नहीं परन्तु अनन्तीवार इसी तरह ग्रहण कर करके छोड़ा है जैसे प्रयोगशा के जो दंडक और उसके भेद करके बताये हैं, उसी माफिक मिश्रशाके भी भेद समझ लेना विशेषा पुद्गल वर्ण, गंध, रस, स्पर्श और संस्थानपने प्रणम्या है उसके ५३० भेद हैं वह शीघ्रबोध दूसरे भागसे समझलेना, एवं प्रयोगशा, मिश्रशा विशेषा के १७७७८० भेद हुवे।

सेवभते सेवभते तमेव सचम्।

—— ——

थोकडा नं० ९६

श्री भगवती सूत्र श० ८–उ० ९

(बन्ध)

बंध दो प्रकारके होते हैं, एक प्रयोगबंध जो किसी दूसरेके प्रयोग से होता है और दूसरा विशेषबंध जो स्वभाव से ही होता है।

(१) विशेष बंध के दो भेद अनादिबंध और सादीबंध जिसमें अनादीबंध के तीन भेद हैं धर्मास्तिकाय का अनादीबंध है एवं अधर्मास्तिकाय तथा आकाशास्तिकाय का भी अनादि बन्ध है इन तीनों के स्वस्व प्रदेश के साथ अनादिबंध है।

धर्मास्तिकाय का अनादिबंध है वह क्या सर्वबंध है या देश बंध है ? गौतम ! देशबंध है क्योंकि सकल के माफिक प्रदेश से प्रदेश बंधा हुवा है, एवं अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय भी समझ लेना।

धर्मास्तिकाय के विशेषाबध की स्थिति कितनी है? गौतम! मर्यादा याने सदाकाल सास्वता बंध है, एव अधर्मास्ति० आकाशास्ति० भी समझ लेना।

सादी विशेषा बन्ध कितने प्रकारका? गौ० तीन प्रकारका बन्धनापेक्षा, भाजनापेक्षा और परिणामापेक्षा जिसमें बधनापेक्षा जैसे दो प्रदेशी, तीन, चार यावत् अनंत प्रदेशी का आपस में बंध हो। परन्तु रूक्षस रूक्ष न बधे स्निग्ध से स्निग्ध न बन्धे परन्तु रूक्ष और स्निग्ध सबंध होवे वह भी जघन्य गुण वर्जके जैसे एक गुण रूक्ष और एक गुण स्निग्ध का बध न होवे परन्तु विषम मात्रा जैसे एक गुण रूक्ष और दो गुण स्निग्ध का बंध होवे इसी तरह यावत् अनंत प्रदेशी तक समझ लेना, इनकी स्थिती ज० एक समय की उ० असंख्याताकाल०।

भाजनापेक्षा—जैसे किसी भाजन में जूना गुल तथा तदुल मद्यादि गालने से उनका स्वभाव से बन्ध हो, उनकी स्थिती ज० एक समय उ० संख्या कालकी है।

परिमाण बन्ध—जैसे बादल, इन्द्रधनुष, अमोघा, उद्गम च्छादि इनकी स्थिती ज० एक समय उ० ६ मासकी है।

प्रयोग ब ध के तीन भेद—अनादि अनन्त, अनादि सात। और सादि साता जिसमें (१) अनादि अनंत-जीव के आठ रुचक प्रदेशोंका ब न्ध वह भी तीन २ प्रदेशोंके साथ है, और शेष आत्म प्रदेश हैं वे सादि सांत हैं, (२) सादी अनंत एक सिद्धो के आत्म प्रदेश स्थित हुवे हैं वह सादी है परन्तु अन्त नहीं, (३) सादि सातके ४ भेद हैं—आलावणबन्ध, अलियावणबन्ध, शरीरबन्ध, और शरीर प्रयोगबंध।

आलावणबन्ध—जैसे तृणके भारेका बन्ध, काष्ट के भारेका बन्ध, पर्ण पत्र, पलाल, वेलो आदि का बन्ध इनकी ज० स्थिती एक समय उ० संख्याता काल।

१ अलियावणबंध के ४ भेद—लेसाण बंध, उच्चयबन्ध, समुच्चयबंध, और साधारणबंध, जिसमें लेसाणबंध जैसे कादेसे, चूनेसे, लाखसे, मैणसे, पत्थर तथा काष्टादि को जोडकर घर प्रासाद आदि बनाना इसकी स्थिती ज० अंतर मुहूर्त उ० सं ख्याता काल (२) उच्चयबन्ध-जैसे--तृणरासी, काष्टरासी, पत्र रासी तुस, भुस० गोबर रासी का ढेर करने से बंध होता है इसकी स्थिती ज० अंतर मुहुर्त उ० संख्याता काल-(३) समुच्चयबन्ध जैसे-तालाव, कूवा, नदी, द्रह, वावडी पुष्करणी, देवकुल सभा, पर्वत छत्री, गढ कोट किल्ला, घर, रस्ता, चौरस्तादि जिसकी स्थिती ज० अंतर मुहुर्त उ० संख्याताकालकी है (४) साधारणबन्ध-जिसके दो भेद—देसबन्ध जैसे गाडा, गाडली, पीलाण, अम्बाडी, पिलग खुरसी, आदि और दूसरा सर्वबन्ध जैसे पाणी दूध इत्यादि इनकी स्थिती ज० अंतर मुहुर्त उ० संख्याताकाल।

शरीरबन्ध के दो भेद-पूर्व प्रयोगापेक्षा और वर्तमान प्रयोगापेक्षा जिस में पूर्व प्रयोग जैसे नरकादि सर्व संसारी जीवों के जैसा २ कारण हो वैसा २ बंध होता है और वर्तमान प्रयोग बंध जैसे केवली समुद्घात से निवृत्त होता हुवा अन्तरा और मथनमें प्रवृत्तमान तेजस और कारमण का बन्धक होवे, कारण उस वक्त केवल प्रदेशही होते हैं।

शरीर प्रयोग बन्धके ५ भेद जैसे औदारिक शरीर प्रयोग बंध, वक्रिय० आहारक० तेजस० और कारमण शरीर प्रयोगबंध इनकी स्थिती सविस्तार आगे के थोकडे में कहेंगे।

सेवंभते सेवंभते तमेव सच्चम्।

— ❀ —

थोकडा नं० ६७.

श्री भगवती सूत्र श० ८–उ० ९

(सर्वबंध देशबंध.)

शरीर पांच प्रकारके हैं-औदारिक, वैक्रिय, आहारिक तेजस, और कार्मण शरीर (१) औदारिक शरीर आठ बोल से निपजावे-द्रव्य से, वीर्य से, सयोग से, प्रमाद से, भवसे जोगसे कर्मसे आयुष्यसे औदारिक शरीर का स्वामी कौन है? (१) समुच्चय जीव (२) समुच्चय एकेन्द्री (३) पृथ्वीकाय (४) अप (५) तेउ० (६) वाउ० (७) वनस्पति० (८) बेरेन्द्री (९) तेरिन्द्री (१०) चौरिन्द्री (११) तिर्यंच पंचेंद्र० (१२) मनुष्य इन बारह बोलों में सर्व बन्धका आहार ले वह ज० एक समय का है सर्व बन्धका आहार जीव जिस योनी में उत्पन्न हो उस योनी में जाके प्रथम समय ग्रहण करता है और वह प्रथम समय का लिया हुवा आहार उमर भर रहता है, जैसे तेलके अंदर वडा का दृष्टांत

देश बंधका आहार—समुच्चय जीव, समुच्चय एकेन्द्रिय, वायुकाय तिर्यंचपंचेन्द्री, और मनुष्य इन पांच बोलों के जीवों का देश बंध के आहार का स्थिति ज० एक समय की भी है कारण वे जीव औदारिक शरीर से वैक्रिय करते हैं और वक्रि येसे पीछा औदारिक करते हुवे प्रथम समय ही काल करे तो औदारिक के देश बंध का एक समय जघन्य बंधक हुआ शेष सात बोलों (४ स्थावर, ३ विकलेन्द्री) के जीव देश बंध ज० क्षुलक भव से तीन समय न्यून कारण दो समय की विग्रह गती और एक समय सर्व बंध का एवं ३ समय न्यून

क्षुलक भव (२५६ आवली) देश बंधवा आहार करे और १२ बोल के जीवों की उत्कृष्ट देश बंध की स्थिति नीचे प्रमाणे।

समुचय जीव, मनुष्य, और तिर्यंच तीन पल्योपम एक समय न्यून समुचय एकेन्द्री पृथ्वीकाय २२००० वर्ष एक समय न्यून, एव अप्पकाय ७००० वर्ष, तेउ० तीन दिन वायु ३००० वर्ष, वनस्पति १०००० वर्ष, बेरिन्द्री १२ वर्ष तेरिन्द्री ४९ दिन, चोरिन्द्री ६ मास सब में एक समय न्यून समझना क्योंकि एक समय सर्व बंध का आहार ले।

औदारिक शरीर के सर्व बंध का अन्तर-समुचय औदारिक शरीर के सर्व बंध का अन्तर ज० एक क्षुलक भव तीन समय न्यून कारण १ समय प्रथम भव में सब बंध का आहार किया और दो समय की विग्रह गती की और उ० ३३ सागरोपम पूर्व क्रोड वर्ष में एक समय अधिक कारण कोइ जीव पूर्व कोडी का भव किया उसमें एक समय सर्व बंध का आहार लिया सो पूर्व कोड में न्यून हुवा वहा से सातवीं नरक या सर्वार्थ सिद्ध विमान में ३३ सा० और वहा से २ समय की विग्रह गती करके उत्पन्न हुवा इस वास्ते १ समय अधिक कहा शेष ११ बोलों का स्वकायाश्री सब बंध का अन्तर ज० एक क्षुलक भव तीन समय न्यून और उ० अपनी २ स्थिति से एक समय अधिक समझना भावना पूर्ववत्।

देश बंध का स्वकायाश्री अन्तर कहते हैं-समुचय जीव, समुचय एकेन्द्री, वायुकाय तिर्यच पंचेन्द्री और मनुष्य इनमें ज० एक समय उ० अन्तर मुहूर्त (वैक्रियापेक्षा) शेष ७ बोलों में ज० एक समय उ० ३ समय।

देश बन्ध का परकायाश्री अन्तर-समुचय एकेन्द्री सर्व बंध अन्तर ज० २ क्षुलक भव तीन समय न्यून और देश बंध

का एक क्षुलक भव १ समय अधिक उ० दोनों बोलों को २००० सागरोपम सख्याता वर्षाधिक।

वनस्पतिकाय और–समुचय एकेन्द्रीय का सर्व अन्तर ज० एकेन्द्रीय माफिक उ० असख्याता काल पृथ्वीकाय की काय स्थितिवत्–शेष ९ बोल का सर्व बन्धान्तर ज० एकेन्द्री माफिक और उ० अनन्त काल (वनस्पति काल)।

(अल्पा बहुत्व)

(१) सबसे स्तोक औदारिक शरीर के सर्व बध के जीवों।
(२) अबन्धक जीवों विशेषाधिक।
(३) देश बन्धक जीवों अस० गुणे।

(२) वैक्रिय शरीर ९ कारणों से बन्धते हैं जिसमें ८ पूर्व औदारिकवत् और नवमा लब्धि वैक्रिय। जिसका स्वामी (१) समुचय जीव, (२ , नारकी, (३) देवता, (४) वायुकाय, (५) तीर्यंच पंचेंद्री (६) मनुष्य।

समुचय वैक्रिय का बन्ध दो प्रकार के है सर्व बन्ध और देश बन्ध जिसमें सर्व बन्ध की स्थिति ज० एक समय (नरकादि प्रथम समय आहार ले वह सर्वबन्ध है) उत्कृष्ट दो समय (मनुष्य, तिर्यंच औदारिक से वैक्रिय बनाता हुवा प्रथम समय का सर्वबधका आहार गृहण करके काल करे और नारकी देवता-में उत्पन्न हो वहा प्रथम समय सर्वबंध का आहार ले इसवास्ते दो समय का सर्वबंध का आहार कहा है और देशबंध की स्थिति ज० एक समय मनुष्यादि औदारिक शरीर से वैक्रिय बनाये उस वक्त एक समय का देशबंध का आहार ग्रहण करके काल करे) उ० ३३ सागरोपम एक समय न्युन।

नारकी, देवताओं में सर्व बन्धका आहार ज० उ० एक

समय और देशबंध का ज० अपनी २ जघन्य स्थिती से तीन समय न्यून कारण दो समय की विग्रह गती और एक समय सर्व बन्धका। और उ० अपनी २ उत्कृष्ट स्थिती से १ समय न्यून।

वायुकाय तिर्यंच पंचेंद्री और मनुष्य में वैक्रिय शरीर व सर्वबंधके आहार की स्थिती ज० उ० एक समय और देशबन्ध की स्थिती ज० एक समय उ० अन्तरमुहुर्त।

वैक्रिय शरीर के सर्वबन्ध देशबन्ध का अन्तर ज० एक समय उ० अनंतो काल यावत् वनस्पति काल, नारकी, देवता में स्वकायाश्रीय अन्तर नहीं है, कारण नारकी, देवता मरके नारकी देवता नहीं होते। वायुकाय का स्वकायाश्रीय वैक्रिय शरीर के सर्वबन्ध का अन्तर ज० अंतर मुहुर्त उ० पल्योपम के असख्यातमें भाग इसी तरह देशबन्धका भी अन्तर समझ लेना। तिर्यंच मनुष्य के स्वकायाश्रीय वैक्रिय शरीर के सर्वबन्ध का अन्तर ज० अन्तर मुहुर्त उ० प्रत्येक क्रोड पूर्व वर्षोंका। नारकी देवता का परकायापेक्षा वैक्रिय शरीर के सर्वबन्ध का अन्तर ज० अपनी २ जघन्य स्थिती से अन्तर मुहुर्त अधिक और देशबन्धका ज० अंतर मुहुर्त उ० दोनों का अनंत काल (वनस्पतिकाल) आठमें देवलोकतक समझना। नवमें देवलोक से नौ ग्रैवेयक तक सर्वबंध का अंतर ज० अपनी २ स्थिती से प्रत्येक वर्ष अधिक और देशबन्धका अंतर ज० प्रत्येक वर्ष उ० दोनों बोल में अनन्ता काल (वनस्पतिकाल) चार अनुत्तर विमान के देवताओं का सर्वबन्ध अन्तर ज० ३१ सागरोपम प्रत्येक वर्ष अधिक देशबंध का अन्तर ज० प्रत्येक वर्ष उ० संख्याता सागरोपम और सर्वार्थसिद्ध विमान में फिर नहीं जावे वास्ते अन्तर नहीं है और वायुकाय, तिर्यंच तथा मनुष्य में

वैक्रिय शरीर सर्वबन्ध देशबन्ध का आन्तर अन्तर मुहुर्त उ० अनताकाल (वनस्पतिकाल)।

(अल्पा बहुत्व)

(१) सबसे स्तोक वैक्रिय शरीर के सर्वबंध के जीवों।
(२) वैक्रिय शरीर देशबंध वाले जीवों अस० गुणे।
(३) „ „ अबंध वाले जीवों अनन्त गुणे।

(३) आहारिक शरीर बांधने के ८ कारण औदारिकवत् लौवों लब्धि जिसका स्वामी मनुष्य वह भी ऋद्धिवन्त मुनिराज है आहरिक शरीर के सर्वबंध की स्थिती ज० उ० एक समय और देशबंध की स्थिती ज० उ० अन्तर मुहुर्त अन्तर सर्व बंध देशबंध का ज० अन्तर मुहुर्त उ० अनन्तकाल यावत् अर्द्धपुद्गल परावर्त।

(१) सबसे स्तोक आहारक शरीर के जीवों सर्वबन्ध।
(२) आहारक शरीर के देश बन्धके जीवों सख्यात गुणे।
(३) „ „ अबन्धक जीवों अनन्त गुणे।

(४) तेजस शरीर बंध का स्वामी एकेन्द्रीयसे यावत् पचेन्द्री है और आठ कारण से बंध होता है औदारिकवत् तेजस शरीर सर्व बंध नहीं होता केवल देशबंध होता है जिसके दो भेद अनादी अनन्त (अभव्यापेक्षा) और अनादि सान्त (भव्यापेक्षा) इन दोनों का अन्तर नहीं है निरन्तर बंध होता है

(१) तेजस शरीर का अबन्धक स्तोक।
(२) और देश बंधक जीवों अनन्त गुणा।

(५) कार्मण प्रयोग बंध के आठ भेद-यथा ज्ञानावर्णीय दर्शना०, वेदनी० मोहनी० आयुष्य०, नाम०, गोत्र०, अंतराय० इन आठ कर्मों के बंधका ७९ कारण शीघ्रबोध० भाग २ में लिखा है करमाणका देशबंध है सर्वबंध नहीं होते है स्थिती तथा अन्तर तेजस शरीर के माफिक समझ लेना अल्पाबहुत्व आयुष्य कर्म

छोड़ के शेष ७ कर्मकी तेजस शरीरवत् और आयुष्य कि सबसे स्तोक देशबंध के और अबन्धके सग्यात गुणे।

(परस्पर बन्ध अबन्ध)

(१) औदारिक शरीर के सर्वबंध का बंधक है वहां वैक्रिय, आहारिक का अबन्धक है और तेजस कार्मण का देश बन्धक है इसी तरह औदारिक शरीर के देशबंध का भी कह देना।

(२) वैक्रिय शरीरका बंधक है वहा औदारिक, आहारिक शरीर का अबंधक है तेजस कार्मण का देशबंधक है इसी तरह वैक्रिय का देशबंध का भी कहना।

(३) आहारिक शरीर का बंधक है वहा औदारिक वैक्रिय का अबंधक है और तेजस कार्मण का देशबंधक है एवं आहारिक शरीर के देश बंध का भी कहना।

(४) तेजस शरीर का देशबंधक है वहा औदारिक शरीर का बंधक भी है और अबंधक भी है यदि बंधक है तो देशबंधक भी है और सर्वबंध भी है एवं आहारिक वैक्रिय शरीर भी समझ लेना कार्मण शरीर नियमा देशबंध है।

(५) कार्मण शरीर की व्याख्या तेजसवत् करना। इति।

(अल्पाबहुत्व).

(१) सबसे स्तोक आहारिक शरीर का सर्व बंधक।
(२) आहा० शरीर का देश बंधक सं० गु०।
(३) वैक्रिय ,, सर्व ,, अस० गु०।
(४) ,, ,, देश ,, ,,
(५) तेजस कार्मण का अबंधका अनं० गु०।
(६) औदा० शरीर सर्वबंधक अनं० गु०।

(७) ,, ,, अबधका विशेषा।
(८) ,, ,, देश ,, असं० गु०
(९) तैजस कार्मण का देश बंधक विशेषा।
(१०) वैक्रिय का अबंधक विशेषा।
(११) आहारिक शरीर के अबंधक विशेषा।

सेवभंते सेवभंते तमेव सचम्.

—※—

थोकडा न० ६८

श्री भगवती सूत्र श० ८-उ० १०

(पुद्गल)

हे भगवान! पुद्गल कितने प्रकार से प्रणमते हैं? गौतम! पाच प्रकार से यथा वर्ण ५, गंध २, रस ५, स्पर्श ८ और सस्थान ५ एव २५ बोलों से प्रणमते हैं।

पुद्गलास्तिकाय के एक प्रदेश को क्या एक द्रव्य कहना १ या घणा द्रव्य कहना २ या एक प्रदेश कहनो ३ या घणा प्रदेश कहना ४ या एक द्रव्य एक प्रदेश कहना ५ या एक द्रव्य घणा प्रदेश कहना ६ या घणा द्रव्य एक प्रदेश कहना ७ या घणा द्रव्य घणा प्रदेश कहना? इन ८ भागा में से एक प्रदेश में दो भागा पावे (१) एक प्रदेश (२ अपेक्षा से एक द्रव्य भी कहते हैं।

दो प्रदेशी में पाच भागा पावे क्रमसर तीन प्रदेशी में सात भागा पावे क्रमसर चार प्रदेशी में ८ भागा पावे एवं ५-६-७-८-

९-१० संख्याते, असंख्याते और अनन्ते प्रदेशो में भी ८-८ भागा समझ लेना ॥ पद २-५-७-८० सब मिलाके ९४ भागे हुवे।

हे भगवान् ! जीव पुद्गली है या पुद्गल है ? गौतम ! जीव पुद्गली भी है और पुद्गल भी है क्योंकि जैसे किसी मनुष्य के पास छात्र हो उसको छत्री कहते हैं दंड हो उसको दंडी कहते है इसी माफिक जीव ने पूर्व काल में पुद्गल ग्रहण किया था इस वास्ते पु० ग्रहणापेक्षा से जीवको पुद्गल कहते हैं और श्रोतेन्द्रि, चक्षु० घ्राण०, रस० स्पर्शेन्द्री की अपेक्षा से जीव को पुद्गली कहते है। यहां उपचरित्तनयापेक्षा समझना।

पृथ्व्यादि पांच स्थावर एक स्पर्शेन्द्रीय अपेक्षा पुद्गली है और जीव अपेक्षा पुद्गल हैं। बेइंद्रिय के दोइन्द्री तेन्द्रीय के तीनइन्द्रिय चौरिन्द्रीय के चारइन्द्री की अपेक्षा से पुद्गली है और जीवापेक्षा से पुद्गल है नारकी १ भुवनपति १०, तिर्यंच पंचे न्द्री १, मनुष्य १, व्यंतर १, ज्योतिषी १, वैमानिक एवं १६ दंडक में पांचइन्द्री की अपेक्षा से पुद्गली है और जीव की अपेक्षा से पुद्गल है भावना पूर्ववत्। इति।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम्।

—※—

थोकडा नं० ६६

श्री भगवती सूत्र श० १०—उ० १

(लोक दिशा)

दिशा दश प्रकार की है यथा—

(१) इन्द्रा [पूर्व दिशा] [२] अग्नि [अग्निकौन]

[३] जमा (दक्षिण दिशा) (४) नेरुती [नैरुत कौन], (५) वाउणा [पश्चिम दिशा], (६) वायु (वायव कौन), (७) सोमा [उत्तर दिशा], (८) ईसाण [ईसान कौन], (९) विमला [उंची दिशा] (१०) तमा [नीची दिशा]।

इन्द्रा (पूर्व दिशा) में क्या जीव है १ जीव का देश है २ जीवका प्रदेश है ३, अजीव है ४, अजीव का देश है ५, अजीवका प्रदेश है ६ ? गौतम ! हा जीव है यावत् अजीवका प्रदेश है जीव है तो क्या एकेन्द्री है बे० ते० चो० प० और अनेंद्रिया है ? हा एके-द्रीय बे-द्रीय तेन्द्रीय चौन्द्रीय पचेन्द्रीय और अने-न्द्रीय ये ६ बोल हैं इनके देश ६ और प्रदेश ६ एवं १८ बोल हुये।

अजीव के दो भेद हैं एक रूपी दूसरा अरूपी जिसमें पूर्व दिशा में रूपी का स्कन्द है स्कन्धदेश है स्कन्धप्रदेश है तथा परमाणु पुद्गल है एव चार और अरूपी का ७ धर्मास्तिकाय नहीं है परतु धर्मास्तिकाय का एक देश है और प्रदेश घणा है एव अधर्मास्तिकाय २ आकाशास्तिकाय २ और सातवा काल एव अजीव के ११ और जीव के १८ सब मिला के २९ बोल पूर्व दिशा में पावे एवं पश्चिम, दक्षिण और उत्तर में २९-२९ बोल पावे।

अग्निकौन की पृच्छा ? गौ० जीव नही है जीव का देश है, यावत् अजीवका प्रदेश है अगर जीवके देश है तो क्या एकेन्द्रीयके हैं।

(१) अग्निकौन में नियमा एकेन्द्रीयका देश है।
(२) घणा एकेन्द्रीयके घणा देश एक बेन्द्रियको एक देश
(३) ,, ,, ,, , ,, बे घणादेश
(४) , ,, ,, ,, घणे बेन्द्रिय के घणादेश
(७) एव तीन आलाया तेरिन्द्रिय का १० तीन चौरिंद्री

का (१३) पचेन्द्रीय का (१६) अनेन्द्रियका यह १६ आलाव कहना। प्रदेशापेक्षा।

(१) घणा पचेन्द्रियके घणो प्रदेश।

(२) „ „ , एक बेरिन्द्रियका घणे प्रदेश।

(३) „ „ , घणो बेरिन्द्रीके घणे प्रदेश।

एव तेरिन्द्रीके दो चौरिन्द्रीय दो पचेन्द्रीय दो, और अनेद्रियके दो सर्व ११ अलावा कुल जीवोंके २७ भेद हुवे और अजीव के दो भेद-रुपी और अरुपी जिसमें रूपी के चार भेद-स्कंध, स्कंधदेश, स्कंधप्रदेश, और परमाणुपुद्गल दूसरा अरूपी जिसके ६ भेद-धर्मास्तिकाय नहीं है परतु धर्मास्तिकाय का एक देश, और घणा प्रदेश एवं अधर्मास्तिकाय देश प्रदेश आकाशास्तिकाय देश प्रदेश एव अजीव के १ और जीवका २७ सर्व मिलाके ३७ बोल अग्निकोन में पावे एव नैऋत्य वायकोन इसान कोन में भी ३७-३७ बोल समझना।

विमला (ऊर्ध्वदिशा) में जीव क २७ भेद अग्निकोन वत् और अजीव क ११ भेद पूर्व दिशिवत् एव ३८ बोल समझना और नीची दिशी में ३७ बाल कहना कालका समय नही है।

(प्र०) उंची दिशी में कालका समय है और नीची में नही कहा जिसका क्या कारण? मेरु पर्वत का एक भाग स्फाटिक रत्नमय है और नीचे का भाग पाषाणमय है, उपर स्फटिक रत्नवाला भाग में सूर्य की प्रभा पडती है और नीचेका भाग पाषाणमय होनेसे सूर्य की प्रभाको नहीं खींच सकता इस लिये शास्त्रकार ने यहा समय की विवक्षा नहीं की, और नीची दिशा में अनेन्द्रीया का प्रदेश कहा सो यह केवली समुद्घातकी अपेक्षा से हैं। इति।

सेवभते सेवभते तमेव सच्चम्।

थोकडा नं० १००

श्री भगवती सूत्र श० ११-उ० १०

(लोक)

हे भगवान ? लोक कितने प्रकारके है ? गौ० चार प्रकार के यथा—द्रव्यलोक, क्षेत्रलोक काललोक और भावलोक जिसमें पहिले क्षेत्रलोक की व्याख्या करते हैं क्षेत्रलोक तीन प्रकारका है उर्ध्वलोक, अधोलोक और तिर्यग लोक उर्ध्वलोक में १२ देवलोक ९ ग्रैवेक ५ अनुत्तर विमान और सिद्धशिला, अधोलोकमें ७ नारकी और तिर्यग् लोक में जम्बूद्वीप, लवण समुद्रादि असंख्याद्वीप समुद्र है।

अधोलोक तिपाई के संस्थान तीर्यग् लोक झालर के संस्थान, ऊर्ध्वलोक उभी मृदगाकार (संस्थान) सर्व लोक तीन शरावला के अथवा जामा पहिरे हुवे पुरुष के संस्थान है और अलोक पोला गोला (नारियल) के संस्थान है।

अधोलोक क्षेत्रलोक में जीव है, जीव के देश है, जीवके प्रदेश है एवं अजीव, अजीव के देश, अजीव के प्रदेश हैं ? जीव है यावत् अजीव का प्रदेश है तो क्या एकेन्द्रिय यावत् अनेन्द्रिय है ? हा एकेन्द्रिय, बेन्द्रिय, तेन्द्रिय, चौन्द्रिय, पचेन्द्रिय और अनेन्द्रिय एवं ६ बोल और इन छे का देश और छे का प्रदेश सर्व १८ बोल हुवे।

अजीव के दो भेद रूपी और अरूपी जिसमें रूपी के चार भेद पूर्ववत् और अरूपी के ७ भेद धर्मास्ति का देश, प्रदेश एवं अधर्मास्ति, आकाशास्त का भी देश, प्रदेश और काल

समय एव २९ बाल अधोलोक में पावे इसी तरह तीर्यग् लोक में २९ और ऊर्ध्व लोक में काल का समय छोड के शेष २८ बोल पाय।

सर्व लोक में बोल पावे २९ पूर्ववत् और अलोक में जीवादि नही है फक्त आकाश है वह भी सर्वाकाश से अनन्त में भाग न्यून (लोक जितना न्यून)।

नीचलोक के एक आकाश प्रदेश पर जीव नहीं है जीव का देश, प्रदेश और अजीव अजीव के देश प्रदेश है। यथा—

(१) घणे एकेन्द्रिय के घणे देश तो नियमा है।
(२) घणे एकेन्द्रियके घणे देश एक बेरिंद्रिय का एक देश।
(३) ,, ,, ,, ,, घणे बेन्द्रिय के घणे देश।

एव तेन्द्रिय चौरिन्द्रिय, पचेन्द्रिय और अनेन्द्रिय के दो दो बोल कहना एव ११।

(१) घणे एकेन्द्रिय के घणे प्रदेश।
(२) घणे एकेन्द्रियके घणे प्रदेश और एक बेन्द्रियका घणे प्रदेश।
(३) , ,, ,, और घणे ,,

एव तेन्द्रिय २ चौन्द्रिय २ पचेन्द्रिय २ एव ९।

(१) घणे एकेन्द्रियके घणे देश और एक अनेन्द्रियका एक देश।
(२) ,, , , , , , घणे देश
(३) ,, , , , घणे ,

एव ३-९-११ मिल्के २३ भागे हुए और अजीव के ४ भेद चार रुपी और पांच अरुपी पूर्ववत् कुल ३२ बोल हुये।

ऊचा लोक के एक आकाश प्रदेश पर काल का समय

छोडके शेष ३१ बोल पावे तीर्यक् लोकमें नीचा लोक वत् ३१ बोल पावे लोक के एक आकाश प्रदेश पर भी कहना। अलोकाकाश पर जीव आदि नहीं है केवल आकाश अनन्त अगुरु लघु पर्याय संयुक्त है। २।

(२) द्रव्यलोक-नीचे लोक में अनन्ते जीव द्रव्य हैं अनन्ते अजीव द्रव्य है एव ऊचा लोक, तीर्यक् लोक और सर्व लोक अलोक में केवल अजीव वह भी आकाश अनन्त अगुरु लघु पर्याय संयुक्त है।

(३) काललोक-ऊंचा, नीचा, तीर्यक् और सर्वलोक कोई कर्या नहीं करे, नहीं, और करसी नहीं एव तीनों काल में सदा सास्वत है एव अलोक।

(४) भावलोक ऊचो, नीचो, तीर्यक् लोक और सर्वलोक में अनंते वर्ण, गध, रस स्पर्श और संस्थान का पर्याय है ॥ और अनन्ते गुरुलघु और अनन्ते अगुरुलघु पर्याय करके संयुक्त है और अलोक में केवल आकाश द्रव्य अगुरुलघु संयुक्त है।

इसका जादा खुलासा देखना हो तो श्रीमान् विनयविजयजी महाराज कृत लोकप्रकाश देख लीजीये ॥

सेवभते सेवभते तमेव सच्चम्

थोकडा नं० १०१

श्री भगवती सूत्र श० १६—उ० ८

लोक-लोक के देश और लोक के प्रदेशों का अधिकार पहले थोकडोंमें आगे लिखा गया है अब लोक के चरमान्त का २१०

बोलोमें जीयादि ६ पदके कितने २ बोल है वह इस थोकडे द्वारा नीचे लिखते हैं।

समुचय लोक व पूर्व के चरमान्त में क्या (१) जीव, (२) जीवका देश, (३) जीवका प्रदेश, (४) अजीव, (५) अजीवका देश, (६) अजीवका प्रदेश है ? जीव नहीं है जीवका देश है, यावत् अजीवका प्रदेश है जीव का देश है तो क्या एकेन्द्रिय, बेन्द्रिय, तेन्द्रिय, चौरिंद्रिय, पचेन्द्रिय और अनेंन्द्रिय का देश है। (१) घणे इंद्रिय एकेन्द्रिय के घणे देश सूक्ष्म जीवापेक्षा सास्वते लाधे, (२) घणे एकेन्द्रिय के घणे देश और एक बेन्द्रिय के एक देश (३) घणे एकेन्द्रिय के घणे देश और एक बेन्द्रिय के घणे देश, (४) घणे एकेन्द्रिय के घणे देश और घणे बेन्द्रिय के घणे देश एवम् तेन्द्रिय के ३ चौरिंद्रिय के ३ पचेन्द्रिय के ३ एवम् (१३) (१४) घणे एकेन्द्रिय के घणे देश और एक अनेंद्रिय के घण देश (१५) घणे एकेन्द्रिय के घणे देश और घणे अनेंद्रिय के घणे देश (१६) और प्रदेश की व्याख्या घणे एकेन्द्रिय के घण प्रदेश (१७) घण एकेन्द्रिय के घणे प्रदेश एक बेन्द्रिय के घणे प्रदेश (१८) घणे एकेन्द्रिय के घणे प्रदेश और घणे बेन्द्रिय के घणे प्रदेश एवम् तेन्द्रिय के २ चौरिन्द्रिय के २ पचेंन्द्रिय के २ अनेंन्द्रिय के २ एवम् २६ बोल जीवों के हुए।

अजीव दो प्रकार के हैं रूपी और अरूपी जिसमें रूपी के ४ भेद (१) स्कंध (२) स्कंधदेश (३) स्कंधप्रदेश (४) परमाणु और अरूपी के ६ भेद धर्मास्तिकाय नहीं है संपूर्णापेक्षा परन्तु धर्मास्तिकाय के देश प्रदेश है एवं अधर्मास्ति के २ आकाशास्तिकाय के २ अरूपी के ६ और रूपी के ४ मिलके अजीव के १० भेद तथा जीवके २६ सर्व मिलाकर पूर्व दिशा के चरमात में ३६ बोल हुए एवम् दक्षिण पश्चिम और उत्तर दिशा भी समझना।

उपरयत् ७ नारकी १२ देवलोक ९ नवग्रेवेयक ५ अणुत्तर-विमान १ इसी प्रभारा पृथिवी (सिद्धशिला) एवम् ३४ बोलों के चारों दिशों के चरमात में तथा समुच्चय लोक के चारों दिशों के चरमात मिल्के १४ चरमात में बोल छत्तीस छत्तीस पावे।

ऊचेलोक के चरमान्त की पृच्छा-ऊचेलोक के चरमान्त में (१) एकेन्द्रिय और अनेन्द्रिय का देश सदा काल साश्वता है (२) एकेन्द्रिय और अनेन्द्रिय का घणे देश और एक बेन्द्रिय का एक देश (३) और घणे बेन्द्रिय के घणे देश एवम् तेन्द्रिय का २, चौन्द्रिय का २, पचेन्द्रिय का २ मिलकर ९ बोल तथा प्रदेश (१०) एकेन्द्रिय और अनेन्द्रिय के घणे प्रदेश (साश्वता) (११) एकेन्द्री अनेन्द्रिय का घणा प्रदेश और एक बेन्द्रिय के घणे प्रदेश (१२) घण बेन्द्रिय के घणे प्रदेश एवम् २ तेन्द्रिय का, २ चोन्द्रिय का२, पचेन्द्रिय का२, मिलकर १८ भेद हुवे और अजीव के१० भेद है रूपी के स्कन्ध, स्कन्धदेश, स्कन्धप्रदेश, परमाणु पुद्गल और अरूपी के धर्मास्तिकाय देश, प्रदेश अधर्मास्तिकाय देश, प्रदेश, आकाशास्तिकाय देश, प्रदेश, एवम् सब मिलाकर ऊचेलोक के चरमान्त में बोल २८ पावे।

नीचेलोक के चरमान्त की पृच्छा बोल ३२ पावे, यथा घणे एकेन्द्रिय के घणे देश, एक बेन्द्रिय का एक देश, घणे बेन्द्रिय के घणे देश, एवम् तेन्द्रिय २ चौन्द्रिय २ पचेन्द्रिय २ अनेन्द्रिय २ मिलाकर ११ तथा प्रदेश-घणे एकेन्द्रिय के घणे प्रदेश एक बेन्द्रिय का घण प्रदेश, घणे बेन्द्रिय के घणे प्रदेश एवम् तेन्द्रिय के २, चोन्द्रिय के २ पचेन्द्रिय का२, अनेन्द्रिय के २, मिलाकर ११ अजीव का १ पूर्ववत् सर्व ३२ इसी माफिक ९ ग्रैवेयक ५ अनुत्तर विमान एक इसीप्रभारा (सिद्धशिला) के इन १५ के ऊचे तथा नीचे ३ चरमान्त समझना।

रत्नप्रभा के ऊपर के चरमान्त की पृच्छा जैसे विमला दिशा में बोल २८ समझना रत्नप्रभा को वर्जे के ६ नरक के ऊपर के और सातों नारकी के नीचे के चरमान्त १३ और १२ देवलोक के नीचे ऊंचे के २४ चरमान्त एवम् ३७ चरमात में बोल पावे ३३ जिसमें जीव के देश के १२ एकेन्द्रिय पचेंद्रिय के घणे देश भी लेणे प्रदेश का ११ अजीव का १० ।

लोक के पूर्व का चरमात का परमाणु पुद्गल क्या एक समय में लोक के पश्चिम के चरमात तक जा सके ? हा गौतम ! पूर्व के चरमात का परमाणु एक समय में पश्चिम के चरमात में जा सका है॥ एवम् पश्चिम से पूर्व, दक्षिण से उत्तर, उत्तर से दक्षिण तथा ऊंचेलोक के चरमांत से नीचेलोक के चरमात और नीचेलोक के चरमात से ऊंचेलोक के चरमात तक एक समय में जा सकता है जिस परमाणु में तीव्र वर्ण, गंध, रस स्पर्श होता है वह परमाणु एक समय में १४ राजलोक तक जा सका है । इति ।

सेवभते सेवभते तमेव सच्चम् ।

—+§(◎)§+—

थोकडा नं० १०२

श्री भगवती सूत्र श० ११–उ० १०

(लोक)

हे भगवान ! लोक कितना बडा है ? गौतम ! चौदह राज का है। यानि असख्याते कोडीन कोड योजन लम्बा चोडा है ॥ जिस्की स्थापना—

घन चौंतरा.
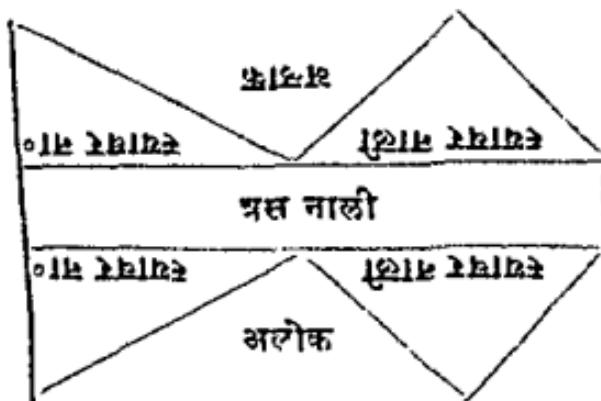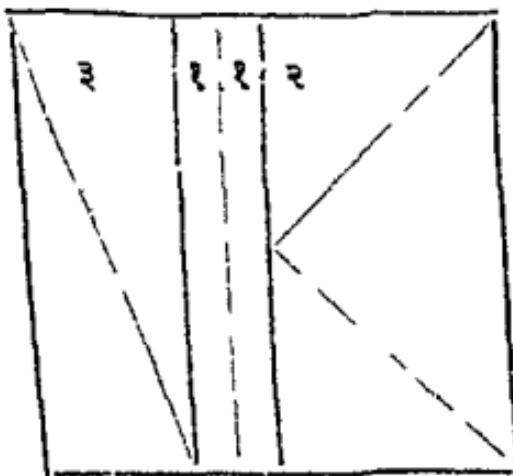
यह सातराज लम्बा चौंडा चौतरा है जिसके मध्य भाग से नाप लेने के लिये कोई देवता महान् ऋद्धि ज्योति कान्ती महासुख और महा भाग्य का धणी जिसके चलनेंकी सक्ती कैसी है यह कहते हैं जम्बुद्वीप एकलक्ष योजन का लम्बा चौंडा है जिसके मध्य भाग में मेरु पर्वत एक लक्ष योजन का ऊचा है उस मेरु

से चौतर्फ जम्बूद्वीप के ४ दरवाजे, पैतालीस २ हजार योजन दूर है उस मेरु पर्वत की चूलका पर पूर्वोक्त ऋद्धि वाले छे देवते खड़े है उस वक्त चार देवीया जम्बूद्वीप के चारों दरवाज पर लवणसमुद्र की तर्फ मुह करक हाथ में एक २ मोदक का लड्डू लिये खड़ी है वे दरवाज समधरती से ८ योजन ऊचे है वहा से उन लड्डूओं को वे देवीया समकाल छोड़े और देवीयों के हाथ से लड्डू छूटते ही मेरूपरसे छेओं देवताओं से एक देवता वहासे निकले और ऐसा शीघ्र गति से चले कि उन चारों लड्डूयों को अधर हाथ में लेले याने जमीन पर न गिरने दे, ऐसी शीघ्र गती वाले व छेओं देवता लोकका नापा (अन्त) लेनेको जावे, और उसी समय किसी साहूकार के एक हजार वर्षकी आयुष्य वाला पुत्र जन्मा गौतम स्वामी प्रश्न करत है कि हे भगवान्! उस पुत्र के माता पिता काल धर्म प्राप्त हो गये इतने काल में वे छेओं देवताओ छओ दिशी का अत लेने आये? गौ नहीं तो क्या वह लड़का सम्पुण आयुष्य पूण करे तब वे देवता लोकका अंत लेकर आवे? गौ नही तो उसके हाड, नाम गोत्र विच्छेद हो जाय इतना काल वितीत होन से वे देवता लोक का अ त लेने आवे? गौ० नहीं।

हे भगवान्! ऐसी शीघ्र गती वाले देवता भी इतन काल तक चले तो क्या गतक्षेत्र ज्यादा है या शेष रहा क्षेत्र ज्यादा है? गौ० गत क्षेत्र ज्यादा है और शेष रहा क्षेत्र कम है शेष रहे हुये क्षेत्र से गतक्षेत्र असंख्यात गुणे है और गत क्षेत्र से शेष रहा क्षेत्र असंख्यात में भाग है। इतना बड लोक है।

अलोक की पृच्छा! लोक के माफीक कहना विशेष इतना है कि समयक्षेत्र ४५ लक्ष योजन का है जिसकी मर्यादा के लिये चौतर्फ मनुष्योत्तर पर्वत है और मध्य भाग में मेरुपवत है॥ उसपर दश देवता महऋद्धिक बैठे है और आठ देवी मनुष्योत्तर

पर्वत से मोदक के लड्डू छोडे और शीघ्र गतीवाला देवता अधर हाथ में लेले, इसकी सब व्याख्या पूर्ववत् कहदेना विशेष इतना है के वहा ४ लड्डू कहे है यहा ८ कहना और वहा छे दिशी का सन्त लानेको गये कहा है यहा दश दिशी कहना और लडके की आयुष्य लक्ष वर्ष की कहना तथा गतक्षेत्र की अपेक्षा शेष रहा क्षेत्र अनन्त गुणा कहना शेष रहे क्षेत्रसे गतक्षेत्र अनन्त में भाग है इतना बडा अलोक है।

लोक और अलोक किसी देवता ने नापा किया नहीं करे नहीं और करेगा नहीं परन्तु ज्ञानीयों ने ज्ञान से देखा है वैसी ही औपमा द्वारा बतलाया है।

सेवंभते सेवंभते तमेव सच्चम्।

थोकडा नं० १०३.

श्री भगवती सूत्र श० ५-उ० ८

(परमाणु.)

हे भगवान्! परमाणु पु० इधर उधर चलता है कि स्थिर है? गौ० स्यात् चलता है, स्यात् स्थिर है, भागा २, दो प्रदेशी की पृच्छा? (१) स्यात् चले (२) स्यात् न चले (३) स्यात् देश चले स्यात् देश न चले एव भागा ३ तीन प्रदेशी का भी भांगा ३ पूर्ववत् (४) स्यात् देश चले स्यात् बहुत से देश न भी चले (५) स्यात् बहुत से देश चले स्यात् एक देश न चले एव भागा ५। चार प्रदेशी के ५ भागा पूर्ववत् (६) बहुत से देश चले, बहुत से देश नहीं चले इसी माफिक ५-६-७-८-९-१०

सख्याते असख्या० अनत० प्रदेशी के सूक्ष्म और बादर ए भी छे छे भागे समझ लेना एवं सब भागे ७६ हुवे।

(२) परमाणु पु० तरवार की धारसे छेदन भेदन नहीं होवे, अग्नि में जले नहीं, पुष्करावृत मेघ वर्षे ता सडे नहीं एव दो प्रदेशी यावत् सूक्ष्म अनत प्रदेशी और बादर अनन्त प्रदेशी छेदन भेदन जले या सडे गले विद्वस होवे और स्यात् नही भी होवे।

(३) परमाणु पु० क्या सार्द्ध है, समध्य है, सप्रदेश है, अनार्द्ध है, अमध्य है, अप्रदेश है ? इन छे बोलों में एक अप्रदेशी है शेष सुन्य है दो प्रदेशी पृच्छा छे बोलों में दो बोल पावे सार्द्ध और सप्रदेश एव ४-६-८-१० प्रदेशी में भी समझ लेना और तीन प्रदेशी में दो बोल समध्य सप्रदेश एव ५-७-९ प्रदेशी और संख्यात प्रदेशी में छे बोलों में से १ अप्रदेशी वर्जे के शेष ५ बोल पावे एव असं० अनं० प्रदेशी भी समजलेना।

(४) परमाणु पु० परमाणु पु० ने स्पर्श करता जावे तो नीचे लिखे नौ भागों में से कितना भागा स्पर्शे (१) देश से देश (२) देश से देशा[1] (३) देश से सव (४) देश से देश (५) देशा से देशा (६) देशा से सर्व (७) सर्वसे देश (८) सर्व से देशा (९) सर्व से सर्व, जिस्में परमाणु पुद्गल सर्व से सर्व स्पर्श परमाणु पुद्गल ने स्पर्शतो जावे तो भागा एक १ परमाणु पुद्गल दो प्रदेशी ने स्पर्श तो जावे तो भांगा दो पावे ७-९ मो परमाणु तीन परदेशी ने स्पर्श तो जावेतो भागा ३ पावे ७ ८-९ यावत् अन० प्रदेशी कहना।

दो प्रदेशी परमाणु को स्पर्शतो जावे तो भाग २ पावे ३-९ दो प्रदेशी दो प्र० को स्पर्शतो जावे तो भागा ४ पावे १-३-७-९

---

[1] जहा पर देशा शब्द हा वहा बहुवचन समझा।

दो प्र० तीन प्र० को स्पर्शता जावे तो भागा ६ पावें १-२-३-७-८-९ एव यावत् अनन्त प्रदेशी समझ लेना।

तीन प्रदेशी परमाणु को स्पर्श करता जाय तो भागा ३ पावें ३-६-९ तीन प्र० दो प्र० को स्पर्श करतो जावेतो भागा ६ पावें १-३-४-६-७-९ तीन प्र० तीन प्र० को स्पर्श करता जावे तो भागा ९ पूर्ववत् पावे एव यावत् अनन्त प्रदेशी कहना चार प्रदेशी से यावत् अनन्त की व्याख्या तीन प्रदेशीवत् करनी।

(५) परमाणु की स्थिती ज० एक समय उ० अस० काल एव दो प्र० यावत् अनन्त प्रदेशी स्कन्ध की भी स्थिती कहदेना।

(६) एक आकाश प्रदेश अवगाहा पुद्गलों की स्थिती दो प्रकार की है एक कम्पता हुवा जैसे एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश जाने वाला और दूसरा अकम्पमान याने स्थिर जिसमें कम्पमान की ज० एक समय उ० आवली का के असं० भाग और अकम्प की ज० एक समय उ० अस० काल० एव दो तीन यावत् असख्यात आकाश प्रदेश अवगाहा आदि समझना।

(७) एक गुण काले पु० की स्थिती ज० एक समय उ० असं० काल एवं दो तीन यावत् अनन्त गुण काले पु० कीभी समझ लेना इसी तरह ५ वर्ण २ गध ५ रस ८ स्पर्श भी समझ लेना।

(८) जो पुद्गल (सुक्ष्मपणे प्रणम्य है वे ज० एक समय उ० अस० काल एव बादरपने प्रणम्या भी कहना।

(९) पुद्गल शब्द पने प्रणम्या है वे ज० एक समय उ० आवली के अस० भाग।

(१०) जो पुद्गल अशब्द पने प्रणम्या है वे ज० एक समय उ० अस काल।

११) परमाणु पु० का अतर ज० एक समय उ० अस०

(५) कर्मबंध-ज्ञानवर्णीय कर्मके बंधक स्यात् एक जीव मिले स्यात् बहुत जीव मिले एवं आयुष्य कर्म वर्ज के शेष ७ कर्म कहना और आयुष्य कर्म बंधक के भागा ८ (१) आयुष्य कर्म का बंधक एक (२) अबंधक एक (३) बंधक बहुत (४) अबंधक बहुत (५) बंधक एक अबंधक एक (६) बंधक एक अबंधक बहुत (७) बंधक बहुत अबंधक एक (८) बंधक बहुत अबंधक भी बहुत इसी माफक जहां पर फीर भी ८ भागा कहें उसको भी इसी तरह लगा लेना सात कर्मोंके १४ भांगे यथा ज्ञानवर्णी का एक और ज्ञानवर्णीय के बहोत इस तरह एक वचन बहुवचन करने से १४ भागे हुवे और ८ आयुष्य के एवं २२ भागे।

(६) कर्मवेदे-ज्ञानावर्णीय कर्म वेदने वाले किसी समय एक और किसी समय बहुत जीव मिले एवं वेदनीय कर्म छोड के शेष कर्मो के १४ भागे और वेदनीसाता, असाता दो प्रकार की वेदे इसलिये इसके ८ भागा पूर्ववत् एवं २२ भागा।

(७) उदय ज्ञानवर्णीय के उदयवाला किसो समय एक जीव मिले और किसी समय बहोत एवं अंतराय यावत् ८ कर्मो के १६ भागा हुवे।

(८) उदीर्णा वेदनी और आयुष्य कर्म को छोड के शेष ज्ञानावर्णीयादि ६ कर्मके एक वचन बहुवचनाश्रीय १२ भागे और वेदनी आयुष्यके ८-८ भागे पूर्ववत् समझना एवं २८ भाग।

(९) लेश्या-उत्पलादि में चार लेश्या कृष्ण, नील, कापोत, और तेजो इन चार लेश्याओं के अस्सी भाग होते हैं यथा असयोगी ८ किसी समय कृष्णलेसी एक, किसी समय नील लेसी एक, किसी समय कापोत लेसी एक और किसी समय तेजो लेशी एक यह एक वचनापेक्षा चार भागा इसी तरह बहुवचन के भी चार भागा समझ लेना एवं ८ भागा और द्विक संयोगी २४

कृष्ण	नील	कृष्ण,	कापोत	कृष्ण,	तेजो
१	१	१	१	१	१
१	३	१	३	१	३
३	१	३	१	३	१
३	३	३	३	३	३
नील,	**कापोत**	**नील,**	**तेजो**	**कापोत,**	**तेजो**
१	१	१	१	१	१
१	३	१	३	१	३
३	१	३	१	३	१
३	३	३	३	३	३

त्रिक संयोगी ३२

कृ०	नी०	का०	कृ०	नी०	ते०	कृ०	का०	ते०	नी०	का०	ते०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
१	१	३	१	१	३	१	१	३	१	१	३
१	३	१	१	३	१	१	३	१	१	३	१
१	३	३	१	३	३	१	३	३	१	३	३
३	१	१	३	१	१	३	१	१	३	१	१
३	१	३	३	१	३	३	१	३	३	१	३
३	३	१	३	३	१	३	३	१	३	३	१
३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३

चतुष्क संयोगी १६ भागा।

कृ०	नील०	का०	ते०	कृ०	नील०	का०	ते०
१	१	१	१	३	१	१	१
१	१	१	३	३	१	१	३
१	१	३	१	३	१	३	१
१	१	३	३	३	१	३	३
१	३	१	१	३	३	१	१
१	३	१	३	३	३	१	३
१	३	३	१	३	३	३	१
१	३	३	३	३	३	३	३

एव ८,२४,३२,१६ मिला के सब ८० भागे हुये इसी माफिक कषाय द्वार तथा संज्ञाद्वार कहेंगे वहा भी ८० भाग समझ लेना।

(१०) दृष्टी मिथ्या दृष्टी है वे किसी समय एक जीवमिल और किसी समय बहुत्व जीवमिले इसलिये भागा दो और भी जहाँ दो भागा लिखें वहा यही दो भांग समझना।

(११) ज्ञान-अज्ञानी भागा दो पूर्ववत्।

(१२) योग-एककाय योगी है भागा २ पूर्ववत्।

(१३) उपयोग साकारोपयोग, अनाकारोपयोग भागा ८ असंयोगी ४ द्विसंयोगी ४ साकार १-३ अनाकार १-३ और साकार ११-१३-३१-३३।

(१४) वर्ण-जीवापेक्षा अवर्णयावत् अस्पर्श है और शरीरापेक्षा ५ वर्ण, २ गंध, ५ रस, ८ स्पर्श।

(१५) उश्वास-उश्वासगा है निश्वासगा है और नोउश्वासगा निश्वासगा है (बाटे वहता) जिसके भागा २६ यथा असंयोगी ६ तीन एक वचन ३ बहुवचन।

द्वि० वचन, द्विसंयोगी १२ त्रिक संयोगी ८

उ०	नि	उ०	नो०	नि०	नो०	उ०	नि०	नो०	उ०	नि०	नो०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	३	१	१
१	३	१	३	१	३	१	१	३	३	१	३
३	१	३	१	३	१	१	३	१	३	३	१
३	३	३	३	३	३	१	३	३	३	३	[illegible]

(१६) आहारक आहारक है भागा २ पूर्ववत् ।

(१७) वृत्ति-अवृत्ति है भागा २ पूर्ववत् ।

(१८) क्रिया-सक्रिय है भागा २ पूर्ववत् ।

(१९) बन्ध-सातकर्म का बन्धगा, आठ कर्म का बन्धगा जिसका भागा ८ पूर्ववत् ।

(२०) संज्ञा-आहारादि चारों संज्ञा पावे जिसके भागा ८० पूर्ववत् । लेश्या द्वारसे देखो ।

(२१) कषाय क्रोधादि चारों कषाय पावे भागा ८० पूर्ववत्

(२२) वेद-एक नपुंसक है भागा दो पूर्ववत् ।

(२३) वेदबन्ध-स्त्री, पुरुष, नपुंसक तीनों वेद के बांधने वाले है भागा २६ पूर्ववत् । उश्वास द्वारकी माफीक ।

(२४) संज्ञी-असंज्ञी है भागा दो पूर्ववत् ।

(२५) इन्द्रिय-सइन्द्रिय है, भागा दो पूर्ववत् ।

(२६) अनुबंध याने काय स्थिती-ज० अंतर मु० उ० असंख्याते काल ।

(२७) संवह-उत्पल कमल का जीव अन्य स्थान में जाकर पीछा उत्पल कमल में आवे जैसे पृथ्वी और उत्पल कमल में

गमनागमन करे ऐसे ही अन्य काया में भी गमनागमन करे उसे "सवह' कहते है।

उत्पल और पृथ्वी में गमनागमन करे तो जिसका दो भेद एक भवापेक्षा और दूसरा कालापेक्षा जिसमें भवापेक्षा ज० दो भव उ० अस० भव और काल ज० दो अतर मु० उ० अस० काल इसी तरह अप, तेउ, वायु, भी समझ लेना वनस्पति ज० दो उ० अन० भव और काल ज० दो अतरमु० उ० अन० काल तीन विकलेंन्द्रिय में ज० दो भव और काल पृथ्वीवत् उ० स० भव और स काल तीर्यंच पचेंन्द्रिय और मनुष्य ज दो भव और काल पृथ्वीवत् उ० ८ भव करे और काल प्रत्येक पूवकोड।

(२८) आहार-२८८ बोल का आहार ले परतु नियमा ६ दिशी का (देखो शीघ्रबोध भाग ३)

(२९) स्थिती-ज० अतर मु उ० दश हजार वर्ष।

(३०) समुदघात-तीन पावे, कपाय, वेदनी और मरणांति तथा समोइया दोनो प्रकार से मरे।

(३१) चवण-उत्पल का जीव चवके ४९ जगहजावे। ४६ तीयच ३ मनुष्य कर्म भूमीका पर्या अपर्या० समुर्छिम।

(३२) मूलद्वार-सब प्राण भूत, जीव, सत्व याने सब ससारी जीव उत्पल कमल के मूल, स्कंध, त्वचा, पत्र, केसरा कर्णिकादि पणे अनतीवार उत्पन्न हुवा है यथा असइ अहुवा अणतिरकुत्तो। इति।

सेवंभते सेवंभते तमेव सञ्चम्।

इति श्री शीघ्रबोध भाग ८ वा समाप्तम्

अथश्री

शीघ्रबोध भाग ९ वां

थोकडा नम्बर १०५

(गुणस्थानपर ५२ द्वार)

[१] नामद्वार [२] लक्षणद्वार [३] क्रियाद्वार [४] बन्धद्वार [५] उदय० [६] उदिर्णा० [७] सत्ता० [८] निर्जरा० [९] आत्मा० [१०] कारण० [११] भाव० [१२] परिसह० [१३] अमर० [१४] पर्याप्ता० [१५] आहारिक० [१६] सज्ञा० [१७] शरीर० [१८] सघयण० [१९] सस्थान० [२०] वेद० [२१] कषाय० [२२] सज्ञी० [२३] समुदुघात० [२४ गति० [२५] जाति० [२६] काय० [२७] जीवके भेद० [२८] योग० [२९] उपयोग० [३०] लेश्या० [३१] दृष्टी० [३२] ज्ञान० [३३] दर्शन० [३४]सम्यक्त्व० [३५] चारित्र० [३६] नियंट्ठा० [३७] समोवसरण० [३८] ध्यान० [३९] हेतु० [४०] मार्गणा० [४१] जीवयोनी० [४२] दडक० [४३] नियमा भजना० [४४] द्रव्यप्रमाण० [४५] क्षेत्रप्रमाण० [४६] सान्तर निरन्तर० [४७] स्थिति० [४८] अन्तर० [४९] आगरेस० [५०] अवगाहना० [५१] स्पर्शना० [५२] अल्पाबहुत्व०

[१] नामद्वार—[१] मिथ्यात्व गुणस्थानक [२] सास्वादन० [३] मिश्र० [४] अव्रतिसम्यक्त्वदृष्टि० [५] देशव्रती० [६] प्रमत्तसंयत० [७] अप्रमत्तसयत० [८] नियृत्तीबादर० [९]

अनिवृत्तीबादर० [१०] सुक्ष्मसम्पराय० [११] उपशान्तमोह० [१२] क्षीणमोह० [१३] सयोगी० [१४] अयोगी गुणस्थानक०

[२] लक्षणद्वार—[१] मिथ्यात्व गुणस्थानकके तीन भेद अनादी अनन्त [अभव्यकी अपेक्षा] [२] अनादी सान्त [भव्यापेक्षा] [३] सादीसान्त [सम्यक्त्व प्राप्त करके पीछा मिथ्यात्वमें गया उसकी अपेक्षा] और मिथ्यात्व दो प्रकारका है एक व्यक्त मि० दूसरा अव्यक्त मि० जिसमें एकेन्द्रिय बेरिन्द्रिय तेरिन्द्रिय चोरिन्द्रिय और असज्ञी पचेन्द्रियमें अव्यक्त मिथ्यात्व है और पचेन्द्रिय कितनेक व्यक्त मि० कितनेक अव्यक्त मि० है जिसमें व्यक्त मि० के २५ भेद है यथा—

(१) जीवको अजीव श्रद्धे-जैसे कितनेक लोक एकेन्द्रिय आदिको जीव नहीं मानते हैं। केवल चलते फिरते ही को जीव मानते हैं यह एक किस्म का मिथ्यात्व है।

(२) अजीवको जीव श्रद्धे-जैसे जितने जगत्में पदार्थ हैं वे सब जीव हैं। यानि जड पदार्थोंको भी जीव माने मि०

(३) साधुको असाधु श्रद्धे-याने जो पच महाव्रत पाच समिति, तीन गुप्ति आदि सदाचारमें प्रवृत्ति करनेवालेको साधु न माने। मि

(४) असाधुको साधु श्रद्धे-यथा आरम्भ परिग्रह, भाग गांजा, चडसादि पीनेवाले अनेक संसारी जीवोंको भी साधु माने। मि

[५] धर्मको अधर्म श्रद्धे-जैसे अहिंसा सत्य शील, तपादि शुद्ध धर्मको अधर्म समझें। यह भी मिथ्यात्व है।

(६) अधर्मको धर्म श्रद्धे-जैसे यज्ञ होम जप पचाग्नि तापना, कन्दमूल खाना, ऋतुदान देना इत्यादि अधर्मको धर्म मानें। मि०

(७) मोक्षमार्गको संसारका मार्ग श्रद्धे-जैसे ज्ञान दर्शन चारित्रादिको ससार समझे। " मि०

(८) ससारके मार्गको मोक्षका मार्ग श्रद्धे-जैसे मृतककी पीछे पींड, श्राद्ध, ओसर, बलीदानादिको मोक्ष मार्ग समझना। मि०

(९) मोक्ष गयेको अमोक्ष समझना-जैसे केवलज्ञान प्राप्त करके मोक्ष गयेको फिर आके अवतार लेंगे ऐसा कहना। मि०

(१०) अमोक्षको मोक्ष कहना-जैसे कृष्णादिकी अभी मोक्ष नही हुवा उनको मोक्ष हुवा मानना। मि०

(११) अभिग्रह मिथ्यात्व-जैसे मिथ्यात्व, हठ, कदाग्रहको पकडकर कुगुरु, कुदेव, कुधर्मपर ही श्रद्धा रक्खे अपने ग्रहण कियेको मिथ्या समझने पर भी न छोडे। मि०

(१२) अनभिग्रह मिथ्यात्व-जैसे कुदेव, कुगुरु, कुधर्मपर वैसे ही सुदेव, सुगुरु, सुधर्मपर एक सरीखी श्रद्धा रखे सबको एक सरीखा माने। मि०

(१३) सशय मिथ्यात्व-वीतरागके वचनोंपर सकल्प विकल्प करना और उसपर सशय करना। मि०

(१४) अनाभोग मिथ्यात्व-जिसको धर्माधर्म, हिताहितका कुछ भी रयाल नहीं है अजाणपनेसे या बेदरकारीसे हरएक काम करता है। मिथ्यात्वादि को सेवन करता है मि०

(१५) अभिनिवेश मिथ्यात्व-धर्माधर्म सत्यासत्यकी गवेषणा और विचार करके उसका निश्चय होनेपर भी अपने हठको नहीं छोडना। मि०

(१६) लौकिक मिथ्यात्व-लोकोंके देखादेखी मिथ्यात्वकी क्रिया करे अर्थात् धन पुत्रादिके लिये लौकिक देवोंकी सेवा उपासना करे। मि०

(१७) लोकोत्तर मिथ्यात्व-मोक्षके लिये करने योग्य क्रिया करके लौकिक सुखकी इच्छा करे या वीतराग देवके पास लौकीक सुख सम्पदा धनादिकी प्रार्थना करे। उसे लोकोत्तर मिथ्यात्व कहते हैं।

[१८] ऊणो मिथ्यात्व-वीतरागके वचनासे न्यून प्ररुपणा करे तथा जीवको अगुष्ट प्रमाण माने या न्युन क्रिया करे। मि॰

[१९] अधिक मिथ्यात्व-वीतरागके वचनासे अधिक प्ररुपणा करे। या अधिक क्रिया करे—मन कल्पित क्रिया करे। मि॰

[२०] विपरीत मिथ्यात्व-वीतरागके वचनोंसे विपरीत प्ररुपणा करे या विपरीत क्रिया करे—कुलिंगादि को धारण करे।

[२१] गुरुगत मिथ्यात्व-अगुरुको गुरु करके माने जैसे जगम, जोगी, सेवड़ा चमत्कार चमचीरीया की जिसमें गुरुका गुण न हो लक्षण न हो और लिंग न हो अथवा स्वलिंगी पासत्था उसन्ना ससत्ता कुशिल्यादिको गुरु माने। मि॰

(२२) देवगत-जो रागी द्वषी आरम्भ उपदेशी जिनकी मुद्रामें राग द्वेष विषय कषाय भरा है ऐसे देव हरी हलधर भैरु भवानी शीतला मातादिको देव माने। मि॰

(२३) पर्वगत-जैसे होली रक्षा अष्टमी गोगानवमी, आमावास्यादि लौकिक पवको पर्व मान कर मिथ्यात्वकी क्रिया करे। मि॰

(२४) अक्रिय मिथ्यात्व-क्रिया करनेसे क्या फल होता है इत्यादि माने-क्रिया का नास्तिपणा बतलाना। मि॰

(२५) अविनय मिथ्यात्व-देव, गुरु, सघ स्वाधर्मी भाइयों का उचित विनय न करके उनका अविनय-आशातना करे। मि॰

यह २५ प्रकारका मिथ्यात्व कहा। इसके सिवाय शास्त्रका-

ने मिथ्यात्वकी ४-५-१० यावत् अनेक तरहसे प्ररुपणा की है मत भेद एक दूसरेमें समावेस हो सकते हैं। परन्तु विस्तार रनेका इतना ही कारण है कि बालजीव सुगमतासे समझ ये। वास्तवमें मिथ्यात्व उसीका नाम है जो सद् वस्तुको असद् महो। जब सुगमताके लिये इसके जितने भेद करना चाहे तना भी हो सकते है।

मिथ्यात्वको गुणस्थानक क्यों कहा? इसमें कोनसे गुणका थानक है? अनादिकालसे जीव ससारमें पर्यटन करता आया है। यथा दृष्टांत—दो पुरुष कीसी रस्ते पर जा रहे थे और जाते २ न दोनोंकी नजर एक सीपके टुकडा पर पडी। एकने हा भाइ! यह चादीका टुकडा पडा है, दूसरेने कहा चादी ही यह सीपका टुकडा है। इसी तरह जीव अनादिका से ससार चक्रमें फिरते हुवे कभी भी उनको ऐसे ज्ञानकी प्राप्ति नहीं हुइ कि चादी किसे कहते है और सीप किसे कहते है। आज यह ज्ञान हुवा कि उसका सपेद रग और चमकको देख कर कहा कि यह चादी है इसी विपरीत ज्ञानको मिथ्यात्व कहते है और जिस वस्तुका पहिले कुछ भी ज्ञान नहीं था उसको आज विपरीतपन जानता है यह जानना यह एक किस्मका गुण है। इसी तरह जीव अव्यवहार राशीमें भ्रमण करते अनत काल व्य तीत हो गया परन्तु वह इस बातका नहीं जानता था कि देवगुरु धम किसे कहते हैं और क्यो वस्तु है। आज उसको इतना क्षयो पशम हुवा है की वह सद्को असद् समझता है। अब किसी वक्त सुयोग मिलेगा तो यथावत् सम्यग ज्ञानकी भी प्राप्ति हो जायगी। परन्तु जब तक मिथ्यात्व गुणस्थानककी श्रद्धा है तब-तब चतुर्गती रुपी ससारार्णवमें भटकता ही रहेगा, विना सम्यग् ज्ञानके परम सुखको प्राप्त नहीं कर सकता।

(२) सास्वादन गुणस्थानकका लक्षण—जीव अनादि

[६] ६ प्र० उप० १ प्र० वेदे तो उपशम वेदक सम्य०
[७] ६ प्र० क्षय० १ प्र० वेदे तो क्षायिक वेदक सम्य०
[८] ७ प्र० उपशमावे तो उपशम सम्य०
[९] ७ प्र क्षय करे तो क्षायिक सम्य०

इन ९ भागोंमें से कोइ भी एक भागा प्राप्त करके चतुथ गु० में आवे। जीवादि नौ पदार्थोंको यथार्थ जाणे और वीतरागके शासन पर सची श्रद्धा रक्खे। संघकी पूजा प्रभावनादि सम्यक्त्व की करनी करे नौकारशी आदि वर्षी तपको सम्यक् प्रकारे श्रद्धे परन्तु व्रत पच्चखाणादि करनेको असमर्थ। क्योंकि व्रत पच्चखाण अप्रत्याख्यानी चौकके क्षयोपशम भावसे होता है। सो यहा नही है। चतुर्थ गु० याने सम्यक्त्वके प्राप्त होनेसे सात बोलोंका आयुष्य नहीं बंधता-(१) नारकी (२) तिर्यंच (३) भुवनपति० (४) व्यंतर (५) ज्योतिषी (६) स्त्रीवेद (७) नपुंसकवेद अगर पहिले बंध गया हो तो भोगना पडे। चौथे गु० वाला ज० ३ भव करे उ० १५ भव करके अवश्य मोक्ष जावे।

(५) देशव्रती (श्रावक) गु० का लक्षण—जीव ११ प्रकृतियोंका क्षय या क्षयोपशम करे जिसमें ७ पूर्व कह आये है और चार अप्रत्याख्यानीका चौक। यथा।

(१) क्रोध-तलावके मट्टीकी रेखा समान।
(२) मान-हाडका स्थम्भ समान।
(३) माया-मेढाके सिंग समान।
(४) लोभ नगरका कीच या गाडीका खजण समान।

यह चौकडी श्रावकके व्रतकी घात करती हैं स्थिती १ वर्ष की है और इससे तिर्यचकी गती होती है। इन ११ प्रकृतीयोंके क्षय होनेसे जीव पांचवा गु० प्राप्त करता है और जीवादि पदा

वेकी श्रद्धा पूर्वक जाणे, सामायिक पोषध, प्रतिक्रमण, नौकारसी आदि तप करे, आचार विचार स्वच्छ रक्खें लोक विरुद्ध कार्य न करे, अभक्षादि तुच्छ वस्तुका परित्याग करे, और मरके वैमानिकमें जावे। इस गुणस्थानकके प्राप्त होनेसे जीव ज० ३ उ० १५ भव करके अवश्य मोक्ष जाये।

(६) प्रमत्त सयत गु० का लक्षण—जीव १५ प्रकृति क्षय या क्षयोपशम करनेसे इस गु० को प्राप्त करता है जिसमें ११ प्र० पूर्व कही और चार प्रत्याख्यानी चौक।

(१) क्रोध-रेतीपर गाडाकी लकीर समान।
(२) मान-काष्टके स्थम्भ समान।
(४) माया-चलते हुये बलदके मूत्रकी धारा समान।
(५) लोभ-आखके अजन समान।

यह चोकडी सराग संयमकी घातक है। स्थिति इस चार मासकी है। और गती मनुष्यकी। इस गु० में जीव पंच महाव्रत, ५ समिति, ३ गुप्ति, चरणसत्तरी करणसत्तरी आदि मुनि मारग सम्यग प्रकारसे आराधे और मरके नियमा वैमानिकमें जाये। इस गु० वाला ज० ३ उ० १५ भव करके अवश्य मोक्ष जावे।

(७) अप्रमत्त सयत गु० का लक्षण—मद विषय कषाय, निद्रा और विकथा इन पाचो प्रमादको छोडके अप्रमत्त पने रहे। इस गुणस्थानवाला जीव तद्भव मोक्ष जाय या उ० ३ भव करे।

(८) निवृत्ति बादर गु० लक्षण—अपूर्वकरण शुक्ल ध्यानके प्राप्त होनेसे यह गु० प्राप्त होता है। इस गु० से क्षीण श्रेणी प्रारंभ करते हैं एक उपशम और दूसरी क्षपक। जो पूर्व कही १५ प्रकृतियोंको उपशमावे यह उपशम श्रेणि करे और क्षा

क्षय करे यह क्षपक श्रेणी करता है। पन्द्रह प्रकृति पूर्व कही और हास्य, रती, अरती, शोक, भय, जुगुप्सा एव २१ प्रकृतिका क्षय करके नौवें गु को प्राप्त करता है।

(९) अनिवृत्ति बादर गु० लक्षण—इस गु० में स्त्री वेद, पुरुषवेद, नपुसक वेद और संज्वलकात्रिकको क्षय करे।

(१) क्रोध-पानीकी लकीर समान।
(२) मान-तृणका स्थभ समान।
(३) माया-वासकी छोल समान।

यह त्रिक यथाख्यात चारित्रका घातीक है, स्थिती क्रोधकी दो मासकी, मानकी एक मासकी मायाकी पन्द्रह दिनकी और गती द्वेषताकी एवं कुल २७ प्रकृती क्षय या उपशम करनेसे दशवें गु० को प्राप्त करता है।

(१०) सुक्ष्मसपराय गु० का लक्षण—यहा पर सज्व लका लोभ जो हल्दीक रग समान बाकी रहा था उसका क्षय करे एवं २८ प्रकृतिका क्षय करे। यदि पूर्वसे उपशान्त करता हुवा उपशम श्रेणी करके आया हो तो यहासे इग्यारवें उपशान्तमोह वीतरागी गु० में आवे और ज० एक समय उ० अन्तर मुहूर्त ठहरकर पिछा गिरे तो क्रमश आठवे गु० पर आवे क्रमश पहले गु० तक भी जा सकता है अगर इग्यारवे गु पर काल करे तो अनुत्तर वेमानमें उपजे। क्योंकि इग्यारवें गुणस्थानक पर आया हुवा जीव आगे नही जा सकता। यदि तद्भव मोक्ष जानेवाला हो तो आठवे गु० से क्षपक श्रेणि करके दशवें गु० से बारहवें गु० को प्राप्त करे।

(१०) क्षीणमोह वीतरागी गु० का लक्षण—यहा ज्ञानावर्णिय, दर्शनावर्णिय और अन्तराय कर्मका क्षय करके १३

वे गु० को प्राप्त करे और तेरवें गु० के प्रथम समय अनन्त केवल ज्ञान अनन्त केवलदर्शन अनन्तचारित्र अनन्तदानलब्धि, लाभलब्धि, भोगलब्धि, उपभोगलब्धि, और वीर्यलब्धिको प्राप्त करे। इस गु० पर ज० एक अन्तर म० उ० आठ वर्ष कम पूर्व क्रोड रह कर फिर चौदवें गु० में जावे। यहा पाच लघु अक्षर (अ इ उ ऋ लृ) उच्चार्ण कार रह कर पीछे अनत, अव्याबाध, अक्षय, अविनाशी, सादी अनत भगे मोक्ष सुखको प्राप्त करता है।

(३) क्रियाद्वार--क्रियाके पाच भेद है-आरभीया परिगृहिया, मायावत्तीय, अपचग्माणीया और मिथ्यादर्शनवत्तीया पहिले और तीजे गु० में पाचों क्रिया लागे दूजे चौथे गु० चार क्रिया मिथ्यादर्शन० की नहीं। पांचमें गु० तीन क्रिया (मिथ्या द० अवृत० नहीं) छट्ठे गु० दो (आरम्भ० माया०) क्रिया तथा ७-८-९-१० गु० एक मायावतीया क्रिया और ११-१२-१३-१४ गुण० पाचों क्रिया नहीं, अक्रिया है।

(४) बन्धद्वार--प्रथम गु० से तीसरा वर्जके सातमें गु० तक आयुष्य वर्जके सात कर्म वा वे और आयुष्य वाधता हुवा ८ कम वाधे तथा ३ ८-९ ने आयुष्य वर्जके सात कर्म वाधे आयुष्यका अब धक है। दशमें गु० छे कर्म (आयुष्य मोह० वर्जके) बाधे ११-१२-१३ गु० एक साता वेदनी बाधे और चौदवा गु० अबधक है।

नोट ज० ऊ० बध स्थानक---वेदनीयका ज० बध स्थान तेरवे गु० तथा ज्ञानावर्णिय-दर्शन० नाम० गोत्र० अतराय कर्मका ज० बध दशवें गु० और मोहनी० का ज० बन्ध स्थान नौवें गु० है तथा उत्कृष्ट बध सातों कर्मका मिथ्यात्व गु० में होता है।

(५) उदयद्वार—प्रथमसे दशवें गु० तक आठों कर्मोका उदय तथा ११-१२ गु० सात कर्मोंका उदय मोहनीय वजके और १३-१४ गु० चार अघाती कर्मोंका उदय वेदनी नाम० गोत्र० आयुष्य ।

(६) उदीरणा द्वार—प्रथमसे तीसरा गु० वर्जके छट गु० तक ७-८ कर्म उदीरे० (आयुष्य वर्जके) तीजे गु० सात कर्म उदरे ७-८-९ में गु० छे कर्म उदीरे आयु० वेदनी वजके । दशमें गु० ५-६ कर्म उदीरे [पांचवालामोह० वर्जे] इग्यारवें गु० पांच कर्म उदीरे । बारवे गु० पांच या दो उदीरे (दोवाला नाम० गोत्र०) और १३-१४ वे उदीरणा नहीं है ।

(७) सत्ता द्वार—प्रथमसे इग्यारवे गु० तक आठों कर्मोंकी सत्ता है । बारहवें गु सात कर्मकी सत्ता मोहनी वर्जके और १३-१४ गु चार अघाति कर्मकी सत्ता है ।

(८) निर्जरा द्वार—प्रथमसे दशवां गु० तक आठों कर्मोंकी निर्जरा तथा ११-१२ में गु० सात कर्मोंकी [मोहनी वजके] और १३-१४ गु० चार अघाति कर्मोंकी निर्जरा होती है ।

(९) आत्मा द्वार—आत्मा ८ प्रकारका है द्रव्यात्मा, कषाय० योग० उपयोग० ज्ञान० दर्शन० चारित्र और वीर्यात्मा । प्रथम और तीजे गु० छ आत्मा [ज्ञान चारित्र वर्जके] तथा २ ४ गु० ७ आत्मा [चारित्र वजके] तथा पांचवेंसे दशम गु० तक आठों आत्मा तथा ११-१२-१३ में आत्मा सात [कषाय वर्जके] और चौदमें गु० छे आत्मा [कषाय, योग० वर्जके]

(१०) कारण द्वार—कारण पांच-मिथ्यात्व, अव्रत, प्रमाद कषाय और योग । प्रथम और तीजे गु० पांचों कारण । २-४ गु० में चार मिथ्यात्व वजके । ५-६ गु० में तीन [अव्रत छोडके] ।

रक, तेजस और कार्मण। प्रथमसे पाच वे गु० तक शरीर ४ पावे आहारक नहीं तथा छठे सातवें गु० में शरीर पाच और शेष ७ गुण० शरीर तीन औदारिक, तेजस कार्मण।

(१८) सहनन द्वार—सहनन ६-वज्रऋषभनाराच सहनन, ऋषभ नाराच० नाराच०, अर्द्ध नाराच०, कीलिका० छेवट्ठ सहनन। प्रथमसे छट्ठे गु० तक छेओं सहनन शेष ८ गु० में एक वज्र ऋषभनाराच० सहनन होता है।

(१६) सस्थान द्वार—सस्थान छे हैं, समचतुस्रादि-चौदे ही गु० में छओं सस्थान पावे।

(२०) वेद द्वार—वद तीन, पहिलेसे नौव गु० तक तीनों वेद। शेप ६ गु० में अवेदी।

(२१) कषाय द्वार—कषाय २५ है, जिसमें १६ कषाय ९ नो कषाय हैं। पहिले दूसरे गु० में २५ कषाय। ३-४ गु० में २१ कषाय (अनतानुबधी चोक निकला) पाचवे गु में १७ (अप्रत्याख्यानी चौक निकला) ६-७-८ गु० में १३ (प्रत्याख्यानी चौक निकला) नौवं गु० में ७ कषाय (छे हास्यादि निकला) दशवें गु० में एक सज्वलका कषाय, शेप चार गु० अकषाई हैं।

(२२) सज्ञी द्वार—पहिले, दूसरे गु० में सज्ञी असज्ञी दोनों प्रकारके जीव होते हैं। १३-१४ गु० नो सज्ञी नो असज्ञी, शेप १० गु० सज्ञी हैं।

(२३) समुद्घात द्वार—समुद्घात सात-वेदनी कषाय, मरणति वैक्रिय तेजस आहारीक, केवली समुद्घात। १-२-४-५ गु० में पाच समु० क्रमश तीजे गु० में तीन (वेदनी, कषाय

वैक्रिय० छट्ठे गु० में छै समु० केवली वर्जके। तेरवे गु० एक केवली समु० शेष ७ गु० में समुद्घात नहीं।

गु	२४ गति	२५ जाति	२६ काय	२७ जीवभेद	२८ योग	२९ उपयोग	३० लेश्या	३१ दृष्टि
१	४	५	६	१४	१३	६	६	१
२	४	४	१	६	१३	६	६	१
३	४	१	१	१	१०	६	६	१
४	४	१	१	२	१३	६	६	१
५	२	१	१	१	१२	६	६	१
६	१	१	१	१	१४	७	६	१
७	१	१	१	१	११	७	३	१
८	१	१	१	१	९	७	१	१
९	१	१	१	१	९	७	१	१
१०	१	१	१	१	९	७	१	१
११	१	१	१	१	९	७	१	१
१२	१	१	१	१	९	७	१	१
१३	१	१	१	१	५-७	२	१	१
१४	१	१	१	१	०	२	०	१

(३२) ज्ञान द्वार—पहिले, तीसरे गु० में तीन अज्ञान। २-४-५ गु० में तीन ज्ञान छट्ठेसे बारहवे गु० तक चार ज्ञान और तरवे, चौदवें गु० एक केवल ज्ञान।

रक, तेजस और कार्मण। प्रथमसे पाच वे गु० तक शरीर ४ पाये आहारक नहीं तथा छठे सातवें गु० में शरीर पाच और शेष ७ गुण० शरीर तीन औदारिक, तेजस कार्मण।

(१८) सहनन द्वार—सहनन ६-वज्रऋषभनाराच सहनन, ऋषभ नाराच०, नाराच०, अर्द्ध नाराच , कीलिका० छेवट्ठ सहनन। प्रथमसे छट्ठे गु० तक छेओं सहनन शेष ८ गु० में एक वज्र ऋषभनाराच० सहनन होता है।

(१९) सस्थान द्वार—सस्थान छ हैं, समचतुस्रादि-चौदे ही गु० में छओं सस्थान पावे।

(२०) वेद द्वार—वेद तीन, पहिलेसे नौवे गु० तक तीनों वेद। शेष ६ गु० में अवेदी।

(२१) कषाय द्वार—कषाय २५ हैं, जिसमें १६ कषाय ९ नो कषाय हैं। पहिले दूसरे गु० में २५ कषाय। ३-४ गु० में २१ कषाय (अनतानुबधी चोक निकला) पाचवे गु में १७ (अप्रत्याख्यानी चौक निकला) ६-७-८ गु० में १३ (प्रत्या ख्यानी चौक निकला) नौव गु० में ७ कषाय (छे हास्यादि निकला) दशवें गु० में एक सज्वलका कपाय, शेष चार गु० अकषाई हैं।

(२२) सज्ञी द्वार—पहिले, दूसरे गु० में सज्ञी असज्ञी दोनों प्रकारके जीव होते है। १३-१४ गु० नो सज्ञी नो असज्ञी, शेष १० गु० सज्ञी हैं।

(२३) समुद्घात द्वार—समुद्घात सात-वेदनी कषाय, मरणांति वैक्रिय, तेजस आहारीक, केवली समुद्घात। १-२-४-५ गु० में पाच समु० क्रमश तीजे गु० में तीन (वेदनी, कषाय

वैक्रिय० छट्ठे गु० में छै समु० वेवली वर्जके। तेरवे गु० एक वेवली समु० शेष ७ गु० में समुद्घात नहीं।

गु	२४ गति	२५ जाति	२६ काय	२७ जीवभेद	२८ योग	२९ उपयोग	३० लेश्या	३१ दृष्टि
१	४	५	६	१४	१३	६	६	१
२	४	४	१	६	१३	६	६	१
३	४	१	१	१	१०	६	६	१
४	४	१	१	२	१३	६	६	१
५	२	१	१	१	१२	६	६	१
६	१	१	१	१	१४	७	६	१
७	१	१	१	१	११	७	३	१
८	१	१	१	१	९	७	१	१
९	१	१	१	१	९	७	१	१
१०	१	१	१	१	९	७	१	१
११	१	१	१	१	९	७	१	१
१२	१	१	१	१	९	७	१	१
१३	१	१	१	१	५-७	२	१	१
१४	१	१	१	१	०	२	०	१

(३२) ज्ञान द्वार—पहिले, तीसरे गु० में तीन अज्ञान। २-४-५ गु० में तीन ज्ञान छट्ठेसे बारहवे गु० तक चार ज्ञान और तेरवे, चौदवें गु० एक केवल ज्ञान।

(३३) दर्शन द्वार—प्रथमसे बारहव गु० तक तीन दर्शन तेरवें चौदवें एक केवल दर्शन ।

(३४) सम्यक्त्व द्वार—सम्यक्त्वके ५ भेद-क्षायक, क्षयापशम, उपशम, वेदक और सास्वादन । पहिले और तीसरे, गु० सम्यक्त्व नहीं, दूसरे गु० सास्वादन स० । चौथास सातवें गु० स० चार सास्वादन वजक । नौव गुणस्थान दशवें गु० इग्यारवें गु० दो स० (क्षा० उप) और १२-१३-१४ गु० एक क्षायक सम्यक्त्व है ।

(३५) चारित्रद्वार—चारित्रके ५ भेद सामायकादि—१-२-३-४ गु० में चारित्र नहीं (पाच वे गु० चारित्राचारित्र) छट्ठे सातमें गु० में तीन चारित्र (सामा छेदो० परि०) आठवे नौमें गु० दो चारित्र (सामा० छेदा०) दशमें गु० सुक्ष्मसम्पराय चारित्र, और ११-१२-१३-१४ में गु० में यथाख्यात चारित्र ।

(३६) नियट्ठाद्वार— नियट्ठाके छे भेद-पुलाक, बुकस पडिसेवन, कषाय कुशील, निग्रन्थ और स्नातक । प्रथमसे पाचवे गु तक नियट्ठा नहीं । छट्ठे, सातवे गु० नियट्ठा चार क्रमश । आठवें, नौवे गु नियट्ठा तीन (बु० प० क०) दशवें गु में कषाय कुशील । ११—१२ गु० में निग्रन्थ और १३—१४ गु० में स्नातक नि०

(३७) समौसरणद्वार—समौसरणके चार भेद-क्रियावादी, अक्रियावादी, अज्ञानवादी और विनयवादी । पहिले गु० में स० तीन (क्रिया वादी नही) तीजे गु० में दो अज्ञानवादी और विनयवादी । शेष बारों ही गु० में समोसरन १ क्रियावादी ।

(३८) ध्यानद्वार—ध्यानके चार भेद-आर्तध्यान, रौद्र

ध्यान, धर्म ध्यान, शुक्ल ध्यान। १-२-३ गु० में ध्यान दो आर्त० रौद्र० तथा ४-५ गु० तीन (आर्त० रौद्र० धर्म ध्यान) छट्ठे गु० आर्त० धर्म ध्यान। सातमें गु० में धर्म ध्यान और शेष गु० में केवल शुक्ल ध्यान है।

(३६) हेतुद्वार—हेतु ५७ है कषाय २५ योग १५ अवृत १२ (५ इन्द्री ६ काय १ मन) और मिथ्यात्व ५ पचवीस प्रकार से नं० ११ से १५) एव ५७ हेतु। पहिले गु० में पचावन (आहारक आहारीक मिश्र वर्जके)। दूजे गु० में पचास (पाच मिथ्यात्व वर्जके)। तीजे गु० ४३ हेतु (अनतानु बन्धी चौक और तीन योग[1] वर्जके) चौथे गु० ४६ हेतु (तीन योग[1] वधीया) पाचवे गु० ३९ हेतु (अप्रत्याख्यानी चौक, औदारिक मिश्र, कार्मण योग और त्रस जीवोंकी अवृत्त टली) छट्ठे गु० २६ हेतु—यहा आहारक मिश्र योग वधा और अवृत्त ११ प्रत्याख्यानी चौक घटा। सातमें गु० २४ हेतु—(वैक्रिय मिश्र, आहारक मिश्र वर्जके) आठवे गु० २२ हेतु (आहारक, वैक्रिय योग वर्जके) नौव गु० १६ हेतु (हास्य छय वर्जक) दशवे गु० नौ योग १ सञ्जल लोभ एव १० हेतु। ११-१२ गु० हेतु नौ (नौयोग) तेरवे गु० ५-७ हेतु (योग) चौदमें गु० अहेतु।

(४०) मार्गणाद्वार—एक गुणस्थानसे दूसरे गुणस्थान जाना उसको मार्गणा कहते हैं-पहिले गु० की मार्गणा ४ पहिले गु० वाले ३-४-५-७ गु० जावे। दूसरे गु० वाला मिथ्यात्व गु में आवे तीजे गु० वाला १ ४ गु० में जावे। चौथे गु० वाला १-२-३-५-७ गु० में जावे। पाचवें गु० वाला १-२-३-४-७ गु० में जावे। छठे गु० वाला १-२-३-४-५-७ गु० में जावे। सातमें गु० वाला ४-६-८ गु० जावे। आठमें गु० वाला ७-९-४ गु० में जावे।

[1] औदारिक मिश्र, वैक्रिय मिश्र और कामण।

नौमें गु० वाला ८-१०-४ गु में जावे। दशमें गु० वाला ९-११-१२-४ गु में जाय इग्यारमें गु० वाला ४-१० गु० में जावे बारमें गु० वाला तेरमें गु० जावे तेरन वाला चौदवे गु० जावे। और चौदवे गु० वाला मोक्ष जावे।

(४१) जीवयोनिद्वार-योनी ८४ लक्ष है। पहिले गु० में ८४ लक्ष, दूसरे गु० में ३२ लक्ष, तीजे गु० में २६ लक्ष, चौथे गु० में २६ लक्ष, पाचमें गु० में १८ लक्ष, छट्ठे गु० में १४ लक्ष, सातमें गु० से यावत् चौदमें गु० तक १४ लक्ष।

(४०) दंडकद्वार-पहिले गु० में २४ दंडक दूजेमें १९ दंडक (पाच स्थावर वर्जके) तीजे गु० में १६ दंडक (तीनविकले न्द्रिय वर्जके) एवं चौथे गु० में १६ द० पाचमें गु० में दो द० और छठेसे चौदमें गु० तक एक दंडक।

(४३) नियमा भजनाद्वार १-४-५-६-७-१३ गु० में नि यमा जीव मिले शेष आठ गु० में भजना।

(४४) द्रव्य परिमाण द्वार—वर्तमानापक्षा पहले गुण स्थानसे चौदहवा गुणस्थान तक जघन्य एकक जीव मीले और उत्कृष्ट पहले गु० असंख्याते जीव यह पल्योपम के असंख्यातमे भागके समय जीतना यहा गुणस्थान स्वीकारापेक्षा है एवं पाचवे गु तक छट्ठे सातवे प्रत्येक हजार आठवे नौवे दशवे गु० तक एकसो बासठ इग्यारवे चौपन बारहवे तेरहवे चौदहवे गु० एकसो आठ जीव मीले। पूर्व प्रतिपन्नापक्षा प्रथम गु० जघन्य और उत्कृष्ट अनन्ते जीव मीले। दूसरे तीसरे गु० ज० एक जीव उ० पल्योपमके असंख्यात समय जीतने जीव मीले। चौथे गु० ज पल्यो० अस० भाग० उत्कृष्ट जघन्यसे असंख्यात गुणे एवं पचवे गु० छट्ट सातवे गु ज प्रत्येक हजार क्रोड उ० प्र० हजार क्रोड। आठवे से

बारहवे गु० तक ज० संख्याते सैकडों उ० म० सैकडो । तेरहवे ज० गु० प्रत्येक क्रोड । चौदहवे गु० ज० उ० प्रत्येक सो जीव मीले। इति द्वारम् ।

(४५) क्षेत्र प्रमाण द्वार—एक जीवापेक्षा पहले से चोथे गुणस्थान तक ज० अगुलके असख्यातमे भाग उ० हजार योजन साधिक क्षेत्रमे होवे। पाचवे गु० ज० प्रत्येक हाथ उ० हजार योजन। छटे गु० से बारहवे गु० ज० प्रत्येक हाथ उ० पांचसो धनुष्य, तेरहवे गु० ज प्र० हाथ उ० सर्व लोकमें चौदहवे गु० ज०प्र० हाथ उ० पाचसो धनुष्य। बहुत जीवोंकि अपेक्षा पहले गु० ज० उ० सर्व लोकमें, दूसरे गु० से बारहवे गु० तक ज० लोक० असख्यातमें भाग उ० लोकके असख्यातमे भाग तेरहवे ज० लोक० अस० भाग० उ० सर्व लोकमें। चौदहवे गु० ज० लोक० अस० भाग उ० लोकके असख्यातमे भाग इति ।

(४६) निरान्तर द्वार—जघन्यापेक्षा पहले गु० सर्वदा यानि सर्व कालमें पहले गुणस्थानमें जीव निरान्तर आया करते है दूसरे से चौदवे गुणस्थान तक दो समय तक निरान्तर आय। उत्कृष्टापेक्षा-पहले गु० सर्व काल तक निरान्तर आवे दूसरे तीसरे चोथे गु० पल्योपमके असख्यात भागके काल जीतनी वखत आये। पाचवे गु० आवलिकाके अस० भाग० छटे सातवे गु० आठ समय तक निरान्तर आवे। आठवे से इग्यारवे गु० तक सख्यात समय तक, बारहवा आठ समय तक, तेरहवा सर्वदा चौदहवा आठ समय तक जीवों को निरान्तर आया करता है इति ।

(४७) स्थितिद्वार—जघन्य स्थिति अपेक्षा पहले तीसरे गु० अन्तर महुर्त दूसरे से इग्यारवे तक एक समय बार हवे तेरहवे चौदहवे कि अन्तर महुर्त कि जघन्य स्थिति है

उत्कृष्टापेक्षा पहले गु० अभव्यापेक्षा, अनादि अन्त, भव्यापेक्षा अनादि सान्त प्रतिपाति यानि सम्कत्वसे पड़ा हुवा कि देशोना आधा पुद्गल, दूसरे गु० छे अवलिका तीसरे गु अन्तर महुर्त चौथा गु० छासट सागरोपम साधिक पाचवे छटे गु० देशोन कोड पूर्व सातवा से बारहवा तक अन्तर महुर्त तेरहवे गु० देशोना कोड पूर्व चौदहवे गु० पच ह्रस्वाक्षर उचारण जीतनो अन्तर महुत कि स्थिति इति।

(४८) अन्तर द्वार—एक जीवापेक्षा पहले गु० ज० अन्तर महुर्त उ० छासट सागरोपम साधिक, दूसरे गु० जघन्य पल्योपमके असख्यातमे भाग, तीसरे गु० से इग्यारवे गु० तक अन्तर महुत उ० दूसरे से इग्यारवे तक देशोना अर्द्ध पुद्गल काल बारहवे तेरहवे चौदहव गु० अन्तर नहीं है। घणा जीवोंकि अपेक्षा-पहले गु० अन्तर नही दूसरे से इग्यारवे गुणस्थानमे ज० एक समय उत्कृष्ट दूसरे गु० आवलिकाके अस० भाग तीसरे गु० पल्योपम के असख्यातमे भाग, चौथे गु० सात दिन, पाचवे गु० चौदह दिन, छट गु० पन्नरादिन सातवे आठवे नौवे गु० छ मास दशवे गु प्रत्येक वर्ष इग्यारव छे मास बारहवे तरहव चौदवे अन्तर नहीं है इति।

(४९) आगरीस द्वार—एक जीवापेक्षा जघन्य आवे तो पहले से चौदहवा गु० एकवार आवे उत्कृष्ट आवे तो पहलो गु० प्रत्येक हजार वार दूसरो गु० दो वार तीजो चौथो प्रत्येक हजार वार पाचवो छट्ठो सातवों गु० प्रत्येक सो वार आवे आठवो नौवो दशवो चार वार आवे। इग्यारवो गु० दो वार आवे, बारहवा तरहवा चौदवा गु० एक वार आवे। बहुत जीवों कि अपेक्षा-पहलेसे इग्यारवे तक ज० दो वार आवे बार हवा तेरहवा चौदहवा एक वार आवे। उत्कृष्ट पहला गु० अस-

ख्यात वार आवे दूसरा पाच वार आवे तीजा चोथा गु० असं० वार आवे, पाचवा छट्ठा सातवा, प्रत्येक हजार वार आवे आठवा नौवा दशवा गु० नौ वार आवे इग्यारवा गु० पाच वार आवे बारहवा तेरहवा चौदहवा एक वार आवे इति।

(५०) अवगाहनाद्वार—जघन्यापेक्षा, पहले से चोथे गु० तक अंगुलके असख्यातमे भाग पाचवे से चौदह गु० तक प्रत्येक हाथकि। उत्कृष्टापेक्षा पहले से चोथे गु० एकहजार योजन साधिक पांचवे गु० से चौदहवे गु० तक पाचसो धनुष्यकि अव गाहना है इति।

(५१) स्पर्शनाद्वार--एक जीवापेक्षा पहले गु० ज० अगु लके अस० भाग उ० चौदहराज दूसरे गु० ज अंगुलके अस० भाग उ० छेराज उंचा तीसरा गु० ज० अंगु० छेराज उचा चोथा गु० ज० अं०गु उ० निचा ८ राजा उचा पाचराज। पाचवेसे चौदहवे गु० तक ज० प्रत्येक हाथ उ पाचवे गु निचो उचो पाचराज छठे गु० से इग्यारवे गु तक निचो चारराज उंचो सातराज बारहवे चौदहवे पाचसो धनुष्य तेरहवे गु० सर्व लोकको स्पर्श करे। घणा जीवों कि अपेक्षा पहला गुणस्थान ज० उ० सर्व लोक स्पर्श करे, दूसरे गु० ज० अंगुलके असख्यातमे भाग उ० दशराज, ती सरे गु० ज० अं० उ० सातराज चोथे गु० ज० लोकके असं० भाग उ० आठराज पाचवे गु० से चौदहवे गु० ज० लोकके अस० भाग० उ० इग्यारवे गु० तक सातराज वारहवा लोक के अस० भाग तेरहवा सर्वलोक स्पर्श चौदहवा गु० लोकके असख्यातवे भाग का क्षेत्र स्पर्श करे इति।

(५२) अल्पाबहुत्व द्वार—

(१) सबसे स्तोक इग्यारवें गु० उपशम श्रेणीवाले ५४ है

(२) बारहवे गु० वाले स० गुण (१०८) क्षपक श्रेणि
(३) ८-९-१० गु० वाल परस्पर तुल्य विशेषा प्र० सो
(४) तेरहवे गु० वाले स० गु० प्रत्येक क्रोड जीवों।
(५) सातवे गु० वाले स० गु० प्रत्येक सो क्रोड।
(६) छट्ठे गु० वाले स० गु प्रत्येक हजार क्रोड।
(७) पाचवें गु० वाले अस० गु० तीर्यंचापेक्षा
(८) दूजे गु० वाले अस० गु (विकलेन्द्री अपेक्षा)
(९) तीजे गु० स्थान वाले अस० गु० (चारगती अपेक्षा)
(१०) चौथे गु० वाले अस० गु (सम्यक्त्व दृष्टी अपेक्षा)
(११) चौदवें गु० वाले अन० गु (सिद्धापेक्षा)
(१२) पहिले गु वाले अन० गु० (एकेन्द्रीय अपेक्षा)

सेव भते सेव भते तमेव सचम् ।

थोकडा न० १०६

श्री पन्नवणा सूत्र पद १८

(काय स्थिती)

स्थिति दो प्रकारकी होती है भव स्थिति और काय स्थिति। याने एक ही भवमें जितना काल रहे उसको भव स्थिति कहते है। जैसे पृथ्वीकायमें ज० अन्तर मुहूर्त उ० २२००० हजार वर्ष तक रहे। काय स्थिति-जिस कायमें जन्मम रण करे परन्तु दूसरी कायमें जब तक उत्पन्न न हो उसको काय स्थिति कहते है। जैसे पृथ्वीकायसे मरके फिर पृथ्वीकायमें

उत्पन्न हो इसी तरह एक ही कायमें वारवार जन्ममरण करे। तो असंख्याते काल तक रह सके उसे काय स्थिति कहते हैं ।

सूचना

१ पुढवीकाल-द्रव्य से असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काल, क्षेत्र से असंख्याते लोक ॥ काल से असंख्या काल और भाव से अंगुलके अस० भागमें जितने आकाश प्रदेश हो उतने लोक।

२ असंख्याते काल-द्रव्य से क्षेत्र से काल से तो पूर्ववत् और भाव से आवलीकाके अस भागमें जितना समय हो उतना लोक।

३ अर्द्ध पुद्गल परावर्तन-जैसे द्रव्य से अनन्ती उत्स० अवस० क्षेत्र से अनन्ता लोक, कालसे अनंतोकाल भाव से अर्द्ध पुद्गल परावर्तन

४ वनस्पति काल-द्रव्य से अनंती सर्पिणि उत्सर्पिणि क्षेत्र से अनंतेलोक, कालसे अनंतोकाल भावसे असंख्याता पुद्गल परावर्तन ।

५ अ० अ०—अनादि अनन्त। ७ अ० सा०—अनादिसान्त ।

६ सा० अ०—सादि अनन्त । ८ सा० सा०—सादिसान्त ।

गाथा--जीवं गेइंदियं काएं जोए वेद कसायं लेसायं ।
सम्मत्तणाण दसणं सजमें उवओगें आहारे ॥ १४ ॥
भासगय परित्तं पज्जत्तं सुहूम सन्नी भवऽत्थि चरिमेयं ।
एतेसित पदाण कायठिई होइ णायव्वा ॥ २ ॥

मार्गणा	जघन्य कायस्थिति	उत्कृष्ट कायस्थिति०
१ समुचय जीवोंकि	सास्वता	सास्वता
२ नारकीकि काय०	१०००० वर्ष	३३ सागरोपम
३ देवताकि काय	,,	,,
४ देवी ,,	,,	५५ पल्योपम
५ तिर्यंच ,	अन्तर मुहूर्त	अनंतकाल (वना०)
६ तिर्यचणी ,,	,,	तीन प प्रत्येक कोड पूर्व
७ मनुष्य ,	,,	,, , ,,
८ मनुष्यणी ,,	,,	, ,, ,,
९ सिद्ध भगवान	सास्वता	सास्वता
१० अपर्याप्ता नारकी	अन्तर मुहूर्त	अन्तर मुहूर्त
११ ,, देवता	,,	,
१२ , देवी	,,	,,
१३ , तीर्यंच	,,	,,
१४ , तीयचणी	,,	,
१५ ,, मनुष्य	,,	,
१६ , मनुष्यणी	,,	,,
१७ पर्याप्ता नारकी	१०००० वर्ष अन्तर मुहूर्तउणा	३३ सागर अन्तरमुहूर्त कुच्छ कम
१८ ,, देवता	,,	भव स्थि अ मु उणा
१९ , देवी	,,	५५ पल्योपम ,,
२ , तीर्यंच	अन्तर मुहूर्त	३ पल्य अ मु उणा

२१ पर्याप्ता तीर्यंचणी	अन्तर मुहूर्त	३ पल्य अ मु उणा
२८ ,, मनुष्य	,	,, ,,
२३ , मनुष्यणी	,,	,, ,,
२४ सइन्द्रिय	०	अनादि अन अना सा०
२५ एकेन्द्रिय	अन्तर मुहूर्त	अनतकाल (वना०)
२६ बेरिन्द्रिय	,,	संख्याते वर्ष
२७ तेरेन्द्रिय	,,	,,
२८ चौरिन्द्रिय	,,	,,
२९ पचेन्द्रिय	,,	१००० सागर० साधिक
३० अनेन्द्रिय	०	सादी अनन्त
३१ सकायी	०	अन० अन्त० अ० सा०
३२ पृथ्वीकाय	अन्तर मुहूर्त	असख्याते काल
३३ अप्पकाय	,,	,,
४ तेउकाय	,,	,,
३५ वायुकाय	,,	,,
३६ वनस्पतिकाय	,,	अनतकाल (वन०)
३७ त्रसकाय		२००० सागर स० वर्ष
३८ अकाय	सादि अणंत	सादी अनन्त
४५-३१ से ३७न अप	अन्तर मु०	अन्तर मुहूर्त
५०-३२ से ३६ न प०	,,	सख्याता वर्ष
५१ सकाय पर्याप्ता	,,	प्रत्येक सौ सागर
५२ त्रस पर्याप्ता	,,	,,
५३ समुचय बादर	,,	अस काल अस जितने लोकाकाश प्रदेश हो
६० बादर वनस्पति	,,	

५५ समुच्चय निगोद	,,	अनन्तकाल
५६ बादर त्रसकाय	,,	२००० साग० झ
६२ बादर पृ अप्प ते वा प्रत्येक व वा नि	,	७ कोडा कोडी
६९ समुच्चय सूक्ष्म पृ अ ते वा व नि	,,	असख्याते काल
८६-९३ से ६९ न तक के अपर्याप्ता	,,	अन्तरमुहूर्त
९३ समुच्चय सूक्ष्म पृ अ ते वा व और निगोद पर्याप्ता	,,	,
९९ बादर पृ अ वा प्रत्येक वा व पर्याप्ता	,,	स हजारों व
१ बादर तेउ पर्याप्ता	,,	सख्याता अहोर
१०१ समुच्चय बादर प		प्रत्येक सौ साग म
१ ३ समुच्चय निगोद बादर निगोद पर्या	,	अन्तरमुहूर्त
१०४ सयोगी		अनादि अनन्त अन
१०५ मनयोगी	१ समय	अन्तरमुहूर्त
१०६ वचनयोगी	,,	,,
१०७ काययोगी	अन्तर मुहूर्त	अनन्तकाल(व
१०८ अयोगी	०	सादि अनन्त

१०९ सवेदी	०	अ० अ अ सा, सा० सा
११ स्त्रीवेद	१ समय	११० पल्यों पृ को पृ सा.
१११ पुरुषवेद	अन्तरमुहूर्त	प्रत्येक सो सागरो०
११२ नपुसकवेद	१ समय	अनन्त काल (वन)
११३ अवेदी	सादी अनन्त	सा सा ज १ स उ अ मु
११४ सकषाई	अ अ अ सा	
,, सादिसान्त	सा सा	देशोन अर्द्ध पुद्गल
११५ क्रोध	अन्तरमुहूर्त	अ तरमुहूत
११६ मान	,	,
११७ माया	,,	,,
११८ लोभ	१ समय	,,
११९ अकषाई	सा अ सा सा	ज १ समय उ० अ मु
१२० सलेशी		अना० अ, अ० सा
१२१ कृष्णलेशी	अन्तरमुहूत	३३ सागर अ मु अधिक
१२२ नीललेशी	,,	१० ,, पल्य अस भा अ
१२३ कापोतलेशी	,,	३ ,, ,,
१२४ तेजोलेशी	,,	२ ,, ,,
१२५ पद्मलेशी	,	१० ,, अन्तरमु अधिक
१२६ शुक्ललेशी	,,	३३ ,, ,,
१२७ अलेशी		सादि अनन्त
१२८ सम्यक्त्वदृष्टि	अन्तरमुहूर्त	सा अ,सा सा,६६सा सा
१२९ मिथ्यादृष्टि	अ अ अ सा	सा सा
,, सादि सान्त	अन्तर मुहूर्त	अनन्तकाल (अर्द्ध पुद्गल)
१३० मिश्रदृष्टी	,,	अन्तर मुहूर्त

१३१ क्षायक सम्य॰		सादि अनन्त
१३२ क्षयोपशम	अन्तर मुहूत	६६ सागर साधिक
१३३ सास्वादन	१ समय	६ आवली
१३४ उपशम	१ समय	अन्तर मुहूत
१३५ वेदक	,,	,,
१३६ सनाणी	अन्तर मुहूर्त	सा अ, सा सा, ६६ सागर
१३७ मतिज्ञानी	,,	६६ सागर साधिक
१३८ श्रुतज्ञानी	,,	,
१३९ अवधिज्ञानी	१ समय	,,
१४० मन पर्यवज्ञानी	,	देशोण पूर्व क्रोड
१४१ केवलज्ञानी	०	सादि अनन्त
१४२ अज्ञानी	अ॰ अ अना॰	सा, सा॰ सा, जिसमें
१४३ मति अज्ञानी	सा सा कीस्थि	ति जघन्य अ तर
१४४ श्रुत अज्ञानी	मुहूर्तउ॰ अन	न्तकालकी (अर्द्ध पुद्गल)
१४५ विभगज्ञानी	१ समय	३३ सागर पू॰ सा॰
१४६ चक्षु दर्शन	अ तर मुहूत	प्रत्येक हजार सागरो॰
१४७ अचक्षु दर्शन		अ अ अ सान्त
१४८ अवधि दर्शन	१ समय	१३२ सागरो साधिक॰
१४९ केवल दर्शन		सा अनन्त
१५ सयती	१ समय	देशोण पूर्व क्रोडी
१५१ असयती	अन्तर मुहूर्त	अ॰ अ॰ अ सा॰ सा॰ सा
, सा॰ सा॰	,,	अन तकाल (अर्द्ध पु॰)
१५२ सयतासयत	,,	देशोण पूर्व क्रोड
१५३ नोस॰ नोअ॰		सादि अनन्त

१५४ समायक चा०	१ समय	देशोण पूर्व क्रोड
१५५ छेदोपस्थापनीय	अन्तर मुहूर्त	,,
१५६ परिहार वि०	,, १८ मास	,,
१५७ सुक्ष्म सपराय०	१ समय	अन्तर मुहूर्त
१५८ यथाख्यात०	,,	देशोण पूर्व क्रोड
१५९ साकार उपयोग	अन्तर मुहूर्त	अन्तर मुहूर्त
१६० अनाकार उप०	,,	,,
१६१ आहारक छद्मस्थ	क्षुलक भवदो०स	मय न्यून असं० काल×
१६२ आहारक केवली	अन्तर मुहूर्त	देशोण पूर्व क्रोड
१६३ अणाहारी छद्म०	१ समय	दो समय
१६४ ,,केवली सयोगी	३ समय	३ समय
१६५ ,,केवली अयोगी	पाच ह्रस्व अक्ष	र उचार्ण काल
१६६ सिद्ध		सादि अनन्त
१६७ भाषक	१ समय	अन्तर मुहूर्त
१६८ अभाषक सिद्ध		सादि अनन्त
१६९ अभाषक ससारी	अन्तर मुहूर्त	अनन्त काल
१७० कायपरत	,,	असं काल (पृथ्वीकाल)
१७१ ससार परत	,,	अर्द्ध पुद्गल परावर्त
१७२ काय अपरत	,,	अनन्तकाल (वन्ना काल)
१७३ ससार अपरत		अ० अ० अ०, सा०
१७४ नोपरतापरत		सादि अनन्त
१७५ पर्याप्ता	अन्तर मुहूर्त	पृथक्त्व सो सागरो साधिक
१७६ अपर्याप्ता	,,	अन्तर मुहूर्त

× विग्रह न करे।

१७७ नोपर्याप्ताऽपर्याप्ता		सादि अनन्त
१७८ सुक्ष्म	अन्तरमुहूर्त	अस काल (पुढवीकाल)
१७९ बादर	,,	अस काल (लोकाकाश)
१८० नो सुक्ष्म नो बादर		सादि अनन्त
१८१ सज्ञी	अन्तरमुहूर्त	पृथक्त्व सो सागर साधिक
१८२ असज्ञी	,	अन तकाल (वन)
१८३ नो सज्ञी असज्ञी		सादि अनन्त
१८४ भव सिद्धि		अनादि सान्त
१८५ अभव सिद्धि		अनादि अनन्त
१८६ नोभवसिद्धि अ मि		सादि अनन्त
१८७ धर्मास्तिकाय		अनादि अनन्त
१८८ अधर्मास्तिकाय		,
१८९ आकाशास्तिकाय		,,
१९० जीवास्तिकाय		,,
१९१ पुद्गलास्तिकाय		,
१९२ चम		अनादि सान्त
१९३ अचर्म		अ अ०, सा० अ०

सेवभते सेवभते तमेव सचम् ।

—»※◎※«—

थोकडा नं० १०७

श्री पन्नवणा सूत्र पद ३

(अल्पाबहुत्व)

जीव ५ गति ५ इन्द्रिय ७ काय ८ योग ५ वेद ५ कषाय ६ लेश्या ८ सम्यक्त्व ३ नाण ८ दर्शन ४ संयम ७ उपयोग २ आहार २ भाषक २ परत ३ पर्याप्ता ३ सुक्ष्म ३ सन्नी ३ भव्य ३ अस्तिकाय ५ चर्म २ इन २२ द्वारोंका अलग २ अल्पाबहुत्व तथा जीवोंके १४ भेद, गुणस्थानक १४ योग १५ उपयोग १२ लेश्या ५ एव ६२ बोल उतारे जायेंगे।

मार्गणा	जी० गु० यो० उ० ले०	अल्पाबहुत्व
१ समुच्चय जीवोंमें	१४-१४-१५-१२-६	वि० ९
२ नारकीमें	३—४-११—९-३	असं० गु० ३
३ तीर्यचमें	१४—५-१३—९-६	अनं० गु० ८
४ तीर्यचणीमें	२—५-१३—९-६	असं० गु० ४
५ मनुष्यमें	३-१४-१५-१२-६	असं० गु० २
६ मनुष्यणीमें	२-१४-१३-१२-६	स्तोक १
७ देवतामें	३—४-११—९-६	असं० गु० ५
८ देवीमें	२—४-११—९-४	सं० गु० ६
९ सिद्धमें	०—०—०—२-०	अनं० गु० ७

१ देवगती	३—४-११—९-६	असं० गु० ३
२ मनुष्यगती	३-१४-१५-१२-६	स्तोक १
३ तीर्यंचगती	१४—५-१३—९-६	अन० गु० ५
४ नरकगती	३—४-११—९-३	अस० गु० २
५ सिद्धगती	०—०—०—२-०	अन० गु० ४
१ सइन्द्रिय	१४-१२-१५-१०-६	वि० ७
२ एकन्द्रिय	४—१—५—३-४	अनं० गु० ६
३ बेइन्द्रिय	२—२—४—५-३	वि० ४
४ तेइन्द्रिय	२—२—४—५-३	वि ३
५ चौरिन्द्रिय	२—२—४—६-३	वि० २
६ पचेन्द्रिय	४-१२-१५-१०-६	स्तोक १
७ अनेन्द्रिय	१-२-४-२-१	अन० गु ५
१ सकायी	१४-१४-१५-१२ ६	वि० ८
२ पृथ्वीकाय	४—१—३—३-४	वि० ३
३ अप्पकाय	४—१—३—३-४	वि० ४
४ तेउकाय	४—१ — ३—३-३	अस० गु० २
५ वाउकाय	४—१—५—५-३	वि ५
६ वनस्पतिकाय	४—१—३—३-४	अन० गु० ७
७ त्रसकाय	१०-१४-१५-१२-६	स्तोक १
८ अकाय	०—०—०—२-०	अन० गु० ६
१ सयोगी	१४-१३-१५-१२-६	वि ५
२ मनयोगी	१-१३-१४-१२-६	स्तोक १
३ वचनयोगी	५-१३-१४-१२-६	असं० गु० २

४ काययागी	१४-१३-१५-१२-६	अनं० गु० ४
५ अयोगी	१—१—०—२-०	अन० गु० ३
१ सवेदी	१४—९-१५-१०-६	वि० ५
२ स्त्रीवेदी	२—९-१३-१०-६	सं० गु० २
३ पुरुषवेदी	२—९-१५-१०-६	स्तोक १
४ नपुसकवेदी	१४—९-१५-१०-६	अन० गु० ४
५ अवदी	१—५-११- ९-१	अन० गु० ३
१ सकषायी	१४-१०-१५-१० ६	वि० ६
२ क्रोध०	१४—९-१५-१०-६	वि० ३
३ मान	१४—९-१५-१०-६	अन० गु० २
४ माया०	१४—९-१५-१०-६	वि ४
५ लोभ०	१४-१०-१५-१०-६	वि० ५
६ अकषायी	१—४—११—९-१	स्तोक १
१ सलेशी	१४-१३-१५-१२-६	वि० ८
२ कृष्णलेशा	१४—६-१५-१०-१	वि० ६
३ नील०	१४—६—१५-१० १	वि० ७
४ कापोत०	१४ - ६-१५-१०-१	अन० ५
५ तेजो०	३- ७-१५-१०-१	सं० गु० ३
६ पद्म०	२- ७-१५-१०-१	सं० गु० २
७ शुक्ल	२-१३-१५-१२-१	स्तोक १
८ अलेशी०	१—१—०—२-०	अन० गु० ४
१ सम्यगदृष्टी	६-१२-१०—९-६	अनं० गु० २
२ मिथ्यादृष्टी	१४—१-१३—६-६	अन० गु० ३

३ मिश्रदृष्टी	१—१-१०—६-६	स्तोक १
१ सास्वादन	६—१-१३—६-६	स्तोक १
२ क्षयोपशम	२—४-१५—७ ६	अम० गु० ४
३ वेदक	२—४-१५—७-६	म० गु० ३
४ उपशम	२—८-१५—७-६	म गु० २
५ क्षायक	२-११-१५—९-६	अन० गु० ५
१ सनाणी	६-१२-१५—९-६	वि ५
२ मतिश्रुति ज्ञानी	६-१०-१५—७-६	वि० ३
३ अवधि०	२-१०-१५—७ ६	अम० गु ४
४ मन पर्यव०	१—७-१४—७-३	स्तोक १
५ केवलनाणी	१—२—१५-२-१	अन० गु० ४
१ मतिश्रुति अनाणी	१४—२-१३—६-६	अन० गु० २
२ विभंगनाणी	२—२-१३—६-६	स्तोक १
१ चक्षुदर्शन	३।६-१२-१८-१०-६	अस० गु० २
२ अचक्षुदर्शन	१४-१२-१५-१०-६	अन० गु ४
३ अवधिदर्शन	२-१२-१५-१०-६	स्तोक १
४ केवलदर्शन	१— २—७—२-१	अन० गु ०३
१ मयती संयम	१—९-१५—९-६	वि० ६
२ सामायक „	१—४-१५—७-६	स० गु० ५
३ छेदोपस्थापनीय „	१—४-१५—७-६	स० गु० ४
४ परिहार विशुद्धि „	१—२—९—७-३	से० गु २
५ सुक्ष्म संपराय „	१—१—९—७-१	स्तोक १

६ यथाख्यात	१—४-११—९-१	स० गु० ३
७ संयमासंयम	१—१-१२—६-६	असं० गु० ७
८ असंयम	१४—४-१३—९-६	अनं० गु० ८
१ साकारउपयोग	१४-१४-१५-१२-६	सं० गु० २
२ अनाकारउपयोग	१४-१३-१५-१२-६	स्तोक १
१ आहारिक	१४-१३-१८-१२-६	असं० गु० २
२ अणाहारिक	८—५—१—१०-६	स्तोक १
१ भाषक	५-१३-१४-१२-६	स्तोक १
२ अभाषक	१०—५—५-१०-६	अन० गु० २
१ परत	१४-१४-१५-१२-६	स्तोक १
२ अपरत	१४—१-१३—६-६	अन० गु० ३
३ नापरतापरत	०—०— —२—०	अन० गु० २
१ पर्याप्ता	७-१४-१४-१२-६	स० गु० ३
२ अपर्याप्ता	७-३-५-६-६	अन० गु० २
३ नोपर्याप्ताअपर्याप्ता	०—०—०—२-०	स्तोक १
१ सूक्ष्म	२—१—३—३-३	असं० गु० ३
२ बादर	१२-१४-१५-१०-६	अन० गु० २
३ नोसूक्ष्मनोबादर	०— —०—२-०	स्तोक १
१ सन्नी	२-१२-१५-१०-६	स्तोक १
२ असन्नी	१२—२—६—६-४	अन० गु० ३
३ नोसंज्ञीनोअसन्नी	१—२-५।७—२-१	अन० गु० २

१ भव्य	१४-१४-१५-१२-६	अन० गु० ३
२ अभव्य	१४—१-१३—६-६	स्तोक १
३ नोभव्याभव्य	०—०—०—२-०	अन० गु० २
१ चरम	१४-१४-१५-१२-६	अन० गु० २
२ अचरम	१४—१-१३—८-६	स्तोक १

पंच अस्तिकायकी अल्पाबहुत्व शीघ्रबोध भाग ८ वां में देखो।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सचम्।

थोकडा न० १०८।

श्री पन्नवणा सूत्र पद २०

(क्रियाधिकार)

हे भगवान ! जीव अन्त क्रिया करे ? गौतम ! कोइ करे कोई न करे ! एवं नरकादि यावत् २४ दंडक और एक समुच्चय जीव एवं २५ एक जीवाश्रीय और इसी तरह २५ दंडक घणा जीवा श्रीय कुल ५० सूत्र हुवे।

नारकी नारकीपने अन्त क्रिया करे ? गौ० नहीं करे एवं मनुष्य वर्जके शेष २३ दंडक भी कह देना। मनुष्यमें कोई अन्त क्रिया करे कोई न करे। असुर कुमार असुर कुमारपने अन्त क्रिया करे ? गौ० नहीं करे एवं मनुष्य वर्ज्य २३ दंडक कहना और मनुष्यमें अन्त क्रिया कोई करे कोई न करे इसी तरह २४ दंडक चौवीस दंडक पने लगा लेना। चौवीसको २४ गुणा करनेसे ५७६ सूत्र !

नारकीसे निकल कर अनन्तर अन्त क्रिया करे या परपर अन्त क्रिया करे ? गौ० अनन्तर और परम्पर अन्त क्रिया करे। एव रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, बालूकाप्रभा, और पंकप्रभा समझ लेना शेष धूमप्रभा, तम प्रभा, और तमस्तम प्रभा, अनन्तर अन्त क्रिया न करे किन्तु परम्पर अन्त क्रिया कर सके।

असुरादि दशों देवता परपर अनतर दोनों अन्त करे। एव पृथ्वी, पाणी वनस्पति भी समझ लेना और तेउ वाउ, तीन विकलेंद्रि अनतर नहीं किन्तु परपर अन्त क्रिया कर सके।

तिर्यंच पचेन्द्रि मनुष्य, व्यन्तर, ज्योतिषी और वैमानिक अन० पर० दोनों करे। अगर जो नारकी अन्त क्रिया करे तो एक समय कितना करे इसका अधिकार सिद्धपणा द्वारमें मवि स्तार लिखा है। देखो थोकडा नम्बर १२०।

नारकी मरके नारकीमें उपजे ? गौ० नहीं उपजे एव २२ दडक नारकी में नहीं उपजे। तीर्यच पचेन्द्रिमें कोई उपजे कोई नहीं उपजे। जो उपजे उसको केवली प्ररुपित धर्म सुननेको मिले? कोईको मिले कोईको न मिले। जिसको मिले वह समजे? कोई समजे कोई नहीं समजे। जो समझे उसका मतिश्रुति ज्ञान मिले ? हा नियमा मिले। जिसको मतिश्रुति ज्ञान मिले वह व्रत नियम उपवास पौसह पचक्खाणादि करे? कोई करे कोई न करे। जो व्रतादि करे उसका अवधिज्ञान होवे ? किसीको अवधिज्ञान उपजे किसीको नहीं उपजे। जिसका अवधिज्ञान उपजे वह दिक्षाले ? नहीं लेवे।

नारकी मनुष्य पने उपजे उसको व्याख्या अवधिज्ञान तक तीर्थंकवत् करनी। आगे जिसको अवधिज्ञान हो वह दिक्षा ले ? कोई ले और कोई न भी ले। जो दीक्षा ले उसको मन

र्यव ज्ञान उपजे ? किसीको उपजे किसीको नही उपजे। जिसको मन पर्यव ज्ञान उपजे उसको केवल ज्ञान उपजे ? किसीको उपजे कीसीको नहीं भी उपजे। जिसको उपजे वह अन्त क्रिया करे ? हा केवल ज्ञानवाला नियमा अन्त किया करे।

दश भुवनपतिकी भी व्याख्या इसी तरह करनी, परन्तु इतना विशेष कि भुवनपति पृथ्वी, पाणी वनस्पतिमें उपजे। परन्तु उस जगह केवली प्ररुपीत धर्म सुननेको ना मिले शेष वाल नारकीवत्।

पृथ्वी पानी वनस्पति मरके पाच स्थावर तीन विकले न्द्रीमें कोई उपजे काइ नहीं उपजे। जो उपजे उसको केवली प्ररु पित धर्म सुननेको न मिले श्रोत्रेन्द्रियका अभाव है। तियच पचे न्द्रिय और मनुष्यमें उपजे उनकी व्याख्या नारकीवत्। तेउ वाउ मरके पाच स्थावर तीन विकलेन्द्रीमें उपजे उसकी व्याख्या पृथ्वीकाय वत् करनी। और जो तिर्यंच पचेन्द्रीमें उपजे उसको केवली प्ररुपित धर्म किसीको मिले और किसीको नहीं मिले। जिसीको मिल भी जाय तो वह श्रद्धे नहीं और शेष मनुष्य, नारकी देवताके दडकमें तेउ वाउ नहीं उपजे।

वेन्द्रिय तेरिन्द्रिय चौरिन्द्रियकी व्याख्या पृथ्वीकायवत् करनी परन्तु इतना विशेष है कि मनुष्यमें मन पर्यव ज्ञान उपा र्जन करे। (केवलज्ञान नहीं)

तीर्यंच पचेन्द्रीकी व्याख्या पृथ्वीकायवत्। परन्तु इतना विशेष कि तीर्यंच पचेन्द्री नारकीमें भी काइ उपजे। कोइ नहीं उपजे। जो उपजे उसको केवली प्ररुपित धर्म सुननेको मिले ? किसको मिले किसीको न मिले। जिसको मिले वह समझे ? कोई समझे कोइ नहीं समझे। जो समझे वह श्रद्धे, परतीते, रुचे ? हा समझे यावत् रुचे। जिसको रुचे उसको मति, श्रुति,

अवधि ज्ञान होवे ? हां होवे। जिनका ज्ञान होवे वह व्रत नियम करे ? नही करे इसी तरह तिर्यंच असुर कुमारादिसे यावत् ८ मा देवलोक तक देव पणे उपजे उनकी भी व्याख्या कर देनी मनुष्यमें केवल ज्ञान और अन्त क्रिया भी कर सकते है। इसी माफीक मनुष्य भी समझना व्यंतर ज्योतिषी, वैमानिककी व्याख्या असुरकुमारवत् करनी।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नं० १०९

(पद्वि द्वार)

श्री पन्नवणा सूत्र तथा जम्बूद्वीप पन्नती सूत्रसे तेवीस पद्वि

(१) सात एकेन्द्रिय रत्न

१ चक्ररत्न—षट साधनेका रस्ता बतानेवाला
२ छत्ररत्न—बारह योजनमें छाया करे
३ दन्डरत्न—तामस गुफाका कमाड खोले
(चार चार हाथ के लम्बे होते हैं)

४ खड्गरत्न—वैरीको सजा देनेके लिये ५० अंगुलका लंबा १६ अंगुलका चोडा, आधा अंगुलका जाडा और ४ अंगुलकी मूठ यह चारों रत्न आयुध शालामें उत्पन्न होते हैं

५ मणिरत्न—चार अंगुल लम्बा दो अंगुल चौडा अंधेरेमें प्रकाश करनेवाला।

६ कागणी रत्न—सोनारकी अरणके आकार। आठ सोनईयों भार तोलमें आठपासा छे तला, बारहखूणा इससे तमिस्रा गुफामें ४९ मांडले किये जाते है।

७ चामर रत्न—दो हाथका लम्बा हात है नदी उतरता काम आवे (यह तीन रत्न लक्ष्मीके भंडारमें उत्पन्न होते है ।

(२) सात पंचेन्द्रिय रत्न

१ सेनापती रत्न—मध्यके दो खन्ड वजके दोय ४ खन्ड साधे ।
२ गाथापती रत्न—चौवीस प्रकारका अनाज निपजावे । पहिले पेहरमें बोने, दूजे पेहरमें पावे, तीजे पेहरमें लूणे (काटे) चौथे पहरमें स्थानपर पंहुचा दे ।
३ वार्द्धकी रत्न—नगर वसावे ४२ भूमीया मेहल बनावे ।
४ पुरोहित रत्न—शान्ती पाठ पढे या मुहूर्त बतलावे ये चारों रत्न राजधानीमें उत्पन्न होते है । और चक्रवर्तीसे कुछ न्युन होते है ।
५ हाथी रत्न— } ये दोनों रत्न वताढ्य पर्वतके मूलसें प्राप्त होते है।
६ अश्व रत्न— } और असवारीके काम आते है
७ स्री रत्न—विद्याधरोंकी श्रेणीमें उत्पन्न होती है और चक्रवर्तिके भोगमें आती है । और चक्रवर्त्तिसे चार अंगुल न्यून होती है ।

(३) नो बडी पद्वियें

१ तीर्थंकर—चौतीस अतीशयादि सयक्त भगवान्
२ चक्रवर्ती—८४ हजार हस्ती अश्व रथ ९६ क्रोड पैदल ।
३ वासुदेव—चक्रवर्तीसे आधी ऋद्धि वल होता है ।
४ बलदेव—दिक्षा लेके सद्‌गतीमें जाते है
५ मंडलीक—देशका अधिपति एक राजा होता है ।
६ केवली—अनन्त ज्ञान-दर्शन-चारित्र वीर्यगुण संयुक्त ।
७ साधू ८ श्रावक । ९ सम्यक् दृष्टी ।

आगतद्वार

पहिली नारकीसे निकले हुवे जीवोंमे है सात एकेन्द्रिय वर्जके शेष १६ पद्वि पावे।

दूसरी नरकसे निकले हुवेमे १५ पद्वि पावे (चक्रवर्ती वर्जके)
तीसरी नरकसे निकला० १३ पद्वि पावे (बलदेव वासुदेव वर्जके)
चौथी नरकसे निकला० १२ पद्वि पावे (तीर्थंकर वर्जके)
पाचमी नरकसे निकला० ११ पद्वि पावे (केवली वर्जके)
छट्ठी नरकसे निकला० १० पद्वि पावे (साधु वर्जके)
सातमी नरकसे निकला० ३ पद्वि पावे हस्ती० अश्व० और सम्यकूदृष्टि, भुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषीसे निकला हुवा० २१ पद्वि पावे तीर्थंकर चक्रवर्ती वर्जके। पृथ्वी, पाणी, वन० सज्ञी तिर्यंच और सज्ञी मनुष्यसे निकला १९ पद्वि पावे (ती-च-व-वा वर्जके) तेउ वाउ, विकलेन्द्रीसे निकला० ९ पद्वि (७ पचेन्द्रीय रत्न, हस्ती और अश्व०) असज्ञी मनुष्य तिर्यंचसे निकला० १८ पद्वि पावे ७ एकेन्द्री रत्न ७ पचेन्द्री और न० म० सा० श्रा० स० पू° १८ पहिले दूसरे देवलोकसे निकला २३ पद्वि पावे।
तीजेसे आठवें देवलोक तकका निकला० १६ पद्वि पावे। (७ पद्वि पचेन्द्री ९ मोटी० और नौसे बारहवा तथा नौग्रैवेयकसे निकला १४ पद्वि पावे (हस्ती० अश्व नहीं)
पचानुत्तरसे निकला० ८ पद्वि पावे (वसुदेव वर्जके ८ मोटी०)

जानद्वार

नारकी पहिलीसे चोथी तक ११ पद्वि वाले जीव जावे (७ पचेन्द्रीय पद्वि, चक्री वासुदेव, सम्यक्दृष्टी और मडलीक राजा)
नारकी ५-६ में ९ पद्वि वाले जावें। (स्त्री, सम्यग्दृष्टीवर्जके) पाच स्थावरमें १४ पद्वि वाले जावें। एकेन्द्री ७ पचेन्द्रीय ६ (स्त्री नहीं) और मंडलीक० एव १४॥ विकलेन्द्री ३ असज्ञी मनुष्य तिर्यंचमें

१५ पद्विवाले जीव जाये यथा (१४ पूर्ववत् और सम्यगदृष्टी) सन्नी मनुष्य तिर्यचमें १५ पद्वि वाले जाय पूर्ववत् ।

भुवनपती १० व्यन्तर, ज्योतिषी १-२ देवलोकमें १० पद्वि वाले जाये (स्त्री वर्जके ६ पचेन्द्री, साधु, श्रावक सम्यग० और मंड लीक । तीजेसे आठमें देवलोकमें १० पद्वि वाय जाय पूर्वयत् परन्तु आराधिक । नौवेसे बारमें देवलोकमें ८ पद्वि वाले जावे पूर्ववत् परन्तु (हस्ती अश्व वर्जके) आराधिक । नौवेसे बारवे देवलो कमें ८ पद्वि वाय जाये साधु श्रावक, सम्यक० मडलीक सेना पती, गाथापती, वाद्धकी, प्रोहत, नौग्रैवेक, पचानुत्तरमें दो पद्वी वाले जावे (साधु सम्यगदृष्टी।

पावणद्वार

नारकी देवतामें पद्वी १ मिले (सम्यगदृष्टी)

पृथ्वीकायमें ७ पद्वि मिले (पचेन्द्री रत्न ७)

चार स्थावरमें पद्वी नहीं मिले।

विकलेन्द्री ३ में १ पद्वि मिले (सम्यगृदृष्टी, अपर्याप्ति अवस्थामें) समुच्चय तिर्यचमें ११ पद्वि मिले (पचेन्द्री ७, अश्व, हस्ती, श्रावक, सम्यगृदृष्टी)

तिर्यंचपचेन्द्रीमें ४ पद्वि मिले (हस्ती अश्व० श्रावक० सम्यगृदृष्टी) असन्नी तिर्यंचमें ८ पद्वि मिले (सातकेन्द्रि और सम्यगृदृष्टी)

नपुसकमें ११ पद्वि मिले (७ पच द्री, साधु, केवली, श्रावक, सम्यगृदृष्टी)

कृतनपुसकमें ४ पद्वी मिले (साधु, केवली, श्रावक, सम्यगदृष्टी) ज-मनपुसकमें २ पद्वी मिले (श्रावक, सम्यगृदृष्टी]

समुच्चयपचेन्द्रीमें १६ पद्वि मिले (पचेन्द्रीय ७ वजके)

समुच्चय म नुष्यमे १४ पद्वि मिले (७ पचेन्द्रीय, अश्व, हस्ती वर्जेय)

पुरुषवेदमें १२ पद्वि मिले (७ पचेन्द्रीय और स्त्री० वर्जके

साधुमे १२ पद्वि मिले चार पांचेन्द्रिय ८ यडी पद्वि अढाई द्वीपके बाहर ७ पद्वि मिले (श्रावक० सम्यगद्दष्टी)

सेव भंते सेव भंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नं० ११०

(गत्यागति)

जीव मरक दूसरी गतीमे उत्पन्न होता है उसको गति कहते हैं। और जिस गतीसे आकार उत्पन्न होता है उसको आगती कहते हैं। जैसे नारकीसे निकलकर जिस गतिमें जावे (यथा रत्नप्रभा नारकीका जीव तीर्यचके १० और मनुष्य गतिमे ३० भेदोंमें उत्पन्न होता है। उसको गती कहते हैं। और २० भेदे तीर्यचके जीव १५ भेदे मनुष्यके जीव रत्नप्रभा नारकीमें उत्पन्न होता है उसको आगती कहते हैं। इसी तरह सब ज गह समझ लेना।

मार्गणा			न०	ती०	मनुष्य	देवता	समुच्चय
१ रत्नप्रभा	नारकीकी	आगती	०	१०	१५	०	२५
२ ,,	,,	गती	०	१०	३०	०	४०
३ शार्कर०	,,	आगती	०	६	१५	०	२०
४ ,,	,,	गती	०	१०	३०	०	४०
५ वालूप्रभा	,,	आगती	०	+४	१५	०	१९
६ ,,	,,	गती	०	१०	३०	०	४०

१५ पद्विवाले जीव जावे यथा (१४ पूर्ववत् और सम्यग्दृष्टी)
सन्नी मनुष्य तिर्यंचमें १५ पद्वि वाले जावे पूर्ववत् ।

भुवनपती १० व्यन्तर, ज्योतिषी १-२ देवलोकमें १० पद्वि वाले जावे (स्त्री वर्जके ६ पचेन्द्री, साधु, श्रावक सम्यग० और मंडलीक । तीजेसे आठमें देवलोकमें १० पद्वि वाले जावे पूर्ववत् परन्तु आराधिक । नौवेसे बारमें देवलोकमें ८ पद्वि वाले जावे पूर्ववत् परन्तु (हस्ती अश्व वर्ज के) आराधिक । नौवेसे बारवे देवलोकमें ८ पद्वि वाले जावे साधु श्रावक, सम्यग० मंडलीक सेनापती, गाथापती, वार्द्धकी, प्रोहत, नौग्रैवेक, पंचानुत्तरमें दो पदवी वाले जावे (साधु सम्यगदृष्टी)

पावणद्वार

नारकी देवतामें पदवी १ मिले (सम्यगदृष्टी)
पृथ्वीकायमें ७ पद्वि मिले (पचेन्द्री रत्न ७)
चार स्थावरमें पदवी नहीं मिले ।
विकलेन्द्री ३ में १ पद्वि मिले (सम्यगदृष्टी, अपर्याप्ति अवस्थामें)
समुच्चय तिर्यंचमें ११ पद्वि मिले (पचेन्द्री ७, अश्व, हस्ती, श्रावक, सम्यगदृष्टी)
तिर्यंचपचेन्द्रीमें ४ पद्वि मिले (हस्ती अश्व० श्रावक० सम्यगदृष्टी)
असन्नी तिर्यंचमें ८ पद्वि मिले (सातेकेन्द्रि और सम्यगदृष्टी)
नपुसकमें ११ पद्वि मिले (७ पचेन्द्री, साधु, केवली, श्रावक, सम्यगदृष्टी)
कृतनपुसकमें ४ पद्वी मिले (साधु, केवली, श्रावक, सम्यगदृष्टी)
जन्मनपुसकमें २ पद्वी मिले (श्रावक, सम्यगदृष्टी]
समुच्चयपचेन्द्रीमें १६ पद्वि मिले (पचेन्द्रीय ७ वर्जके)
समुच्चय मनुष्यमें १४ पद्वि मिले (७ पचेन्द्रीय, अश्व, हस्ती वर्जके)
पुरुषवेदमें १२ पद्वि मिले (७ पचेन्द्रीय और स्त्री० वर्जके

३३	असन्नी तीर्यंच पचेन्द्री	आगती	०-४८-१३१- ०-१७९
३४	,, ,,	गती	२-४८-२४३- ०२-३९५
३५	सन्नी ,,	आगती	७-४८-१३१- ८१-२६७
३६	, ,	गती	१४-४८-३०३-१६२-५२७
३७	जलचर,	आगती	१४-४८-३०३-१६२-५२७
३८	थलचर	पांचोंकी	८-४८-३०३-१६२-५२१
३९	खेचर	३६७ की	६-४८-३०३-१६२-५१९
४०	उरपरी	है गती	१०-४८-३०३-१६२-५२३
४१	भुजपरी	कहते है	४-४८-३०३-१६२-५१७
४२	असन्नी मनुष्यकि	आगती	०-४०-१३१- ०-१७१
४३	, ,	गती	०-४८-१३१- ०-१७९
४४	सन्नी मनुष्यकि	आगती	६-४०-१३१- ९९-२७६
४५	, ,	गती	१४-४८-३०३-१९८-५६३
४६	देवकुरु उत्तरकुरुकि	आगती	०- ५- १५- ०- २०
४७	,, ,	गती	०- ०- ०-१२८-१२८
४८	हरीवास रम्यकवी	आगती	०- ५- १५- ०- २०
४९	, ,,	गती	०- ०- ०-१२६-१२६
५०	हेमवय येरणवयकी	आगती	०- ५- १५- ०- २०
५१	, ,	गती	०- ०- ०-१२४-१२४
५२	छप्पन अन्तरद्वीप	आगती	०-१०- १५- ०- २५
५३	,, ,,	गती	०- ०- ०-१०२-१०२
५४	तीर्थंकरकी	आगती	३- ०- ०- ३५- ३८
५५	,,	गती	०- ०- ०- मोक्ष
५६	केवलीकी	आगती	४- ८- १५- ८१-१०८
५७	,,	गती	०- ०- ०- ०- मोक्ष
५८	चक्रवर्तीकी	आगती	१- ०- ०-८१/१९- ८२/१०
५९	,	गती	१४- ०- ०- ०- १४

आगती ०-+३- १५- ०- १८
७ पंकप्रभा ,, गती ०-१०- ३ - ०- ४०
८ , ,, आगती ०-×२- १५- ०- १७
९ धूमप्रभा ,, गती ०-१ - ३०- - ४०
१० ,, , आगती ०-×१- १५- ०- १६
११ तमप्रभा , गती ०-१०- ३०- ०- ४०
१२ , , आगती ०- १- १५- - १६
१३ तमस्तम ; ०-१०- ०- ०- १०
१४ तमस्तम नारयोकी गती ०-१ -१०१- ०-१११
१५ भुवनपति व्यतर कि आगती
गती ०-१६- ३०- ०- ४६
१६ , ०- ५- ४५- ०- ५०
१७ ज्योतिषी सौधम दे० आगती
गती ०-१६- ३०- - ४६
१८ , ,, ०- ५- ३५- ०- ४०
१९ दूजा दे० आगती
गती ०-१६- ३०- ०- ४६
२० ,, ०- ५- २५- ०- ३०
२१ प्रथम किल्विषी कि आगती
गती ०-१६- ३०- ०- ४६
२२ , ०- ५- १५- ०- २०
२३ तीजेसे आठवे दे० आगती
गती ०-१०- ३०- ०- ४०
२४ ,, - ८- १२- ०- १५
२५ नौव दे से सर्वार्थसिद्ध आगतो
गती ०- ०- ३०- ०- ३०
२६ ,, ०-४८-१३१- ६४-२४३
२७ पृ० पाणी० वन० आगतो
गती ०-४८-१३१- -१७९
२८ ,, ,, , ० ४८-१३१- ०-१७९
२९ तेउ वाउ आगती
गती ०-४८- ०- ०- ४८
३० , , ०-४८-१३१- ०-१७९
३१ तीन विकलेन्द्री आगती
गती ०-४८-१३१- ०-१७९
३२ ,,

+ भुन० वन । खचरवर्ज थलचर उजपुरवर्ज ×

३३ असन्नी तीर्यच पचेन्द्री आगती ०-४८-१३१- ०-१७९
३४ ,, ,, गती २-४८-२४३-१०२-३९५
३५ सन्नी ,, आगती ७-४८-१३१- ८१-२६७
३६ ,, ,, गती १४-४८-३०३-१६२-५२७
३७ जलचर आगती १४-४८-३०३-१६२-५२७
३८ थलचर पांचोंकी ८-४८-३०३-१६२-५२१
३९ खेचर ३६७ की ६-४८-३०३-१६२-५१९
४० उरपरी है गती १०-४८-३०३-१६२-५२३
४१ भुजपरी कहते हैं ४-४८-३०३-१६२-५१७
४२ असन्नी मनुष्यकि आगती ०-४०-१३१- ०-१७१
४३ , ,, गती ०-४८-१३१- ०-१७९
४४ सन्नी मनुष्यकि आगती ६-४०-१३१- ९९-२७६
४५ ,, ,, गती १४-४८-३०३-१९८ ५६३
४६ देवकुरु उत्तरकुरुकि आगती ०- ५- १५- ०- २०
४७ ,, , गती ०- ०- ०-१२८-१२८
४८ हरीवास रम्यकवी आगती ०- ५- १५- ०- २०
४९ , ,, गती ०- ०- ०-१२६-१२६
५० हेमवय पेरणवयकी आगती ०- ५- १५- ०- २०
५१ , ,, गती ०- ०- ०-१२४-१२४
५२ छापन अन्तरद्वीप आगती ०-१०- १५- ०- २५
५३ ,, ,, गती ०- ०- ०-१०२-१०२
५४ तीर्थंकरकी आगती ३- ०- ०- ३५- ३८
५५ ,, गती ०- ०- ०- मोक्ष
५६ केवलीकी आगती ८- ८- १५- ८१-१०८
५७ ,, गती ०- ०- ०- ०- मोक्ष
५८ चक्रवर्तीकी आगती १- ०- ०-८२/९९- ८२/१००
५९ ,, गती १४- ०- ०- ०- १४

६० यल्देवकी आगती — २- ०- ०-,१- ,१

६१ ,, गती — पदवीं अमर (दिक्षा ले)

६२ धासुदेवकि आगति — २- ८- ०- ३८- ३२

६३ ,, गति — १४- ०- ८- ०- १४

६४ मंडलीक राजा आगती — ६-४०-१३१- ९९-२७६

६५ , , गति — १४-४८-३०३-१७०-५३५

६६ साधु आराधिक आगती — ५-४०-१३१- ९९-२७५

६७ ,, ,, गती — ०- ०- ०- ७०- ७०

६८ साधु विराधिक आगती — ५-४०-१३१- ९४-२७०

६९ ,, ,, गती — ०- ०- ०-१२४-१२४

७० श्रावक आराधिक आगती — ६-४०-१३१- ९९-२७६

७१ ,, गती — ०- ०- - ४२- ४२

७२ ,, विराधिक आगती — ६-४०-१३१- ९४-२७१

७३ , , गती — ०- ०- ०-१२२-१२२

७४ सम्यक्त्वदृष्टीकी आगती — ७-४०-२१७- ९९-३६३

७५ ,, गती — १२-१८- ३०- -१९८/१६२-२५

७६ मिथ्यादृष्टीकी आगती — ७-४८-२१७- ९४-३६६

७७ ,, गती — १४ ४८-३०३-१८८-५५३

७८ मिश्रदृष्टीकी आगती — ७-४८-२१७ ९४-३६६

७९ , गती — अमर (काल न करे)

८० स्रीयेदकी आगती — ७-४८-२१७- ९९-३७१

८१ ,, गती — १२-४८ ३०३-१९८-५६१

८२ पुरुष वेदकी आगती — ७-४८ २१७- ९९-३७१

८३ ,, गती — १४-४८-३०३-१९८-५६३

८४ नपुसकवेदकी आगती — ७-४८-१३ - ९९-२८६

८५ ,, गती — १४-४८-३०३-१९८-५६३

सेव भंते सेव भंते तमेव सचम् ।

थोकडा नं० १११

श्री पन्नवणा सूत्र पद ६

(गत्यागती)

१ रत्नप्रभा नारकीकी आगती ११ की-पाँच सन्नी तीर्यच, पाच असन्नी तीर्यंच और संख्याते वर्षका कर्मभूमी मनुष्य एवं ११ तथा गती ६ की पाच सन्नी तीर्यंच और संख्याते वर्षका कर्मभूमी मनुष्य।

२ शर्करप्रभा नारकीकी आगती ६ की—पाच सन्नी मनुष्य और संख्याते वर्षका कर्मभूमि मनुष्य। तथा गती ६की-पाच सन्नी तीर्यंच और संख्याते वर्षका कर्मभूमि मनुष्य।

३ वालुप्रभा नारकीकी आगति ५ की—भुजपरी तीर्यंच वर्जके उपरवत् पाच और गति ६ की पूर्ववत्।

४ पंकप्रभा नारकीकी आगति ४ की—खेचर वर्जके शेष ४ पूर्ववत् और गती ६ की पूर्ववत।

५ धूमप्रभा नारकीकी आगत ३ की—थलचर वर्जके शेष ३ पूर्ववत् और गति ६ की पूर्ववत्।

६ तमप्रभा नारकीकी आगत ४ की—स्त्री, पुरुष, नपुसक और जलचर तथा गती ६ की पूर्ववत्।

७ तम तमप्रभा नारकीकी आगती ३ की—पुरुष, नपुसक और जलचर तथा गती ५ की (सन्नी तीर्यंच पाच)

दश भुवनपती व्यंतरकी आगती १६ की—पाच सन्नी पांच असन्नी तीर्यंच १० संख्याते वर्षका कर्म भूमि मनुष्य ११

असख्याते वर्षेका कम भूमी मनुष्य १२ अकम भूमि १३ अन्तर द्वीप १४ खेचर युगलीया १५ थलचर युगलीया १६ तथा गती ९ की—पाच सन्नी तीर्यंच ५ सख्याता वर्षेका कर्मभूमि मनुष्य ६ पृथ्वी० ७ अप्प० ८ वनास्पति ९।

ज्योतिषी सौधर्म ईशान देवलोककी आगती ९ की—पाच सन्नी तीर्यच, सख्याते वर्षेका कर्मभूमि मनुष्य, असख्याते वर्षेका कर्मभूमि, अकर्मभूमि, और थलचर युगलीया। तथा गती ९ की भुवनपतीवत्।

तीजे देवलोकसे आठमें देवलोक तककी आगती ६ की—पांच सन्नी तीर्यच और सख्याते वर्षका कर्मभूमि मनुष्य। तथा गती ६ की—पाच सन्नी तीर्यंच और संख्याते वर्षका कर्मभूमि मनुष्य।

नौमें देवलोकसे बारमें देवलोक तककी आगती ४ की—सयती, असयती, सयतासयती और मिथ्यादृष्टी मनुष्य। तथा गती १ सख्यात वर्षेका कर्मभूमि मनुष्यकि

नौग्रैवेक विमान की आगती २ की—साधुलिंग सम्यगदृष्टी और साधुलिंग मिथ्यादृष्टी। तथा गती १ सख्याते वर्षका कर्मभूमि मनुष्य।

पाच अनुत्तर विमानकी आगती २ की—अप्रमत्त ऋद्धि पत्ता और अप्रमत अऋद्धि पत्ता। तथा गती १ स० वर्षका कर्म भूमि मनुष्य।

पृथ्वी, अप्प वनस्पति० की आगती ७४ की-तीयच ४६ (वनस्पति ६ की जगह ४ समझना) मनुष्य ३ भुवनपती १० व्यन्तर ८ ज्योतिषी ५ सौधम, ईशान देवलाक। तथा गती ४९ कि तीर्यंच के ४६ मनुष्य के ३।

तेउ वायु० की आगती ४९ की—तीर्यच के ४६ मनुष्य ३ तथा गती ४६ कि तीर्यंचके

विकलेन्द्रियकी आगती ४९ की पूर्वयत् तथा गती भी इसी तरह ४९ की।

तीर्यंच पचेन्द्रियकी आगती ८७ की-तीर्यच ४६ मनुष्य ३ भुवनपती १० व्यन्तर ८ ज्योतिषी ५ देवलोक ८ और नारकी ७ एव ८७ तथा गती ९२ की—८७ पूर्ववत् सख्याते वर्षका कर्म भूमि असख्याते वर्षका कर्मभूमि, अकर्मभूमि, अन्तरद्वीपा, स्थलचर युगलीया एव ९२।

मनुष्यकी आगती ९६ की—तीयच ३८ (तेउ० वायुका ८ वर्जके) मनुष्य ३ भूवनपती १० व्यतर ८ ज्योतिषी ५ देवलोक १२ ग्रैवेक विमान ९ अनुत्तर विमान ५ नारकी ६ एव ९६ तथा गती १११ की—९६ पूर्ववत तेउ० वाउ० ८ सातमी नारकी, असख्याते वप कर्मभूमि अकर्मभूमि अन्तर द्वीपा स्थलचर युगलीया, खेचर युगलीया और सिद्ध गती एव १११

सेव भंते सेव भंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नं० ११२

श्री पन्नवणा सूत्र पद २१।

(शरीर)

(१) नामद्वार—औदारिक शरीर, वैक्रिय शरीर आहारक शरीर तेजस शरीर कार्मण शरीर

(२) अर्थ द्वार—(१) औदारिक शरीर याने हाडमांस लाही राघयुक्त सडण पडण विद्धसण धर्मवाला होनेपर भी तीर्थ कर गणधरादि इस शरीरको धारण किया है मोक्ष जानेमे यह शरीर प्रधान कारण है वास्ते इस शरीर को प्रधान माना गया है (२) वैक्रिय शरीर औदारिकसे विपरीत और दृश्यादृश्य नाना प्रकारका रुप बनावे। (३) आहारीक शरीर चौदह पूर्वधर बनावे जिसके चार कारण है यथा प्रश्न पूछनेके लिये तीर्थंकरोंकी ऋद्धि देखनेके लिये, संशय निवारण करनेके लिये जीव रक्षाके लिये। (४) तेजस शरीर, आहारके पाचन क्रिया करनेवाला (५) कार्मण शरीर, पच हुये आहारको यथायोग्य प्रणमावे।

(३) अवगाहना द्वार—औदारिक, वैक्रियकी जघन्य अंगु लके असं० भाग उ० औदारिककी १ हजार योजन साधिक, वैक्रियकी १ लक्षयोजन साधिक। आहारक शरीरकी ज० १ हाथ ऊणा उ० १ हाथ। तेजस, कार्मणकी ज अंगुलके असं० भाग उ० १४ राज प्रमाण।

(४) शरीर संयोग द्वार—औदारिकमें तेजस कार्मणकी नियमा शेष दोकी भजना। वैक्रियमें तेजस कारमणकी नियमा

औदारिककी भजना आहारक नहीं। आहारकमें वैक्रिय नहीं शेष ३ शरीरकी नियमा। तेजसमें कार्मणकी नियमा। कार्मणमें तेजसकी नियमा बाकी तीन शरीरकी भजना।

(५) द्रव्य द्वार—औदारिक० वैक्रिय शरीरका द्रव्य असं ख्याते असंख्याते है। आहारक० संख्याते०। तेजस कार्मणका अनते अनन्ते है।

(६) प्रदेश द्वार—प्रदेश पाचो शरीरोंके अनन्ते अनन्ते है।

(७) द्रव्यकी अल्पाबहुत्व द्वार—सबसे स्तोक आहारक शरीरके द्रव्य, वैक्रिय श० द्रव्य अस० गु० औदारिक श० द्रव्य अस० गु० तेजस कार्मण परस्पर तुल्य अन० गु०।

(८) प्रदेशका अल्पा बहुत्व—सबसे स्तोक आहारक शरीरका प्रदेश०। वैक्रिय श० प्र० अस० गु०। औदारिक श० प्र० अस० गु०। तेजस श० प्र० अन० गु० कार्मण श० प्र० अन० गु०।

(९) द्रव्य प्रदेशकी अल्पा बहुत्व—

(१) सबसे स्तोक आहारक शरीरका द्रव्य (२) वैक्रिय श० का द्रव्य अस० गु० (३) औदारिक श० का द्रव्य अस० गु० (४) आहारिक श० का प्रदेश अन० गु० (५) वैक्रिय श० का प्रदेश अस० गु० (६) औदारिक श० का प्रदेश अस० गु० (७) तेजस कार्मण श० द्रव्य अनन्त गु० (८) तेजस श० प्रदेश अन० गु० (९) कार्मण श० प्रदेश अन० गु०

(१०) स्वामी द्वार—औदारिक श० का स्वामी मनुष्य तीर्यच वैक्रिय श० का स्वामी चारों गतीके जीव। आहारक श० के स्वामी चौदह पूर्वधर मुनि। तेजस कारमण का स्वामि चारों गति के जीव होते है।

थोकडा नं० ११२

श्री पन्नवणा सूत्र पद २१।

(शरीर)

(१) नामद्वार—औदारिक शरीर, वैक्रिय शरीर आहारक शरीर तेजस शरीर कामण शरीर

(२) अर्थ द्वार—(१) औदारिक शरीर याने हाडमांस लोही रायथुक्त सडण पडण विद्वसण धर्मवाला होनेपर भी तीर्थंकर गणधरादि इस शरीरको धारण किया है मोक्ष जानेमे यह शरीर प्रधान कारण है वास्ते इस शरीर को प्रधान माना गया है (२) वैक्रिय शरीर औदारिकसे विप्रीत और दृश्यादृश्य नाना प्रकारका रुप बनावे। (३) आहारीक शरीर चौदह पूर्वधर बनावे जिसके चार कारण हैं यथा प्रश्न पूछनेके लिये तीर्थंकरोंकी ऋद्धि देखनेके लिये, सशय नियारण करनके लिये जीव रक्षाके लिये। (४) तजस शरीर, आहारके पाचन क्रिया करनेवाला (५) कार्मण शरीर, पचे हुवे आहारको यथायोग्य प्रणमावे।

(३) अवगाहना द्वार—औदारिक, वैक्रियकी जघन्य अंगुलके असं० भाग उ० औदारिककी १ हजार योजन साधिक, वैक्रियकी १ लक्षयोजन साधिक। आहारक शरीरकी ज० १ हाथ ऊणा उ० १ हाथ। तेजस, कार्मणकी ज अंगुलके असं० भाग उ १४ राज प्रमाण।

(४) शरीर सयोग द्वार—औदारिकमें तेजस कामणकी नियमा शेष दोकी भजना। वैक्रियेमें तजस कारमणकी नियमा

औदारिककी भजना आहारक नहीं। आहारकमें वैक्रिय नहीं शेष ३ शरीरकी नियमा। तेजसमें कार्मणकी नियमा। कार्मणमें तेजसकी नियमा बाकी तीन शरीरकी भजना।

(५) द्रव्य द्वार--औदारिक० वैक्रिय शरीरका द्रव्य असंख्याते असंख्याते हैं। आहारक सख्याते०। तेजस कार्मणका अनंते अनन्ते हैं।

(६) प्रदेश द्वार---प्रदेश पाचों शरीरोंके अनन्ते अनन्ते हैं।

(७) द्रव्यकी अल्पाबहुत्व द्वार--सबसे स्तोक आहारक शरीरके द्रव्य, वैक्रिय श० द्रव्य अस० गु० औदारिक श० द्रव्य अस० गु० तेजस कार्मण परस्पर तुल्य अन० गु०।

(८) प्रदेशका अल्पा बहुत्व--सबसे स्तोक आहारक शरीरका प्रदेश, । वक्रिय श० प्र० अस० गु०। औदारिक श० प्र० अस० गु०। तेजस श० प्र० अन० गु० कार्मण श० प्र० अन० गु०।

(९) द्रव्य प्रदेशकी अल्पा बहुत्व--

(१) सबसे स्तोक आहारक शरीरका द्रव्य (२) वैक्रिय श० का द्रव्य अस० गु० (३) औदारिक श० का द्रव्य अस गु० (४) आहारिक श० का प्रदेश अन० गु० (५) वैक्रिय श० का प्रदेश अस० गु० (६) औदारिक श० का प्रदेश अस० गु (७) तेजस कार्मण श० द्रव्य अनन्त गु० (८) तेजस श० प्रदेश अन० गु० (९) कार्मण श० प्रदेश अन० गु०

(१०) स्वामी द्वार--औदारिक श० का स्वामी मनुष्य तीर्यंच वैक्रिय श० का स्वामी चारों गतीके जीव। आहारक श० के स्वामी चौदह पूर्वधर मुनि। तेजस कारमण का स्वामि चारों गति के जीव होते हैं।

(११) संस्थान द्वार—औदारिक, तेजस, कार्मण श० में छे संस्थान। वैक्रियमें दो (सम० हुड०) आहारकमें १ समचोरस।

(१२) संहनन द्वार—औदारिक तेजस कार्मण छे संहनन वैक्रिय श० में संहनन नहीं। आहारकमें १ वज्रऋषभनाराच।

(१३) सुक्ष्म बादर द्वार—(१) सबसे सुक्ष्म कार्मण श० (२) उससे तेजस बादर (३) आहारक बादर (४) वैक्रिय बादर (५) औदारिक बादर। सबसे बादर औदारिक उससे वैक्रिय सूक्ष्म। आहारक सुक्ष्म। तेजस सुक्ष्म। कामण सुक्ष्म।

(१४) प्रयोजन द्वार—औदारिकका प्रयोजन आठ कर्मोंकों क्षय करके मोक्षमें जानेका है। वैक्रियका प्रयोजन नाना प्रकारका रुप बनाना। आहारकका प्रयोजन सहाय छेदन करना। तेजस कामणका प्रयोजन ससारमें भवभ्रमण करानेका है।

(१५) विषय द्वार—औदारिककी विषय रुचकद्वीप, तक वैक्रियकि असख्याते द्वीप समुद्र तक। आहारककि अढाई द्वीप तक। तेजस कार्मणकि चौदह राजलोक तक कि विषय है।

(१६) स्थिति द्वार—औदारिक, अ० अन्तर मु० उ० तीन पल्योपम। वैक्रिय ज० १ समय उ० ३३ सागरोपम। आहारक अ० उ० अन्तर मुहुर्त। तेजस कार्मणकी अनादि अनन्त अनादि सान्त।

(१७) अवगाहनाकी अल्पाबहुत्व।

(१) सबसे स्तोक औदारिक शरीरकी ज अवगाहना
(२) तेजस कार्मणकी ज० अ० वि०
(३) वैक्रियकी ज० अ० असं० गु०
(४) आहारककी ज० अ० "

(१८) अल्पाबहुत्व द्वार
(१ स्तोक आहारीक शरीर
(२) वैक्रिय श० असं० गु०

(५) " की उ० " वि०	(३) औदारिक श० अस० गु
(६) औदारिकी ' ' स गु०	(४) तेजस कारमण आपस
(७) वैक्रियकी ' ' "	में तुल्य और अनंत गु
(८) तेजसकार्मण ' " अस० गु०	

सेव भंते सेव भंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नं० ११३

श्री भगवती सूत्र श० १९ उ० ३

(अवगाहना अल्पा०)

(१) सबसे स्तोक सुक्ष्म निगोदके अपर्याप्ताकी जघन्य अवगाहना
(२) सुक्ष्म वायुकायके अपर्या० की ज० अव० असं० गु०
(३) सुक्ष्म तेउ० " " " " "
(४) सुक्ष्म अप्प० " " " " "
(५) सुक्ष्म पृथ्वी० " " " " "
(६) बादर वायु० " " " " "
(७) बादर तेउ० " " " " "
(८) बादर अप्प० " " " " "
(९) बादर पृथ्वी० " " " " "
(१०) बादर निगोद " " " " "
(११) प्रत्येक शरीर बादर वनस्पतिके अप० ज अव० अस० गु०
(१२) सुक्ष्म निगोद पर्या० की ज० अव० अस० गु०
(१३) सुक्ष्म निगोद अप० की उत्कृष्ट अव० वि०
(१४) " पर्या० की " " "

(१५) सुक्ष्म वायु० पय ज० अव० अस० गु०
(१६) „ अप० उ० अव० वि०
(१७) „ पर्या० उ० अव० वि०
(१८) सुक्ष्म तेउ० पर्या० ज० अव अस गु०
(१९) „ अप० उ० अव० वि०
(२०) „ पर्या० उ० अव० वि०
२१) सुक्ष्म अप्प पर्या ज० अव० अस० गु०
(२२) „ अप० उ० अव० वि०
(२३) „ पर्या उ० अव० वि०
(२४) सुक्ष्म पृथ्वी० पर्या ज० अ वअ० स० गु०
(२५) „ अप० उ० अव० वि०
(२६) „ पर्या० उ० अव० वि
(२७) बादर वायु० पर्या० ज० अव० अस० गु०
(२८) „ अप उ० अव० वि०
(२९) „ पर्या० उ० अव० वि०
३०) बादर तेउ० पर्या० ज अव० अस० गु०
(३१) „ अप० उ० अव० वि०
(३२) „ पर्या० उ० अव० वि०
३३) बादर अप्प० पर्या० ज० अव० अस० गु०
(३४) „ अप० उ अव० वि
(३५) „ पर्या० उ० अव० वि
(३६) बादर पृथ्वी पर्या० ज० अव० अस० गु०
(३७) „ अप० उ० अव० वि०
(३८) „ पर्या० उ० अव० वि०
(३९) बादर निगोद पर्या० ज० अव० अस गु०
(४०) „ अप० उ अव० वि०
(४१) „ पर्या० उ० अव० वि०

(४२) प्रत्येक शरीर बादर वन० पर्या० ज अव० अस० गु०
(४३) ,, ,, अप उ० अव० अस० गु०
(४४) , , पर्या० उ० अव० अस० गु०

सेव भंते सेव भंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नं० ११४

श्री भगवती सूत्र श० ८ उ० ५ ।

(सप्रदेश)

पुद्गल चार प्रकारके होते हैं—द्रव्यसे क्षेत्रसे, कालसे, और भावसे जिसमें द्रव्यसे पुद्गलोंके दो भेद सप्रदेशी (द्विपरमाणुवादि) और अप्रदेशी (परमाणु क्षेत्रसे पु० के दो भेद सप्रदेशी (दो प्रदेशोंसे यावत् अस प्रदेश अवगाह) और अप्रदेशी (एक आकाश प्रदेश अवगाही) कालसे पुद्गलोंके दो भेद—सप्रदेशी (दो समयसे यावत् अस० समयकी स्थितिका) और अप्रदेशी (एक समयकी स्थितिको) भावसे पुद्गलोंके दो भेद—सप्रदेशी (दो गुण कालेसे यावत् अनन्त गुण काला) और अप्रदेशी (एक गुण काला)

जहा द्रव्यसे अप्रदेशी है यहा क्षेत्रसे नियमा अप्रदेशी है। कालसे स्यात् सप्रदेशी स्यात् अप्रदेशी। एव भावसे और क्षेत्र से अप्रदेशी है यह द्रव्यसे स्यात् सप्रदेशी स्यात् अप्रदेशी। एव कालसे भावसे॥ और कालसे अप्रदेशी है यह द्रव्यसे क्षेत्रसे भावसे स्यात् सप्रदेशी स्यात अप्रदेशी है। और भावसे अप्रदेशी है यह द्रव्यक्षेत्रकालसे स्यात सप्रदेशी स्यात् अप्रदेशी है और

जो द्रव्यसे सप्रदेशी है वह क्षेत्रसे कालसे भावसे स्यात् सप्रदेशी स्यात अप्रदेशी है। और क्षेत्रसे सप्रदेशी है वह द्रव्यसे नियमा सप्रदेशी है। और कालसे भावसे स्यात सप्रदेशी स्यात् अप्रदेशी है। और कालसे सप्रदेशी है वह—द्रव्य क्षेत्र भावसे स्यात् सप्रदेशी स्यात् अप्रदेशी है। और भावसे सप्रदेशी है। वह द्रव्यसे क्षेत्रसे कालसे स्यात् सप्रदेशी स्य त अप्रदेशी है।

(अल्पाबहुत्व)

(१) सबसे स्तोक भवसे अप्रदेशी द्रव्य
(२ , कालसे अप्रदेशी द्रव्य अस० गु०
(३) द्रव्यसे अप्रदेशी द्रव्य अस० गु०
(४) क्षेत्रसे अप्रदेशी द्रव्य अस० गु०
(५) क्षेत्रसे सप्रदेशी द्रव्य अस० गु०
(६) द्रव्यसे सप्रदेशी द्र्‌य वि०
(७) कालसे सप्रदेशी द्रव्य वि०
(८) भावसे सप्रदेशी द्रव्यवि

सेव भंते सेव भंते तमेव सच्चम् ।

—※—

थोकडा नं० ११५

श्री भगवती सूत्र श० ५ उ० ८ ।

(हियमाण वड्ढमाण)

हे भगवान् ! जीव हियमान (न्यून होना) है वड्ढमाण (वृद्धि होना) है या अवस्थित है ? गौ० जीव हियमान नहीं है।

वृद्धिमान नहीं है किन्तु अवस्थित है। नारकीके नेरीयोंकी पृच्छा? नारकीके नेरीया हियमान० भी है वृद्धिमान भी है और अवस्थित भी है एव यावत् २४ दंडक कहना सिद्ध भगवान वृद्धमान है और अवस्थित है।

समुचय जीव अवस्थित रहे तों सदाकाल सास्वता, नारकीका नेरीया हियमान वृद्धमान रहे तो ज० एक समय उ० आविलीकाके अस० भाग, और अवस्थित रहे तो विरह कालसे दुगुणा। 'देखो शीघ्रबोध भाग १ में विरहद्वार'। एव चौवीस दंडकमें हियमान वृद्धमान नारकीयत् और अवस्थित काल विरह द्वारसे दुगणा, परन्तु पाच स्थावरमें अवस्थित कालहियमानवत् समज लेना। सिद्धोंमें वृद्धमान ज० एक समय उ० आठ समय और अवस्थित काल ज० एक समय उ० छे मास इति।

सेव भंते सेव भंते तमेव सचम्।

थोकडा नंबर ११६

श्री भगवती सूत्र श० ५ उ० ८.।

(सावचया सोवचया)

हे भगवान! जीव [1]सावचया है या [2]सोवचया है? या सावचया [3]सोवचया है? या [4]निरवचया निरववया? जीव निरवचया निरवचया है शेष तीन भागा नहीं। नारकी आदि २४ दंडकमें पूर्वोक्त चारों भागा पावे। सिद्धोंमें भागा दो [१] सावचया [२] निरवचया निरवचया।

---

१ वृद्धि। २ हानी। ३ वृद्धि हानी। ४ वृद्धि नहीं हानी नहीं।

समुचय जीवमें निरुवचया निरवचया है यह सर्वाद्धं है और नारकीमें निरुवचया निरवचया वर्जके शेष तीन भागोंकी स्थिति ज० एक समय उ० आवलीकाके अस० भाग और निरुवचया निरवचयाकी स्थिति विरह द्वार सदृश समझना परन्तु पाच स्थावरमें निरुवचया निरवचया भी ज० एक समय उ० आविलीकाके अस० भाग, सिद्ध भगवानमें सावचया ज एक समय उ० आठ समय और निरुवचया निरवचया ज० एक समय उ० छै मास इति।

नोट---पाच स्थावरमें अवस्थित काल तथा निरुवचया निरवचया काल अवल्किाके अस० भाग कहा है यह परकायापेक्षा है स्वकायका विरह नहीं है।

सव भते सेव भते तमेव सचम्।

थोकडा नं० ११७

श्री पन्नवणासूत्र पद १४

(कपायपद)

जिन महात्माओंने चतुर्गती रूप घोर ससारको तैरके परम पदको प्राप्त किया है वे सब इस कपायके स्वरूपको समझके और इसका परित्याग करके ही अक्षय सुख [मोक्ष पद] को प्राप्त हुए हैं। विना इसके परित्याग किये अक्षय सुखकी प्राप्ति कदापि नहीं हो सकी इस लिये पहिले इसको यथावत् समझे और फिर उसका त्याग करें।

कषाय चार प्रकारका है-क्रोध, मान, माया और लोभ जिसमें पहिले एक क्रोधकी व्याख्या करते हैं। क्रोधकी उत्पत्ती चार कारणोंसे होती है यथा।

[१] अपने लिये [स्वकाय] [२] परके लिये [कुटुम्बादि]
[३ दोनोंके लिये [स्वपर] [४] निरर्थक [विना कारण]

और भी क्रोधके उत्पत्तीका चार कारण कहे हैं यथा।

[१] शरीरके लिये। [२] उपाधी-धनधान्यादि वस्तुके लिये। [३]क्षेत्र-जगा-जमीनादिके लिये। [४]वत्थु-बागबगीचा खेती आदिके लिये।

क्रोध चार प्रकारका है।

[१] अनन्तानुबंधी-पत्थरकी रेखा सदृश।
[२] अप्रत्याख्यानी-तलावके मट्टीकी रेखा सदृश।
[३] प्रत्याख्यानी-गाडीके पहियेकी लकीर सदृश।
[४] सज्वल-पानीकी लकीर सदृश।

और भी क्रोध चार प्रकारका कहा है।

[१] उपशान्त-उपशमा हुवा। [२] अनोपशान्त-उदयमे वर्तता।
[३] आभोग-जानता हुवा। [४] अनाभोग-अनजानता हुवा।

एवं सोलह प्रकारका क्रोध समुच्चयजीव करे। इसी माफक २४ दंडकके जीवों करें। इस लिये १६ का २५ गुणा करनेसे ४०० भागे हुवे।

एक जीव क्रोध करनेसे भूत कालमे आठों कर्मोंके पुद्गल एकत्रित[1] किये। वर्तमानमें करते है[2]। और भविष्यमें[3] करेंगे। एव विशेषकर कर्म पुद्गलोंको एकत्रितकर बन्ध सामग्री योग्य[4] किया, [5]करे और [6]करेंगे, इसी तरह क्रोध करके आठों कर्म बान्धया बाधे, [3]बाधसी,-उदीरीया उदीरे, [3]उदीरसी-वेदीया, वेदे, [3]वेदसी-और निजरीया, निर्जरे, [3]निर्जरसी एव एक जीवा जीव क्रोधके १८ भागे हुवे। इसी तरहे घणा जीवाश्रय भी १८ कुल ३६ यह समुचय जीवाश्रय कहा। इसी माफक २४ दडकमें भी ३६-३६ भाग लगानेसे २५ को ३६ गुणा करनेसे ९०० और पूर्वके ४०० एव १३०० भागे हुवे इसी तरह मान, माया, लोभके लगा नेसे १३ ० को चारगुण कुल ५२ भागे हुवे।

सेव भते सेव भते तमेव सचम्।

—⁂—

थोकडा न ११८

—•—

श्री भगवती सूत्र श० १ उ० ५।

(नाप)

स्थिति ४ [3]अवगाहना ४ शरीर ५ सन्नन ६ सस्थान ६ लेश्या ६ दृष्टी ३ ज्ञान ८ योग ३ उपयोग २ एव ४७ बोल जिसमें नारकी आदि २४ दडकमें कितने कितने बाल मिले वह यंत्र द्वारा दिखाते है—

मार्गणा	बोल	स्थि ४	अ ४	श ५	स ६	स ६	ले ६	द ३	ना ८	यो ३	उ २
नारकीमें	२९	४	४	३	०	१	३	३	६	३	२
भुवन व्यन्तर	३०	४	४	३	०	१	४	३	६	३	२
ज्यो यावत् अच्युत दे०	२७	४	४	३	०	१	१	३	६	३	२
ग्रौग्रैवक वै०	२६	४	४	३	०	१	१	२	६	३	२
अनुत्तर वैमान	२२	४	४	३	०	१	१	१	३	३	२
पृ० पा० वना०	२३	४	४	३	१	१	४	१	२	१	२
तेउ० वाउ०	२२	४	४	३	१	१	३	१	२	१	२
विकलेन्द्रिय	२६	४	४	३	१	१	३	२	४	२	२
तीयच पचेन्द्रिय	४८	४	४	४	६	६	६	३	६	३	२
मनुष्यमें	४७	४	४	५	६	६	६	३	८	३	२

१ स्थितिके चार भेद है—यथा [१] जघन्य स्थिति [२] जघन्य स्थितिसे एक समय दो समय तीन समय यावत् संख्याते समय अधिक [३] संख्याते समयसे एक समय अधिक यावत् असंख्यात समय अधिक [४] उत्कृष्ट स्थिति।

२ अवगाहनाके चार भेद है यथा—[१] जघन्य अवगाहना [२] जघन्य अवगाहनासे एक दो तीन यावत् संख्याते प्रदेश अधिक [ ] संख्यातेसे एक दो तीन यावत् असंख्याते प्रदेश अधिक ४] उत्कृष्ट अवगाहना।

शेष सात द्वारोंके बोल सुगम है देखो लघुदंडकमें।

नारकीमें बोल पावे २९ जीसकी स्थितिके चार भेद हैं जिसमेंसे दुसरा भेद और अवगाहनाके दुसरे तीसरे भेद और मिश्र दृष्टी इन चार बोलोंमें क्रोधी मानी मायी लोभी इन चारों कषायके ८० भांग होते है। शेष २५ बोलोंमें क्रोधादि चार कषायके २७ भांग होते है। ये दोनों प्रकारके भांगे नीचे लीखे यंत्रसे समझना।

८० भागोंकी स्थापना

असयोगी ८ भागा द्विसयोगी २४ भागा, त्रिकसयोगी ३२ भागा, चार संयोगी १६ भागा, एवं ८० भागा।

असयोगी ८ यथा-क्रोधीपक, मानीपक मायीपक, लोभीपक, क्रोधीघणा, मानीघणा, मायीघणा, लोभीघणा।

द्विसयोगी भागा २४

क्रो	मा	क्रो	मा	क्रो	लो	मा	मा	मा	लो	मा	लो
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
१	३	१	३	१	३	१	३	१	३	१	३
३	१	३	१	३	१	३	१	३	१	३	१
३	३	३	३	२	३	३	३	३	३	३	३

तीन सयोगी भागा ३२

क्रो	मा	मा	क्रो	मा	लो	क्रो	मा	लो	मा	मा	लो
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
१	१	३	१	१	३	१	१	३	१	१	३
१	३	१	१	३	१	१	३	१	१	३	१
१	३	३	१	३	३	१	३	३	१	३	३
३	१	१	३	१	१	३	१	१	३	१	१
३	१	३	३	१	३	३	१	३	३	१	३
३	३	१	३	३	१	३	३	१	३	३	१
३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३

चार संयोगी भांगा १६

क्रो	मा	मा	लो	क्रो	मा	मा	लो
१	१	१	१	३	१	१	१
१	१	१	३	३	१	१	३
१	१	३	१	३	१	३	१
१	१	३	३	३	१	३	३
१	३	१	१	३	३	१	१
१	३	१	३	३	३	१	३
१	३	३	१	३	३	३	१
१	३	३	३	३	३	३	३

एवं ८० भांगे। अथ २७ भांगोंकी स्थापना नीचे लिखते है यथा-[१] क्रोधके इत्यस्तमें मास्वते मिलते हैं। [२] क्रोधका घणा और मानका एक [३] क्रोधका घणा और मानका घणा एव दो मायाके और दो लोभके एव ७ असंयोगी द्विसंयोगी भांगे हुये, और तीन संयोगीके १२ भांगे। यथासे।

क्रो॰	मा॰	मा॰	क्रो॰	मा॰	लो॰	क्रो॰	मा॰	लो॰
३	१	१	३	१	१	३	१	१
३	१	३	३	१	३	३	१	३
३	३	१	३	३	१	३	३	१
३	३	३	३	३	३	३	३	३

चार सयोगी भागा ८

क्रो०	मा०	मा०	लो०	क्रो०	मा०	मा०	लो०
३	१	१	१	३	३	१	१
३	१	१	३	३	३	१	३
३	१	३	१	३	३	३	१
३	१	३	३	३	३	३	३

देवतामें भुवनपतीसे यावत् बारहवें देवलोक तक अपने २ बोलोंसे चार २ बोल [नारकीवत्] में भाग ८० शेष बोलमें भाग २७ है। जिसकी स्थापना उपरवत्। परन्तु नारकीके २७ भागोंमें क्रोधी सास्वते बहुवचन कहे हैं यहा देवतामें लोभी बहुवचन सास्वता कहना। एव नौ ग्रैवेयक और पंचानुत्तर वैमानमें तीन बोल (मिश्रदृष्टी वजके) में भागा ८० शेष बोलोंमें भागा २७ कहना।

पृथ्वी, पानी, वनस्पतिमें बोल २३ जिसमें तेजूलेशीमें भागा ८० शेष बोल २२ तथा तेउ वायुके २२ बोलोंमें अभग है। याने चारों कषायवाले जीव हरसमय असख्यात मिलते है।

तीन विकलेन्द्रियमें बोल २६ जिसमें [१] स्थितिका दूसरा बोल। [२] अवगाहनाका दूसरा बोल [३] मतिज्ञान [४] श्रुतिज्ञान। [५] सम्यक्त्वदृष्टी इन पाचों बालोंमें भागा ८० शेष बोलोंमें अभंग। तीर्यंच पचेन्द्रिय नारकीवत् चार बोलोंमें भागा ८० शेष बोलोंमें अभंग। मनुष्यमें बोल ४७ जिसमें दो स्थितिका दूजो तीजो बोल दो अवगाहनाका दूजो तीजो बोल आहारिक शरीर, और मिश्रदृष्टी इन छे बोलोंमें ८० भागा शेष बोलोंमें अभंग।

सेवभंते सेवभंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नं० ११६

श्री पन्नवणा सूत्र पद १५।

(इन्द्रिय)

संसारी जीवोंके इन्द्रिय दो प्रकारकी है—एक द्रव्येन्द्रिय और दूसरी भावेन्द्रिय द्रव्येन्द्रियद्वारा पुद्गलोंको ग्रहण करते हैं-जैसे कर्णेन्द्रियद्वारा पुद्गलोंको ग्रहण किया और वे पुद्गल इष्ट अनिष्ट होनेसे रागद्वेष होना यह भावेन्द्रिय हैं। अर्थात् द्रव्येन्द्रिय कारण हैं और भावेन्द्रिय कार्य है। यहा पर द्रव्येन्द्रियका ही अधिकार १८ द्वार करके लिखेंगे।

[१] नामद्वार—श्रोतेन्द्रिय, चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, रसेन्द्रिय, स्पर्शेन्द्रिय।

[२] संस्थानद्वार— श्रोतेन्द्रियका संस्थान कदम्ब वृक्ष के पुष्पाकार, चक्षुइन्द्रियका चन्द्र या मसूरकी दालके आकार, घ्राणेन्द्रिय लोहारकी धमणाकार, रसेन्द्रिय छुरपलाके आकार और स्पर्शेन्द्रिय नानाकार।

[३] जाडपना द्वार—प्रत्येक इन्द्रिय जघन्य और उत्कृष्ट अंगुलके असंख्य भाग जाडी है। यहा पर इतना अवश्य समझना चाहिये कि इन्द्रिय और इन्द्रियके उपगरण जैसे श्रोतेन्द्रिय अंगुलके असंख्यातमें भाग है और कान शरीर प्रमाण होते हैं। कानको उपगरण इन्द्रिय कहते हैं और जो पुद्गल ग्रहण किया जाता है यह इन्द्रिय द्वार उसीका यहा जाडपना बतलाता है।

[४] लम्बापनाद्वार—रसेन्द्रिय ज० अंगुलके असंख्या-

तमें भाग उ० प्रत्येक अगुलकी है। शेष चारोन्द्रिय अ० उ० अगुल के असंख्यातमें भाग है भावना तीजे द्वारकी माफक समझना।

[५] अवगाहाद्वार—एकेकेन्द्रिय असंख्याते २ आकाश प्रदेश अवगाहा है। जिसकी तरतमता दिखानेके लिये अल्पा बहुत्व कहते है।

[१] सर्वस्तोक चक्षु इन्द्रिय अवगाहा [२] श्रोतेन्द्रिय अ० सख्यातगुणा। [३] घ्राणेन्द्रिय अ० स० गुणा। [४] रसेन्द्रिय अ० अस० गुणा। [५] स्पर्शन्द्रिय अ० स गुणा।

[६] पुद्गल लागाद्वार—एकेकेन्द्रियके अनन्ते अनन्ते पुद्गल लागा है। जिसकी अल्पाबहुत्व [१] चक्षु इन्द्रिय लागा, सबसे स्तोक [२] श्रोतेन्द्रिय लागा स० गुणा। [३] घ्राणेन्द्रिय लागा स० गु० [४] रसेन्द्रिय लागा अस गु० [५] स्पर्शेन्द्रिय लागा स० गु०

[७] अवगाहा लागाकी—सामल अल्पाबहुत्व-[१] चक्षु इन्द्रिय अवगाहा सबसे स्तोक [२] श्रोतेन्द्रिय अ० स गु० [३] घ्राणेन्द्रिय अ० स० गु० [४] रसेन्द्रिय अ अस० गु० [५] स्पर्शेन्द्रिय अ० स० गु० [६] चक्षु इन्द्रिय लागा० अनं० गु० [७] श्रोतेन्द्रिय लागा स० गु० [८] घ्राणेन्द्रिय लागा स० गु० [९] रसेन्द्रिय लागा अस० गु० [१०] स्पर्शेन्द्रिय लागा स गु०

[८] कक्खडा [कर्कश] गुरुवा [भारी] द्वार—एकेके न्द्रियके अनन्ते अनन्ते पुद्गल लागा है। जिसकी अल्पाबहुत्व [१] सबसे स्तोक लागा चक्षु इन्द्रियके [२] श्रोतेन्द्रियके अनन्त गु० [३] घ्राणेन्द्रियके अनन्त गु० [४] रसेन्द्रियके अन न्त गु० [५] स्पर्शेन्द्रियके अनन्त गु०

[९] लहुया [हलका] मउया [कोमल] द्वार—एके

यके अनन्ते २ पुद्गल लागा हैं। जिसकी अल्पाबहुत्व [१]
स्तोक स्पर्शेन्द्रियके लागा [२] रसेन्द्रियके लागा अनन्त
३] घ्राणेन्द्रियके लागा अनन्त गु० [४] श्रोतेन्द्रियके लागा
त गु० [५] चक्षुइन्द्रियके लागा अनन्त गुणा।

[१०] आठवा नौवा बोलकी सामील अल्पाबहुत्व—

] सबसे स्तोक चक्षु इन्द्रियके कक्खड़ा गुरुवा पुद्गलों लागा
श्रोतेन्द्रियके कक्खड़ा गुरुवा लागा अनन्त गु०
घ्राणेन्द्रियके „ „ „ „
रसेन्द्रियके „ „ „ „
स्पर्शेन्द्रियके „ „ „ „
„ लहुया मउया लागा „
रसेन्द्रियके „ „ „ „
घ्राणेन्द्रियके „ „ „ „
श्रोतेन्द्रियके „ „ „ „
) चक्षुन्द्रियके „ „ „ „

(११) जघन्य उपयोगका कालद्वार—

) सबसे स्तोक चक्षु इन्द्रियका ज० उप० काल
) श्रोतेन्द्रियका ज० उप० काल विशेषाधिक
) घ्राणेन्द्रियका ज० उप० काल „
) रसेन्द्रियका „ „ „ „
) स्पर्शेन्द्रियका „ „ „ „

(१२) उत्कृष्टा उपयोगकि अल्पा० जघन्यवत्

(१३) जघन्य उत्कृष्टा उपयोग कालद्वार अल्पा०

) चक्षु इन्द्रियका जघन्य उपयोग काल स्तोक
) श्रोतेन्द्रियका „ „ „ वि०

(३) घ्राणेन्द्रियका ,, ,, ,, वि०
(४) रसेन्द्रियका , ,, , वि०
(५) स्पर्शेन्द्रियका , ,, , वि०
(६) चक्षुन्द्रियका उत्कृष्ट ,, ,, वि०
(७) श्रोतेन्द्रियका ,, ,, वि०
(८) घ्राणेन्द्रियका ,, , ,, वि०
(९) रसेन्द्रियका ,, ,, , वि०
(१०) स्पर्शेन्द्रियका ,, ,, ,, वि०

(१४) विषयद्वार यन्त्र ।

मार्गणा	स्पर्शेन्द्रिय	रसेन्द्रिय	घ्राणेन्द्रिय	चक्षुन्द्रिय	श्रोतेंद्रिय
एकेन्द्रिय	४००ध०	०	०	०	०
बेरिन्द्रिय	८००ध०	६४ध०	०	०	०
तेरिन्द्रिय	१६००ध०	१२८ध०	१००ध०	०	०
चौरिन्द्रिय	३२००ध०	२५६ध०	२० ध०	२९५४ध०	०
असन्नी प०	६४००ध०	५१२ध०	४००ध०	५९०८ध०	१ योजन
सन्नीपचेंद्रि	९ योजन	९ योजन	९ योजन	लक्ष्यो० साधि	१२योजन

(१५) अल्पा बहुत्व द्वार

(१) श्रोतेन्द्रिय सबसे स्तोक
(२) चक्षुन्द्रिय विशेषाधिक
(३) घ्राणेन्द्रिय विशेषाधिक
(४) रसेन्द्रिय विशेषाधिक
(५) स्पर्शेन्द्रिय अनतगु०

सेवंभते सेवंभत तमेव सचम् ।

थोकडा नं १२०

सूत्र श्री पन्नवणा पद २० तथा नन्दी सूत्र

(सिद्ध द्वार)

कौनसे २ स्थानसे आये हुए एक समयमें कितने २ जीव सिद्ध होते हैं यह इस थोकडे द्वारा कहेंगे। सर्व स्थान पर उत्कृष्ट पद समझना और जघन्य पद एक समय एक भी सिद्ध होता है।

संख्या	मार्गणा	
१	नरक गतिसे निकले हुए एक समयमें १० सिद्ध होते हैं।	
२	तिर्यंच ,,	१०
३	मनुष्य	२०
४	देवगति ,	१०८
५	पहिली नरक ,,	१
६	दूसरी ,	१०
७	तीसरी ,	१०
८	चौथी ,	४
९	भवनपति ,,	१०
१०	देवी ,	५
११	वाण व्यंतर ,,	१०
१२	देवी ,,	५
१३	ज्योतिषी ,,	१
१४	देवी ,	२०

संख्या	मार्गणा	
१५	वैमानिक ,,	१०८
१६	देवी ,	२०
१७	पृथ्वीकाय ,,	४
१८	अप्पकाय ,,	४
१९	वनस्पतिकाय ,,	६
२०	तिर्यंच पचेन्द्रिय ,	१०
२१	तिर्यंचणी ,,	१
२२	मनुष्य	१०
२३	मनुष्यणी ,	२०
२४	पुरुष मर पुरुष हो	१०८
५	पुरुष मर स्त्री हो	१०
२६	पुरुष मर नपुंसक हो	१०
२७	स्त्री मर पुरुष हो	१०
२८	स्त्री मर स्त्री हो ,,	१०
२९	स्त्री मर नपुंसक हो	१०

३० नपुसक मर पुरुप हो १०
३१ नपुसक मर स्त्री हो १०
३२ नपुसक मर नपुंसक हो १०
३३ तीर्थमें १०८
३४ अतीर्थमें , १०
३५ तिर्थंकर ४
३६ अतिर्थंकर १०८
३७ स्वयबुद्ध १०
३८ प्रत्येक बुद्ध ४
३९ बुद्ध बोधिता १०८
४० पुरुपलिङ्ग १०८
४१ स्त्रीलिङ्ग , २०
४२ नपुसकलिंग १०
४३ स्वलिङ्गी १०८
४४ अन्यलिङ्गी १०
४५ गृहलिङ्गी ४
४६ पक समयमें १
४७ पक समयमें , १०८
४८ उतरतो काल १ २ आरो १
४९ , ३-४ आरो १०८
५० , ५-६ आरो १०
५१ चढतो काल १ २ आरो १०
५२ , ३-४ आरो १०८
५३ ५ आरो २०
५४ , ६ आरो १०
५५ जघन्य अवगाहना ४
५६ मध्यम ,, १०८
५७ उत्कृष्ट २
५८ नीचे लोक , २०
५९ ऊंचे लोक ' ४
६० तिर्छालोक ' १०८
६१ समुद्रमें ,, २
६२ द्वीप जलमें ,, ३
६३ विजयमें ,, २०
६४ भद्रसालवन ' ४
६५ नन्दनवन ,, ४
६६ सुदर्शनवन ,, ४
६७ पाण्डुकवन ' ३
६८ भरतक्षेत्र ,, १०८
६९ पेरवत क्षेत्र ' १०८
७० पूर्व पश्चिम विदेह ,, १०८
७१ कर्मभूमि ' १०८
७२ अकर्मभूमि ,, १०
७३ सामायिक चारित्र ' १०८
७४ छेदोपस्थानीय ' १०
७५ परिहार विशुद्धि ,, १०
७६ सूक्ष्म संपराय ' १०८
७७ यथाख्यात ,, १०८

७८ सा० छे० य० " १ ८
७९ सा० सू० य० " १०८
८० सा० प० य० सू० " १ ८
८१ सा० छे० सू० य० " १०
८२ मति श्रुत ४
८३ मति, श्रुति, अवधि ' १०
८४ मति, श्रुति, मन पर्यव ,, १०
८५ मति, श्रुति, अवधि, मन , १०८
८६ अनन्तकाल पडियाई , १०८
८७ असंख्या कालके पडिवाई ,, १०
८८ संख्याते कालक पडिवाई ,, १०
८९ अपडिवाई ,, ४
९० उपशम श्रेणिसे आये हुवे ,, ५४
९१ क्षपक श्रेणिसे आये हुवे ,, १०८
९२ असोचा केवली , १०
९३ एक समयसे आठ समय तक , ३२
९४ एक समयसे सात समय तक ,, ४८
९५ एक समयसे छे समय तक ,, ६०
९६ एक समयसे पाच समय तक ,, ७२
९७ एक समयसे चार समय तक , ८४
९८ एक समयसे तीन समय तक ,, ९६
९९ एक समयसे दो समय तक ,, १०
१०० एक समय निरतर ,, १०८
१०१ सान्तर ,, १०८

सेवभंते सेवभंते तमेव सच्चम् ।

—✻—

थोकडा न १२१

वहु सूत्र।

(कालका अल्पा वहुत्व)

१ स्तोक एक समयका काल
२ वैक्रिय शरीरका सर्व बन्धका उत्कृष्ट काल संख्यात गुणा
३ सयोगी केवली आहारिक काल विशेषा०
४ स्थावर जीवोंकी विग्रह गतीका काल विशेषा
५ केवली समुद्घात आहारिकका „ „
६ केवली समुद्घात मध्य काल „ „
७ छद्मस्थ केवलीके अवस्थित „ „
८ केवली समुद्घातका „ „
९ परमाणु पुद्गल कम्पमानका „ असंख्यात गुणा
१० आवलिकाका „ „
११ जघन्य आयु बन्धका „ संख्यात गुणा
१२ उत्कृष्ट आयु बन्धका „ „
१३ पंचेन्द्रिय अपर्याप्ता के जघन्य बन्धका „ „
१४ „ „ उत्कृष्ट „ „
१५ „ पर्याप्ता जघन्य „ „
१६ निगोदका जघन्य „ „ „
१७ तसकायका विरह „ „ सख्या
१८ बेइन्द्रियका अपर्याप्ताका जघन्य „ „ „
१९ „ „ उत्कृष्ट „ „ वि०
२० बेइन्द्रियके पर्याप्ताका जघन्य „ „ „
२१ तेइन्द्रियके अपर्याप्ताका जघन्य „ „ „

२२ ,, ,, उत्कृष्ट ,, ,, ,,

२३ पर्याप्ता जघन्य ,, ,, ,,

२४ चौरेन्द्रियके अपर्याप्ताका जघन्य ,, , ,

२५ , ,, उत्कृष्ट , ,, ,,

२६ ,, पर्याप्ता जघन्य , ,, ,,

२७ पचेन्द्रियके अपर्याप्ताका जघन्य ,, , ,

२८ , , उत्कृष्ट ,, ,, ,,

२९ ,, पर्याप्ता जघन्य , ,

३० उत्कृष्ट अन्तर मुहूर्तका ,, ,,

३१ मुहूर्तका ,, ,,

३२ चारों गतिका विरह , सख्यातगुणा

३३ उत्कृष्ट दिनमानका , वि०

३४ असज्ञी मनुष्यका विरह , ,,

३५ अहोरात्रिका ,, ,,

३६ तेऊकायका भवस्थितिका ,, सख्यातगुणा

३७ दूसरी नारकीका विरह , ,,

३८ तीसरे देवलोकका विरह , वि०

३९ चौथे ,, ,, , ,,

४० तीसरी नारकीका विरह ,

४१ पाचमें देवलोकका ,, ,,

४२ नक्षत्र मासका , ,

४३ चौथी नारकीका विरह , ,

४४ छट्ठे देवलोकका , ,, ,

४५ असज्ञि मनुष्यका अवस्थित , ,,

४६ तेइन्द्रियकी भवस्थितिका ,, ,,

४७ ऋतुका ,, ,

४८ हरिवश क्षेत्र युगल मरक्षण ,, ,,

४९ हेमवय क्षेत्र युगल				
५० सातमें देवलोकका विरह				
५१ छठ्ठे देवलोकका अवस्थित				,
५२ छठ्ठी नारकीका विरह			,	
५३ सातमें देवलोकका अवस्थित				,
५४ अयनका				
५५ छठ्ठी नारकीका अवस्थित				
५६ सवत्सरका				
५७ युगका				
५८ तिर्यचनीका उ० गर्भस्थिति			,	
५९ बेइन्द्रिकी भवस्थिति० उ०			,	
६० तिर्थंकरोंकी जघन्य स्थिति				,
६१ वायुकायकी उ० भवस्थिति			,	स
६२ अप्पकायकी			,	
६३ वनस्पतिकी ,				वि
६४ पृथ्वीकायकी ,,	,,		,,	सख्या०
६५ भुजपरिसर्पकी	,,	,	,,	विशे०
६६ उरपरिसर्पकी	,,	,,	,,	वि०
६७ खेचरकी	,,	,,	,	,,
६८ थलचरकी	,	,,	,	,,
६९ पूर्वका	,,	,,	,,	,,
७० तिर्थंकरोंकी	उ० स्थिति		,,	,
७१ सयतीकी	,	,,	,,	,,
७२ जलचरकी	,,	,,	,,	,
७३ छप्पन अन्तरद्वीपोंकी स्थिति			,,	सख्या
७४ उद्धार पल्योपमके सख्यातमे भागका ,,				अस०
७५ उद्धार पल्योपमका				

७६ उद्धार सागरोपमका	,	,
७७ जघन्य अर्द्धा पल्योपमके असंख्यातमे भागका अ०		
७८ उत्कृष्ट अर्द्धा पल्योपमके ,	,	,
७९ अर्द्धा पल्योपमका		
८० मनुष्य तिर्यंचकी स्थिति	काल	म०
८१ अर्द्धा सागरोपमका	"	अ०
८२ देवता नारकीकी स्थिति	,	स०
८३ कालचक्रका	"	,
८४ क्षेत्र पल्योपमका	"	"
८५ क्षेत्र सागरोपमका	"	"
८६ तेउकायकी कायस्थितिका	"	अ०
८७ वायुकायकी कायस्थितिका	"	वि०
८८ अप्पकायकी कायस्थितिका	"	"
८९ पृथिवीकायकी कायस्थितिका	"	,
९० कार्मण पुद्गल परावर्तका	"	अ० गुणा
९१ तेजस "	"	,
९२ औदारिक "	"	"
९३ श्वासोश्वास ,	"	,
९४ मन	,	"
९५ वचन "	"	"
९६ वैक्रिय "	,	,
९७ वनस्पतिकायकी कायस्थितिका	"	,
९८ अतीतकालका	"	,
९९ अनागत कालका	,	वि०
१०० सर्वकालका	"	,

सेवभंते सेवभंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नं० १२२

सूत्र श्री अनुयोग द्वार ।

(छे भाग)

भाव ६ प्रकारका है यथा (१) उदय भाव (२) उपशम भाव (३) क्षायक भाव (४) क्षयोपशम भाव ५) परिणामिक भाव (६) सन्निपातिक भाव।

(१) उदयभावके दो भेद हैं उदय (२) उदय निष्पन्न जिसमें उदय तो आठ कर्मोंका और उदय निष्पन्नके २ भेद हैं (१) जीव उदय निष्पन्न (२) अजीव उदय निष्पन्न, जिसमें जीव उदय निष्पन्नके ३३ बोल हैं-गति ४ नरक तिर्यञ्च मनुष्य देवता। काय ६ पृथिवीकाय अप्काय तेऊकाय वायुकाय, वनस्पतिकाय त्रसकाय, कषाय ४ क्रोध, मान, माया, लोभ, लेश्या ६ कृष्ण, नील कापोत तेजो पद्म शुक्ल वेद ३ स्त्रीवेद पुरुषवेद नपुंसकवेद मिथ्यात्वी, अव्रति अज्ञानी असन्नि आहारिक संसारिक छद्मस्थ सयोगी अकेवली असिद्ध एवम् ३३ *
(२) अजीव उदय निष्पन्नके ३० बोल पांच शरीर औदारिक वैक्रिय आहारिक तेजस, कार्मण और पांच शरीरोंमें प्रणमें हुए पुद्गल एवम् १० और वर्ण ५ गन्ध २ रस ५ स्पर्श ८ सब मिलकर तीस बोल हुए।

---

* जीव उदय निष्पन्नके ३३ बोल हैं जिसमें अज्ञान छद्मस्थ, अकेवली असिद्ध यह ४ बोल ज्ञानावरणीय कर्मके उदय हैं। आहारिक वेदनी कर्मका उदय है। तीन वेद चार कषाय अव्रत मिथ्यात्व यह नव बोल मोहनीय कर्मके उदय है। शेष १९ बोल नाम कर्मके उदय है।

(२) उपशम भावके दो भेद हैं (१) उपशम (२) उपशम निष्पन्न जिसमें उपशम तो मोहिनी कर्मका और उपशम निष्प न्नके अनेक भेद हैं उपशम क्रोध, उ० मान उ० माया, उ० लोभ, उ० राग, उ० द्वेष उ० चारित्र मोहिनी, उ० दर्शन मोहिनी, उ० सम्यक्त्व लब्धी उ० चारित्र लब्धी, छद्मस्थ कषाय वीतराग इत्यादि।

(३) क्षायक भाव—क्षायक भावके दो भेद हैं (१) क्षायक (२) क्षायक निष्पन्न जिसमें क्षायक तो आठ कर्मोंका क्षय और क्षायक निष्पन्नके ३१ भेद हैं यथा।

(१) ज्ञानावर्णीकी पाच प्रकृति क्षय होनेसे अनन्त केवल ज्ञानकी प्राप्ति होती है। (२) दर्शनावर्णीकी नौ प्रकृति क्षय होनेसे अनन्त केवल दर्शनकी प्राप्ति होती है। (३) वेदनीयकी दो प्रकृति क्षय होनेसे अनन्त अव्याबाध गुणकी प्राप्ति होती है। (४) मोह-नीयकी दो प्रकृति क्षय होनेसे अनन्त क्षायिक समकित गुणकी प्राप्ति होती है। (५) आयुष्यकी चार प्रकृति क्षय होनेसे अनन्त अवगाहना गुणकी प्राप्ति होती है। (६ नामकर्मकी दो प्रकृति होनेसे अनन्त अमूर्त्ति गुण प्राप्त होता है। (७) गोत्रकर्मकी दो प्रकृति क्षय होनेस अनन्त अगुरु लघु गुणकी प्राप्ति होती है। (८) अंतरायकी पाच प्रकृति क्षय होनेसे अनन्त वीर्य गुणकी प्राप्ति होती है। ५। ९। २। २। ४। २। २। ५। एव ३१।

(४) क्षयोपशम भावके दो भेद हैं,—क्षयोपशम और क्षयो पशम निष्पन्न। क्षयोपशम तो चार कर्मोंका (ज्ञानावरणीय, दर्शना वरणीय मोहिनीय, अंतराय) और क्षयोपशम निष्पन्नके ३२ भेद है यथा ज्ञानावरणीय कर्मका क्षयोपशम होनेसे मति ज्ञान, श्रुति ज्ञान, अवधि ज्ञान, मन पर्यव ज्ञान, और आगमका पठन, पाठन तथा मति अज्ञान, श्रुति अज्ञान, विभंग ज्ञान, एव आठ बोलकी

प्राप्ति होती है। दर्शनावरणीय कर्मके क्षयोपशमसे श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, रसेन्द्रिय स्पर्शेन्द्रिय चक्षुदर्शन अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन, एवम् आठ बोलकी प्राप्ति होती है। मोहनीय कर्मके क्षयोपशमसे पांच चारित्र और तीन दृष्टि एवम् आठ बोलकी प्राप्ति होती है। अंतराय कर्मके क्षयोपशमसे दानलब्धि, लाभलब्धि, भोगलब्धि, उपभोगलब्धि और वीर्यलब्धि, बाल लब्धि, पंडितलब्धि और बालपंडित लब्धि एवम् आठ बोलोंकी प्राप्ति होती है एवम् चार कर्मोंके ३२ बोल हुए।

(५) परिणामिक भावके दो भेद हैं (१) सादि परिणामिक (२) अनादि परिणामिक। सादि परिणामिकके अनेक भेद हैं यथा पुराणा गुड पुराणा मदिरा, अभ्रत घृतादि तथा पुराणा ग्राम नगर, पुर, पाटण, यावत् राजधानी इत्यादि जिस वस्तुकी आदि है कि अमुक दिनसे इस रूपपणे बनी है और जिसका अंत भी है (२) अनादि परिणामिकके दश भेद। धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय, जीवास्तिकाय और काल द्रव्य तथा लोक, अलोक, भव्य, अभव्य, एवम् दस बोल।

(६) सन्निपातिक भाव—जो कि उपर पांच भाव कह आये हैं जिसके भांगे २६ नीचे यन्त्रमें लिखते हैं—

द्विक संयोगी भांगा १०

१ उदय-उपशम	६ उपशम-क्षयोपशम
२ उदय-क्षायिक	७ उपशम-परिणामिक
३ उदय-क्षयोपशम	८ क्षायिक-क्षयोपशम
४ उदय-परिणामिक	९ क्षायिक-परिणामिक
५ उपशम-क्षायिक	१० क्षयोपशम-परिणामिक

त्रिक संयोगी भांगा १०

१ उदय-उपशम क्षायिक
२ उदय-उपशम-क्षयोपशम
३ उदय-उपशम-परिणामिक
४ उदय-क्षायिक-क्षयोपशम
५ उदय-क्षायिक-परिणामिक
६ उदय-क्षयोपशम-परिणामिक
७ उपशम-क्षायिक-क्षयोपशम
८ उपशम-क्षायिक-परिणामिक
९ उपशम-क्षयोपशम-परिणामिक
१० क्षायिक-क्षयोपशम-परिणामिक

चतुष्क संयोगी भांगा ५

१ उदय-उपशम-क्षायिक-क्षयोपशम
२ उदय-उपशम-क्षायिक-परिणामिक
३ उदय-उपशम-क्षयोपशम-परिणामिक
४ उदय-क्षायिक-क्षयोपशम-परिणामिक
५ उपशम-क्षायिक-क्षयोपशम-परिणामिक

पञ्च संयोगी भांगा १

(१) उदय, उपशम, क्षायिक, क्षयोपशम परिणामिक, एवम् भांगा २६ है जिसमें भांगा बीस तो सून्य केवल प्ररूपणा मात्र है शेष भांगा ६ के स्वामी नीचे लिखते हैं—

(१) द्वीक संयोगी भांगो नवमो सिद्धोंमें मिले क्षायिक परिणामिक, कारण परिणामिक जीव और क्षायिक समकित।

(२) त्रिक संयोगी भांगा पांचमो " उदय क्षायिक परिणामिक " मनुष्य केवलीमें उदय मनुष्य गतिको क्षायिक समकित परिणामिक जीव।

(३) त्रिक संयोगी भांगो छट्ठो " उदय क्षयोपशम परिणामिक " उदय गतिको क्षयोपशम इन्द्रियोंका परिणामिक जीव चारों गतिमें पावे।

(४) चतुष्क संयोगी भागो तीजो "उदय उपशम क्षोपाशम प रिणामिक" उदय गतिका उपशम मोहका क्षयोपशम इन्द्रियोंका परिणामिक जीव चारों गतिमें तथा इग्यारहमें गुणस्थानमें पावे।

(५) चतुष्क संयोगी भागो चोथो "उदय क्षायिक क्षयोप शम परिणामिक" उदय गतिका क्षायिक मोहका क्षयोपशम इन्द्रि योंका परिणामिक जीव चारों गतिमें तथा बारमे गुणस्थानमें पावे।

(६) पञ्च संयोगी एक भागो क्षायिक समकितवाले जीव उपशम श्रेणी चढते हुएमें उदय गतिका उपशम मोहका क्षायिक समकित क्षयोपशम इन्द्रियोंका परिणामिक जीव इति।

॥ सेवंभते सेवंभते तमेव सच्चम् ॥

—•{◎}•—

थोकडा नं० १२३

सूत्र श्री भगवती शतक २० उद्देशो १०

(१) हे भगवान जीव [1]सोपक्रम आयुष्यवाला है या निरु पक्रम आयुष्यवाला है? या दानों प्रकारके आयुष्यवाले जीव हैं।

नारकी आदि २४ दण्डकके जीवोंकी पृच्छा? नारकी, देवता, युगल मनुष्य, तिर्थंकर, चक्रवर्ति, वासुदेव, बलदेव प्रतिवासुदेव इनोंका आयुष्य निरुपक्रमी होते हैं शेष सब जीवोंका आयुष्य सोपक्रमी निरुपक्रमी दोनों प्रकार होता है।

[1] सात कारणोंसे आयुष्य टुटता है उसे सोपक्रमी आयुष्य कहते हैं। यथा— जल अग्नि विष, शस्त्र, अति हर्ष शोक भय ज्यादा चलना ज्यादा भोजन करना मैथुनादि अध्यवसायके गम्च हानम।

(२) नारकी स्व उपक्रमसे उत्पन्न होते हैं ? पर उपक्रमसे ? विगर उपक्रमसे ? नारकी स्व उपक्रम (स्वहस्तसे शस्त्रादि) से भी और पर उपक्रमसे भी तथा निरुपक्रमसे भी उत्पन्न होता है। भावार्थ—मनुष्य तिर्यंचमें रहे हुये जीव नरकका आयुष्य बान्धा है मरती वखत स्वहस्तसे या पर हस्तसे मरे तथा विगर उपक्रम याने पूर्ण आयुष्यसे मरे। एवम् यावत् २४ दंडक समझना।

(३) नारकी नरकसे निकलते है वह क्या स्व उपक्रम पर उपक्रम और विगर उपक्रमसे निकलते है ? स्व पर उपक्रमसे नहि किन्तु विगर उपक्रमसे निकलते है कारण वैक्रिय शरीर मारा हुवा नहीं मरते है एव १३ दंडक देवतावोंका भी समझना। पांच स्थावर तीन विकलेन्द्रिय तीर्यंच पंचेन्द्रिय और मनुष्य एव १० दंडक तीनों प्रकारके उपक्रमसे निकलते है।

(४) नारकी क्या स्वात्म ऋद्धि (नरकायुष्यादि) से उत्पन्न होते है या पर ऋद्धिसे उत्पन्न होते है ? नारकी स्वऋद्धिसे उत्पन्न होते है परसे नहीं एवं यावत् २३ दंडक समझना। इसी माफीक स्व स्व दंडकसे निकलना भी स्वऋद्धिसे होता है कारण जीव अपने किये हुवे शुभाशुभ कृत्यसे ही दंडकमें दंडाता है।

(५) नारकी क्या स्व प्रयोगसे उत्पन्न होता है कि पर प्रयोगसे ? स्व प्रयोग (मन वचन कायाके प्रयोगोंसे) किन्तु पर प्रयोगसे नहीं एव २४ दंडक समझना इसी माफिक निकलना भी समझना।

(६) नारकी स्वकर्मोसे उत्पन्न होता है कि पर कर्मोसे ? स्व कर्मोसे किन्तु पर कर्मोसे नहीं एव २४ दंडक तथा निकलना भी समझना। इतना विशेष है कि निकलनेमें जोतीषी विमानीके निकलनेके बदले चवना कहना इति।

॥ सेवभंते सेवभंते तमेव सच्चम् ॥

—•—

थोकडा नं० १२४

सूत्र श्री भगवती श० २० उ० १० ।

(क्रत संचय)

(१) क्रत संचय—जो एक समयमें दो जीवोंसे संख्याते जीव उत्पन्न होते हैं ।

(२) अक्रत संचय—जो एक समयमें असंख्याते अनन्ते जीवों उत्पन्न होते है ।

(३) अवक्तव्य संचय—एकसमयमें एकजीव उत्पन्न होते है।

हे भगवान्! नारकीके नेरिये क्या क्रतसंचय है, अक्रत संचय हैं, अवक्तव्य संचय है ? नारकी तीनों प्रकारके हैं । इसी माफिक १ भुवनपति ३ विकलेन्द्रिय, तीर्यंच पांचेन्द्रिय १ मनुष्य १ व्यान्तर १ ज्योतीषी १ विमानीक एवं १९ दंडक ॥ पृथ्वीकायकी पृच्छा ? क्रत संचय नहीं है। अक्रत संचय है। अवक्तव्य संचय नहीं है कारण समय समय असंख्याते जीवों उत्पन्न होते हैं। अगर कोइ स्थान पर १-२-३ भी कहा है वह पर कायापेक्षा है एवं अपूकाय तेउकाय वायुकाय वनस्पतिकाय भी समझना ।

सिद्धोंकी पृच्छा ? क्रत संचय है, अवक्तव्य संचय है परन्तु अक्रत संचय नहीं है। अल्पाबहुत्व-नारकीमें सब स्तोक अवक्तव्य संचय उन्होंसे क्रत संचय संख्यात गुणा। अक्रत संचय असंख्यात गुणा एवं १९ दंडक समझना । ५ स्थावरमें अल्पा० नहीं है । सिद्धोंमें स्तोक क्रत संचय उन्होंसे अवक्तव्य संचय संख्यात गुणा।

॥ सेवभंते सेवभंते तमेव सच्चम् ॥

—✥—

थोकडा न० १२५

सूत्र श्री भगवती श० १२ उ० ६

(पात्रदेव द्वार ६)

नामद्वार १ लक्षणद्वार २ स्थितिद्वार ३ सचिट्ठणद्वार ४ अन्तरद्वार ५ अवगाहनाद्वार ६ गत्यागतिद्वार ७ वैक्रियद्वार ८ अल्पाबहुत्वद्वार ९।

[१] नामद्वार—भावि द्रव्यदेव १ नरदेव २ धर्मदेव ३ देवादिदेव ४ भावदेव ५।

[२] लक्षणद्वार—भावि द्रव्यदेव-मनुष्य तीर्यचके अन्दर रहा हुवा जीव देवका आयुष्य बांधकर बैठा है। भविष्यमें देवतोंमें जानेवाला हो उसे भावि द्रव्यदेव कहते हैं। १ नरदेव चक्रवरतकी ऋद्धि संयुक्त हो उसे नरदेव कहते हैं। २ धर्मदेव साधुके गुणयुक्त होता है। ३ देवादिदेव तीर्थंकर केवलज्ञान केवल दर्शनादि अतिशय संयुक्त होता है। ४ भावदेव, भुवन पति, वाणमित्र, जोतीषी विमानीक यह चार प्रकारके देवताओंको भावदेव कहलाते हैं।

[३] स्थितिद्वार—भावि द्रव्यदेव जघन्य अन्तरमुहूर्त उ० ३ पल्योपम। नरदेव ज० ७०० वर्ष उ० ८४ लक्ष पूर्व। धर्मदेव ज० अन्तरमुहूर्त उ० देशोणोक्रोड पूर्व। देवादिदेव ज० ७२ वर्ष उ० ८४ लक्ष पूर्व। भावदेव ज० १००० वर्ष उ० ३३ सागरोपम।

[४] सचिट्ठणद्वार—स्थिति माफिक है परन्तु धर्मदेवका संचिट्ठण जघन्य एक समय समझना।

[५] अन्तरद्वार—भावि द्रव्यदेवको अन्तर ज० १०००० वर्ष उ० अनन्तकाल (वनस्पतिकाल)। नरदेव-ज० १ सागरोपम झाझेरो और धर्मदेवको ज० प्रत्येक पल्योपम उ० नरदेव धर्मदेव दोनोंको देशोणो अर्द्ध पुद्गल प्र०। देवादि देवकों अन्तर नहीं है। भावदेवकों ज० अन्तरमुहूर्त उ० अनन्तो काल।

[६] अवगाहनाद्वार—भावि द्रव्यदेवकी ज० आगुलके असंख्यातमे भाग उ० हजार जोजन। नरदेव ज० ७ धनुष्य। धर्मदेव ज० एक हस्त उणो। देवादिदेव ज० ७ हस्त उ० तीनुकी ५०० धनुष्य। भावदेव ज आगु० असं० भाग उ० ७ हस्तप्रमाण।

[७] गत्यागतिद्वार—यंत्रसे।

मार्गणा	समु	न	ती	म	देव
१ भाविभव्य द्रव्यदेवकी आगति	२८४	७	४८	१११	९८
,, गति	१९८	०	०	०	१९८
२ नर देवकी आगति	८२	१	०		८१
,, गति	१४	१४	०	०	०
३ धर्म देवकी आगति	२७५	५	४०	१११	९९
,, गति	७	०	०	०	७
४ देवादिदेवकी आगति	३८	३	०	०	३५
,, गति	मोक्ष	०	०	०	०
५ भाव देवकी आगति	१११	०	१०	१०१	०
,, गति	४६	०	१६	३०	०

[८] वैक्रयद्वार—भावि द्रव्यदेव वैक्रय करे तो १-२-३
० सख्याते रूप करे और असंख्यातकी शक्ति है एव नरदेव-
र्मदेव भी। देवादिदेवमें अनन्त शक्ति है परन्तु करे नहीं।
ावदेव १-२-३ उ० स० असख्याते रूप करे।

[९] अल्पाबहुत्वद्वार—स्तोक (१) नरदेव (२ दे
ादिदेव सख्यात गुणा (३) धर्मदेव सख्यात गुणा (४) भावि
द्रव्यदेव असख्यात गुणा (५) भावदेव असख्यात गुणा इति।

॥ सेवभते सेवभते तमेव सच्चम् ॥

[५] अन्तरद्वार—भावि द्रव्यदेवको अन्तर ज० १०००० वर्ष उ० अनन्तकाल (वनस्पतिकाल)। नरदेव-ज० १ सागरोपम झाझेरो और धर्मदेवको ज० प्रत्येक पल्योपम उ० नरदेव धर्मदेव दोनोंको देशोणो अर्द्ध पुद्गल प्र०। देवादि देवको अन्तर नहीं है। भावदेवको ज० अन्तरमुहूर्त उ० अनन्तो काल।

[६] अवगाहनाद्वार—भावि द्रव्यदेवको ज० आंगुलके असंख्यातमे भाग उ० हजार जोजन। नरदेव ज० ७ धनुष्य। धर्मदेव ज० एक हस्त उणी। देवादिदेव ज० ७ हस्त उ० तीनुकी ५०० धनुष्य। भावदेव ज आंगु० अस० भाग उ० ७ हस्तप्रमाण।

[७] गत्यागतिद्वार—यंत्रसे।

मार्गणा	मनु	न	ती	म	देव
१ भाविभव्य द्रव्यदेवकी आगति	२८४	७	४८	१११	९८
,, गति	१९८	०	०	०	१९८
२ नर देवकी आगति	८२	१	०	०	८१
,, गति	१४	१४	०	०	०
३ धर्म देवकी आगति	२७५	५	५०	१११	९९
,, गति	७	०	०	०	७
४ देवादिदेवकी आगति	३८	३	०	०	३५
,, गति	मोक्ष	०	०	०	०
५ भाव देवकी आगति	१११	०	१०	१०१	०
,, गति	४६	०	१६	३०	०

[८] वैक्रयद्वार—भावि द्रव्यदेव वैक्रय करे तो १-२-३ उ० सख्याते रूप करे और असख्याताकी शक्ति है एव नरदेव-धर्मदेव भी। देवाधिदेवमें अनन्त शक्ति है परन्तु करे नहीं। भावदेव १-२-३ उ० स० असख्याते रूप करे।

[९] अल्पाबहुत्वद्वार—स्तोक (१) नरदेव (२ देवाधिदेव सख्यात गुणा (३) धर्मदेव सख्यात गुणा (४) भावि द्रव्यदेव असख्यात गुणा (५) भावदेव असख्यात गुणा इति।

॥ सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ॥

[५] अन्तरद्वार—भावि द्रव्यदेवको अन्तर ज० १०००० वर्ष उ० अनन्तकाल (वनस्पतिकाल)। नरदेव-ज० १ सागरोपम साझेरो और धर्मदेवको ज० प्रत्येक पल्योपम उ० नरदेव धर्मदेव दोनोंको देशोणो अर्द्ध पुद्गल प्र०। देवादि देवकों अन्तर नहीं है। भावदेवकों ज० अन्तरमुहूर्त उ० अनन्तो काल।

[६] अवगाहनाद्वार—भावि द्रव्यदेवकी ज० आंगुलके असंख्यातमे भाग उ० हजार जोजन। नरदेव ज० ७ धनुष्य। धर्मदेव ज० एक हस्त उणी। देवादिदेव ज० ७ हस्त उ० तीनुकी ५०० धनुष्य। भावदेव ज आंगु० अस० भाग उ० ७ हस्तप्रमाण।

[७] गत्यागतिद्वार—यंत्रसे।

मार्गणा	समु	न	ती	म	देव
१ भाविभव्य द्रव्यदेवकी आगति	२८४	७	४८	१३१	९८
,, गति	१९८	०	०	०	१९८
२ नर देवकी आगति	८२	१	०	०	८१
,, गति	१४	१४	०	०	०
३ धर्म देवकी आगति	२७५	५	४०	१३१	९९
,, गति	७	०	०	०	७
४ देवादिदेवकी आगति	३८	३	०	०	३५
,, गति	मोक्ष	०	०	०	०
५ भाव देवकी आगति	१११	०	१०	१०१	०
,, गति	४६	०	१६	३०	०

[गतिद्वार १]

नंबर	नामद्वार	नरकगति	तिर्यच गति	मनुष्य गति	देव गतिमें	
१	गतिद्वार ४	१	१	१	१	अपनी अ
२	इन्द्रिय ५	पचेन्द्रिय	पचों०	१ पचे०	१ पचे०	पनी गती
३	काय ६	१ त्रसकाय	छ काया	१ त्रस०	१ त्रस०	पावे
४	योग १५	११	१३	१५	११	
५	वेद ३	१ नपुसक	३	३	२ स्त्री पु	
६	कषाय २५	२३	२५	२५	२४	
७	ज्ञान ८	६	६	८	६	
८	संयम ७	१	२	७	१	
९	दर्शन ४	३	३	४	३	
१०	लेश्या ६	३	६	६	६	नारकी दे
११	भव्य २	२	२	२	२	वतामें जाण
१२	सज्ञी २	१	२	२	१	आश्री असं-
१३	सम्यक्त्व ७	७	७	७	७	ज्ञी भी मि
१४	आहारिक २	२	२	२	२	लते हैं
१५	गुणस्था १४	४	५	१४	४	
१६	जीवभेद १४	३	१४	३	३	
१७	पर्याप्ति ६	५	६	६	५	
१८	प्राण १०	१०	१०	१०	१०	देवता, ना-
१९	संज्ञा ४	४	४	४	४	रकी मन
२०	उपयोग २	२	२	२	२	और भाषा
२१	दृष्टि ३	३	३	३	३	पर्यायाप्ता-
२२	कर्म ८	८	८	८	८	वे इसवास्ते
२३	शरीर ५	३	४	५	३	५ कही हैं
२४	हेतु ५७	५१	५५	५७	५२	

श्री रत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्पमाला पुष्प नम्बर ४२

॥ श्री रत्नप्रभसूरीश्वर सद्गुरुभ्यो नमः ॥

अथ श्री

शीघ्रबोध भाग १० वां

थोकडा न १२६

(चौवीस स्थानक)

चौवीस द्वारसे २१९ बोलोंको २१९ बोलोंपर उतारा जायेगा इस सबन्धको गहरी दृष्टिसे पढनेसे प्रश्नशक्ति, तर्कशक्ति, और अध्यात्मज्ञानशक्ति बढ जाति है वास्ते आद्योपान्त पढके लाभ अवश्य उठाना चाहिये।

१ गतिद्वार नरकादि	४	१३ सम्यक्त्वद्वार	७
२ जातिद्वार एकेन्द्रियादि	५	१४ आहारीकद्वार	२
कायाद्वार पृथ्व्यादि	६	१५ गुणस्थानद्वार	१४
४ योगद्वार मनादि	१५	१६ जीवभेदद्वार	१४
५ वेदद्वार स्त्रियादि	३	१७ पर्याप्तिद्वार	६
६ कषायद्वार क्रोधादि	२५	१८ प्राणद्वार	१०
७ ज्ञानद्वार मत्यादि	८	१९ संज्ञाद्वार	४
८ संयमद्वार सामायिकादि	७	२० उपयोगद्वार	२
९ दर्शनद्वार चक्षुवादि	४	२१ दृष्टिद्वार	३
१ लेश्याद्वार कृष्णादि	६	२२ कर्मद्वार	८
११ भव्यद्वार भव्यादि	२	२३ शरीरद्वार	५
१२ सज्ञीद्वार सज्ञी	२	२४ हेतुद्वार	५७

[कायद्वार २]

नं०	द्वार		पृथ्वी	अप्प	तेउ	वाउ	वनस्पति	त्रस
१	गती	४	१	१	१	१	१	४
२	इन्द्रि	५	१	१	१	१	१	५
३	काय	६	१	१	१	१	१	१
४	योग	१५	३	३	३	५	३	१५
५	वेद	३	१	१	१	१	१	३
६	कषाय	२५	२३	२३	२३	२३	२३	२५
७	ज्ञान	८	२	२	२	२	२	८
८	संयम	७	१	१	१	१	१	७
९	दर्शन	४	१	१	१	८	१	४
१०	लेश्या	६	४	४	३	३	४	६
११	भव्य	२	२	२	२	२	२	२
१२	संज्ञी	२	१	१	१	१	१	२
१३	सम्यक्त्व	७	१	१	१	१	१	७
१४	आहारिक	२	२	२	२	२	२	२
१५	गुणस्थान	१४	१	१	१	१	१	१४
१६	जीवभेद	१४	४	४	४	४	६	१०
१७	पर्याप्ति	६	४	४	४	४	४	६
१८	प्राण	१०	४	४	४	४	४	१०
१९	संज्ञा	४	४	४	४	४	४	४
२०	उपयोग	२	२	२	२	२	२	२
२१	दृष्टि	३	१	१	१	१	१	३
२२	कर्म	८	८	८	८	८	८	८
२३	शरीर	५	३	३	३	४	३	५
२४	हेतु	५७	३९	३९	३९	४१	३९	५७

[इन्द्रियद्वार २]

न	द्वार		एकेंद्रि	बेरिंद्रि	तेरिंद्रि	चौरिंद्रि	पचेंद्रि	
१	गती	४	१	१	१	१	४	अपने अपनी
२	इन्द्रि	५	१	१	१	१	१	
३	काय	६	५	१	१	१	१	
४	योग	१५	५	४	४	४	१५	
५	वेद	३	१	१	१	१	३	
६	कपाय	२५	२३	२३	२३	२३	२५	
७	ज्ञान	८	२	४	४	४	८	
८	सयम	७	१	१	१	१	७	
९	दर्शन	४	१	१	१	२	४	
१०	लेश्या	६	४	३	३	३	६	
११	भव्य	२	२	२	२	२	२	
१२	सन्नी	२	१	१	१	१	२	
१३	सम्यक्त्व	७	१	२	२	२	७	
१४	आहारिक	२	२	२	२	२	२	
१५	गुणस्था	१४	१	२	२	२	१२	१३-१४ गु
१६	जीवभेद	१४	४	२	२	२	१४	अने दीया
१७	पर्याप्ति	६	४	५	५	५	६	
१८	प्राण	१०	४	६	७	८	१०	
१९	सज्ञा	४	४	४	४	४	४	
२०	उपयोग	२	२	२	२	२	२	
२१	द्रष्टि	३	१	२	२	२	३	
२२	कर्म	८	८	८	८	८	८	
२३	शरीर	५	४	३	३	३	५	
२४	हेतु	५७	४१	४०	४०	४०	५७	

[कायका योग ७ द्वार ४]

द्वार		औ० २	वै० २	आ० २	कार्म०
गती	४	२	४	१	४
इन्द्रि	५	५	२	१	५
काय	६	६	२	१	६
योग	१५	अपना	अपना	अपना	अपना
वेद	३	३	३	१	३
कषाय	२५	२५	२५	११	२५
ज्ञान	८	८	७	४	८
संयम	७	७।५	४	१	२
दर्शन	४	४	३	३	४
लेश्या	६	६	६	६	६
भव्य	२	२	२	१	२
सन्नी	२	२	२	१	२
सम्यक्त्व	७	७	७	४	७
आहारिक	२	१	१	१	१
गुणस्थान	१४	१३।६	७।५	२	४
जीवभेद	१४	१४।९	४	१	८
पर्याप्ता	६	६	६	६	६
प्राण	१०	१०	१०	१०	२०।५
सज्ञा	४	४	४	४	४
उपयोग	२	२	२	२	२
दृष्टि	३	२।३	२।३	१	२
कर्म	८	८	८	८	८
शरीर	५	३	३	३	३
हेतु	५७	५१	५१	२१	४३

[योगद्वार ४]

न०	द्वार		मनका ३	व्यवहार म १	वचनका ३	व्यवहार व १
१	गती	४	४	४	४	४
२	इन्द्रि	५	१ पचेन्द्रि	१	१	४
३	काय	६	१	१	१	१
४	योग	१५	अपना	अपना	अपना	अपना
५	वेद	३	३	३	३	३
६	कषाय	२५	२५	२५	२५	२५
७	ज्ञान	८	७।८	८	७।८	८
८	सयम	७	७	७	७	७
९	दर्शन	४	३।४	४	३।४	४
१०	लेश्या	६	६	६	६	६
११	भव्य	२	२	२	२	२
१२	सन्नी	२	१	१	१	२
१३	सम्यक्त्व	७	७	७	७	७
१४	आहारिक	२	१	१	१	१
१५	गुणस्थान	१४	१३।१२	१३	१३।१२	१३
१६	जीवभेद	१४	१	१	१	५
१७	पर्याप्ति	६	६	६	६	६
१८	प्राण	१०	१	१०	१०	१०
१९	संज्ञा	४	४	४	४	४
२०	उपयोग	२	२	२	२	२
२१	द्रष्टि	३	३	३	३	३
२२	कर्म	८	८	८	८	८
२३	शरीर	५	५	५	५	५
२४	हेतु	५७	५६	५६	५६	५६

[कापयद्वार ६]

नं०	द्वार		अनुता न० ४	अप्रत्या ४	प्रत्या० ४	संज्व० ४	हासादि ६	वेद ३
१	गती	४	४	४	४	४	४	
२	इन्द्रिय	५	५	५	५	५	५	
३	काय	६	६	६	६	६	६	
४	योग	१५	१३	१३	१३	१५	१५	
५	वेद	३	३	३	३	३	३	
६	कषाय	२५	अपनि	अपनि	पय	पय	पय	
७	ज्ञान	८	३	६	६	७	७	
८	संयम	७	१	१	२	६	६	
९	दर्शन	४	३	३	३	३	३	
१०	लेश्या	६	६	६	६	६	६	पहेले ५ वे द्वारमें लिखा है
११	भव्य	२	२	२	२	२	२	
१२	संज्ञी	२	२	२	२	२	२	
१३	सम्यक्त्व	७	२	७	७	७	७	
१४	आहारिक	२	२	२	२	२	२	
१५	गुणस्थान	१४	२	४	५	३।१	८	
१६	जीवभेद	१४	१४	१४	१४	१४	१४	
१७	पर्याप्ति	६	६	६	६	६	६	
१८	प्राण	१०	१०	१०	१०	१०	१०	
१९	संज्ञा	४	४	४	४	४	४	
२०	उपयोग	२	२	२	२	२	४	
२१	दृष्टि	३	२	३	३	३	३	
२२	कर्म	८	८	८	८	८	८	
२३	शरीर	५	४	४	४	५	५	
२४	हेतु	५७	५५	५६	५६	५७	५७	

[वेदद्वार ५]

न०	द्वार		स्त्री	पुरुष	नपुंसक
१	गती	४	३	३	३
२	इन्द्रि	५	१ पचेन्द्रि	१ पचेंद्रि	५
३	काय	६	१ त्रस	१ त्रस	६
४	योग	१५	१३	१५	१५
५	वेद	३	१	१	१
६	कषाय	२५	२३	२३	२३
७	ज्ञान	८	७	७	७
८	संयम	७	४	५	५
९	दर्शन	४	३	३	३
१०	लेश्या	६	६	६	६
११	भव्य	२	२	२	२
१२	सज्ञी	२	१	१	२
१३	सम्यक्त्व	७	७	७	७
१४	आहारिक	२	२	२	२
१५	गुणस्थान	१४	९	९	९
१६	जीवभेद	१४	२	२	१४
१७	पर्याप्ति	६	६	६	६
१८	प्राण	१०	१	१०	१०
१९	सज्ञा	४	४	४	४
२०	उपयोग	२	२	२	२
२१	दृष्टि	३	३	३	३
२२	कर्म	८	८	८	८
२३	शरीर	५	४	५	५
२४	हेतु	५७	५३	५५	५५

[कापयद्वार ६]

न०	द्वार		अनुता न० ४	अप्रत्या ४	प्रत्या० ४	सञ्ज० ४	हासादि ६	वेद ३
१	गती	४	४	४	४	४	४	
२	इन्द्रिय	५	५	५	५	५	५	
३	काय	६	६	६	६	६	६	
४	योग	१५	१३	१३	१३	१५	१५	
५	वेद	३	३	३	३	३	३	
६	कषाय	२५	अपनि	अपनि	पत्र	पय	पय	
७	ज्ञान	८	३	६	६	७	७	
८	सयम	७	१	१	२	६	८	
९	दर्शन	४	३	३	३	३	३	पहिले ५ के बारमें लिखा है
१०	लेश्या	६	६	६	६	६	६	
११	भव्य	२	२	२	२	२	२	
१२	सज्ञी	२	२	२	२	२	२	
१३	सम्यक्त्व	७	२	७	७	७	७	
१४	आहारिक	२	२	२	२	२	२	
१५	गुणस्थान	१४	२	४	५	३/१-१	८	
१६	जीवभेद	१४	१४	१४	१४	१४	१४	
१७	पर्याप्ति	६	६	६	६	६	६	
१८	प्राण	१०	१०	१०	१०	१०	१०	
१९	सज्ञा	४	४	४	४	४	४	
२०	उपयोग	२	२	२	२	२	२	
२१	दृष्टि	३	२	३	३	३	३	
२२	कर्म	८	८	८	८	८	८	
२३	शरीर	५	४	४	४	५	५	
२४	हेतु	५७	५५	५६	५५	५७	५७	

[ज्ञानद्वार ७]

न०	द्वार		म० श्रु०	अ०	म०	चे	म० श्रु० अज्ञान	वि० अ०
१	गती	४	४	४	१	१	४	४
२	इन्द्रिय	५	४	१	१	०	५	१
३	काय	६	१	१	१	१	६	१
४	योग	१५	१५	१५	१४	५।७	१३	१३
५	वेद	३	३	३	३	*	३	३
६	कषाय	२५	२१	२१	१३	०	२५	२५
७	ज्ञान	८	अपना	अपना	अपना	अपना	अपना	अपना
८	संयम	७	७	७	५	१	१	१
९	दर्शन	४	३	३	३	१	३	३
१०	लेश्या	६	६	६	६	१	६	६
११	भव्य	२	१	१	१	१	२	२
१२	संज्ञी	२	२	१	१	०	२	१
१३	सम्यक्त्व	७	५	५	४	१	२	२
१४	आहारिक	२	२	२	१	२	२	२
१५	गुणस्था	१४	१०	१०	७	२	२	२
१६	जीवभेद	१४	६	२	१	१	१४	२
१७	पर्याप्ति	६	६	६	६	६	६	६
१८	प्राण	१०	१०	१०	१०	५	१०	१०
१९	संज्ञा	४	४	४	४	०	४	४
२०	उपयोग	२	२	२	२	२	२	२
२१	दृष्टि	३	१	१	१	१	२	२
२२	कर्म	८	८	८	८	४	८	८
२३	शरीर	५	५	५	५	३	४	४
२४	हेतु	५७	५२	५२	२७	५।७	५५	५५

[संयमद्वार ८]

नं०	द्वार		सा० छे०	प०	सु०	यथा०	संयमासंयम	असंयम
१	गति	४	१	१	१	१	२	४
२	इन्द्रिय	५	१	१	१	१	१	५
३	काय	६	१	१	१	१	१	६
४	योग	१५	१४	९	९	११	१२	१३
५	वेद	३	३	२	०	०	३	३
६	कषाय	२५	१३	१२	१	०	१७	२५
७	ज्ञान	८	४	४	४	५	३	६
८	संयम	७	अपना	अपना	अपना	अपना	पय	पय
९	दर्शन	४	३	३	३	४	३	३
१०	लेश्या	६	६	३	१	१	६	६
११	भव्य	२	१	१	१	१	१	२
१२	सन्नी	२	१	१	१	१	१	२
१३	सम्यक्त्व	७	४	४	२	२	४	७
१४	आहारिक	२	१	१	१	२	१	२
१५	गुणस्था	१४	४	२	१	४	१	४
१६	जीवभेद	१४	१	१	१	१	१	१४
१७	पर्याप्ति	६	६	६	६	६	६	६
१८	प्राण	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
१९	सञ्ज्ञा	४	४	०	०	०	४	४
२०	उपयोग	२	२	२	२	२	२	२
२१	दृष्टि	३	१	१	१	१	१	३
२२	कर्म	८	८	८	८	८।४	८।	८
२३	शरीर	५	५	५	३	३	४	४
२४	हेतु	५७	२७	२२	१०	-११	४०	५५

[दर्शनद्वार ६]

नं०	द्वार		चक्षु द०	अचक्षु द	अवधी द०	केवल द०
१	गती	४	४	४	४	१
२	इन्द्रिय	५	२	५	१	अ
३	काय	६	त्रस	६	त्रस	त्रस
४	योग	१५	१४	१५	१५	५–७
५	वेद	३	३	३	३	अ०
६	कषाय	२५	२५	२५	२५	अ०
७	ज्ञान	८	७	७	७	१
८	संयम	७	७	७	७	१
९	दर्शन	४	अपना २	पर्य	पर्य	पम
१०	लेश्या	६	६	६	६	१
११	भव्य	२	२	२	२	१
१२	सन्नी	२	२	२	१	नो
१३	सम्यक्त्व	७	७	७	७	१
१४	आहारिक	२	१	२	२	२
१५	गुणस्थान	१४	१२	१२	१२	२
१६	जीव भेद	१४	३।६	१४	२	१
१७	पर्याप्ता	६	६	६	६	६
१८	प्राण	१०	१०	१०	१०	५
१९	संज्ञा	४	४	४	४	०
२०	उपयोग	२	२	२	२	२
२१	दृष्टी	३	३	३	३	१
२२	कर्म	८	८	८	८	४
२३	शरीर	५	५	५	५	३
२४	हेतु	५७	५६	५७	५७	५+७

[लेश्याद्वार १०]

नं०	द्वार		कृष्ण, नील, कापोत	तेजु	पद्म	शुक्ल
१	गती	४	४	३	३	३
२	इन्द्रिय	५	५	२	१	१
३	काय	६	६	४	१	१
४	योग	१५	१५	१५	१५	१५
५	वेद	३	३	३	३	३
६	कषाय	२५	२५	२५	२५	२५
७	ज्ञान	८	७	७	७	८
८	संयम	७	४	५	५	७
९	दर्शन	४	३	३	३	४
१०	लेश्या	६	अपनी अपनी	पद्म	पद्म	पद्म
११	भव्य	२	२	२	२	२
१२	सज्ञी	२	२	२	१	१
१३	सम्यक्त्व	७	७	७	७	७
१४	आहारिक	२	२	२	२	२
१५	गुणस्थान	१४	६	७	७	१३
१६	जीव भेद	१४	१४	३	२	२
१७	पर्याप्ति	६	६	६	६	६
१८	प्राण	१०	१०	१०	१०	१०
१९	संज्ञा	४	४	४	४	४
२०	उपयोग	२	२	२	२	२
२१	दृष्टी	३	३	३	३	३
२२	कर्म	८	८	८	८	८
२३	शरीर	५	५	५	५	५
२४	हेतु	५७	५७	५७	५७	५७

[भव्य और सन्नीद्वार ११–१२]

नं०	द्वार		भव्य	अभव्य	सन्नी	असन्नी
१	गती	४	४	४	४	४
२	इन्द्रिय	५	५	५	१	५
३	काय	६	६	६	१	६
४	योग	१५	१५	१३	१५	६
५	वेद	३	३	३	३	१
६	कषाय	२५	२५	२५	२५	२३
७	ज्ञान	८	८	३	७	४
८	संयम	७	७	१	७	१
९	दर्शन	४	४	३	३	२
१०	लेश्या	६	६	६	६	४
११	भव्य	२	अपना	अपना	२	२
१२	सन्नी	२	२	२	अपना	अपना
१३	सम्यक्त्व	७	७	१	७	२
१४	आहारिक	२	२	२	२	२
१५	गुणस्थान	१४	१४	१	१२	२
१६	जीवभेद	१४	१४	१४	२	१२
१७	पर्याप्ति	६	६	६	६	५
१८	प्राण	१०	१०	१०	१०	९
१९	सज्ञा	४	४	४	४	४
२०	उपयोग	२	२	२	२	२
२१	दृष्टी	३	३	१	३	२
२२	कर्म	८	८	८	८	८
२३	शरीर	५	५	४	५	४
२४	हेतु	५७	५७	५५	५७	४६

(सम्यक्त्व द्वार १३)

न०	द्वार		क्षा०	क्षयो०	उ०	वे०	सास्वा०	मिथ्या-त्व०	मिश्र
१	मति	४	४	४	४	४	४	४	४
२	इन्द्रिय	५	१	१	१	१	४	५	१
३	काय	६	१	१	१	१	१	५	१
४	योग	१५	१५	१५	१५	१५	१३	१३	१०
५	वेद	३	३	३	३	३	३	३	३
६	कषाय	२५	२१	२१	२१	२१	२१	२५	२०
७	ज्ञान	८	५	४	४	४	३	३	३
८	संयम	७	७	५	७	५	१	१	१
९	दर्शन	४	४	३	३	३	३	३	३
१०	लेश्या	६	६	६	६	६	६	६	६
११	भव्य	२	१	१	१	१	१	२	१
१२	सन्नी	२	१	१	१	१	२	२	१
१३	सम्यक्त्व	७	अपनि	पच,	पच,	पच,	पच,	पच,	पचं,
१४	आहारिक	२	२	२	२	२	२	२	१
१५	गुणस्थान	१४	११	४	८	४	१	१	१
१६	जीवभेद	१४	२	२	२	२	६	१४	१
१७	पर्याप्ति	६	६	६	६	६	६	६	६
१८	प्राण	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
१९	संज्ञा	४	४	४	४	४	४	४	४
२०	उपयोग	२	२	२	२	२	२	२	२
२१	दृष्टी	३	१	१	१	१	१	१	१
२२	कर्म	८	८	८	८	८	८	८	८
२३	शरीर	५	५	५	५	५	४	४	४
२४	हेतु	५७	४८	४८	४८	४८	४६	५५	४३

(आहारिक द्वार १४ प्राण द्वार १८)

न०	द्वार		अहा०	अना०	इन्द्रि० ५	स्प०का० स्था०	स०य०	आयु०
१	गतीद्वार	४	४	४	४	४	४	४
२	इन्द्रीय	५	५	५	ओ१ च२ घ्रा३ र४	५	१।४	५
३	काय	६	६	६	१	६	१	६
४	योग	१५	१४	१	१५	१५	१४	१५
५	वेद	३	३	३	३	३	३	३
६	कषाय	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५
७	ज्ञान	८	८	७	७	७।८	८	८
८	संयम	७	७	२	७	७	७	७
९	दर्शन	४	४	३	३	३।४	४	४
१०	लेश्या	६	६	६	६	६	६	६
११	भव्य	२	२	२	२	२	२	२
१२	सज्ञी	२	२	२	२	२	१।२	२
१३	सम्यक्त्व	७	७	६	७	७	७	७
१४	आहारिक	२	१	१	१	१	१	२
१५	गुणस्था	१४	१३	५	१२	१२ कृ १४ १३	१३	१४
१६	जीव भेद	१४	१४	८	थो१ च६ घ्रा८ र९	१४	१।५	१४
१७	पर्याप्ति	६	६	६	६	६	६	६
१८	प्राण	१०	१०	१०	अपना	अपना	अपना	
१९	सज्ञा	४	४	४	४	४	४	४
२०	उपयोग	२	२	२	२	२	२	२
२१	दृष्टी	३	३	२	३	३	३	३
२२	कर्म	८	८	८	८	८	८	८
२३	शरीर	५	५	३	५	५	५	५
२४	हेतु	५७	५७	४३	५६	५७।५६	५६	५७

[गुणस्थानद्वार १५]

न०	द्वार		मिथ्या०	सा०	मि०	अय०	देस०	प्र०	अप्र०
१	गती	४	४	४	४	४	२	१	१
२	इन्द्रिय	५	५	४	१	१	१	१	१
३	काय	६	६	१	१	१	१	१	१
४	योग	१५	१३	१३	१०	१३	१२	१४	११
५	वेद	३	३	३	३	३	३	३	३
६	कषाय	२५	२५	२५	२१	२१	१७	१३	१३
७	ज्ञान	८	३	३	३	३	३	४	४
८	सयम	७	१	१	१	१	१	३	३
९	दशन	४	३	३	३	३	३	३	३
१०	लेश्या	६	६	६	६	६	६	६	३
११	भव्य	२	२	१	१	१	१	१	१
१२	सन्नी	२	२	२	१	१	१	१	१
१३	सम्यक्त्व	७	१	१	१	४	४	४	४
१४	आहारिक	२	२	२	१	२	१	१	१
१५	गुणस्थान	१४	१	१	१	१	१	१	१
१६	जीवभेद	१४	१४	६	१	२	१	१	१
१७	पर्याप्ति	६	६	६	६	६	६	६	६
१८	प्राण	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
१९	सज्ञा	४	४	४	४	४	४	४	०
२०	उपयोग	२	२	२	२	२	२	२	२
२१	दृष्टि	३	१	१	१	१	१	१	१
२२	कम	८	८	८	८	८	८	८	८
२३	शरीर	५	४	४	४	४	४	५	५
२४	हेतु	५७	५५	५०	४३	४६	४०	२७	२४

[गुण स्थानक द्वार १५]

न०	द्वार		नि०	अनि०	सु०	उप	क्षी०	स०	अ
१	गती	४	१	१	१	१	१	१	१
२	इन्द्रिय	५	१	१	१	१	१	०	०
३	काय	६	१	१	१	१	१	१	१
४	योग	१५	९	९	९	९	९	५।७	०
५	वेद	३	३	३	०	०	०	०	०
६	कपाय	२५	१३	७	१	०	०	०	०
७	ज्ञान	८	४	४	४	४	४	१	१
८	सयम	७	२	२	१	१	१	१	१
९	दर्शन	४	३	३	३	३	३	१	१
१०	लेश्या	६	१	१	१	१	१	१	०
११	भव्य	२	१	१	१	१	१	१	१
१२	सन्नी	२	१	१	१	१	१	१	१
१३	सम्यक्त्व	७	१	१	१	१	१	१	१
१४	आहारिक	२	१	१	१	१	१	२	१
१५	गुणस्था	१४	१	१	१	१	१	१	१
१६	जीवभेद	१४	१	१	१	१	१	१	१
१७	पर्याप्ति	६	६	६	६	६	६	६	६
१८	प्राण	१०	१०	१०	१०	१०	१०	५	२
१९	सज्ञा	४	०	०	०	०	०	०	०
२०	उपयोग	२	२	२	२	२	२	२	२
२१	द्रष्टि	३	१	१	१	१	१	१	१
२२	कर्म	८	८	८	८	७	७	४	४
२३	शरीर	५	३	३	३	३	३	३	३
२४	हेतु	५७	२२	१६	१०	९	९	५।७	०

[जीव भेद द्वार १६]

नं०	द्वार		सु० २	घा० २	बे० २	ते० २
१	गती	४	१	१	१	१
२	इन्द्रिय	५	१	१	२	३
३	काय	६	५	५	१	१
४	योग	१५	३।१	३।४	२।३	२।३
५	वेद	३	१	१	१	१
६	कषाय	२५	२३	२३	२३	२३
७	ज्ञान	८	२	२	४।२	४।२
८	संयम	७	१	१	१	१
९	दर्शन	४	१	१	१	१
१०	लेश्या	६	३	४।३	३	३
११	भव्य	२	२	२	२	२
१२	सन्नी	२	१	१	१	१
१३	सम्यक्त्व	७	१	१	२।१	२।१
१४	आहारिक	२	२।१	२।१	२।१	२।१
१५	गुणस्थान	१४	१	१	२।१	२।१
१६	जीवभेद	१४	१	१	१	१
१७	पर्याप्ति	६	३।४	३।४	४।५	४।५
१८	प्राण	१०	३।४	३।४	५।६	६।७
१९	संज्ञा	४	४	४	४	४
२०	उपयोग	२	२	२	२	२
२१	दृष्टी	३	१	१	२।१	२।१
२२	कर्म	८	८	८	८	८
२३	शरीर	५	३	३।४	३	३
२४	हेतु	५७	३९	३७।४०	३८।३९	३८।३९

[दृष्टी–कर्म–शरीर द्वार २१–२२–२३]

नं०	द्वार	स०	मि०	मिश्र	कर्मं	औ० ते का	वै	आहा०
१	गती	४	४	४	४	२–४	४	१
२	इन्द्रिय	४	५	१	५	५	२	१
३	काय	१	६	१	६	६	२	१
४	योग	१५	१३	१०	१५	१५	१०	१०
५	वेद	३	३	३	३	३	३	२
६	कषाय	२१	२५	२१	२५	२५	२५	१३
७	ज्ञान	५	३	३	३ ५	८	७	४
८	संयम	७	१	१	७	७	४	२
९	दर्शन	४	३	३	३ ३	४	३	३
१०	लेश्या	६	६	६	६	६	६	६
११	भव्य	१	२	१	२	२	२	१
१२	सन्नी	२	२	१	२	२	२	१
१३	सम्यक्त्व	५	१	१	७	७	७	४
१४	आहारिक	२	२	१	२	२	२	१
१५	गुण	१२	१	१	१२ ३४	१४	७	२
१६	जीव	६	१४	१	१४	१४	४	१
१७	पर्याप्ता	६	६	६	६	६	६	६
१८	प्राण	१०	१०	१०	१०	१०	१	१०
१९	संज्ञा	४	४	४	४	४	४	४
२०	उपयोग	२	२	२	२	२	२	२
२१	दृष्टी	अ०	अ०	अ०	३	२	३	१
२२	कर्म	८	८	८	अ० २	८	८	८
२३	शरीर	५	४	४	५	अपना	अपना	अपना
२४	हेतु	४६	५५	४३	५७	५७	५२	२१

[हेतु द्वार २४]

नं०	द्वार		मिथ्या०५	अवृत्त १२	कषाय २५	योग १५
१	गती	४	४	४		
२	इन्द्रिय	५	[illegible]	५		
३	काय	६	[illegible]	६		
४	योग	५	[illegible]	१३		
५	वेद	१३	[illegible]	३		
६	कषाय	२५	[illegible]	२५		
७	ज्ञान	८	[illegible]	६		
८	संयम	७	१	[illegible]		
९	दर्शन	४	[illegible]	३		
१०	लेश्या	६	६	६		
११	भव्य	२	२	२		
१२	सन्नी	२	[illegible]	२		
१३	सम्यक्त्व	७	१	७	कषाय द्वार में	योग द्वार में
१४	आहारिक	२	२	२		
१५	गुणस्थान	१४	१	[illegible]		
१६	जीव भेद	१४	[illegible]	१४		
१७	पर्याप्ति	६	६	६		
१८	प्राण	१०	१०	१०		
१९	संज्ञा	४	४	४		
२०	उपयोग	२	२	२		
२१	दृष्टी	३	१	३		
२२	कर्म	८	८	८		
२३	शरीर	५	४	४		
२४	हेतु	५७	५५	५५		

वहुश्रुत—प्रश्न वाशटीयो थो १२७

न०	मार्गण	जीव	गुण०	योग	उप०	लेश्य
१	वासुदेषकि आगति में	१	४	१०	९	४
२	हास्यादि समदृष्टि	६	६	१५	७	६
३	अव्रती मन योगी में	१	३	१२	९	६
४	एकान्त सज्ञी समदृष्टि अव्रती	२	२	१३	६	६
५	अप्रमत हास्यादि	१	२	११	७	३
६	तेजुलेशी पचेन्द्री	१	१	३	३	१
७	अमर गुणस्थान में	१	३	१२	१२	६
८	अमर गु० छद्मस्थ	१	२	१०	१०	६
९	अमर गु० चर्मान्त	१	२	१२	८	६
१०	यथाख्यात चा० संयोगी	१	३	११	९	१
११	गुणस्थान के चमन्ति में	१४	२	१३	९	६
१२	संयोगी गु० ,	१४	२	१३	८	६
१३	छद्मस्थ गु० ,	१४	२	१३	१०	६
१४	सकषाय गु ,	१४	२	१३	१०	६
१५	सवेदी गु ,,	१४	२	१३	१०	६
१६	व्रती छद्मस्थ गु०	१	७	१४	७	६
१७	अप्रमत्त छद्मस्थ०	१	६	११	७	३
१८	हास्यादि सयति ,,	१	३	१४	७	६
१९	हास्यादि अप्रमत्त ,	१	२	११	७	३
२०	व्रती सकषाय ,	१	५	१४	७	६
२१	व्रती सवेदी ,	१	४	१४	७	६
२२	व्रती छद्मस्थ ,,	१	७	१४	७	६
२३	समदृष्टि सवेदी ,,	६	७	१५	७	६
२४	समदृष्टि सकषाय ,	६	८	१५	७	६
२५	घाट वहे ता जीव में	७	३	१	१०	६

सेव भते सेव भते तमेव सचम्

थोकडा नं १२८

जीवोंके १४ भेदके प्रश्नोत्तर।

प्रश्न	उत्तर
१ जीवका एक भेद कहा पाये ?	केवलीमें
२ ,, दोय ,, ,,	बेइन्द्रियमें
३ ,, तीन ,, ,,	मनुष्यमें
४ ,, चार ,,	एकेन्द्रियमें
५ ,, पाच ,, ,,	भापकमें
६ ,, छे ,, ,,	सम्यग्दृष्टीमें
७ ,, सात ,, ,,	अपर्याप्तामें
८ ,, आठ ,, ,,	अनाहारीकमें
९ ,, नव ,, ,,	एकान्त सरागी त्रसमें
१० ,, दश ,,	त्रस कायमें
११ ,, एग्यारे ,, ,,	एकान्त बादर सरागीमें
१२ ,, बारह ,, ,,	बादरमें
१३ ,, तेरह ,, ?	एकान्त छद्मस्तमें
१४ ,, चौदा ,, ,,	सर्व ससारी जीवोंमें

१४ गुणस्थानके प्रश्नोत्तर

प्रश्न		उत्तर
१५ एक गुणस्थान कहा पाये ?		मिथ्यात्वी जीवमें
१६ दोय ,,	१—२	बेइन्द्रियमें
१७ तीन ,,	१-१३-१३	अमरमें
१८ चार ,,	१-२-३-४	नारकी देवतावोंमें

१९ पांच	क्रम सर		तीर्यंच पाचेन्द्रियमें
२० छे	क्रम सर		प्रमादी जीवोंमें
२१ सात	,,	,	तेजो लेश्यामें
२२ आठ		,,	हास्यादिकमें
२३ नव	,	,	सवेदी जीवोंमें
२४ दश	,	,	सरागी जीवोंमें
२५ इग्यारे	,		मोह कर्मकी सतामें
२६ बारह	,		छद्मस्त जीवोंमें
२७ तेरह	,,	,	सयोगी जीवोंमें
२८ चौदा	,	,	सर्व संसारी जीवोंमें

२९ वाटे वहे तों मे गु० तीन । १ । २ । ४ ।
३० अनाहारीक गु० पाच । १ । २ । ४ । १३ । १४ ।
३१ सास्वतां गु० पाच । १ । ४ । ५ । ६ । १३ ।
३२ एकान्त सज्ञी गु० दश । तीजासे बारहतक ।
३३ असंज्ञी गु० दोय । १ । २
३४ नोसज्ञी नोअसंज्ञी गु० दोय । १३ । १४ ।
३५ सम्यग्द्रष्टीमें गु० बारह । पहिलो तीजो वजके ।
३६ साधुमें गु० नव-छठासे चौदमा तक ।
३७ श्रावकमें गु० एक पाचमो
३८ अप्रमादिमें गु० आठ सातमा से चौदमा ।
३९ वीतरागमें गु० चार । ११ । १२ । १३ । १४

— ✻ —

थोकडा न १२९

१५ योगोका प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१ एक योग कीसमे पावे	? वाटे वेहता जीवमें-कार्माण
२ दोय योग ,,	? बेंद्रियका पर्यातामें
३ तीन योग ,,	? पृथ्वीकायमें
४ चार योग ,,	? चौरिंद्रियमें
५ पाच योग ,,	? वायुकायमें
६ छे योग ,,	? असज्ञी जीवोंमें
७ सात योग ,,	? केवली तेरहवें गु॰ में
८ आठ योग ,,	? पाचेन्द्रिय अपर्याता अनाहारीकवे
९ नव योग ,,	? नव गुणस्थानमें। [अलब्धियामें
१० दश योग ,,	? तीजा मिश्र गुण स्थानमें
११ इग्यारे योग ,,	? देवतावोंमें
१२ बारह ,, ,,	? पाचमें गु० श्रावकमें
१३ तेरह ,, ,,	? तीयचपाचेन्द्रिमें
१४ चौदह ,, ,,	? आहारीक जीवोंमें
१५ पन्दरा ,, ,,	? सर्व ससारी जीवोंमें

१२ उपयोगका प्रश्नोत्तर

१६ एक उपयोग	? साकार उपयोगमें सिद्ध होते समय
१७ दो ,,	? केवली भगवानूमें
१८ तीन ,,	? एकेन्द्रिय जीवोमें
१९ चार ,,	? असज्ञी मनुष्यमें
२० पाच ,,	? तेइन्द्रि जीवोंमें

, ,, चौदह , , , समुच्चय , ,
पांचवों और छट्ठो गु० व्रती प्रमादी गु० में पाये
,, सातवा , तेजोलेशा के चरमान्तमें
, आठवो , ,, हास्यादि के चरमान्तमें
, , नौवो , सवेदी गु० के ,
,, दशवो , , सकषायि , ,
, इग्यारवो , मोहसत्ता , ,
बारहवो ,, , छद्मस्थ
, तेरहवा , सयोगी
,, चौदहवा , समुच्चय
छट्ठो और सातवा गु० तेजोलेशी साधु में पाये
, आठवो , हास्यादि , के चरमान्तमें
, नौवो सवेदी ,, के
, दशावा सकषायि के
,, इग्यारवो मोहसत्ता के ,
, बारहवो , छद्मस्थ , के ,
, तेरहवो , सयोगी , के ,
,, चौदहवा , समुच्चय , के
सातवा और आठवा० अप्रमादि हास्यादि गु० मे
, , नौवा गु० सवेदी के चरमान्त में
, दशवा० सकषायि
इग्यारवा मोहसत्ता के ,
,, , बारहवा छद्मस्थमेंके
,, तेरहवा० ? , सयोगी के ,
, ,, चौदहवा ? , समुच्चय गु के,,
आठवा और नौवा गु० ? शुक्ल ध्यान सवेदी गु० में
, दशवा ? सकषायि के चरमान्तमें

,, , इग्यारवा ? ,, मोहसत्ता के ,
,, ,, बारहवा ? छद्मस्थ के ,
,, ,, तेरहवा ? , सयोगी के ,
,, ,, चौदवा ? , समुचय गु० के ,
नौवा और दशवा गु० ? अवेदी सकषायि गु० मे पावे
,, , इग्यारवा ? , मोहसत्ता के चरमान्तमें
, ,, बारहवा ? , छद्मस्थ गु० के ,,
,, ,, तेरहवा ? सयोगी के ,,
,, ,, चौदहवा० ? , समुचय , के ,,
दशवा और इग्यारवा० ? मोह अबन्ध मोहसत्ता गु० मे पावे
,, ,, बारहवा ? , छद्मस्थ गु० चरमान्तमें
, ,, तेरहवा ? ,, सयोगी के ,
,, ,, चौदवा ? , समुचय गु० के
इग्यारवा और बारहवा ? वीतराग छद्मस्थ गु० मे पावे
,, , तेरहवा ? , सयोगी के चरमान्त में
, , चोदहवा ? , समुचय गु० के चरमान्त में
बारहवा और तेरहवा ? क्षीण मोह सयोगी में पावे
,, ,, चौदहवा० ? , समुचय गु० के चरमान्तमें
तेरहवा और चोदहवा गु० ? केवली भगवान् में पावे

× नौवे गु० के शेष दो समय रहते हुवे अवेदी हो जाते है

—✻◎✻—

, , चौदह , , समुच्चय , ,,
पाचवो और छठो गु० व्रती प्रमादी गु० में पावे
,, सातवा ,, , तेजोलेशा के चरमान्तमें
, , आठवो ,, ,, हास्यादि के चरमान्तमें
, नौवो , सवेदी गु० के
दशवो , सकषायि
इग्यारवो मोहसत्ता ,
बारहवो , छद्मस्थ ,
तेरहवा , सयोगी
, चौदहवा , , समुच्चय ,
छट्टो और सातवा गु० तेजोलेशी साधु में पावें
, आठवो , हास्यादि के चरमान्तमें
नौवो सवेदी , के
दशवा , सकषायि के ,
इग्यारवो , मोहसत्ता , के ,
, बारहवो छद्मस्थ , के
, तेरहवो सयोगी , के ,
, चौदहवा , समुच्चय के ,
सातवा और आठवा० अप्रमादि हास्यादि गु० में
, , नौवा गु० , सवेदी के चरमान्त में
, दशवा० सकषायि
, इग्यारवा मोहसत्ता के ,
,, , बारहवा , छद्मस्यमेवे
,, तेरहवा० ? , सयोगी के ,
, , चौदहवा ? , समुचय गु के
आठवा और नौवा गु० ? शुक्ल ध्यान सवदी गु० में
, दशवा ? सकषायि के चरमान्तमें

,, ,, इग्यारवा ? , मोहसत्ता के ,,
,, ,, बारहवा ? , छद्मस्थ के ,,
,, ,, तेरहवा ? , सयोगी के ,,
,, , चौदवा ? ,, समुचय गु० के

नौवा और दशवा गु० ? अवेदी सकषायि गु० मे पावे
,, , इग्यारवा ? , मोहसत्ता के चरमान्तमें
, , बारहवा ? , छद्मस्थ गु० के ,,
,, ,, तेरहवा ? सयोगी ,, के ,,
,, ,, चौदहवा० ? , समुचय , के ,

दशवा और इग्यारवा० ? मोह अबन्ध मोहसत्ता गु० मे पावे
,, , बारहवा ? , छद्मस्थ गु० चरमान्तमें
, ,, तेरहवा ? , सयोगी के ,,
,, ,, चौदवा ? ,, समुचय गु० के ,

इग्यारवा और बारहवा ? वीतराग छद्मस्थ गु० मे पावे
, तेरहवा ? , सयोगी के चरमान्त में
, , चोदहवा ? , समुचय गु० के चरमान्त में

बारहवा और तेरहवा ? क्षीण मोह सयोगी में पावे
,, चौदहवा० ? , समुचय गु० के चरमान्तमें

तेरहवा और चोदहवा गु० ? केवली भगवान् में पावे

× नौवे गु० के शेष दो समय रहते हुवे अवेदी हो जाते है

—⁂◎⁂—

थोकडा नम्बर १३२

(त्रिक सयोगादि गुणस्थान—प्रश्नोत्तर)

दूजो तीजो चोथो गु० ?	एकान्त भव्य अव्रती में पावे।	
दूजा से पांचवे तक ?	,,	तीर्यंच में पावे।
छट्टा तक ?		प्रमादी जीवों में पावे।
सातवा तक ?		तेजोलेशी में पावे।
आठवा तक ?		हास्यादि में पावे।
नौवा तक ?		सवेदी में पाव।
दशवा तक ?		सकषायि में पावे।
इग्यारवा तक ?		मोहसत्ता में पावे।
बारहवा तक ?		छद्मस्थ में पावे।
तेरहवा तक ?		सयोगी में पावे।
चौदहवा तक ?		समुच्चय गु० में पावे।
तीजो चोथो पांचवो गु० ?	एकान्त सज्ञी तीर्यंच में पावे।	
तीजा से छट्टा तक ?		प्रमादी में पावे।
सातवा तक ?		तेजोलेशी में पावे।
आठवा तक ?	,	हास्यादि मे पावे।
नौवा तक ?		सवेदी में पावे।
दशवा तक ?	,	सकषायि में पाव।
, इग्यारवा तक ?		मोहसत्ता में पावे।
बारहवा तक ?	,	छद्मस्थ में पावे।
,, तेरहवा तक ?	,, ,,	सयोगी में पावे
,, चौदवा तक ?	,, ,,	समुच्चय में पावे।

चोथो पाचयो छट्ठो गु० ? क्षायक सम्यक्त्व प्रमादो में पावे।
चोथासे सातया तक ? " " तेज्रोलेशी में पावे।
" आठया तक ? ' ' हास्यादि में "
" नौवा तक ? " " सवेदी में "
" दशया तक ? " " सकषायि में "
" इग्यारवा तक ? " " मोहसता में '
" बारहवा तक ? " " छदमस्थो में "
" तेरहवा तक ? " " संयोगी में "
" चौदहवा तक ? " ' समुचय गु० '
पाचवा छट्ठो सातयो ? व्रती अप्रमादीमें पावे।
पाचवासे आठवातक ? " हास्यादि में पावे।
' नौवातक ? " सवेदीमे "
" दशवातक ? " सकषायि में "
' इग्यारवातक ? " मोहसता में "
" बारहवातक ? " छदमस्थ में "
" तेरवातक ? " सयोगी में "
" चौदहवातक ? " समुचय में "
छट्ठो सातयो आठवो ? मुनि हास्यादि में '
छट्ठासे नौवातक ? मुनि सवेदी मे "
" दशवातक ? सकषायि मे '
" इग्यारवातक ? " मोहसत्ता मे "
" बारहवातक ? " छदमस्थो मे "
" तेरहवातक ? " सयोगी मे "
" चौदवातक ? " समुचय मे "
सातवा आठवा नौवा गु० ? अप्रमत्त सवेदीमें पावे।
सातवासे दशवातक ? अप्रमत्त सकषायिमें पावे।
" इग्यारवातक ? " मोहसत्तामें "
" बारहवातक ? ' छदमस्थोमें "

" तेरहघातक ? " सयोगीमें "

" चौदहघातक ? " समुचयमें "

आठवा नौवा दशवा ? शुक्लेश्या सकषायिमें पाये।

आठवासे इग्यारवा ? " मोहसत्तामें "

" बारहवातक ? " छद्मस्थोंमें "

" तेरहवातक ? " सयोगीमें "

" चौदवातक ? " समुचयमें "

नौवा दशवा इग्यारवा ? अवेदी मोहसत्तामें पाये।

नौवासे बारहवातक ? " छद्मस्थोंमें "

" तेरहवातक ? " सयोगीमें "

" चौदवातक ! " समुचयमें "

दशवा इग्यारवा बारहवा ? अकषायि छद्मस्थोंमें।

दशवासे तेरहवातक ? " सयोगीमें

" चौदहवातक ? " समुचयमें पाये।

इग्यारवा बारहवा तेरहवा ? वीतराग सयोगीमें पाये।

इग्यारवासे चौदहवातक ? " समुचयमें पाये।

बारहवा तेरहवा चौदहवा ? क्षीण वीतरागीमें पाये।

इनके सिवाय भी गुणस्थानोंके विकल्प हो सकते हैं लेकीन जो उपर लिखे विकल्प कण्ठस्थ कर लेगा वह स्वयही हजारो विकल्प कर सकेगा वास्ते यहा इतनाही लिखा है इति।

॥ इति शीघ्रबोध भाग १० वा समाप्त ॥

पूज्यपाद प्रातःस्मरणीय मुनिश्री श्री १००८ श्री श्री
ज्ञानसुन्दरजी महाराज साहिब का सं. १९८०
का चतुर्मास लोहावट ग्राम मे हुवा
जिसके जरिये धर्मोन्नति.

—※(◎)※—

मारवाड स्टेट जोधपुर प्रान्त फलोदी से आठ कोशपर फासले पर लोहावट नाम का ग्राम है जिसके दो वास एक जाटावास जिसमें एक जिनमन्दिर एक धर्मशाला एक उपासरा १२५ घर जैनों के अच्छे धनाढ्य धर्मपर श्रद्धा रखनेवाले है दूसरा विमनोटवास जिसमें एक जिनमन्दिर एक धर्मशाला ४० घर जैनों व ४० घर स्थानकवासी भाइयों के हैं मुनि श्रीका चातुर्मास जाटावास में हुवा था आपश्री की विद्वता और मधुर व्याख्यान द्वारा जिन शासन कि अच्छी उन्नति हुइ वह हमारे वाचक वर्ग के अनुमोदन के लिये यहा पर संक्षिप्तसे उल्लेख कर पूज्यवर मुनि महाराजों से मरुस्थल में विहार करने कि सविनय विनति करते है।

(१) तीन वर्षो से प्रार्थना—विनति करते हुवे हमारे सद्भाग्य से

फागण वद २ व रोज फलोदी से आपश्री का पधारणा लोहावट हुवा श्री संघ की तरफ से नगर प्रवेश का महोत्सव बाजा गाजा के साथ कर बडी खुशी और आनन्द मनाया गया था।

(२) श्री संघ के अत्याग्रह से चैत वद ६ के रोज व्याख्यान में श्री भगवतीसूत्र प्रारंभ हुवा जिसका वरघोडा रात्री जागरणा स्वामी वात्सल्य शाह रतनचंदजी छोगमलजी पारख की तरफ से हुवा श्री संघ की तरफ से ज्ञानपूजा की गई थी जिसमें अठारा सुवर्ण मुद्रिकायें मिला के रु १०००) की आमदनी हुइ इस सुअवसर पर फलोदी से श्रावक समुदाय तथा श्री जैन नवयुवक प्रेम मण्डल के सेक्रेटरी–सम्परादिन पधार कर वरघोडादि में भक्तिका अच्छा लाभ लिया था।

(३) जीवदयाम रस–अज्ञान के प्रभाव से हमारे ग्राम में अति घृणित रूढी थी कि तलाव में मास दोय मास का पाणी शेष रह जाता तब ग्रामवाले उस पाणी को अपने घरो मे भरती कर लेते थे जिससे अनेक जलचर जानवरों की हानि होती थी वह आपश्री के उपदेश द्वारा बन्ध हो गया, स्यात् पाणी रख तो सात दिनों से ज्यादा भरती न करें हमारे लिये यह महान् उपकार हुवा है।

(४) महान् प्रभावीक सूत्र श्री भगवतीजी के वाचनासमयमें हमारे यहा श्री सुखसागर ज्ञान प्रचारक सभा की स्थापना हुई जिसका खास उद्देश छोटे छोटे ट्रेक्ट द्वारा यानि सुखसागर के अमृतजल का बिन्दुवों

द्वारा जनता को अमृतपान करानेका है, तदनुसार स्वल्प समय में २०००० ट्रेक्ट छपवा कर जनता की सेवा में भेज दिये गये हैं।

(५) जमाना हाल के मुताबिक आचार्यश्री के उपदेश से चैत वद ८ के रोज यहांपर श्री जैन नवयुवक मित्र मण्डल की स्थापना हुई जिसमें अच्छे अच्छे मातबर लोक शरीक हैं प्रेसिडेन्ट सेक्रेटरी मेम्बरादि के ६९ नाम दर्ज हैं मण्डल का उद्देश समाज सेवा और ज्ञान प्रचार करने का है इस मण्डल के जरिये और बुजर्गों की सहायता से हमारी न्याति जाति में बहुत ही सुधारा हुआ है जैसे ओसवाल और इतर जाति एक ही पट में जीमते थे वह अलग अलग करवा दिये गये—पाणी के वरतनों पर मम्बर को मुकरर कर दिये गये जब पाणी छान कर पीलाया करे जीमणवार में झूठा इतना पडता था कि घरधणी को बडीभारी नुकसान और असंख्य जीवों की हानि होती थी वह कुरीवाज भी निर्मूल हो गया, इतना ही नहीं किन्तु फजूल खरच पर भी अंकुश रखने से हजारो रूपैया का फायदा हरसाल में होने लग गया जिससे हमारी आर्थीक स्थिति में भी बहुत सुधारा हुआ और हो रहा है।

(६) मित्र मण्डल के जरिये धार्मीक ज्ञान का भी प्रचार बहुत हुआ जो कि थोकडे जीवविचार नवतत्त्व दंडक प्रकरणादि बहुत से लोग कण्ठस्थ कर तत्त्वज्ञान में प्रवेश हुवे और होने के उम्मेदवार हो रहे हैं करीबन ८० मम्बर थोकडे कण्ठस्थ करते हैं जिसमें ५-६ जणा तो अच्छे ज्ञाता ज्ञ गये है और ज्ञानमें रूचि भी अधिक हो रही है।

(७) आपश्री क बिराजने स जिन आगमो का नाम तक हम नही जानत थ और उन आगमो का श्रवण करना तो हमार लिये मरूस्थल में कल्पवृक्ष की माफिक मुश्किल था परन्तु आपश्री की कृपा से निम्न लिखित आगमो की वाचना हमारे यहा हुई थी।

१ श्रीमद् भगवतीजी सूत्र शतक ४१—१३८
५ श्री निरियावलीकाजी सूत्र अध्ययन ५२
१ श्री दशवैकालिकजी सूत्र अध्ययन १०
१ श्री आचारागजी सूत्र अध्ययन २५
१ श्री उतराध्ययनजी सूत्र अध्ययन ३६
१ श्री जम्बुद्विपपन्नति सूत्र
१ श्री पन्नवणाजी सूत्र पद ३६
१ श्री उपासकदशाग सूत्र अध्ययन १०

कूल १२ सूत्र और ८ प्रकरण की वाचना हुई।

आपश्रीकी व्याख्यान शैली—स्याद्वादमय और युक्ति दृष्टान्तादिस समजानेकी शक्ति इतनी प्रबलथी कि सामान्य बुद्धिवाले के भी समजमे आ जाय आपक व्याख्यानम जैनोंके सिवाय स्थानकवासी भाइ तथा सरकारी कर्मचारी वग स्टेशन बाबुजी, पोष्ट बाबुजी, मास्टरजी पुलीस थाणादारजी आदि भी आया करते थ हमार ग्रामम साधु साध्वियों सदेव आया करती है चतुमास भी हुवा करत है किन्तु इतन आगम इस खुलासाक साथ आपश्रीके मुखारविंदस ही सुन है।

(८) सभाओ, कमटीओ, मिटींगो पब्लिक भापणोद्वारा जमानेकी खबर जनताको दी गइ थी रसम या विदेशी, हिंसामय, पदार्थोंका त्याग भी कितनही भाइ वहिनोने किया था और समाजमे जाग्रतिभी अच्छी हुइ थी और श्री वीरजयन्ति श्री रत्नप्रभसूरी जयन्ति दादाजीकी जयन्ति व समय पब्लिक सभावों द्वारा जैनधर्मकी महत्वता पर बडही जोशीले भापण हुवे थे

(९) पुस्तकोंका प्रचारभी हमारा ग्राम और समय व मुकावले कुच्छ कम नहीं हुवा, निम्न लिखित पुस्तक हमार यहासे प्रकाशित हुई है

१००० श्री स्तवन सग्रह भाग चोथा

१००० श्री भावप्रकरण सावचूरी

५००० श्री द्रव्यानुयोग द्वितीय प्रवशिका

५००० श्री शीघ्रवोध भाग १–२–३–४–५ पाचो भागकि हजार हजार नकल एकही कपडकि जिल्दम वन्धाइगइ है.

१००० श्री गुणानुराग मूलक भापान्तर

१००० श्री महासती सुरसुन्दरी रसीक कथा

१००० श्री मुनि नाममाला जिस्म ७५० मुनीयोंको वन्दन

५००० श्री पचप्रतिक्रमण सूत्र विधि सहित (मूल २००००)

(१०) पुस्तक छपानेमे मदद भी अच्छी मिलीथी

१०००) श्री भगवतीसूत्र प्रारभमे पूजाका

२००) श्री भगवती सूत्र समाप्त म पूजाका

२९०) शाह हजारीमल फुनरलाल पारख
२००) शाहा लूणकरणा धूलमल पारख
६५) शाहा आइदान अगरचंद पारख
७५) शाहा जमनालाल इन्द्रचंद पारख
७५) शाहा फौजमल गैनमल पारख
९१) शाहा मोतीलाल हीरालाल पारख
५०) शाहा इन्द्रचंद मगनलाल पारख
५०) शाह माणकलाल चोपटा
२५) शाहा लीगमीचंद मूलचंद पारख
१२६) परचुन तथा बाहारकी आमदानी
८००) पयुपर्णोमें स्वप्नाकी आमदानी कुल ३०००)

पचप्रतिक्रमण ५००० नकलों की छपाइ एक शुभ दानधरी की तरफसे मदद मिलीथी

(११) ज्ञान पचमिपर एक धम जलसा किया गया था वह मानो समौसरणकि रचनाहीका स्वरुप था १५ दिन तक महोत्सव रहा प्रतिदिन नइ नइ पूजा भणाइ गइ थी करीबन एक हजार रुपैयोका खरच हुवा था

(१२) स्वामिवात्सल्य—स्वधर्मीभाइयों म वात्सल्य वृद्धिके लिये स्वामिवात्सल्य (१) श्री भगवतीसूत्रक प्रारभ म फलोधीवाले आये थ उन्हांको स्वामिवात्सल्य शाह छोगमलजी पारखकी तरफसे हुवाथा, और

प्रभावनाभी हुइथी (२) श्रावण वद ३ को फलोदीमें श्री सवश्रावक गुलेच्छा कोचर वद लोकड ललवाणी लोढा लुणावत लुणीया छाजेड चोपडा मालु वोरा मीनी बुनकीया वरडीया छलाणी सराफ कानुगा मडीया नेमाणी भन्साली कोठारी डाक्लीया सठीया नारटा नाहार थवाड चोरडीया मरलेचा चह्नावत पारख ढढा आदि करीबन २५० आदमी और वाइया मुनिश्री के दर्शनार्थी आये थे उन फलोदीवालोंकी तरफसे गैरों वामोक जैनोंको स्वामीवात्सल्य दिया गया था तथा शाहा धनराजजी आशकरणजी गुलेच्छाकी तर्फसे पूजा भणाइ गइ थी और चांदीकी ध्वजा और रोपर रू १०१) पे श्रीमन्दिरजीमें चढाये गये थ प्रभावना भी दी गइथी (३) श्री जैन नवयुवक मित्र मण्डलकी तरफसे स्वामिवात्सल्य फलोदीवालोंको दिया गया था (४) शाह शेरचदजी पारखकी तरफसे (५) शाहा अगरचदजी पारखकी तरफसे (६) श्री भगवतीजी समाप्त पर फलोदीवाले करीबन २५० आदमी और औरतो आइ थी जिनको शाह छोगमलजी कोचरकी तरफस स्वामिवात्सल्य दिया गया था इस सुअवसरपर फलोदीवाले मुत्ताजी सीरदानमलजीकी तरफसे नालीयर की प्रभावना हुइथी वेद ढढोकी तरफसे तथा श्रावकोंकी तरफस तथा कोचरोंकी तरफस एव च्यार प्रभावनाओ भी वडी उदारतासे हुइथी अन्तमे जेठ वद ७ को मुनिश्रीके विहार समय करीबन २५–३० भाइयों पली तक पहुचान को गय वहा पलीम शाह छोगमलजी कोचर की तरफसे स्वामिवात्सल्य हुवा था पली क न्यातिभाइयो को भी आमन्त्रण किया था यानि, धर्म की अच्छी उन्नति हुई।

(१३) भगवान कि भक्ति लिये वरघोड भी वडी धामधूमसे

चढाये गयेथ जिसमें जोधपुरसे अंग्रेजी बाजे भी मंगवाये गये थे।

(१) श्री भगवती सूत्र प्रारंभमें शाहा छोगमलजी पारखकी तरफसे
(२) फलोदीवालोकी तरफसे श्रावण वद ४ को
(३) पर्युषणोमें चैत्यपरिपाटीका वरघोडा
(४) श्री भगवतीजीसूत्र समाप्त का श्री संघकी तरफसे

(१४) मुनिश्री के विराजनेसे फलोदीवाले करीबन २००० श्रावक श्राविकाओं आपश्रीके दर्शनार्थ पधारे थे जिनोंकी स्वागत यथाशक्ति अच्छी हुइथी।

(१५) इनके सिवाय चांदीका मेरु, जोकि मेरु बहुतसे ग्रामोंमें होते है किन्तु यह खास शास्त्रानुसार मेरु बनाया गया है तथा पूजा प्रभावना तपश्चर्या कण्ठस्थ ज्ञानध्यान समयानुसार हमारे ग्राममें मुकाबलेसे बहुत अच्छा हुवा हमारे ग्राममें एसी धर्म उन्नति पहले स्यात् ही हुइ होगी हमने तो हमारे जीवनमें नही देखीथी और भी नवयुवक लोगोंमें भी अच्छी जागृती हुइ वह लोग अपने कर्त्तव्यपर विचार करने लग गये है हम आपश्री से पुनः पुनः प्रार्थना करते है कि आपके लगाये हुवे कल्पवृक्षको जल्दी जल्दीसे अमृत सींचन करते रहे यानि ऐसे थली के क्षेत्रोमें विहार कर हम लोगोंपर उपकार करते रहै यह ही हमारी अन्तिम प्रार्थना है इसे स्वीकार करावे।

भवदीय

माणकलाल पारख,
सेक्रेटरी श्री जैन नवयुवक मित्रमंडल—लोहावट

—❀—

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

नम्बर. ता

श्री जैन नवयुवक मित्रमडल.

मुः लोहावट–जाटावास (मारवाड)

वीर सं २४४६ विक्रम स १९७६

पूज्य मुनि श्री हरिसागरजी तथा मुनि श्री ज्ञानसुन्दरजी महाराज साहिब के सदुपदेशसे स १९७६ का चैत वद ९ शनिश्चरवार को इस मंडलकी शुभ स्थापना हुइ है। मित्र मडलका खास उद्देश समाजसेवा और ज्ञानप्रचार करनेका है। पहले यह मंडल नवयुवकोंसे ही स्थापित हुवा था परन्तु मडलका कार्य्यक्रम अच्छा होनेसे अधिक उम्मरवाले सज्जनोंने भी मडलमें सामिल हो कर मडलके उत्साहमें अभिवृद्धि की है।

नम्बर.	मुबारिक नामावली	ग्राम	पिताका नाम	वार्षिक चन्दा
१	श्रीमान् प्रसिडन्ट छोगमलजी कोचर	लोहावट	चतर्भुजजी	११)
२	,, वाइस प्रेसीडन्ट इन्द्रचन्दजी पारख	,,	रावतमलजी	११)
३	,, नायब प्रेसिडन्ट रतनमलजी कोचर	,,	मीरदानजी	५)
४	,, चीफ सेक्रेटरी रतनचदजी पारख	,,	हजारीमलजी	११)
५	,, जाइन्ट सेक्रेटरी पुनमचदजी लुणाया	,,	रतनलालजी	७)
६	,, ,, इन्द्रचदजी पारख		चानणमलजी	७)
७	,, सक्रेटरी माणकलालजी पारख	,,	हीरालालजी	५)
८	,, आसीस्टन्ट म रीखबमलजी सघी		कुचेरावाला	५)
९	श्रीयुत मेम्बर अगरचन्दजी पारख	लोहावट	आइदानजी	३)

१०	श्रीयुक्त मम्बर पृथ्वीराजजी चोपडा	लोहावट	सुखचन्दजी	२)
११	„ जीतमलजी भन्साली		तुलसीदासजी	२)
१२	„ „ हस्तीमलजी पारख	„	रावलमलजी	३)
१३	मेहलालजी चोपडा		रखचदजी	२)
१४	„ जुगराजजी पारख	„	रावलमलजी	३)
१५	„ „ मनसुखदासजी पारख		हजारीमलजी	३)
१६	„ कुनणमलजी पारख		हीरालालजी	३)
१७	„ कुनणमलजी बोचर		हीरालालजी	२)
१८	„ भभूतमलजी पारख	„	श्रीचदजी	३)
१९	„ „ हीरालालजी चोपडा	„	मोतीलालजी	१)
२०	„ जमनालालजी पारख		रावलमलजी	३)
२१	„ „ रखचदजी पारख		मोतीलालजी	२)
२२	„ भभूतमलजी पारख	„	करणादानजी	३)
२३	„ „ मवलालजी चोपडा	„	हीरालालजी	२)
२४	„ „ फूलचन्दजी पारख		केवलचन्दजी	३)
२५	„ घेवरचदजी गनीया	मयाणीया	जुहारमलजी	२)
२६	„ जनमलजी डाकलीया	ला०	प्रतापचदजी	२)
२७	कुनणमलजी पारख	„	सहजरामजी	२)
२८	„ जमनालालजी बोथरा	„	अलमीदासजी	३)
२९	„ नेमिचदजी चोपडा		पुनमचदजी	३)
३०	„ कुनणमलजी चोपडा	„	मालचन्दजी	२)
३१	„ पुखराजजी चोपडा		ताराचन्दजी	२)
३२	„ कुवरलालजी पारख		सरचन्दजी	३)
३३	„ चुनिलालजी पारख		सीवलालजी	३)

३४	श्रीयुक्त मेम्बर मुखलालजी पारख	लाहावट	मानालालजी	३)
३५	,, ,, सौमरथमलजी चोपडा	,	हीरालालजी	१)
३६	,, ,, अलमीदासजी कोचर	,,	पनमचदजी	३)
३७	,, ,, इन्द्रचदजी वैद	रानगट	सावलालजी	३)
३८	,, , ठाकुरलालजी चापडा	लो०	रूपचदजी	२)
३९	,, घेवरचन्दजी बाथरा	,,	रावलमलजी	२)
४०	, , कन्यालालजी पारख		जमनालालजी	२)
४१	,, ,, सपनलालजी पारख	,	इन्दरचदजी	३)
४२	, , नमिचदजी पारख	,	हीरालालजी	३)
४३	,, , हमराजजी पारख	,,	चानणमलजी	२)
४४	,, , भभूतमलजी कोचर	,	हस्तिमलजी	२)
४५	, भीखमचदजी कोचर	,	मघराजजी	२)
४६	,, गादुलालजी सर्गीया	,	छोगमलजी	३)
४७	,, जोरावरमलजी वैद	फलादी	वदनमलजी	३)
४८	,, धनमलजी पारख	लो०	हजारीमलजी	३)
४९	,, ,, गम्भीरमलजी पारख		मनमुखदासजी	२)
५०	,, ,, मपतलालजी पारख	,,	हीरालालजी	०)
५१	, महगमलजी पारख		छोगमलजी	२)
५२	,, ,, तनसुखदासजी कोचर	,	चटमलजी	२)
५३	, , भीखमचदजी पारख		मुलचदजी	३)
५४	,, , मुलतानमलजी पारख	,,	चुनिलालजी	२)
५५	,, जुगराजजी पारख	,	रतनलालजी	२)
५६	,, ,, जमनालालजी पारख	,,	मुलचदजी	३)
५७	, ,, धनमलजी कोचर	,	प्रभुदानजी	२)

५८	श्रीयुक्त मेम्बर माणकलालजी कोचर लो०	दलीचन्दजी	२)
५९	,, मामरीलालजी कोचर	खतमलजी	२)
६०	धवरचन्दजी कोचर ,	ज्ञानमलजी	२)
६१	, , नथमलजी पारख	हमराजजी	१)
६२	, नमिचन्दजी पारख	मनसुखदासजी	२)
६३	,, , त्रिजेलालजी पारख	फूलमलजी	२)
६४	, , कशरीचन्दजी पारख	धनराजजी	२)
६५	बमीलालजी पारख ,	हस्तीमलजी	२)

श्री सुखसागर ज्ञान प्रचारक सभाकि तर्फसे प्रसिद्ध हुइ पुस्तके

५००० श्री द्रव्यानुयोग द्वितीय प्रवेशिका

१००० श्री भाव प्रकरण सावचूरी

५००० श्री शीघ्रबोध भाग १–२–३–४–५ प्रत्येक कि हजार हजार नकल

१००० श्री गुणानुरागकूलक

२००० श्री शीघ्रबोध भाग ६–७–८ प्रत्येक की हजार हजार नकल तथा स्तवन संग्रह भाग चोथा १००० मन्ना सती सुरसुन्दरी १००० मुनि नाममाला १००० पंच प्रतिक्रमण ५००० पुस्तकें श्री रत्न-प्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला में भी हमारी तरफसे छपी हुइ हैं

पत्ता––**श्री सुखसागर ज्ञान प्रचारक सभा**
मु० लोहावट—मारवाड

पुष्प नं ७४ ॥ ॐ ॥ ता २१-६-२४

श्री रत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्पमाला ऑफीस फलोदीसे आजतक पुस्तकें प्रसिद्ध हुइ जिस्का.

सूचीपत्र.

इस सस्थाका जन्म-पूज्यपाद परम योगिराज मुनिश्री रत्नविजयजी महाराज तथा मुनिश्री ज्ञानसुन्दरजी महाराजके सदुपदेशसे हुवा है संस्थाका खास उद्देश छोटे छोटे ट्रेक्ट द्वारा समाजमें ज्ञानप्रचार बढानेका है इस संस्था द्वारा ज्ञानप्रचार बढानेकों प्रथम सहायता फलोदी श्री संघकी तर्फसे मिली है, वास्ते यह सस्था फलोदी श्री संघका सहर्ष उपकार मानती है।

संख्या	पुस्तकोंके नाम	विषय	कुल प्रति	कीमत
१	श्री प्रतिमा छत्तीसी	३२ सूत्रोंमें मूर्त्ति है	२००००	)०॥
२	गयवर विलास	३२ सूत्रोंका मूल पाठ	२०००	I)
३	दान छत्तीसी	तरापन्थी दयादानका नि	४०००	)०॥
४	अनुकम्पा छत्तीसी	षध करते हे जिस्का उतर	४०००	)०॥
५	प्रश्नमाला प्रश्न १०८	३२ सूत्रोंके मूल पाठमें प्रश्न	३०००	-)
६	स्तवन सग्रह भाग १ ला	जिन स्तुति	५०००	=)
७	पैंतीस बोलोंका थोकडा	द्रव्यानुयोगके बोल	१०००	=)
८	दादा साहिबकी पूजा	गुरुपद पूजा	२०००	=)
९	चर्चाकी पब्लिक नोटीस	ढुंढकोंसे चर्चाका आमन्त्रण	१०००	भेट

१०	देवगुरु वन्दनमाला	विधि सहित	६०००	~)
११	स्तवन संग्रह भाग २ जो	प्रभु स्तुति	३०००	=)
१२	लिंगनिर्णय बहुत्तरी	जैन मुनियोंके तथा दुन्डीयोंके	३०००	~)
१३	स्तवन संग्रह भाग ३ जा	भगवानके भजन	४०००	~)
१४	सिद्धप्रतिमा मुक्तावली	प्रश्नोत्तरसे मूर्ति सिद्ध	१०००	॥)
१५	+बत्तीस सूत्र दर्पण	बत्तीस सूत्रोंका सार	५००	≡)
१६	जैन नियमावली	मार्गानुसारी बारहा व्रत	२०००	भेट
१७	चौरासी आशातना	जिन मन्दिरोंकी आशातना	२०००	भेट
१८	+डंकेपर चोट	दुन्डीयोंका उत्तर	५००	भेट
१९	आगमनिर्णय प्रथमांक	आगमोंकि सारकी बातें	१०००	=)
२०	चैत्यवन्दनादि	चैत्यवन्दन स्तुति स्तवन	२०००	भेट
२१	जिन स्तुति	संस्कृत श्लोक	२०००	भेट
२२	सुबोध नियमावली	चौदा नियमादि	६०००	भेट
२३	जैन दीक्षा प्रथमांक	दीक्षाके लीये योगायोग	२०००	भेट
२४	प्रभु पूजा	पूजाकी विधि या आशातना	३०००	भेट
२५	+व्याख्याविलास प्र० भा०	विविध विषय	१०००	=)
२६	+शीघ्रबोध भाग १ ला	द्रव्यानुयोग थोकडा १७	३०००	।)
२७	शीघ्रबोध भाग २ जा	नवतत्त्व पच्चीस क्रिया	२०००	।)
२८	शीघ्रबोध भाग ३ जा	नयनिक्षेपादि षट् द्रव्य	२०००	।)
२९	शीघ्रबोध भाग ४ था	मुनिमार्गके थोकडा	२०००	।)
३	शीघ्रबोध भाग ५ वा	कर्म विषय थोकडा	२०००	।)
३१	+सुखविपाक सूत्र	दानमहात्म्य दश जीवोंका	६०	।)
३२	+शीघ्रबोध भाग ६ ठा	पाच ज्ञान नन्दीसूत्र	२०००	=)
३३	+दशवैकालिक मूल सूत्र	मुनिमार्ग	१०००	=)

३४	शीघ्रबोध भाग ७ वा	विविध प्रश्नोत्तर	२०००	=)
३५	मेमरनामो गु० हि०	वर्तमान धमाल्का दर्शन	४५००	॥)
३६	तीन निर्नामा लेखोंक उत्तर	सत्यतारी कसोटी	२०००	भेट
३७	ओशीया ज्ञान लीस्ट	पुस्तकोंके नाम नम्बर	१०००	भेट
३८	शीघ्रबोध भाग ८ वा	भगवतीसूत्रका सूक्ष्म वि०	२०००	।)
३९	शीघ्रबोध भाग ९ वा	गुणस्थानादि विविध वि०	२०००	।)
४०	नन्दीसून मूलपाठ	पाच ज्ञान	१०००	=)
४१	तीर्थयात्रा स्तवन	यात्रा दरम्यान तिर्थ	३०००	भेट
४२	शीघ्रबोध भाग १० वा	चौवीस ठाणा द्रव्यानु	२०००	भेट
४३	अमे साधु शामाटे थया	साधुवोंरा कर्त्तव्य	१०००	भेट
४४	विनतिशतक	वर्तमान वर्तारा	२०००	भेट
४५	द्रव्यानुयोग प्र० प्रवेशिका	द्रव्यानुयाग विषय	६०००	भेट
४६	शीघ्रबोध भाग ११ वा	प्रज्ञापना सूत्रका सार	१०००	।)
४७	शीघ्रबोध भाग १२ वा	प्रज्ञापना सूत्रका सार	१०००	।)
४८	शीघ्रबोध भाग १३ वा	गणितानुयोग	१०००	।)
४९	शीघ्रबोध भाग १४ वा	नारकी देवलोकादि क्षेत्र	१०००	।)
५०	+आनदघन चौवीसी	चौवीस भगवानके स्तवन	१०००	भेट
५१	शीघ्रबोध भाग १५ वा	आगमोंके प्रश्नोत्तर	१०००	।)
५२	शीघ्रबोध भाग १६ वा	आगमोंके प्रश्नोत्तर	१०००	।)
५३	कक्का बत्तीसी	चैतन्यके सुमति कुमति	१०००	ज्ञानवि
५४	व्याख्याविलास भाग २ जा	संस्कृत श्लोक	१०००	"
५५	व्याख्याविलास भाग ३ जा	प्राकृत श्लोक	१०००	"
५६	व्याख्याविलास भाग ४ था	भाषाकी कविता	१०००	"
५७	स्वाध्याय गहुली संग्रह	विविध विषय	१०००	"

५८	राइवदसि प्रतिक्रमण	आवश्यक सूत्र	१०००	'
५९	शीघ्रबोध भाग १७ वा	उपासकदशांगादि तीन सूत्र	१०००	'
६०	शीघ्रबोध भाग १८ वा	निरियावलीका पांच सूत्र	१०००	
६१	शीघ्रबोध भाग १९ वा	बृहत्कल्प सूत्र	१०००	थाक्हा खर्चेसे भाषांतर
६२	शीघ्रबोध भाग २० वा	दशाश्रुतस्कन्ध सूत्र	१०००	
६३	शीघ्रबोध भाग २१ वा	व्यवहार सूत्र	१०००	
६४	शीघ्रबोध भाग २२ वा	निशिथ सूत्र	१०००	
६५	उपकेश गच्छ लघु पट्टावली	उपकेश गच्छाचार्योंके नाम	१० ०	भेट
६६	वर्णमाला	बालावबोध प्रश्नरके नाम	१० ०	,,
६७	शीघ्रबोध भाग २३ वा	भगवती सूत्रका सुक्ष्मज्ञा	१०००	।)
६८	शीघ्रबोध भाग २४ वा	नको थोकडेरूपमे लिखा	१०००	।)
६९	शीघ्रबोध भाग २५ वा	हुवा ज्ञान	१०००	।)
७०	तीन चातुमासका दिग्दर्शन	फलोदीके तीन चोमासा	१०००	भेट
७१	तेरहा प्रश्नोंका उत्तर	हितशिक्षा	१० ०	,,
७२	स्तवन संग्रह भाग ४ था	ज्ञान चोवीस	१०००	,
७३	विवादचूलिकाकी समालोचना	नावीरा टाऊ दुरोकि	१०००	,,
७४	पुस्तकोंका सूचीपत्र	पुस्तकोंका नाम किंमत	१०००	,,
७५	सुर सुन्दरी कथा	कर्मफल	१०००	≡)
७६	पंच प्रतिक्रमण विधि सहित	आवश्यक	५०००	भेट
७७	मुनि नाममाला	वन्दन पाठ	१०००	भेट

नोट —नामविलासमें उपरके २५ पुस्तकें है किंमत रु १॥

\+ एम चिन्हवाली पुस्तकें खलास हो चुकी हैं ।

मिलनेका पत्ता—**श्री रत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्पमाला**

मु० फलोधी (मारवाड)